निकती
(समीक्षा-संग्रह)

रमेश

नवारम्भ
पटना

ISBN : 978-93-82013-75-4

निकती
(समीक्षा-संग्रह)

सर्वाधिकार : रमेश
प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : 300 टाका

प्रकाशक
नवारम्भ
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
मधुबनी : वार्ड न.-2, विवेक पुरम्
Email : navarambhprakashan@gmail.com
lekhakajitazad@gmail.com
मो.-09304349384, 9631459988

मुद्रक
आर.के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

Nikti
Collection of Maithili Criticism By Ramesh
Edition : 2018, Price : Rs 300/-

समर्पण

मिथिला-समाजक संघर्ष-चेतना
जनोन्मुखी मूल्य
आ
प्रगतिशील समीक्षा-समालोचना
कें ।

रमेश

आलेख-क्रम

07 : नैसर्गिक आनन्द-मार्ग थिक, रचना-प्रक्रिया
23 : मैथिली गजलक जड़ आलोचना
35 : मैथिली नारी-काव्य :
सी.सी. मिश्रा बीस, बुच्चीदाइ एकैस
40 : समकालीन मैथिली कविताक व्याकरण
55 : मैथिली साहित्यक अन्तर्राष्ट्रीयकरणक प्रयास :
डॉ. जयकान्त मिश्र/पंचानन मिश्र
58 : मैथिलीस्ट माने डॉ. जयकान्त मिश्र :
पंचानन मिश्र
62 : प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथाक दृष्टिकोण
68 : बाल-कथा केँ आधार दैत लिली रे
74 : 'पिता'क संक्रमणकालीन कछमछी :
प्रभास कुमार चौधरी
87 : जीवकान्तक दलित-कथा मे वर्गीय चेतना
94 : 'चौमास' मे जीवनक रचना : उपेन्द्र दोषी
99 : मानवीय मूल्यक 'ध्वंस' सँ छटपटाइत महाप्रकाश
105 : 'आरंभ'क कुलानन्द मिश्र विशेषांक
108 : पाश्चात्य निकष मे 'मीन-मेष' :
प्रो. रमाकान्त मिश्र
121 : भीमनाथ झाक 'धुरी'-काव्य :
आत्मनिष्ठ कविक आत्मालाप
127 : 'गुलो'क अस्तित्व : मैथिली समाजक आलोचना
139 : बड़की काकी एट हॉट-मेल डॉट कॉम :
बहुरंगी कथा-कौशल/श्याम दरिहरे
146 : उपन्यास-कलाक चरमोत्कर्ष :
घुरि आउ मान्या/श्याम दरिहरे
151 : सुकाव्यमय सामाजिक व्याख्या :
'उचरि बैसू कौआ'/लक्ष्मण झा 'सागर'
158 : समकालीन मिथिलाक 'अंतरंग' मूल्यांकन
165 : नकेनवादक प्रतिमान : 'अंतिका'क कूटनीति
173 : कृष्ण-'प्रस्थानक' मयूरपंखी आख्यान :
प्रो. उमाकान्त
178 : 'जिजीविषा' सँ भेटैत नव-जीवन :
कुमार मनीष अरविन्द
181 : 'संक्रमण'-संघीयता-निःसृत काव्य-चेतना :
रमेश रंजन
187 : थल-पिच्छड़ अङना मे कथाक 'पथार' :
परमेश्वर कापड़ि
191 : चेतना आ संवेदना सँ डमरस कथा :
ऋषि बशिष्ठ
195 : गाम-विमर्श भाया चन्दन कुमार झा
202 : प्रेम-कविताक इन्द्रधनु टंकार :
शारदा झा
211 : चित्र-काव्यक तानी मे व्यंग्यक भरनी :
मनोज शाण्डिल्य
217 : प्रतिबद्ध-संवेदनाक दर्द-काव्य :
प्रणव नार्मदेय
221 : 'भारत भाग्य विधाता' छथि वैज्ञानिकगण :
प्रो. प्रेम मोहन मिश्र

नैसर्गिक आनन्द-मार्ग थिक, रचना-प्रक्रिया

रचना आ निर्माण, साहित्य-क्षेत्र धरि सीमित नहि अछि। जीवनक सभ क्षेत्र मे सृष्टि आ सृजन होइत अछि आ तदनुसार सभ क्षेत्रक 'अपन-अपन सृजन-प्रक्रिया' होइत अछि। जें कि सृजन एक नैसर्गिक प्रक्रिया थिक, ओकर स्वभाव आ स्वरुप कृत्रिम नहि भ' सकैत अछि। आ से जँ होइत अछि, त' कृत्रिमता अंततः दोहराव-दोष आ यांत्रिकता केँ नोति अनैत अछि, जे रचना केँ रसहीने टा बनबैत अछि।

तेँ जीवनक सभ क्षेत्रक सृजन-प्रक्रिया, एक रंग सामान्यीकृत आ मानकीकृत नहि भ' सकैत अछि। साहित्यो केर सभ विधा मे, से संभव नहि अछि। एक रंग, सामान्य आ मानक एकटा प्रक्रिया, कथा, कविता, उपन्यास, निबंध, नाटक, गीत, आलोचना-समालोचना-समीक्षा मे, नैसर्गिक रूपें संभव आ समुचित नहि अछि। तकर कारण अछि। निबंध, आलोचना-समालोचना-समीक्षा-विश्लेषण विचार-प्रधान विधा थिक, त' मस्तिष्कक वेशी भूमिका होयब अवश्यंभावी अछि। कविता-कथा-उपन्यास, गीत-गजल भाव-प्रधान थिक, त' हृदयक वेशी भूमिका होयब अवश्यंभावी अछि। किछु विधा मे रचनाक सफलता भाव आ विचार (हृदय आ मस्तिष्क) क संतुलन, आ संगम निर्धारित क' दैत अछि। किछु विधा मे कोनो रचनाकार भाव (हृदय) केँ प्रधान बना दैत छथि आ कोनो रचनाकार वैचारिकता (मस्तिष्क) केँ! जेना कविता केँ लेल जाय। आजुक कविता अपन स्परूपे नहि, अन्तरात्मा-धरि केँ बदलि लेलक अछि। कहियो 'भावक रसोद्रेक' होइत छल, आइ 'विचारक-विस्फोट' सँ 'जीवनक दिशाक निर्धारण' कविता करैत अछि। भावक रसोद्रेक पर लगाम लागल, त' कविताक 'प्रसाद-गुणक परिभाषा' बदलि गेल आ 'राज-दरबार' सँ वा 'भाँटक कंठ' सँ बहार भ', आब आइ 'जन-गण-मन दिस' पहुँचबाक लेल आर्त्त भेल अछि। कविताक 'हृदय आ अन्तरात्मा मे ई अन्तःपरिवर्त्तन' ओकर रचना-प्रक्रिया मे परिवर्त्तन आनि देलक अछि, जे अवश्यंभावी छल। अन्यथा, कविता रुढ़ आ जड़ भ' शास्त्रीय भ' क', मृत्युक समीप त' बुझू जे, पहुँचिए गेल छल।

ई त' रक्ष रहल जे, उचित समय पर 'विचारक प्रवेश' कविताक अन्तस्तल मे भेल आ ओकर 'जनोन्मुखी यात्रा' प्रारंभ भ' गेल। तदनुसार आ तत्काले काव्य-सृजन-प्रक्रिया मे 'स्पॉन्टेनियस फ्लो' क चला-चलती किछु कम भेल। से होयब जरूरी छल। से नहि होइत त' जुलुम भ' जाइत। रुढ़ भ' गेल शास्त्रीय-काव्य, आइ इतिहासक-वस्तु बनि गेल रहैत। भावक रसोद्रेक-नदी मे, झिलहोरि-खेलाइत छन्द-अलंकार-यति-लय-ताल, पता नहि समाज आ साहित्य केँ आर कतेक क्षति करैत। तखन एखन धरि काव्य 'स्वान्तः सुखाय' सैह बनल रहि जइतय आ समाजक सामूहिक-हित आ सहकार-सहजीविता काव्य सँ अनुपस्थिते रहितय आ कविता 'मनोरंजनक उपकरण' बनल 'कविकाठी-भाँटक उपरफाँटी रोजगार' बनि क' रहि जइतय। ससमय भेल ई परिवर्त्तन यथार्थवाद (रेशनल एप्रोच) के देन छल, जे सृजन-प्रक्रियाक नैसर्गिक परिवर्त्तनक सटीक उदाहरण थिक। यैह नैसर्गिक प्रक्रिया, सृजनक सभ क्षेत्र मे आ साहित्यक सभ विधा मे विद्यमान, आ गतिमान रहैत अछि आ रहबाक चाही, जाहि सँ सृजनक स्वरूप-परिवर्त्तनो भेला पर मूल-अस्तित्व बाँचल रहि जाइत छै। आ विधा वा क्षेत्रक अरूदा बढ़ि जाइत छै, कारण, सृजनात्मक परिवर्त्तन सृष्टिक नियम थिक आ स्थगन, रूढ़िवादिता त्याज्य आ मृत्युकारक थिक। ठमकल पानि, महकि जाइत अछि आ तेहेन इनार-पोखरि भत्थन भ' जाइत अछि, जखनकि प्रवहमान सरिता अपन अस्तित्वो बचा लैत अछि आ दस-उपकारी बनि, जीवन सार्थक करैत, अरूदो बढ़ा लैत अछि।

चेतना-सम्पन्न हेबाक कारणेँ, सृष्टि आ सृजन केँ मानव अपन स्वभाव बना लेलक अछि, जे ओकरा प्रकृति सँ वरदान-स्वरूप भेटल छै। सृजन आनो जीव करैत अछि वा ओकरा सँ भ' जाइत छै, 'सहज-प्रवाह' मे वा 'ट्रायल एण्ड एरर' मे। मुदा मानवक सृजन, एकटा नियोजित दिशा मे सुविचारित होइ छै आ हेबाके चाही, कारण प्रकृति ओकरा चेतना-सम्पन्न बनौलक अछि आ ओ प्रकृतिक रहस्योद्घाटन करैत, तर्कशीलता आ वैज्ञानिकताक संग, सभ्यताक विकास क' रहल अछि वा केलक अछि। तेँ ओकर निर्माण आ संरचना, आन जीव सँ पृथक आ विश्व-मंगलकारी हेबाके चाही। तेँ ओकर रचना-प्रक्रिया सेहो, अत्यंत प्रासंगिक सदैव बनल रहत आ रहबाक चाही। तहिना,जीवनक सभ क्षेत्र जकाँ, साहित्योक सभ विधा

मानवीय, मानव-कल्याणकारी, विश्व-मंगलकारी, सोद्देश्य, तर्कपूर्ण आ तर्कशील, वैज्ञानिक आधार-युक्त, मानव-मूल्य-प्रतिबद्ध, घोर-सामाजिक, सभ विज्ञानक समावेशी-स्वभाव-युक्त, उदार-चरित्र भ' गेल अछि। आजुक तिथि मे, जीवन आ जगतक व्याख्या मे 'राजनैतिक दर्शनक अद्यतन-संस्करण' सभ केँ साहित्यक प्रायः सभ विधा आत्मसात क' लेलक अछि, जाहि सँ ओहि विधाक औचित्य आ सोद्देश्यता बढ़ि गेल अछि आ दिशा बदलि गेल अछि। साहित्य आब जीवनक दिशा मे अछि, मरणक दिशा मे नहि। 'मोक्ष' जे मरणक अर्थ मे रुढ़ भ' गेल छल, 'बन्धन-मुक्तिक' अर्थ ग्रहण क' मानव-जाति केँ कालातीत भ' गेल परंपराक जाल सँ, उछरय प्रदान करबा मे साहित्यक सहयोगी बनि गेल अछि। कविता, जे 'राजा आ सामंतक शोषणक-मूड बनबैत छल (चारण रस-प्रवाह द्वारा) से अपन अन्तरात्मा, अन्तर्कथ्य आ प्रकृति, बाह्य-स्वरूप केँ बदलि शोषणक ऑक्टोपसी-सूँढ़ केँ, दबिया, टेंगारी-कुरहड़ि, हाँसू-खुरपी, रुखान-बसुला, लोखड़-नहरनी आ अन्तहीन औजार द्वारा निर्मूल करए मे, सगर संसार मे, लागल अछि। जे 'पयस्विनी' मात्र 'साओन-भादव' मे धैनुआरि होइत छलीह, से 'जीवन-काव्य-प्रसवा' जकाँ अन्तःसलिला बनि'जाही-जूही-कथा-यूथिकाक' 'स्थूल-तत्सम-वर्णनाक गछाड़' तोड़ि, 'कन्यादान, दुरागमन-मधुश्रावणीक मकड़जाला भेदि, बैंक-पी.ओ.-एम.बी.ए. बनि 'स्व-निर्णय-पथ-गामिनी' बनि गेल छथि। बीसम सदीक 'गजगामिनी' भूखल मरतीह, जँ एकैसम सदी मे 'कॉल-सेन्टरक' 'क्षिप्रा' नहि बनलीह, त'। तेँ बदलैत मान्यतावला सदी मे 1932 ई. क' 'आशा-दिशा' (जे वस्तुतः निराशा-दिशा छल) 'स्वर-गंधा' केँ 'दुर्गन्धा' बुझबाक भ्रमे टा पोसने छल आ अछि। बीसम सदीक धरती पर भार बनल तेहेन काव्य-धाराक, एकैसम सदी मे कालातीत होयब, अवश्यंभावी आ नियत-नियति छल। तकरा सँ मुक्तिक साँस लैत, काव्यक अन्तरात्मक संग-सृजन प्रक्रिया जे बदलल, से सकारात्मक, साहित्य आ समाज-कल्याणकारी भेल अछि। कहब अप्रासंगिक नहि हैत जे, से आ ताहि तरहक परिवर्त्तन साहित्यक सभ विधाक वाह्य-स्वरूप आ अन्तर्कथ्य, अन्तरात्मा मे भेल अछि। से परिवर्त्तन स्वागतेये टा नहि, समाज-कल्याणकारी आ साहित्य-सार्थक, प्रगतिशील, विकासमूलक-सोद्देश्य सेहो भेल अछि। मानव-जीवन केँ सार्थक बनेबा मे, बन्धनक गछाड़ सँ मुक्ति दिएबा मे, विज्ञान सँ कनियों कम

योगदान, राजनैतिक, सामाजिक चिन्तन-युक्त साहित्यक, नहि मानल जा सकैछ। बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्ध मे, प्रकृति आ नायिकाक, सपाट-स्थूल-वर्णना मे, जे ऊर्जा आ शब्द-ब्रह्मक अपव्यय कयल गेल, से आइ समाज-निरपेक्ष, निरूद्देश्य, अनुचित रस लेबाक प्रवृत्ति सँ युक्त, अधोगामी, विपथगामी, मात्र कागज कारी करयवला 'तथाकथित साहित्य' साबित भेल।से सभ भाषाक साहित्य मे नहि भेल, मैथिली-साहित्य मे भेल। जँ यैह प्रकृति आ नायिका-वर्णना भेनाइ छल त' विद्यापति आ ज्योतिरीश्वरक 'समाज-सापेक्ष-वर्णना' पहिनहि सँ, प्रभावशाली ढंगें विद्यमान आ उपलब्ध छल। तकर 'डँड़खिल दोहराव'क आवश्यकता, महाकवि सभ केँ पड़लनि किए? समाज मे अपन 'खुड़-पुजाइ' लेल, समाज-निरपेक्ष आ दायित्व-बोध सँ हीन भ' तथाकथित साहित्य सेवाक परंपरा बनौलनि, जकर भंजन पछाति किरण, राजकमल, यात्री, किसुनजी द्वारा भेल आ 'विपथगामी-काव्य' 'सुपथ-गामी' भेलीह। तकर बादहुँ एकटा दुर्घटना फेर भइये गेल। राजकमलवला गद्य-काव्य-परंपरा, कमजोर भ' गेल आ यात्रीजी मे अर्थक लयबद्धताक धनिकपनाक अछैतहुँ, हुनकर प्रथम काव्य-गुरु कालिदास आ कविवर सीताराम झा वला छन्द, लय, यति, (हुनकर संस्कृत-साहित्यक काव्य-ज्ञानक प्रसादात आबिए टा गेल, जखन कि दोसर काव्य गुरु काञ्चीनाथ झा' किरणक गद्य-काव्य-प्रवाह, राजकमलक काव्य-शिल्प दिस जाइत छल, से हुनका काव्य-सौष्ठव मे स्थान नहि बना सकल। हुनकर वक्तव्य, जे नव-कविता केँ छन्द-लय-ताल-यति केँ ल' क' चलहि पड़तैक नव-कविताक खूबे क्षति केलक। से एना, जे, जीवकान्तजी वैह भाषा बाज' लगलाह— (अमरजी केँ लीखल एक पत्र मे)। सोमदेव, रामलोचन ठाकुर, उदयचन्द्र झा विनोद, दोहा-सतसइ, चौपाइ-सोरठा लिख' लगलाह, जे प्रयोगक नाम पर पृष्ठ-गामी आ प्राचीनता-दिसा-गामी छल आ प्राचीन-काव्य-वादी' केँ एकटा व्यंग्य-अवसर प्रदान क' देलक, यद्यपि उपर्युक्त सभ दोहा-काव्यक अन्तरात्मा आ कथ्य नवतावादी आ प्रगतिशील छल। मुदा वाह्य-स्वरूप मे, नव-कविताक यात्रा, जे गद्य-कविता दिस स्वाभाविक रूपेँ भ' रहल छल, तकरा झटका लागि गेल। नव कविताक संप्रेषण-क्षमता बढ़ेबाक, आन-आन उपाय नहि क' क', 'सुष्मालकी-रास्ता' ताकल गेल आ राजकमलक काव्यक, वाह्य-बन्धनोक-मुक्तिक आह्वान केँ उपेक्षा क', जीर्ण-काव्य-धाराक वाह्य-शिल्प पैंच लेबाक लेल हाथ पसारि देल

गेल! नव-कविता केँ 'अकविता' कहि जे आलोचना, जीर्णतावादी-समूह केलक, तकर प्रभाव सँ दूर रहनाइ उचित आ समयक मांग छल। किछु कवि तकर निर्वाह केलनि, किछु स्खलित भ' गेलाह, किछु दुनू रस्ता पर चलैत रहलाह। तकर परिणाम भेल जे गद्य-काव्य जे पैघ पाठक-समुदाय सृजित करितय, ताहि सँ वंचित रहल मैथिली। आ दोहो-काव्य कोनो तेहेन तीर नहिए मारि सकल, मुदा 'आशा-दिशा' ठठाय लागल जे 1932 ई. क बाद कविता लिखायल कहाँ? अकविता लिखायल। आ हमर परंपरा कहाँ समाप्त भेल? जीवकान्तोजी पत्र मे सैह समर्थन केलनि, दोहा-काव्यक परंपरे चलि गेल। तेँ 'उनटे-पाल' सुनटा थिक, हमरे कविता 'ठाँहि-पठाँहि'-काव्य थिक! आब एकैसम शताब्दीयो मे एहेन अनर्गल प्रलाप जे सून' पड़य त' मातृभाषाक दुर्भाग्ये आ विकास केँ पाछू मूहेँ घुसकेनाइए मानल जायत किने? वैज्ञानिक तथ्य थिक, जे इतिजास अग्रगामी यात्रा करैए पृष्ठगामी आ अधोमुखी नहि, भले एकाध बेर कोनो घटना दोहरा जाय। मुदा इतिहासक पुनरावृत्ति, कोनो शाश्वत सत्य नहि थिक। जे शाश्वतता समाज आ समय-सापेक्ष नहि होइत अछि, से शाश्वत-सत्य नहि बनि पबैत अछि आ सामयिक-मात्र रहि, कालातीत भ' जाइत अछि। जेना नव-कविता केँ मार्कण्डेय प्रवासी द्वारा पढ़ल गेल गारि, आइ कालातीत भ' गेल अछि। आजुक अंग्रेजी आ पाश्चात्य साहित्य मे राबर्ट फ्रॉस्ट केर कविताक 'स्पॉन्टेनियस फ्लो' वला छन्द-लय-तालवाला परंपरा आ सैद्धान्तिकता, एजरा पाउन्ड आ टी. एस. इलियटवला गद्य-काव्य-प्रवाहक समक्ष, कहिया ने आत्म-समर्पण क' चुकल अछि। तेँ अंग्रेजी आ फ्रेंच मे गद्य-काव्यक पाठक संवर्ग कथा-साहित्यक समानान्तर चलैत अछि। आ एत' मैथिली मे राजकमलक गद्य-काव्य-प्रवाहक प्रयास केँ षड्यंत्र रचि क' बाधिते टा नहि कयल गेल, अपितु नव-काव्यक धारा केँ 'उनटा पालक' सहारें 'अतीत-गामी' बनेबाक 'साहित्य-अकादेमी प्रतिनिधि टाइप-षड्यंत्रो' भेल, जाहि मे नवकवि सेहो कएटा, अनजाने मे, सहयोग क' देलनि।

मुदा, से त' दुर्घटना सभ, मैथिली साहित्यक सभ विधा मे मुख्य विशेषता बनि क' रहि गेल अछि। एहि निबंधक से प्रतिपाद्य नहि थिक। विभिन्न विधाक रचना-प्रक्रिया की अछि, केना आ केहेन हेबाक चाही, विधाक अन्तःसरंचना मे क्रान्तिकारी परिवर्त्तन एला सँ, रचना-प्रक्रिया कोना

प्रभावित होइत अछि, आजुक सर्जकक रचना-प्रक्रिया केना-की भेल करैत अछि वा हेबाक चाही, आ हमर अप्पन रचना-प्रक्रिया केना की अछि, से सभ प्रश्न विश्लेष्य अछि।

वस्तुतः विश्व-लेखक-संवर्गक एकटा पैघ समूह, सृजन केँ जटिल प्रक्रिया मानैत रहल अछि, जेना प्रकाश संश्लेषण लेल वनस्पति-विज्ञान मे शर्त्त-निर्धारण भ' रहल हो-सूर्ज-किरण चाही, पौधाक पात मे क्लोरोफिल चाही, फल्लाँ गैस चाही, जल चाही... आदि-आदि...! सृजन लेल परिवेश-निर्माण चाही, शान्ति आ एकान्त चाही, मूड बनेबाक लेल ई चाही, ओ चाही, सिगरेट आ शराब चाही... आदि-आदि...। जखनकि पहिनहि कहि आयल छी, विधाक हिसाबें सृजन प्रक्रिया मे कनेक टा अन्तर आबि सकैत अछि। सभ विधाक स्वरूप आ कथ्य मे आधुनिकता आबि गेल अछि, जे सकारात्मके बात टा थिक आ तकर प्रसादात तकर रचना-प्रक्रिया मे सेहो परिवर्त्तन आबि चुकल अछि। कनियें अंतरक संग, प्रायः सभ विधाक रचना प्रक्रियाक किछु-किछु विशेषता, एक रंग आ सार्वभौम अछि, सार्वजनीन अछि। मैथिली मे बहुत कम कवि-लेखक अपन रचना-प्रक्रियाक खुलासा केलनि अछि। आलोचनाक भयवश, अपन पोथीक 'भूमिको' मे जे आत्म-कथ्य लिखैत छथि, तकरो संक्षिप्त आ अस्पष्ट क' दैत छथि, तखन सृजन प्रक्रिया पर गप्प कोना करताह? 'आत्म-निरीक्षण आ आत्मावलोकनक। कनक परंपरा जतय नहि अछि, ततय अपन-अपन रचना-प्रक्रिया-विश्लेषणक अपेक्षा कोना कयल जा सकैत अछि? मुदा से परंपरा कहियो त' प्रारंभ हैत?

उनैसम सदीक उत्तरार्द्धक प्रकृतिवादी कविगण 'स्पॉन्टेनियस फ्लो' केँ 'सार्वभौम-सत्ता' कहि 'तुकान्त-काव्य' केँ गौरवान्वित करैत, ओकरा असली रचना-प्रक्रिया मानैत छलाह आ से 'स्पॉन्टेनियस फ्लो' अनबाक लेल चर्च मे प्रार्थना करैत छलाह। मुदा एजरा पाउन्डक लेखक-समूह मानलक जे 'स्पॉन्टेनियस फ्लो' केँ नियंत्रित क' क' नीक-सँ-नीक सृजन कयल जा सकैछ।

वस्तुतः चेतनाक अनेक आयाम (Layers) 'अनायास प्रवाह' केँ नियंत्रित क' सकैछ। मनोविज्ञानक असामान्य शाखाक अचेतन, चेतन, अवचेतन (sub-conscious) तीनू स्तरक सृजनात्मक-लेखन मे विशिष्ट भूमिका भेल करैत अछि, जकरा सिगमंड फ्रायड आ नव-फ्रायडवादी (जुंग-एडलर) विशद् रूपेँ व्याख्यायित केलनि। मुदा भारतीय परिप्रेक्ष्य मे, संत ॲरविन्दो

घोषक व्याख्या मे, मस्तिष्कक एकटा अतिरिक्त विशिष्ट आयाम (layers) केर उद्घाटन भेल छल, तकरा ओ 'सुप्रामेंटल ब्रेन' (Subramental brain) कहलनि आ अपन महान महाकाव्य 'सावित्री' केँ तकर उत्पाद कहलनि। सृजनात्मक प्रक्रिया मे ओ 'सुप्रामेंटल ब्रेन-लेयर' केँ फ्रायड-स्कूलक चेतना-आयाम सभक आगूक चरण बतौलनि आ पाश्चात्य काव्य-जगत् मे प्रचलित 'स्पॉन्टेनियस फ्लो अवधारणा' केँ मस्तिष्कक एही स्तर सँ जोड़ि क' सृजन-प्रक्रियाक व्याख्या केँ गति देलनि। ओ सृजन केँ एकटा 'नैसर्गिक-सह-आध्यात्मिक-प्रक्रिया' कहलनि।

पाश्चात्य मनोविज्ञानी 'तनाव-संलयन' (Fusion of tension) केर, सृजन-प्रक्रिया मे पैघ भूमिका मानैत छथि आ तनाव-संलयन केँ एकटा प्रमुख शर्त्त मानैत छथि। जहिना वायुमंडल मे तापमान-संलयन आ तनाव सँ मेघ बनैत अछि (जकरा मौसम-विज्ञानी 'विक्षोभ' कहै छथि) आ परिणामतः वर्षा होइत अछि, तहिना सृजनात्मक लेखन लेल मनोविज्ञानी केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र, ऑटोनोमस तंत्रिका-तंत्र, अचेतन-अवचेतन-चेतन, तीनू स्तर मे पहिने 'तनावक संघर्ष' (Fission) आ तखन 'तनाव-संलयन' (Fusion) केँ अत्यावश्यक मानैत छथि।

जर्मन राजनैतिक चिन्तक हिगेल, उनैसमे सदी मे, सृजनात्मक लेखन-प्रक्रिया' लेल 'विचार-प्रवाह (Flow of ideas) केर सिद्धान्त देलनि, तकरा उनैसम सदीक उत्तरार्द्ध आ बीसम सदीक पूर्वार्द्ध केर अंग्रेजी, जर्मन आ फ्रेंच 'काव्य-विज्ञानी' सभ 'विचार-प्रवाह'क संग जोड़ि, 'स्पॉन्टेनियस फ्लो'क भूमिका नियंत्रित क' 'भाव आ भावुकता' (काव्य मे) केर प्रतिशत कम क', काव्य मे वैचारिक प्रतिशत बढ़ा, काव्य केँ 'यथार्थवादी आ रेशनल' बनेबाक महत्वपूर्ण प्रयास केलनि। पछाति, इतिहासक वैज्ञानिक व्याख्या लेल आविष्कृत 'मार्क्सवादी औजार' (ऐतिहासिक भौतिकवाद, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद) केँ जीवन आ जगतक (काव्य मे) व्याख्या करैत, जर्मन कवि ब्रेख्त सँ ल' क' अंग्रेजीक कएटा कवि 'विचार-प्रवाह' केँ सृजन-प्रक्रिया मे वर्चस्व स्थापित (Dominant) क' देलनि। एहि सभ धारा मे अमरीकाक 'बिटनिक आन्दोलन' (प्रतिनिधिः एलेन गिन्सबर्ग) जखने जुड़ि गेल, त' वैचारिकता काव्यक प्रमुख तत्व भ' गेल, जे भाया राजकमल चौधरी मैथिली मे 'प्रभावशाली प्रवेश' कयलक आ काव्यधाराक प्रक्रिया केँ

'रस-निष्पत्ति प्रक्रिया' सँ 'संतुलित रस-परिपाक संग विचार-प्रवाह-प्रक्रिया' मे बदलि क' राखि देलक।

विचार-प्रवाह-काव्य-प्रक्रियाक पक्षकार लोकनि, तीन चरणवला लेखन-प्रक्रियाक व्याख्या करैत छथि। पहिल चरण मे, 'मस्तिष्क-गतिमानता तकनीक' द्वारा कोनो विशेष विषयवस्तु (topic) सँ सम्बधित विविध विचारक संग्रह, लेखक अपन मनो-मस्तिष्क मे करैत छथि। दोसर चरण मे, मस्तिष्क मे विचारक नक्शा बना संगठित कयल जाइत अछि। तेसर चरण मे, विचार केँ व्यवस्थित आ शृंखलाबद्ध केलाक उपरान्त, क्रमानुसार सजाओल जाइत अछि आ तखन सादा कागत पर उतारल जाइत अछि। लाइनवला रूलदार कागत केँ उपयुक्त नहि मानल जाइत अछि। कागत केँ अपना हिसाबें सेट क' कागतक केन्द्र मे, शीर्षक देल जाइत अछि। क्यो घड़ी आ समय सेट करैत छथि आ क्यो यांत्रिकता सँ बचबाक लेल, से नहिंयों करैत छथि। तकर बाद लेखक तेजी सँ लिखब प्रारंभ करैत छथि आ 'व्यक्तिगत शार्ट हैन्ड' वा प्रतीक (Symbols) वा संक्षिप्त शब्द (Abbreviation) केर प्रयोग करैत छथि, जाहि सँ 'विचार-प्रवाह' अबाधित हो आ 'मानसिक विस्फोट' सकारात्मक आ सृजनात्मक लेखनक रूप ग्रहण करैत जाय। लिखबाकाल कागत पर पाँतीक सजावट पर विशेष ध्यान नहि देल जाइत अछि। किछु काज आगू बढ़ि गेला पर, एकटा छोट सन 'ब्रेक लेबाक' सुझाव देल गेल अछि। ब्रेक मे पानि पीयब, 'लघु-शंका' करब, शामिल अछि। तखन फेर एक घंटाक लेखन आ फेर ब्रेक द' क', अनेक प्रयासक प्रक्रिया शामिल अछि।

ई सृजन-प्रक्रिया, कवि-कवि आ लेखक-लेखक मे कनेक अंतरक संग, दिमाग आ कागत पर लिखा सकैत अछि। कए टा लेखक पॉकेट-साइजक 'प्लॉट-बुक' संधारण करैत छथि, अपना सुविधा आ स्मरण लेल। रचनाक 'प्लॉट' त' विचार, भाव अथवा घटनाक रूप मे लेखकक दिमाग मे अबैत अछि। सभ 'प्लॉट' मे, सभ विधा बनबाक योग्यता नहि रहैत अछि। 'प्लॉट' सेहो आकार मे पैघ वा छोट भ' सकैत अछि। कोनो 'प्लॉट' मे कविता बनबाक, कोनो मे कथा बनबाक, कोनो मे कथा-काव्य आ कोनो मे उपन्यास बनबाक योग्यता भ' सकैत अछि। भाव आ विचारवला 'प्लॉट' प्रायः कविता बनैत अछि, भाववला छोट कविता, विचारवला प्रायः पैघ कविता। घटना-वला

'प्लॉट' प्रायः कथा बनैत अछि। मुदा 'प्लॉट' क' विधा मे चयन आ रूपांतरण, प्रायः लेखक लेल व्यक्तिगत (Subjective) बात थिक। एहिठाम लेखकक अभिरूचि आ योग्यता काज करैत अछि। कम-सँ-कम हम त' सैह मानैत छी। कतहु हम 'हृदयक' बात मानैत छी आ कतहु 'मस्तिष्कक'! 'प्लॉट' क' विधा-उपयुक्तताक निर्णय करैत काल अत्यधिक सावधानीक आवश्यकता होइत अछि। अइ काल मे ई ध्यान राखल जाइत अछि, जे पूर्व-काल मे एहि विषय पर कोनो लेखक द्वारा अथवा अपने द्वारा, कोन वा कोनो रचना लिखल गेल अछि वा नहि? जँ समकालीनो समय मे क्यो लिखने हो त' रचनाक दोहरावक खतरा लेबाक कोनो बेगरता नहि। कोनो विषय केँ हम अपने बेगरता, अभिरूचि आ योग्यताक अनुकूल चुनैत छी आ तकर सम्पूर्ण दायित्व जें कि हमरे पर रहैत अछि, तेँ कोनो आलोचकक भविष्णु आलोचनाक कोनो परवाहो करब, हमरा स्वभाव मे सम्मिलित नहि रहैत अछि, कारण, हम 'रचना केँ आलोचनाक संग, स्वीकार करैत छी? से हमर काव्य-शीर्षके टा नहि, हमर रचना-प्रक्रियाक सन्दर्भ मे एकटा तथ्यो थिक। वस्तुतः मान्यता ई अछि जे नीक आ स्तरीये रचना, साहित्यक श्रेणी मे अबैत अछि आ जे स्तरीय रहैत अछि, सैह आलोच्य भ' सकैत अछि, अथवा नहियो भ' सकैत अछि। स्तरहीन रचना 'निन्दनीय' भ' सकैछ, आलोच्य नहिं। ओना रचनाक संगहि आलोचनाक जन्म भ' चुकल रहैत अछि, किएक त', 'कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना!' आ फेर ईहो बात, जे आलोचकक नजरि मे किए कोनो रचना 'संपूर्ण' हेतै? दृष्टिकोणक अंतर के कारण 'अपूर्ण' लागब स्वाभाविक गप्प थिक। तेँ लेखनकाल मे, बादक कोनो चिन्ता किएक कयल जाय? हमर रचनाक एक-एक शब्द, भविष्यक आलोचनाक ससमय जवाब थिक! तेँ अपन सृजन-विधाक चयने करैत काल मनो-मंथन क' लेल जाय। तकर बाद मुदा, आलोचनाक कल्पनोक उपेक्षा करबाक चाही एवं तदनुसारहिं आगू बढ़बाक चाही।

तखन फेर अगिला चरण मे, हमरा अर्थात् कोनो रचनाकार केँ लेखन-स्थलक चयन करए पड़ैत अछि। कुमार मनीष अरविन्द कत्तहु रहैत छथि, लेखनक दबाव बनैत छनि, त' दौड़ैत-भागैत 'लेखन-कक्ष मे घुरि अबैत छथि'! मुदा ई हुनकर शर्त्तक बात थिकनि। हम त' रेलगाड़ियो मे गजल लिखलहुँ अछि आ 'प्लॉट' बुकलेट' मे कविता-कथाक 'प्लॉट' टिपलहुँ अछि।

हमर मनो-मस्तिष्क मे त' सप्ताह, मासक-मास, पक्षक-पक्ष, रचना-चिन्तन-मनन, रचनाक रूप-आकार-ग्रहण-प्रक्रिया चलैत रहैत अछि! 'फ्लैश' आयल आ धर द' लिखि लेलहुँ, तेहेन हमरा 'सङोर' आ 'समवेत स्वरक आगू' क छोट-छोट कविता-संरचना-काल मे होइत छल। आब एखन, जखन हमर दीर्घ-कविताक 'दौड़' चलि रहल अछि, त' तकर रचना मस्तिष्क-पटल पर (कथा जकाँ) मास-पक्ष धरि चलैत, अछि आ ताहि लेल जे मस्तिष्क मे 'विचार-विस्फोटक-शृंखला' बनैत अछि, तकर गर्मी आ शीतलता क्रमशः परमाणु बम (ऊर्जा-निस्सरण) आ हाइड्रोजन बम (परमाण्विक संलयन) सँ कम नहि अनुभव होइत रहैत अछि। एमहर हमर कथोक आकार पैघे भ' गेल करैत अछि, जकरा लेल 'विस्तृत कैनवास' पर मस्तिष्क मे रूपरेखा बनाब' पड़ैत अछि। पहिने छोट-छीन कथा (समाङ, समानान्तर) एक बैसकी मे लिखा जाइत छल आ तखन फेर 'कटिंग-पेस्टिंगवला कतरनी-कार्य' चलैत छल, जकरा अशोकजी 'कतरव्योंत' कहैत छथि। मुदा आब से भ' नहि पबैत अछि। कए 'सिटिंग' मे जा क' दीर्घ-कविता' आ कथा-'दीर्घ-कथा'क अन्तिमीकरण भ' पबैत अछि। तहिना समीक्षा-निबंध तेसर 'सिटिंग' मे 'फाइनल' भ' पबैत अछि। आलोचना मे त' आर समय लगैत अछि। केना वियोगीजी एक्के 'सिटिंग' मे कोनो रचना लिखि क' 'फाइनल' क' लैत छथि (जेना कि एकबेर ओ कहने रहथि) से स्मरण क' क' हम अपन दाँतक तर मे अङुरी दबाबैत रहैत छी। 'फाइनल कतरब्योंत' लेल हुनका 'दोसर सिटिंग' के आवश्यकते नहि होइत छनि, से 'अविश्वसनीय जकाँ' लगैत रहैत अछि। प्रदीप बिहारी कहलनि (काफी पहिने) जे ओ सोझे टाइपिंग मशीने पर कथा लिखि लेल करैत छलाह। तहियो सुनि क' अचरज लागल छल। फेर एकबेर बूझल जे सोझे लैप-टॉप पर कथा लिखयवला संभवतः मैथिलीक पहिल कथाकार वैह भेलाह। तखनो फेर चकित भेलहुँ। हमरा लेल आइयो ई सभ बात सपना अछि। ने हाइ-टेक भ' सकलहुँ एखन-पर्यंत आ ने 'फेसबुकिया साहित्यकार'! कलमे-कागत अवलम्ब! ताहि पर सँ दबाव रहैत अछि, जे आमिर खान जेना अपना फिल्म मे मेहनति क' क' 'परफेक्शनिष्ट' (पूर्णतावादी) बनि जाइत अछि, जाहि लेल ओ नामीयो अछि, तेहेन सन 'परफेक्शनिष्ट' बनि, सभ आ कोनो रचना पर काज करी आ वर्त्तमान रचना केँ, एक संग, पहिल आ अन्तिम मानी। तेँ 'प्लॉट' टिपलाक उपरान्त

दीर्घकथा, दीर्घ-कविताक मामिला मे 'आउटलाइन आ वर्क-आउट' करहि पड़ैत अछि। टेबुल-कुर्सीवला 'औपचारिक-लेखन' कहियो नहि भेल। बिछाओन पर, निचाँ मे, डाइनिंग टेबुल पर (भोजन कालक इतर) फर्श पर पलथी लगा बैसि, सादा नव कागत वा एक दिस लिखल पुरान रचनावला रफ-कागत केँ अखबार-पत्रिका (पलंग पर) पर राखि लेखन प्रारंभ करैत छी। हँ, एकबेर सहरसा सँ सुपौल गेल रही त' केदार कानन सन कलम-प्रेमी तीन टा कलम उपहार देने रहथि। तहिया सँ ततेक ने कलमप्रेमी भ' गेलहुँ जे दर्जनक-दर्जन, भाँति-भाँतिक जेल-पेन, बॉल-पेन, लीड-पेन, कारी-हरियर, नीलवर्णी, रखैत छी आ लिखैत काल तीन टा सँ कम कलम लग मे नहि रखैत छी। तैओ जँ रिफिल समाप्त भ' जाय, त' अपनेटा पर तामस उठि सकैत अछि। केदार भाइ सँ बहुत दिन सँ कलम वा डॉ. शिवेन्द्र दास सँ काव्य-लेखनार्थ मेडिकल-पैड 'गिफ्ट' नहि भेटब, तामसक कारण नहिये टा बनि सकैत अछि। विभूति आनन्द त' तुरंते कहताह, 'टैबलेट कीनू, फेसबुकिया बनू, लप्रेक लिखू!' से त' ततेक आसान नहि अछि हमरा लेल। प्रारंभिक संग्रहक कथा-कविता सभ दरभंगाक भयंकर गर्मी मे, बिजली-पंखाक बिना, लिखल गेल छल, जे हमरा लेल अति-कष्टकारी छल। मुदा सृजनक नैसर्गिक आनन्द मे, ताहि सँ कोनो अन्तर नहि पड़ल। लेखनक दबाव, सुविधा-असुविधाक परवाह नहि करैत अछि। गाम मे डिबिया-लैम्प-लालटेमक इजोत मे सेहो लिखने छी। कएटा छोटकी कविता, रेलगाड़ीक तृतीय ए. सी. मे यात्रा करैत, मोबाइल-टॉर्चक इजोत मे लिखायल अछि, जेकर हस्तलेख महात्मा गाँधी सन भ' गेल। फेयर केला पर ठीक भेल। ओहुना हमरा फेयर करबाक बेगरता पड़िते अछि। मात्र एक-दू निबंध केँ फेयर नहि करए पड़ल। फेयर केनाइ अत्यंत 'बोरिंग' काज थिक, मुदा ततबे जरूरीयो थिक। अन्यथा, अपने संतुष्टि नहि भ' सकत। वियोगीजी केँ फेयर नहि करए पड़ैत छनि, एकहि बेरका 'फाइनल' रहि जाइत छलनि, कागत-कलम लेखन वला। आब की होइत छनि, से नहि कहि! ओहो' 'लैप-टॉपिया' साहित्यकार त' भैये गेल छथि। हमरा त' फेयर केलाक बादो, कए बेर फेर-बदल करबाक लेल 'उजरा इंक' (ह्वाइट-इरेजर) के प्रयोग करए पड़ैत अछि। कए बेर कथा-गोष्ठीक टिप्पणी सभ सँ संतुष्ट भ' क' फाइनल रचना, पत्रिका मे छपल रचना मे परिवर्त्तन कयल अछि। संग्रह मे प्रकाशनक पूर्व, कोनो टिप्पणी-आलोचना केँ

अनेरो, अगंभीरतापूर्वक, समुचित विचार केने बिना 'रिजेक्ट' नहि क' देबाक चाही, अपितु पूर्ण उदारताक संग मनन क' (मुदा सहमत भेले पर) परिवर्त्तन करबा लेल उद्यत हेबाक चाही। कोनो रचनाक निष्कर्ष हेतु 'समाजक अंतिम पाँतीक व्यक्ति पर ध्यान द' क' (महात्मा गाँधी) समय, समकालीनता, समाजक कल्याण भावना, यथार्थवादी (रेशनल) एप्रोच सँ विचारि, मानव-मूल्य सकारि, एक दीर्घ मनन- प्रक्रियाक उपरान्तहि, हम फाइनल करैत छी।

तहिना शीर्षक चयन मे खूब गंभीरतापूर्वक मनन क' देखैत छी जे रचनाक प्रतिनिधित्व शीर्षक मे भ' रहल अछि वा नहि? सम्पूर्ण रचनाक सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व हेबाके चाही। पैघ शीर्षक हो अथवा छोट, ओकरा निबन्धे टा मे अभिधात्मक हेबाक चाही। आन सभ विधा मे प्रतीकात्मक आ व्यंजनात्मक बनेबाक भरपूर प्रयास हमरा करहि टा पड़ैत अछि। अन्यथा संतोषे नहि हैत आ रहि-रहि क' अन्तरालक उपरान्तो, शीर्षक बदलहि पड़ैत अछि 'रचना मे रमनेवालों को चैन कहाँ, आराम कहाँ?' सैह बात!

जखन अहाँ केँ लेखनक दबाव भरपूर रहैत अछि आ दिमाग मे सृजनात्मक तनाव-संलयन सँ पर्याप्त वर्षावला मेघ तैयार भ' गेल रहैत अछि, त' परिवेश आ वातावरणक खूब शान्त आ गमकौआ रहयवला शर्त्त कमजोर पड़ि जाइत अछि। मुदा रचना-चेतना आ 'सुप्रामेंटल-ब्रेन' (छठम इन्द्रिय) आ 'सृजनात्मक-फ्लो' कमजोर रहला पर 'शान्त-परिवेश' एकटा 'आवश्यक शर्त्त' बनि जाइत अछि। लिखबाकालक विघ्न-बाधा (कनियाँक प्रेम, जे विरल अछि, तकरा छोड़ि) हमरा तमसाइये दैत अछि आ 'मूड' खराब भेला सँ, अस्थायी स्थगनक शिकार लेखन भ' जाइत अछि। फेर मन केँ मना-मना क' मूड' बनाब' पड़ैत छै, जे शराब आ भांगो सँ संभव नहि अछि, अपितु 'योगासन आ ध्यान' सँ संभव भ' पबैत अछि।

जेँ कि लेखन एक समय लेब'वला प्रक्रिया थिक, किछु बातक 'उपेक्षा', पर ध्यान देब' पड़त। लेखन-काल मे आन कोनो काजक उपेक्षा करब, समीचीन अछि।हम बेर-बेर उठि क' लघुशंका जा सकै छी। मुदा फोन बहुत उठौनाइ विघ्नकारक आ ध्यान-भटकाब'वला समस्या थिक। अपना मित्र-मंडली आ परिवारिक परिवेश मे ई बात स्थापित करब जरूरी अछि, जे हम लिखब छोड़ि उठि क' मात्र ककरो अस्पताले ल' जा सकै छी वा शमशाने ल' जा सकै छी। अतिथि-आवभगत आ मैथिल-गप्पबाजी लेल, लेखन-प्रक्रिया

स्थगित नहि क' सकैत छी- से कठोर-अनुशासनवला छवि, बाहरी दुनियाँ मे, रहब जरूरी अछि। अन्यथा, लेखनक परिस्थिति-अनुकूलता, मैथिल-समाज मे न्यूनतम अछि आ लेखन-विरोधी डेग-डेग पर भेटत। दुष्टतत्व सँ बाँचब, मैथिल-जीवन मे सफलताक लेल पहिल शर्त्त थिक! तेँ बहुत बात मे नै' कहबाक स्वस्थ, आदत लेखक लेल त' बहुते जरूरी अछि।

प्रथम प्रारूपक अपूर्णता केँ उदारतापूर्वक स्वीकार करितो, लिखबा काल 'कतरनी-कतरब्योंत' सँ हम बाँचैत छी। ओइकाल ई सभ काज केला सँ 'प्रवाह' प्रभावित होइत अछि। कतबो धैर्य रखैत, ताहि-काल मे, अनधैर्य हेबाक खतरा रहैत अछि, जे रचनाक परिपक्वता लेल घातक होइत अछि। ओ 'प्रवाह' अति-महत्वपूर्ण हेबाक संग-संग 'अति-आनन्ददायी' सेहो होइत अछि। अइ 'नैसर्गिक प्रवाह' आ सृजन-प्रक्रिया सँ, मानव-समाज उपकृत अछि आ वस्तुतः भक्ति-ध्यान-उदात्त प्रेम जकाँ, ईहो एकटा सर्वोच्च आनन्दक मार्गो थिक, जे सृष्टि केँ राँजि-माँजि क' आगू बढ़बैत अछि।

रचना-प्रक्रियान्तर्गत लेखन-समाप्ति आ संतोषानन्दक अनुभूतिक उपरान्त, अपन लिखल रचना केँ एकबेर आद्योपान्त, दायित्वपूर्वक पढ़बाक सेहो अपन आनन्द ओहने होइ छै, जेहेन सन्तानक मुँह पहिले-पहिले देखबा मे। समाजिकता, समाज-शास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक आ मानवीय दृष्टिकोण सँ अपन रचनाक अपने मूल्यांकन करैत, दायित्व-युक्त 'कतरनी' करैत, उचित परिवर्त्तन केँ महत्व दैत, रचना केँ प्रकाशन आ जन-मूल्यांकन लेल ओहिना सार्वजनिक कयल जेबाक चाही, जेना परिवार-प्रथम-पाठशाला मे, बच्चा केँ पालन-प्रशिक्षण देल जाइत छै आ तखन फेर कार्मिक जीवन मे उतारल जाइत छै!

किछु विद्वान सृजनात्मक लेखन केँ 'असामान्य आ बतहपनी' मानलनि अछि। समाजो मे जन-सामान्यक तेहने सन किछु धारणा साहित्य-समुदाय लेल रहल अछि। हेबनि मे, से छवि कनेक बदलल अछि आ साहित्य केँ समाज-स्वीकृतिक पहिनेक दयनीय प्रतिशत, कनेक सुधरल अछि। मुदा साहित्यकार सकारात्मक आ प्रतिबद्ध लेखन तहियो करैत रहलाह, आइयो जन-प्रतिबद्धता केँ ल' क' चलैत छथि। जे 'रस लेबाक प्रवृत्ति' सँ 'तुकबन्दी-खेलौड़' करैत छथि, तिनकर काल-निर्णय हुनका जीवने-काल मे अथवा मृत्युपरान्ते भ' जाइत अछि। कोनो सामान्यीकृत प्रक्रिया, पूर्णतः सार्वजनीन (universal) नहि भ' सकैत अछि। प्रक्रिया-भेद

(variations) नहि भ' सकैत अछि। प्रक्रिया-भेद (variations) के गुंजाइश रहिते टा छै, कारण, साहित्य-सृजन नैसर्गिक प्रक्रिया त' थिक, मुदा नैसर्गिक विज्ञान नहि थिक, जे दुनियाँ भरिक प्रयोगशाला मे एक रंग प्रयोगक, एक रंग परिणाम आओत। ई सामाजिक विज्ञान वा मानविकी थिक। कए गोटे बिना योजना बनौने लिखैत छथि, कए गोटे योजनाबद्ध ढंग सँ। असल मे अपन अन्तरात्माक आवाज केँ सुननाइ छै, समाजक परिस्थिति सँ मुठभेड़ केनाइ छै। तकनीक आ रणनीति मददगार भ' सकैछ, मुदा लेखक केँ अपन खास प्रक्रियाक विकास करहि पड़ैत छै। विविध प्रक्रियाक अनुभव प्राप्त क' अपना लेल उपयुक्त प्रक्रियाक चयन, अर्थ रखैत अछि। सृजन-प्रक्रिया कायर आ पाछू हटयवला लोकक लेल नहि अछि। से व्यक्ति जल्दीए देखार भ' जाइत अछि। सामाजिक दायित्व सँ भरल, ई सकारात्मक काज, बहुत साहसिक काज थिक आ तकरे असली आनन्द भेटि पबैत छै।

गद्य-लेखन मे वैचारिकताक वर्चस्वक प्रतिशत सर्वोच्च हेबाक कारणेँ, ओकर रचना-प्रक्रिया मे विचार-मंथन वेशीए होइत अछि, तेँ 'स्पॉन्टेनियस फ्लो' क भूमिका, न्यूनतम भ' जाइत अछि। आजुक कवितो सँ कम! कविता अपन अन्तर्कथ्यक बदौलत कविता बनैत अछि, बाह्य तुकांत आ रसगर लयक बदौलत नहि। कविताक बाह्य स्वरूप मे 'हठयोग' करएवला 'प्राचीन आ जीर्ण मानसिकतावला जड़ साहित्य-संवर्ग' रूपवादी-कलावादी बेमारी, सँ ग्रस्त भ', अपनहुँ उपकार नहि करैत छथि, समाज आ साहित्यक त' कोनो बाते नहि। यात्रीजी अपन रचनाक जनोन्मुखी तेवर आ जनभाखा ल' क' महान छथि, अर्थक लयबद्धता ल' क' महान छथि, नहि कि पाँतीक तुकबन्दी ल' क'! राजकमल केँ तकर जरूरति एकदम्मे नहि पड़लनि, तेँ राजकमलक कोनो कविता, काव्य-तत्व-विहीन नहि अछि। नागार्जुनक 'इन्दूजी, इन्दूजी, क्या हुआ आपको?' मे कोनो काव्य-तत्व नहि छल, तेँ 'नव-कविता' केँ 'अ-कविता' कहवाक 'अस्वस्थ आ दुष्ट-परंपराक' चलनसारि भ' गेल। दुनू मनीषी आमजनक लेल लिखलनि, आमजनक पीड़ा लिखलनि, मुदा रचना-प्रक्रिया मे अंतर छल, त' भाषा मे अंतर भ' गेल। व्यक्ति, परिवार, गाम, समाज, देस, दुनू मनीषीक रचना मे छल, दुनूक जीवन-यात्रा असामान्य रहल। दुनूक रचना-प्रक्रिया आ भाषा, गद्य मे फराक छल आ काव्य मे फराक। तात्पर्य ई जे भासा, भाषा आ

भाखाक स्वरुप सँ सेहो, रचना-प्रक्रिया प्रभावित होइत अछि आ लेखकक रचना-प्रक्रिया सेहो ओकर रचनाक 'भासा वा भाषाक' निर्धारण करैत, सृजित रचनाक एकटा विशेष स्वरूपक निर्धारण क' दैत अछि। हमर प्रत्यक्ष अनुभव अछि, जे एक्कहि 'थीम' पर नगरीय-लेखन-कक्ष मे बैसि कविता लिखल जाय, आ फेर एक सप्ताह गाम मे रहि ओहि 'प्लॉट' पर कविता लिखल जाय त' रचना-प्रक्रियाक संग रचनाक स्वरूप, भाव-भंगिमा आ भाषा मे अन्तर आबिए जाइत छै। भाषा, गाम मे जाइते 'भासा आ भाखाक' स्वरूप ग्रहण क' लैत अछि। रचना-परिवेशक एतेक प्रभाव, रचनाक भाषा आ स्वरूप पर पड़ैत छै। जन-भाखाक रचनाकार, जन-गण-मन सँ जुड़ल रहय आ ताहि परिवेश मे समय दिअय त' ओकर सृजन-प्रक्रिया जनवादी रहत, आ ताहि मे आधुनिकता आ वैज्ञानिकताक समावेश आ संगम करय, त' शहरी जीवनक यांत्रिकता केँ सृजन-प्रक्रियाक नैसगिकता केँ, नष्ट करबा सँ बचा सकत। यांत्रिकताक प्रवेश जँ रचना-प्रक्रिया मे भ' गेल, त' स्मृति-आधारित रचना 'नॉस्टेल्जिक' भ' सकैत अछि। यांत्रिकता, मैथिली-साहित्यकारक रचना-प्रक्रिया मे आब' लागल अछि, कारण, मैथिलीक साहित्यकारक गाम सँ जुड़ाव घटि गेल अछि, आवागमन कम भ' गेल अछि, तेँ गामक स्मृति सँ काज चलाओल जा रहल अछि।

सहज भाषा लिखनिहार रचनाकारक रचना-प्रक्रिया सहज होयत। गाढ़ आ खाँटी जनभाखा लिखनिहार रचनाकारक रचना-प्रक्रिया मे 'प्रवाहक' प्रतिशत घटियो सकैत अछि आ सक्षम लेखक, जिनकर 'भाखा-पकड़' धनीक हो, से नहियो घट' द' सकैत छथि। क्यो लेखक 'भाखा' रचए मे आनन्द लुटैत छथि आ 'शब्द-खेलौड़' हुनकर वामा हाथक खेल थिक (जेना डॉ. भीमनाथ झा), कोनो कवि अन्तर्कथ्य पर विशेष ध्यान दैत छथि (जेना सुकान्त सोम), कोनो कवि काव्य-शिल्प आ कथ्य केँ ललितगर बनायब पर ध्यान दैत छथि (जेना उदय चन्द्र झा 'विनोद')! तदनुसार तीनूक रचना-प्रक्रिया मे, सहज-प्रवाह, धारा-प्रवाह, विचार-प्रवाह, भाव-प्रवाह आ रस-प्रवाह, रस-परिपाक (नव-रस-पाचन, नव-रस-मेटाबोलिज्म) केर प्रतिशत मे अन्तर रहत आ से रचनाक स्वरूप निर्धारित क' दैत अछि। एहि सँ रचनाक संप्रेषण मे सेहो अन्तर अबैत अछि, मुदा से एत' विवेच्य नहि अछि। कोनो रचना मे भाव, विचार, रस, सोद्देश्यता, अर्थक लयबद्धता, पचैत अछि, सहज रूपें

त' रचना-प्रक्रिया जटिलता सँ बँचैत अछि आ सार्थक बनैत अछि। मुदा जे हो, विवेचना त' आर आनो दिशा मे कयल जा सकैत अछि आर वेशी। मुदा एतावता ई सत्य जे रचना-प्रक्रिया, नैसर्गिक आनन्द-मार्ग थिक, जे दुनियाँ, समाज, मानवता केँ अनमोल वस्तु प्रदान करैत अछि वा क' सकैत अछि।

•

भारती-मंडन- 13
सुपौल, 2017

मैथिली गजलक जड़ आलोचना

मैथिली मे गजल आब नव विधा नहि रहल। गजलकार सभ जतेक गजल लिखलनि अछि, तकर अनुपात मे, आलोचक संवर्ग प्रारम्भहि सँ पूर्वाग्रह-ग्रस्त भ' क', अपन 'उपेक्षा नीति' केँ देखार केलनि अछि। से कोनो नव बात नहि, जग जानित तथ्य थिक। रमानन्द झा 'रमण' अपन आलेख (आँजुर, नेपाल, अप्रील 2014 ई)मे जत' गजलक प्रति 'सेराएल आ नैराश्यपूर्ण' प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि, त' चन्दन कुमार झाक गजल, टनका, सैनूर्य, हाइकूक संग्रहक 'भूमिका'मे जापानी उत्पत्तिवला विधाक, 'पूर्वी-समाजक' जड़ि हेवाक कारणें स्वागत करैत छथि। मुदा ओतहि अरबी, फारसी, उर्दू-उत्पत्ति हेवाक कारणें, गजलक प्रति, पूर्ववत् उदासीनता व्यक्त करैत छथि! तहिना मोहन भारद्वाज गजलक 'विधागत सीमा' के 'गजलक प्रभावहीनता' केर कारण मानैत छथि। कविताक अपेक्षा, ओ गजल केँ 'कम प्रभावशाली' विधा मानैत छथि। हिन्दी मे दुष्यंत कुमारक सफलताक कारण, 1974-1977 ई.क जय प्रकाश नारायणक आन्दोलन आ तकर वातावरण-परिवेश केँ मानि क', दुष्यंत कुमार केँ यश नहि देब' चाहैत छथि। हमर गजल-संग्रह 'नागफेनी' (1990 ई.) पर अपन 'उदासीन-प्रतिक्रिया' व्यक्त करैत, ओ जे पत्र लिखने छलाह आ ओही साल प्रकाशित कविता-संग्रह (सङोर)केँ बेसी प्रभावशाली (गजलक विधागत सीमाक कारणें) मानने छलाह, से 'भारती-मंडन-2।' मे प्रकाशित अछि।

एहि सन्दर्भ मे मैथिली गजल पर आयोजित परिचर्चा, जकर प्रायोजक मुन्नाजी छथि, (विदेह-सदेह 2012) ध्यातव्य अछि। परिचर्चा मे अनेक गजलकार आ मूल्यांकनकर्त्ता भाग लेलनि। अधिकतर विद्वान पं. जीवन झा धरि मैथिली गजलक इतिहास केँ ल' गेलाह आ मंजर सुलेमान अमीर खुसरोक प्रसंग द' क' बहुते पाछू ल' गेलाह। आ मैथिली जगत केँ चौंकाइये देलनि।

क्यो कहलनि जे मैथिली मे बात-बात मे 'शेर' नहि कहल जाइछ आ 'मिसरा, मतला, मकता' आदिक प्रयोग नहि कयल जाइछ। डॉ. गंगेश गुंजन 'फेसबुकिया गजलक' अधिसंख्य केँ उचिते 'स्तरहीन' कहलनि। मुदा

संग्रह आ पत्रिका सभ मे छपल अधिसंख्य गजल केँ ओ 'खखरी' नहि मानि सकैत छथि। ओ 'बहर' केँ 'साँच, फ्रेम, मात्र' मानि 'शिल्पक दुराग्रही' आलोचकगण केँ 'बहर-मैनियाँ-ग्रस्त' आ 'बहरक ऑबसेसन-ग्रस्त' सेहो मानलनि अछि, जे तर्कपूर्ण आ औचित्यपूर्ण अछि।

प्रेमचन्द पंकज मैथिली गजल केँ दुलरूआ मानितो 'सुकुमार नहि, विद्रोही' मानलनि, 'प्रेमी-प्रेमिका संवाद' सँ आगू मानलनि। मुदा 'शिल्पक आग्रही' रहबे केलाह। वर्ण-मात्रा गनवाक 'हठयोग' नहि केनिहार गजलकार केँ ओ 'तथाकथित' कहि आ 'हरदा' बजा क' अपन पारंपरिके विचार अभिव्यक्त केलनि। मुदा ईहो गछलनि जे मान्य समीक्षक-आलोचकगण एकरा 'अछूत' बुझैत रहलाह अछि। मुन्नाजी केँ प्रो. मायानन्द मिश्रक 'गीतल प्रयोग' 'ओझराहटि' बुझेलनि, जखनकि प्रो. राजेन्द्र विमल केँ 'सार्थक सृजन आ नीक प्रयोग' बुझेलनि। ओ 'लेखन-स्वतंत्रता' मे उचिते बिश्वास रखैत छथि।

शेफालिका वर्मा मैथिली गजलक 'नव परिभाषाक विकास' (भरिसक शैल्पिक कट्टरता-मुक्त) केँ नीक बात मानलनि, त' मिहिर झा गजलक आत्मा केँ सय प्रतिशत 'भारतीय' मानैत, एकर 'मर्म आ शब्द-कोष'केँ पूर्ण मैथिल मानलनि। ओ मैथिली गजल केँ 'स्त्री सँ वा स्त्री विषयक' संवाद'क सीमा सँ बहुते आगू मानलनि। ओमप्रकाश झा गजलक 'शास्त्रीयता आ सरल वार्णिक बहर' मे ओझराएल छथि, से गछलनि। धीरेन्द्र प्रेमर्षि गजल केँ गीतक 'सहोदर' मानितो, एकरा 'उसराह मरुभूमि मे पोसाएल उस्सठ स्वभावक, मुदा गीतवला गर्माहटि-विहीन' आ मात्र 'मुँह-कान' पर ध्यान देब'वला गजल केँ 'गीजल' कहैत छथि। ओ गजल पर अंततः 'गीते' केँ प्राथमिकता दैत छथि। स्व. किरणजीक पुत्र केसरी नाथ झा, गजल केँ 'माशूकाक आँचर', सैह मानने छथि। परिचर्चा मे, आशीष अनचिन्हार ('अनचिन्हार आखर' नामक ब्लॉग सँ भेल चिन्हार) आलोचकगणक बचावक मुद्रा मे, गजलकारे लोकनि केँ दोष देलनि, 'अपन गजलक शिल्प केँ नहि चिन्हवाक कारणें'। अइ ठाम ओ मंजर सुलेमानक स्वागत करैत छथि, मैथिली गजल केँ पं. जीवन झा सँ पाछू, अमीर खुसरो लग ल' जेवाक लेल, जखनकि अपन दोसर आलेख, 'समालोचना-गजलक साक्ष्य' (विदेह-सदेह-2012) मे, ओ अजित आजादक अइ बात लेल आलोचना करैत छथि, जे 'मैथिली

मे गजलक सुदीर्घ परंपरा रहल अछि' से कोना? पं. जीवन झाक 105-106 वर्ष सेहो कम नहि, सुदीर्घे मानल जायत। मुदा अमीर खुसरोक प्रसंग त' वस्तुतः कमाल अछि। तखन एहेन विरोधाभासी-आलोचना केँ 'आलू-चना' कोना नहि मानल जाय? ओ गजलक प्रति 'कट्टर-पारंपरिक दृष्टिकोण' अभिव्यक्त करैत, कहैत छथि जे गजल 'लिखल' नहि, 'कहल' जाइ छै, जखनकि उर्दूओक गजलकार एक्के बेर 'मंच-महफिल'मे जा क' सोझे गजल 'कहि' नहि दैत छथि।' 'गाबथि' अथवा 'कहथि' पहिने कागत पर 'टिपिते' छथि, तखने 'कंठस्थ' करैत छथि। 'मोने-मोने पाँति जोड़ि' क' गजल मैथिली मे आयल अछि, से अपने मोने धुरंधर आलोचक बनि आयल, आशीष अनचिन्हार कोना मानि लेलनि? अरबी, फारसी, उर्दू, हिन्दीक नकल थिक मैथिली गजल, से कोना मानि लेलनि ओ? मैथिली मे यथावत् नहि आयल अछि गजल! एत' 'महफिल-मुशायरा' नहि आयोजित होइछ, मैथिलीक। कविगोष्ठीक मंच पर क्यो 'गबितो, छथि आ क्यो 'पढ़ितो' छथि। मुदा क्यो गजल 'कहैत' नहि छथि उर्दूक मुशायरा-महफिल जकाँ। तहिना 'शायर'केँ 'शाइर' कहैत, त' बुझाइछ जेना ओ 'साइर'केँ 'गाइर' पढ़ि रहल होथि। एकबेर फेर, 'घोर-परंपरावाढ़ीक छवि, अपन' स्थापित करैत छथि। गजल-सम्बन्धी सभ तत्व आ विचार मे ओ 'घोर शिल्प-जड़तावादी आ धुरंधर मध्यकालीन-सोचक' साबित होइत छथि, जे हुनकर 'जड़-दृष्टिकोण'क परिचायक थिक!

गजेन्द्र ठाकुर, एहि परिचर्चा मे, अपन बात केँ जेना जानि-बूझि क' अस्पष्ट बना ओझरा देलनि। दुनू पानि मारवाक चक्कर मे, हुनका सँ 'परस्पर विरोधाभासी' तर्क दिया गेल अछि, जखनकि परिचर्चा छापवाक यश हुनके छनि। हुनका, रूपवादी-कलावादी गजल-आलोचक-समूह द्वारा, तथाकथित 'नव गजल शास्त्र आ तकर व्याकरण'क (जे वस्तुतः पुरान आ जड़ व्याकरण थिक, जकरा मे लेसमात्र नवता एहि आलोचक-समूह द्वारा नहि प्रस्तुत कयल गेल अछि, यथावत्-पूर्ववत् अछि) रचनाक श्रेय देल जाइत रहल अछि। ओ गछलनि अछि, जे मैथिलीक साफे अलग भाषा हेवाक कारणें, काफियाक नियम आन भाषा सँ सोझे आयातित भैए नहि सकैत अछि। तेँ निश्चित-रूपेण बहर आ काफिया मे लिखनिहार, अरबी, फारसी, उर्दूक, शिल्प- आयात लेल जवाबदेह आ (मैथिलीक हिसाबें) 'तकरा प्रति कट्टर' भेबे टा केलाह! विरोध ा केनिहार, 'शैल्पिक गछाड़' सँ मुक्तिक प्रयास लेल, किऐक नहि प्रगतिशील

हेताह? जखन सोझे आयात करब, मैथिलीक स्वभाव-स्वरूपक हिसाबें अनुचित, तखन मैथिलीक गजलकार सभ गलती कोना केलनि? मैथिलीक चरित्रक हिसाबें गजल 'लिखलनि', 'मुशायरा'मे 'कहलनि' नहि, अपितु जनमानसक समक्ष 'पढ़लनि', गीतकार सभ गजल 'गओलनि' मंच पर।' 'बहर'मे नहि रहने, गजल 'अकविता, गीत वा गद्य-कविता' कोना भ' जायत? ई सभ विद्या त' पूर्व-स्थापित आ अविवादित अछि, से गजेन्द्र ठाकुरो गछैत छथि! तखन उपकार भावें' (भाषा-साहित्य पर) कोनो लेखक लिखितय, त' अपन परिवारक पेट काटि क' छपबितय कोना आ किए? भाषा, साहित्य, समाज, देस, दुनियाँक प्रति, अपन दायित्व-बोध सँ लिखैत अछि लेखक, कोनो आ सभ विधा मे! प्रकाशकक घोर अभावक बावजूद! जखन गजल, रूबाइ, कता, काफिया, बहर-वर्ण-मात्रा-गणना-पद्धतिक कारणें, उर्दू, फारसी, अरबी सँ सोझे मैथिली मे लइये नहि सकैत रही, त' मैथिलीक गजलकार तकर निर्वाह नहि क' क', कोन अपराध केलनि? तकर झंझट मे नहि पड़िक', मैथिलीक खाँटी, जमीनी-यथार्थक परिप्रेक्ष्य मे सामाजिक संलग्नता आ राजनैतिक चेतनाक संग, गजल लिखलनि', त' अन्हेर कोन केलनि, जे 'ठाकुर-समूह' आ आशीष अनचिन्हार एतेक आमिल पीने छथि? राजेन्द्र ठाकुरक पाँती देखल जाय, जे मैथिलीक गजलकार गणक पक्षमे अछि— 'तहिना गजल, कता आ रूबाइ मे, वैज्ञानिक आधार पर, मैथिली भाषाक सापेक्ष नियम बनाओल गेल, जाइ सँ गजल कता आ रूबाइ, मैथिली मे दोसर भाषा सँ एलाक उपरान्तो, अपन मूल विशेषता बना क' राखि सकल।' एहि उद्धरण केँ 'आशीष अनचिन्हार एण्ड कम्पनी'क पक्ष मे कोना मानल जाय? आलोचकणक जड़-मतिक पक्ष मे मानल जाय, कि गजलकारगणक 'संशोधन-आधारित गजल-लेखनक' पक्षमे? वैज्ञानिक आधार पर, मैथिली भाषाक एहेन कोन-कोन सापेक्ष नियम, उपनियम बनाओल गेल, तकर विवरणो ठाकुरजी सँ अपेक्षित छल। तखन फेर बात ओतहि पहुँचैत अछि, दुनू पानि मारवाक फेर मे अपने अस्पष्टता आ विरोधाभाषी तर्कजाल मे फँसि गेलाह अछि, गजेन्द्र ठाकुर! सुरेन्द्र नाथ (कर्णामृत) 'बहर शिल्प' केँ महत्वहीन जड़ आ अनावश्यक मानैत अछि।

वस्तुतः जहिना छन्द, यति, तुकबन्दी, अलंकार, तत्सम व्यामोह मे, तकर गछाड़ मे कविता कए दशक धरि, छटपटाइत रहल आ नव-कविता

आबि क' अवांछित बन्धन तोड़ि, कविताक उद्धार क' देलक, तहिना बहर, रदीफ काफिया, मकता, मतला, मिसराक 'गछाड़'मे मैथिली गजल केँ छटपटेवाक षड्यंत्र कयल जा रहल अछि। एकटा 'गुट-विशेष' द्वारा, जकरा मैथिलीक गजल-लेखकगण कए दशक पूर्वहिं, मैथिलीक स्वभाव-स्वरूप देखैत, उतारि फेकने छथि। मैथिली गजल केँ कोमलता-सुकुमारता, शाकी-शराब, महफिल-मुशायराक साधन-सौन्दर्य बनवाक नहि रहैक, तेँ प्रारंभहि सँ विद्रोही तेवर अपना, मैथिली मे अबितहिं, 'जड़'सँ 'चेतन' भ' गेल छल, अनपेक्षित बन्धन जाल केँ ओही सभ 'शास्त्रीय भाषा'मे छोड़ि। तेँ बहर-मुक्त-गजल मैथिलीक पद्यटा नहि, खाँटी गजल थिक। मैथिलक अपन शिल्प मे! तथ्य त' ई थिक जे मैथिली मे गजेन्द्र ठाकुर, आशीष अनचिन्हार 'कोनो नव गजल-शास्त्रक वा व्याकरणक रचना' नहि केलनि अछि। अरबी, फारसी, उर्दूक, पुरने शास्त्रीयता केँ कदवा, चौकी, तेखाड़, पछाड़ क', मैथिलीक गजलकार केँ ओहि 'तकियाकलाम घँसल-पिटल' लीक' पर चलेवाक 'दुराग्रह' पोसने छथि। बहरे टा नहि, मकता, मतला, मिसरा, रदीफो, काफिया, सभ किछु पुराने गजल-व्याकरण थिक, जे हिन्दीयो, उर्दू मे 'महफिल-मुशायरा ब्रान्ड गजल' धरि सीमित अछि, साहित्य मे लुप्तप्राय भ' गेल अछि। ओ 'गजल-बन्धन', अरब-फारस, ईरान आ उत्तर-मध्यकालीन उर्दूक भारतीय क्षेत्रधरि उपयुक्तता राखैत छल हैत। मिथिला-मैथिली मे ठीके आयात करब, गजल आ मैथिल-जनमानस मिथिला-मैथिलीक संग अन्याये होइत, जे अन्याय, मैथिलीक गजलकार नहि केलनि! जें कि मैथिली मे 'मुशायरा, महफिल, जलसा' वला परंपरा नहि छल, मिथिलाक क्षेत्रीय भिन्नता आ मैथिलीक भाषागत चारित्रिक भिन्नताक कारणें, मैथिली- गजल सँ 'शास्त्रीय जड़ व्याकरण' आ 'गेयधर्मिता' अनुपस्थित रहल, स्वभावतः! ई कोनो दुर्घटना नहि छल। गजलक जनवादी चरित्र केँ जोगेनाइ जरूरी छल, 'विदेशी-व्याकरणक आयात' नहि। गजल सभ दिन, अपन 'मर्म'केँ संस्पर्श करवाक क्षमताक कारणें, गजल रहल अछि। अरबी-फारसी शिल्प छंद-अलंकारक चलतें नहि। तेँ मेथिली मे 'साहित्यिक गजल' (मंचीय नहि) पहिने 'लिखल' आ तखन 'पढ़ल' जाइत अछि। बिना 'लिखने' कोनो भाषा मे गजल 'कहल' नहि जाइत अछि। गजलक तेवर 'दर्दनाक'सँ बेसी 'विद्रोही' मैथिली मे सभदिन रहल। अधिकतर 'गेय-गजल' मंचीय थोपड़ी आ बिना बुझने

'वाह-वाह' कहबा लेल होइत अछि, कारण, 'संगीतक गेयधर्मिताक वर्चस्व' गजल पर भ' जाइत अछि। मनोरंजन-प्रधान कवि-सम्मेलन मे, सुर-ताल-प्रधान-छन्द-प्रेमी-गीतकारण अपन स्वर-लहरी प्रदर्शित करबा लेल गजलकार सँ 'गजलगो' बनैत छथि, जकर उद्येश्य 'मंच जमेनाइ' होइत अछि, 'गजल जमेनाइ' नहि। 'शुद्ध गजलकार' गजल 'पढ़ैत' छथि। 'साहित्यिक मूल्यवला' गजल, 'सामाजिक सरोकार' पर चलैत अछि। 'बहर-शास्त्र' पर नहि। हिन्दीयो मे गजल 'शास्त्रीय-गछाड़'सँ मुक्त भ', प्रभावशाली खुट्टा गाड़लक अछि। मैथिली गजल केँ देखवाक 'रूपवादी, कलावादी, दृष्टिकोण', जड़-दृष्टिकोण थिक, जे मैथिली गजलक 'प्राणतत्व'केँ जड़-बन्धन सँ गछाड़ि रहल अछि। गजलक 'प्रवाह', अर्थक लयात्मकता, 'अनचिन्हार' व्यक्तिक 'आशीष' लेल कहियो नहि तड़फड़ायत। ओ समय आ समाजक 'प्रवाह' आ 'स्थगन', दुनू केँ चिन्हैत अछि। आ 'काल-प्रवाह' 'कालातीत विधान'केँ 'इतिहासक पन्ना'मे ससम्मान स्थान द' क', आगू बढ़ि जाइत अछि। यैह आगू बढ़वाक प्रवृत्ति (तिल-तिल नूतन होय...) शाश्वत सत्य थिक, जकरा रूप-विधान, कलावादी, शिल्पवादी बूझि नहि पबैत छथि आ अपन आलोचना-वृत्ति केँ 'प्रगतिशील' नहि बना 'जड़' बना लैत छथि। मुदा जीवकान्तजी कहैत छलाह जे लेखक, आलोचकक मुँह दिस ताकि-ताकि क' रचना नहि करत आ 'सड़ल' (सरल नहि) वार्णिक बहर' गनि-गनि क' गजल नहि लिखत, तकर कारण ई जे ओकरा गजलक 'प्राणतत्व (कथ्य, अर्थ, प्रवाह) केर मूल्य पर' 'शास्त्रीय-व्याकरणक-यांत्रिकताक' खतरा नहि उठेवाक छैक। तेँ निरालाक आह्वान पर नव कविता सँ छन्द शास्त्र केँ उतारि फेकवाक क्रान्तिकारी निर्णय जकाँ, गजलो केँ 'शास्त्रीयता आ जटिल व्याकरण-मुक्त' करवाक क्रान्तिकारी-प्रगतिशील-निर्णय लेबा मे कोनो ततमत्ती हेवाके नै चाही आ एखन धरि 'सायास' सैह भेल अछि। बहर-शास्त्रक त्याग अनायास नहि अछि, 'सुविचारित' अछि। से जहिया कयल गेल, एहि 'जटिल शास्त्रीयता-प्रेमीक' अस्तित्वे नहि छल। मैथिली गजल अपन सामाजिक मूल्यक प्रति, प्रतिबद्धता केर संग, समाजक समानान्तर चलल अछि, से 'सही दिशा मे यात्रा' केलक अछि। ओकरा कोनो 'जड़ आ जीर्ण-शीर्ण आलोचक-समूह'सँ कोनोटा साटीपीकट के जरूरति नहि छैक! जकरा गजल मे अर्थ-गाम्भीर्य, शब्द, अर्थ-प्रवाह आ सामाजिक संलग्नताक संग, समानान्तर

प्रतिरोधी-चेतनाक विकास चाही, तकरा लेल 'जड़ शिल्प-विधानक गछाड़वला साँच आ फ्रेम सँ दूरी बनाइये क' चलवाक चाही। जिनका 'वर्ण-वितान' गनि-गनि क' मात्रा-छन्द, संगीतमय स्वर-लहरी मे थोपड़ी बटोरनाइ आ मंच जमेनाइ छनि, तेहेन रचना रचवाक लेल सेहो, से काज 'अरबी, फारसी, व्याकरण के बिना, क' सकैत छथि। भारतीय छन्द-परम्पराक अनुकूल। आ तैओ ओ गजल हैत, कारण, गजल अपन अन्तरात्माक चलतें गजल होइत अछि, 'बहर-शास्त्रक यांत्रिकताक' चलतें नहि। दुनू प्रकारक गजलक प्रवाह आ प्रभावान्वितिक 'काल-निर्णय', जड़ आलोचकक 'पार्श्वगामी-प्रवृत्तिक', मुखापेक्षी नहि अछि आ ने रहत। गजलकारक छटपट्टी जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'के एहि पाँती मे देखल जाय— 'बहरक झंझटि सँ हमरा आजाद करू। हम गजल छी, हमरा नहि बेरबाद करू!' एहि पाँतीक आ गजलकारक भावना की अछि? वर्णमात्रा गनवाक? 'मध्यकालीन जीर्ण, शीर्ण, विदेशी, रूप विधान' पर ध्यान देताह गजलकार कि प्राणतत्व सभ पर? बिना 'लिखने' सरल वार्णेय बहरक वर्ण-मात्रा कोना गनल जा सकैछ? मुँहजबानी गनि-गनि क' सोझे माइक पर 'कहता' गजल, गजलकारलोकनि? कोन मध्यकालीनता मे आजुक समय आ साहित्य केँ ठेलि क', श्रेय लेब' चाहैत अछि, ई जड़-पिछड़ल-दिशावादी-युवा-समूह? की ई 'जड़ता-वादी मूल्यांकन-पद्धति' नहि थिक?

गजल अपन अन्तरात्माक चलतेँ गजल अछि 'आयातित रूप-विधान'क चलतें नहि। शिल्पवादी-मूल्यांकन, भौतिक-शरीर-शास्त्र केँ प्रधानता द', 'आत्माक' उपेक्षा केनाइ थिक। गजलक शास्त्रीयता केँ प्राथमिकता देनाइ पिछड़ल सोच, मध्यकालीन-मानसिकता, 'जड़-एप्रोच' आ ऊपरी-छिछला-मूल्यांकन (Superficial) थिक। ई ने तँ यथार्थवादी आ ने प्रगतिवादी थिक, वस्तुतः कालातीत भ' गेल मूल्यांकन-पद्धति थिक। तेँ तकरा सँ मुक्त भ', गजलकार केँ, गजलक अन्तरात्मा पर ध्यान दैत, लिखैत जेवाक चाही। मैथिली मे आशीष अनचिन्हार, अपन आपत्तिजनक आ हिंसक भाषा, अ-तथ्यात्मक-उपस्थापन, विवाद-प्रिय नकारात्मक निबंध, पिछड़ल मूल्यांकन-पद्धतिक ओकालति, भट्ठा बैसावक नेत सँ कलम उठैबा लेल, फरमान शैली मे फतवा जारी करबा लेल, अ-गंभीरतापूर्वक आरोप लगेवाक लेल, नामी छथि। 9 फरवरी 2014 'मिथिला आवाज'क 'रसन-चौकी'

मे जे 'आलोचना' रूपेँ हुनकर आलेख छपल अछि, से हुनकर आने आलेख जकाँ 'आलू+ चना' भ' गेल अछि आ से प्रत्यालोचना केँ आमंत्रित करैत अछि। वस्तुतः गजल आ गजलकारक तथाकथित आलोचना ओ जाहि भाषा मे प्रस्तुत केलनि अछि, से 'निन्दा आ गाड़िक भाषा' थिक, हिंसक भावना सँ भरल भाषा थिक। से हिनकर नीक साहित्यिक भविष्यक संसूचक नहि थिक। स्वस्थ आलोचना मे गाड़िक कोनो टा स्थान नहि अछि। आ से ओ प्रो. मायानन्द मिश्र केँ, गजल मे गीतल-प्रयोगक कारणें, पढ़लनि अछि आ मैथिलीक अरबी-फारसी-उर्दू-व्याकरण-मुक्त गजलकार सभ केँ 'लोथ' कहि पढ़लनि अछि, जखनकि मैथिलीक गजलकर सभ 'गतिहीन शिल्पक' पक्ष मे नहि रहि, प्रगतिशीलता देखौलनि अछि। 'लोथ'क बदला मे आशीषजीक स्वस्थ आलोचनात्मक शब्दक सामर्थ्य एतेक कमजोर छनि, तँ से चिन्ताजनक बात थिक हिनका लेल। वस्तुतः मैथिलीक प्रगतिशील गजलकार सभक गति आ वेग मे हिनकर जड़-शिल्प 'बहर-मैनियाँ' सकि नहिं पाबि रहल अछि। हिनकर गजल-शोधक दिशा 'पाछू मुहें' भ' गेल अछि, जकरा 'आगू मुहें' हेबाक छल। इतिहासक 'निरसल' केँ अकारण 'भविष्य आ समकालीन' बनेवाक प्रयास, पुनरूत्थानवादी-पुरातनपंथी सोच थिक, क्रान्तिकारी नहिं।

ओ मैथिल केँ विश्वक एकमात्र एहेन भाषा मानलनि अछि, जे हिन्दीक नकल करैत अछि। ई फतवा-फरमान-शैलीक हुनकर वक्तव्य, हुनकर मैथिली साहित्यक अध्ययनहीनते-टा नहि प्रमाणित करैत अछि, स्व.राजमोहन झावला 'दुष्ट-आलोचनाक प्रतिमानो' ठाढ़ करैत अछि। एहेन-एहेन वक्तव्य सँ, हुनका 'सस्तो लोकप्रियता' नहि भेटतनि आ लोक हुनकर स्थापना सभ केँ 'गंभीरता पूर्वक' लेनाइयो छोड़ि देतनि। सस्ता वक्तव्य कोनो आलोचक केँ 'सस्ते' टा बना सकैत अछि। ओ अपन स्थापनाक पक्ष मे, हिन्दीक नकल करवाक कोनो टा उदाहरण नहि देलनि अछि। क्यो जँ एकाध गोटे हिन्दीक नकलो केने हेताह, तँ तकरा ओ 'सामान्यीकरण' कोना क'सकैत छथि? एक्कहि लाड़नि सँ सभ केँ लाड़ि देवाक प्रवृत्ति घातक थिक। फेर दोसर महा-आपत्तिजनक पाँती देखू- 'मैथिलीक रचनाकार विशुद्ध रूपेँ मानसिक गुलाम छथि हिन्दीक।' तखन तँ अरबीक गुलाम आ नकलची फारसीक गजलकार, फारसीक गुलाम-नकलची उर्दूक गजलकार आ उर्दूक गुलाम-नकलची हिन्दीक गजलकार भेलाह? की आशीषजी 'बहर'क 'मानसिक गुलाम' नहि छथि?

वस्तुतः प्रो. मायानन्द मिश्र कहियो नहि कहलनि, गीतकार नीरज जकाँ जे मैथिली मे गजल संभव नहि। हँ, ओ 'गीतल' प्रयोग केलनि, से करवाक हुनका स्वतंत्रता छल। एहि लेल हुनका आशीष अनचिन्हार आ ठाकुर-समूह सँ अनुमति लेवाक कोनो जरूरति नहि रहनि, कारण, ओ सृजन-प्रक्रिया मे 'प्रयोग' केने रहथि। 'बहर-शास्त्र' छोड़वाक कारणें, हुनका 'हिन्दीक नकलची आ मानसिक गुलाम' कहब न्यायोचित नहि अछि आ गाड़ि-समान अछि। ने नीरजजीक कहला सँ, हिन्दी मे गजल-सृजन ठमकल आ ने माया बाबूक कहला सँ मैथिली मे। गीतलक कोनो परंपरो मैथिली मे नहि बनि सकल आ हुनकर 'निजी-प्रयोग' बनि क' रहि गेल। मुदा ओ दुनू दुनू भाषा मे, गजलक 'शास्त्रीय शिल्पेक' कारणें, एहेन बात कहने रहथि, से तँ क्यो आधुनिक गजलकार कहत। जे नहि कहत, से 'जड़-शिल्पवादी' गजलकार भेल आ से अरबी-फारसी-उर्दूक 'गुलाम मानसिकता-वला' आ शिल्पक नकलची भेल।

मैथिलीक सभ गजलकार जखन 'लोथे' भ' गेलह, तँ फेर ओही गजलकार मे प्रतिभा कोना छनि? ई केहेन विरोधाभास? प्रतिभा खाली मध्यकालीन शैल्पिक पुनरूत्थान-वादी आशीष अनचिन्हार आ ठाकुर-गुट मे छनि, जे सोझे खारिज-करवाक कु-प्रवृत्तिक शिकार छथि। बहरक प्रति अति-मोहग्रस्तता मे, एक-दोसरक प्रशंसा मे 'अहो-रूपं-महोध्वनि' करबा मे, लीन छथि। मैथिलीक कोन गजलकार लिखलनि जे हमरे गजल मात्र गजल थिक आ दोसर केँ रोकल केना गेलनि? के ककरा रोकलनि, जे सरल वार्णेय बहर मे, मात्रा-वर्ण गनि-गनि नहि लिखू? की योगानन्द हीरा आ बाबा बैद्यनाथ केँ रोकल गेल? वा नहि छापल गेल? छपलाक बावजूदो ओ सभ मुख्यधारा नहि बनि सकलाह, से हुनकर 'रचनाक कमजोरी' छल वा 'विदेशी-बहर-शास्त्र केँ मैथिलीक पाठक स्वीकार नहि केलक। ताहि मे आन गजलकारक कोन दोष? आइयो दीप नारायण विद्यार्थी केँ क्यो नहि रोकलक, बहर मे गजल लिखवा सँ, आ पुरस्कृत हेबा सँ। दुनू चरित्रक गजलकार केँ रचनाक स्वतंत्रता तँ छनिहेँ, छपबो मे असौकर्य नहि। तखन एहेन प्रतिक्रियावादी निराधार आरोप किए?

सभ विधाक अपन-अपन सीमा भ' सकैत अछि। सभ तरहक रचनाक 'प्लॉट', सभ विधाक लेल उपयुक्त नहि होइत अछि। गजल केँ

'बन्धन-शर्त्त-व्याकरण-आधारित करब' ओकरा सीमित करब आ ओकर हत्या करब थिक। कला, कलाक लेल भ' जायत, समाजक लेल नहि। जे पहिने छल, से आइ नहि भ' सकैछ। आइ लेखनक उद्देश्ये बदलि गेल अछि आ गजलक अन्तरात्मा सेहो। ककरो खारिज करबाक अधिकार तँ कोनो आलोच केँ छैके नहि? कोन आगत पीढ़ी सही मूल्यांकन करतै, से कोनो आलोचक नहि जनैत रहैत अछि। मात्र आत्मनिष्ठ-आलोचक दुष्ट-प्रवृत्तिक वशीभूत भ' क', तेना क' सकैत अछि। आशीष अनचिन्हार द्वारा कयल गेल 'गजलकारक गुटक वर्गीकरण' सेहो, निराधार, भ्रामक आ अनुचित अछि। गजलकारगणक कोनो गुट कहाँ अछि? 'उपकार-भाव' की? से तँ आशीष जीक अप्पन आलोचनाक 'आधारे' थिक। ओ 'बहरवादी-गजलकार केँ उछालि क', ठीके हुनका लोकनि केँ 'उपकृत' क' रहल छथिन। तैओ हुनकर सभक 'गजल-कूथन' मे यांत्रिकता आयब अवश्यंभावी छनि। गजल पर की उपकार? जहिना आन विधा मे स्वस्थ नेत सँ लेखन, तहिना गजलो मे, समाज-हित मे लेखन। कोनो विधा पर लेखक 'उपकार' की करत? 'लिखवाक' आन अनेक सार्थक कारण अछि, 'कहवाक' एक्कहि टा कारण अछि मैथिली मे, कथा कहवाक। से तँ आशीष-गुटक 'पवित्र कर्त्तव्य थिक, बहर-शिल्प-मुक्त गजलकारक नहि। विजयनाथ झा आ योगानन्द हीरा दूभि छलाह, जे गजलकारक हेंजक पयर तर पिचड़ा भ' गेलाह?

असल मे, आशीष जीक 'एप्रोचे' पारंपरिक, परंपरा-ग्रस्त, बहर-मोह-ग्रस्त, प्रवाह-बाधक, विकास-विरोधी, गजलक अन्तर्वस्तुक उपेक्षा करएवला, प्रवहमानताक हत्या करएवला, 19म सदीक अतीत-यात्रा करएवला, 'आधुनिक गजल'केँ 'गालिब आ मीरक युग' मे ल' जा क' जटिल आ गति-हत बनाब'वला, अनेक भाषाक लाखो गजल केँ अनर्गल खारिज करएवला, सूत्र-वाक्य मे आरोप लगा क', अपने मुहें अपन गुटक आत्म-प्रशंसा करएवला, 'तानाशाही-टिप्पणी' करएवला अछि।

हिनकर सम्पूर्ण निबन्ध आ सम्पूर्ण लेखने मे, भाषा आपत्तिजनक आ हिंसक अछि। गजलकारक 'टीम' सँ छुटकारा भेटवाक की अर्थ? 'बहर-शास्त्र सँ मुक्त गजलकार' सभ लिखब छोडि देलनि की? ओ सभ तँ 'अनपेक्षित-अनर्गल-व्याकरण-बन्ध' सँ मुक्त भ' 'क्रान्तिकारी स्वरूप' देलनि, मैथिली गजल केँ। आ स्वतंत्र-अस्तित्व तकर, सु-स्थापित क' देलनि। 'व्याकरणक-तोता-रटन्त' सँ

अर्थ-गाम्मीर्य आ पद-लालित्ये समाप्त भ' जाइत। तखन गजलक 'काव्य-प्रसाद-गुण आ संवदेना-संस्पंर्श-क्षमता केँ' शास्त्रीयताक घून लागि जाइत। ई तँ नीक आ स्वस्थ-परंपराक-स्थापना, मैथिलीक भाषा-चरित्रक अनुकूल भेल। तकरा जड़-समूह द्वारा बूझब कठिन अछि। ओतय उदारता नहि, 'शैल्पिक कट्टरता' अछि। बहर-शास्त्र मे 'ठाकुर-समूह' द्वारा 'नवीन आविष्कार' की भेल, तकर खोजो धरि नहि भेल। जखन नव-कविता मे ई दुरभि-सन्धि नहि चलल, तँ गजल मे कोना चलत? सभ विधा समकालीन अछि, तँ एक विधा मे 'क्रान्तिकारी शैल्पिक परिवर्त्तनक' प्रभाव, दोसर विधा पर कोना नहि पड़ितय? गजल-शास्त्र पढ़ि-पढ़ि क' जे गजल लिखल जायत, से समाज आ प्रवहमान साहित्यक मुख्यधारा सँ स्वतः कटि जायत। जेना योगानन्द हीरा, बाबा बैद्यनाथ वा विजयनाथ झाक संग भेल अछि। ठाकुर-गुटक ई सपना दिवा-स्वप्न साबित भ' रहल अछि, कारण गजल 'पाछू मुँहे' शिल्पगत यात्रा नहि क' क', आगू मुँहे भावगत यात्रा' करत, सैह तार्किक परिणति थिक। ने तँ जड़मति-आलोचक दिस मुँहतक्की क' क' गजल लिखायत आ ने हुनकर मान्यता लेल फिरीशान होयत। आलोचकगण केँ बुझवाक चाहियनि जे- 'लीक छोड़ि तीनू चलय, शायर (शाइर नहि) शेर, सपूत!' कोनो विधाक प्रवाह, काल-सापेक्ष होइत अछि आ तकर मूल्यांकनो काल-सापेक्षे हेवाक चाही।

जड़मति आलोचक अनेरो तमसा क', हिंसक भाषाक प्रयोग करताह, तँ अपने कारी इतिहास लिखताह। मोजर लेल हड़बड़ायल 'अनचिन्हार लोक सभक ठकुर-सुहाती' चन्द्रमा पर थूकब थिक। गजल-शास्त्रक अरबी-फारसी-उर्दू-संस्करण तँ पुराने शिल्प थिक। आलोचानक नव प्रतिमान आ मानदण्ड कोन अछि, एहि गुट लग? नव-स्वरूपक मैथिली गजलक मूल्यांकन लेल, नव-निकष गढ़य-खोजय ई -गुट। मैथिलीक गजलकार, व्याकरणक अर्थ मे, परंपरावादी भ'क' तँ लिखबे ने केलनि। अपितु, कोनो अर्थ मे 'परंपरावादी गजल' लिखल नहि गेल अछि। पिछड़ल सोचक तँ जड़ आलोचके छथि, जे 'मध्य-युगक शिल्प' सँ, 'नव-तेवरक गजल' केँ नापि रहल छथि। पुरान फित्ता कखनहुँ टूटि जेतनि। वस्तुतः टूटि चुकल छनि। अइ रूपवादी-कलावादी जड़त्वक शिकार कोनो व्यक्ति वा गुट, कोनो 'बहर-जटिलता-मुक्त' गजलकार केँ 'लोथ' कोना कहतै? जे अपने 'पिछड़ल' छै, से 'प्रगतिशील-आवाजक' संग,

प्रतियोगिता कोना करतै? विधाक कोला सभक बीच-बीच मे, ऊँच-ऊँच हत्ता देब, साहित्यक विकास आ प्रवाह-विरोधी बात थिक। मुदा से, 'शैल्पिक परंपरावादी' कोना बुझताह? नहि बूझथ। गजल-लेखन 'निर्बन्ध' भ' क' चलैत रहत, कारण, से समय आ समाजक मांग थिक। लेखक अपन पाइ लगा क' पोथी छपबैत अछि मैथिली मे, तँ कोनो तरहेँ समाजक 'अपकार' नहि करैत अछि। समाजक 'सम्पन्न-वर्ग' साहित्य-संस्कृतिक कोनो दायित्वो ल' रहल अछि, मिथिला-समाज मे? के पोथी-प्रकाशन आ फिल्म-निर्माण मे पाइ लगा रहल अछि? दायित्वहीन आ पिछड़ल सोचवला लेखनक पर्याय बनब, आलोचक-सवंर्ग केँ शोभा नहि दैत अछि। तेँ आलोचना स्वस्थ, अग्रगामी सोच आ न्यूनतम मर्यादाक संग, हेवाक चाही। सैह स्वागतेय होइत अछि। तेँ, गजलकार केँ 'पार्श्वगामी जड़-आलोचनाक' कोनो टा परवाह नहि करवाक चाही। जनवादी-लेखन आमजनेक लेल होइत अछि, जाहि मे शिल्प मुख्य नहि होइत अछि। सुरेन्द्र नाथ जीक 'बहस' (कर्णामृत) केँ सेहो ताही रूप मे हम सभ लैत छी, (मैथिली गजलक पूँषत्वहीन आलोचना)। गजल केँ पुरातन-जड़-शिल्प सँ मुक्त भ', कथ्य-प्रधान भ' जनवादी चरित्र अपना क' मैथिल-समाज, भाषा साहित्य-कल्याणकारी भेनाइये छलैक, से भेलैक। आ से नव-गजलक स्वाभाविक विकास आ परिणति छल, कोनो दुर्घटना नहिं। नव-रूप मे गजल बेसी सार्थक आ समाजोपयोगी अछि।

•

मैथिली नारी-काव्य :
सी.सी. मिश्रा बीस, बुच्चीदाइ एकैस

मैथिलीक महिला लेखन एकटा निस्सन जमीन पर ठाढ़ अछि। एकर पृष्ठभूमि मजगूत छै। यात्रीजी स' ल' क' प्रो. हरिमोहन झा आ ललित-राजकमल स' ल' क' अधुनातन पीढ़ी धरिक लेखकगण नारी मोनक व्यथा केँ स्वर देलनि अछि। नारी-शोषण आधुनिक मैथिली काव्य आ कथा साहित्यक प्रमुख स्वर मे स' एक रहल अछि। मिथिलाक नारी कहियो सोन दाइ छल, कहियो बुच्ची दाइ छल, कहियो चानो दाइ भेल, कहियो 'अपराजिता' आ 'ललका पाग' के नायिका बनल, कहियो 'ननदि-भौजाइ' बनल, कहियो 'विधवा-विलाप' केलक, कहियो लिली रेक संघर्षशील नायिका बनल। कहियो डेग उठाब' वाली 'पारो' बनि क' ठाढ़ भेल, कहियो 'अगुरबाान'क सतमाय जकाँ परिस्थितिक 'दासिन' बनल रहल, कहियो 'मादा काँकोड़', त' कहियो 'अपना लेल' सीतापुरक सुनैना बनल। कहियो अपने बूनल जाल मे फँसल 'मकड़ी' जकाँ घुरियाइत, कहियो 'कायाकल्प' करबाक सपना देखैत आ कहियो मर्दवादी व्यवस्था मे 'दखल' दैत नारी, 'राँड़' होइतो जीवन के सुन्दर बनेबाक प्रयास करैत रहल। सीता आ सुनैनाक छवि तोड़ि, 'सुगिया' आ 'मौगिया'क विशेषण के पाछाँ छोड़ि, अहिबातक पातिल आ कोहबर-घरक बान्ह-छेक के औंठा देखा नारी 'बुच्चीदाइ चुप्प' स'"बुच्ची दाइ वाचाल' बनि गेली आ घोघ उतारि क' गामक चौबटिया पर आबि क' अपन सही रास्ता हेर' लगली। धानक भुस्सा जकाँ नहुँ-नहुँ जरैत, चैतक पछबा मे ठोर जकाँ फटैत बुच्ची दाइ के इहो चिन्ता नै रहलनि जे आब हुनका 'भरि देह गौरा' छन्हियों कि नै? असल मे हुनकर मौसमे कहिया एलनि? एक बेर जे 'प्रिया' बनली से सप्पत खा लेलनि जे 'नहि, आब नहि'...आब त' पिंकी दाइ, रोजी दाइ, साकांक्ष छथि जे कहीं हुनकर 'आाज्ञाडाला' पर विषधरक पोआ ने त' लोटा रहल छनि'? अपन जीवन-यात्राक प्रारूपक रेखांकन ओ अपने कर' चाहै छथि। आब ओ पुरना बात नै छै, 'से बात नै छै आब'।

मुदा परिस्थिति मे आयल ई परिवर्त्तन गाम आ नगर मे एक्के रंग

नै छै। ग्रामीण मैथिलानीक सफलताक प्रतिशत किछु कम छनि, शहरी मैथिलानीक सफलताक प्रतिशत किछु बेसी छनि। से बात स्वाभाविको छै। शहर बेसी साधन-सम्पन्न अछि, गाम मे बिजलीए नै रहतै त' टी.भी. कोना चलतै?

एहेन बात नै छै, जे नारीक सभटा विकास सही दिशे टा मे भेलैए। उपभोक्ता संस्कृति आ बाजारवादक शिकारो भेल अछि नारी आ तकर शोषण क' क' विकृत दिशा मे सेहो डेग बढ़ौलक अछि नारी। प्राचीन कु-संस्कार स' मुक्तो भेल अछि बहुत नारी आ आधुनिक संस्कारक विकृतिक चादरि ओढ़ि क' घी सेहो बहुत नारी पी रहल अछि। मुदा ओकरा तकर स्वतंत्रता भेटलैए तें ने एना क' रहल अछि? आब ओ स्वतंत्रताक अर्थ बुझैए आ कोनो क्रांति मे थोड़ेक विकृतिक गुंजाइश हैब ऐतिहासिक तथ्य छिए। तेँ आजुक नारी अपन धरती-आसमान, अपन सपना आ आकांक्षा, अपन व्यक्तिगत जीवन आदिक संदर्भ मे सोच' लागल अछि— से स्वागतेय अछि। आब ई फराक गप्प जे आधुनिक मानसिकता आ प्राचीन व्यवस्थाक टकराव स' उपजल अन्तर्द्वन्द्व मे 'परिवार' आ 'विवाह' नामक संस्था प्रभावित भ' रहल अछि। ई संतुलन, समायोजन-क्षमता, सहजीविताक सामर्थ्य पर निर्भर करैए जे 'परिवार आ विवाह' के कतेक सफलता भेटतै?

ई ग्रामीण आ नगरीय मिथिलाक नारी-समाजक आजुक परिस्थिति छी जे मैथिलीक साहित्यो मे आइ धरि पुरूष आ नारी लेखक-लेखिका अनलनि अछि।

मुदा अनेक अभाव जकाँ मैथिली साहित्य मे एकटा ईहो अभाव आइधरि छल जे मैथिलीक नारी-काव्य-स्वर संकलित नै भेल छल। कवयित्री लोकनिक काव्य-संग्रह छपल छल व्यक्तिगल रूपें, मुदा संग्रह-रूपें नै। एना नै हेबाक साहित्यिके कारण रहल।

हाल धरि मैथिलीक कएटा पुरूष साहित्यकार मानैत रहला जे मैथिलीक नारी-लेखन पुरूषेक कलम धरि आ गोटपगरा महिला साहित्यकार धरि सीमित अछि। नारी द्वारा नारी पर कलम चलेबाक परंपरा वस्तुतः मैथिली मे विलम्ब स' प्रारंभ भेल। कथा-साहित्य मे ओतेक विलम्ब नै भेल, जतेक काव्य-सृजनक क्षेत्र मे, कथा मे लिली रे असगरो बहुत काज केलनि। मुदा काव्य-क्षेत्र मे ततेक जमि क' काज करयवाली कवयित्रीक अभाव रहल। तें राजमोहन झा महिला-लेखन आ पुरूष-लेखन के अलग-अलग मान्यता

देबाक लेल तैयार नै छथि- 'आरंभ' क संपादकीय लेख मे।

महिला द्वारा महिला-लेखन केला स' पुरूष द्वारा लिखल सार्थक नारी-साहित्यक महत्व कम भ' जाइ छै वा ओ दोयम दर्जाक लेखक बनि जाइत छथि— से मानब अनुचित आ कठिन अछि। अनुभूति आ अनुभवक मौलिकता वा दोयमता अइ बात पर निर्भर करैत अछि, जे लेखक वा लेखिका नारी-मन मे कतेक डूबि क' वा कोन तरहक भोगना भोगि क' कलम पकड़लक अछि। ओकर जीवन आ लेखन मे जतेक इमानदारीक प्रतिशत रहतै, ततेक मौलिकता ओकर सृजित साहित्य मे हैते। कवि आ कवियित्रीक व्यक्तित्व मे कतेक तरलता अन्तर्निहित छै— सैह सर्वाधिक महत्व रखैत अछि, आब्जेक्टिव व्यक्तित्व वला कविक अनुभव 'दोयम दर्जा'क भैए ने सकैछ। असल मे दोयम दर्जावला आरोपे लिंगवादी छी, जाहि स' समस्त साहित्यकार संवर्ग (कवयित्री समेत) के मुक्त हैब आवश्यक अछि। सबजेक्टिव कवयित्री प्रायः शेफालिका वर्मा जकाँ नोर-काव्य लिख' लगतीह आ मात्र भावुकताक चित्रण करतीह।

तेँ मैथिलीक नारी-काव्य के दलितवादी नजरिया स' देखब अत्यंत अन्यायपूर्ण बात छी। नारी एकटा पैघ दलित होइ छथि अपना सामाजिक व्यवस्था मे। मुदा हुनकर जीवनक कल्याण दलितवादी आवधारणा-सन अंश-सत्य मै नै छनि, अपितु मार्क्सवादी आ समाजवादी अवधारणा-सन सम्पूर्ण विचारधारा मे छनि, जाहि मे दलितवादो सम्मिलित अछि। दलितवाद मिथिलाक नारी-समाज केँ आरक्षणक वैसाखी द' सकै छै, मुदा सम्पूर्ण मानवीय गरिमा, मान्यता आ संघर्षक सुगंध मार्क्सवादे टा देबा मे सक्षम अछि। आइ भारतीय दलितवाद के दक्षिणपंथ आ प्राचीन व्यवस्थाक माध्यमे सुविधा-भोग मे कोनो दिक्कत नै भ' रहल छै। आ ओना दलितवाद अपन शास्त्र आ रूपरेखोक निर्धारण एखनधरि नै क' सकल अछि। ओना दक्षिणक मराठी साहित्य मे, जे कि दलिवादक गढ़ आ जन्म स्थान रहल अछि— एम्हर मार्क्सवाद-गाँधीवाद आ दलितवादक समन्वित दृष्टिकोण विकसित भ' रहल अछि— जे एकटा नव आ नीक बात थिक। मार्क्स-गाँधी-अम्बेदकर-लोहियाक नाम एक संग लेल जा रहल अछि। 'पहल' के एक अंक मे एकटा मराठी साहित्यकार गछलनि अछि जे अइ तथाकथित उत्तर-आधुनिकताक युग मे उत्तर-आधुनिकताक धुंध मार्क्सवादे छांटि सकैए आ एक शताब्दी धरि

मार्क्सवादक प्रासंगिकता मे एखन कोनो कमी नै आब' जा रहल अछि।

तेँ मैथिलानी के आरक्षणक जरूरति रहितो, आरक्षणक झुनझुन्ना टा स' मैथिलानी संतुष्ट नै भ' सकै छथि। तेँ मैथिलीक कवयित्री जे मात्र दलितवादी हेती, अपन काया छोट करतीह। जे सम्पूर्ण रूपें मार्क्सवादी हेती, अपन काया पैघ बना लेतीह। जे मात्र नारीवादी हेती, अपन काया छोट करतीह। जे नारी-जीवनक संग समस्त जीवन आ जगतक व्याख्या करती, अपन काया पैघ बना लेतीह। कवयित्री के सोचबाक छनि जे हुनकर प्रतिपाद्य (विषय-बस्तु) की हेतनि, कतेक सीमित वा विस्तृत हेतनि? ओ व्यक्ति के ल' क' चलती वा समष्टि के वा दुनू के?

आब मैथिलीक नारी-काव्यक कवयित्रीक विकास-क्रम देखू। अइ ठाँ हम गीत-काव्य आ गजल-काव्यक चर्चा नै क' क' मात्र नवकविताक चर्चा कर' चाहब। इलारानी सिंह(विन्दन्ती), नीरजा रेणु (आगत क्षण ले), शेफालिका वर्मा (विप्रलब्धा), वाणी मिश्र (अमर वाणी), सुस्मिता पाठक (परिचिति), ज्योत्स्ना चन्द्रम् (स्वप्नगर्भा), शारदा झा (प्रेम कविताक बाद) विभा रानी, मौसमी मुखर्जी, कामिनी, नूतन चन्द्र झा, वन्दना झा, माला झा, शैल झा 'सागर', रोमिशा वत्स, कुमारी विद्या, मुक्ता, नन्दिनी पाठक, निक्की प्रियदर्शिनी, बिजेता चौधरी, स्वाती शाकम्भरी आदि नाम काव्य-क्षेत्र मे रेखांकित कैल जा सकैछ।

ई कवयित्रि लोकनि अपन-अपन भाव-भंगिमाक प्रदर्शन अपन-अपन काव्य मे केलनि अछि। हिनका लोकनिक भाव-भंगिमा गैर-पारंपरिक छनि। मैथिली कवयित्री आ महिला-काव्यक विकास-क्रम के आधार बना क' कवयित्री सबहक चर्चा भेल अछि।

हिनका सभक कविता सभ मे स्त्री-पुरूष-संबंध, पुरूषवादी व्यवस्थाक प्रति विक्षोभ आ विद्रोह, नारीक दुर्दशाक चित्रण आदि उभरि क' आयल अछि। संघर्षरत नारी समुदायक बाह्य-जीवन-संघर्ष आ अन्तर्मनक अन्तर्द्वन्द-दुनू हिनका लोकनिक काव्य मे आयल अछि। जीवनक प्रति उत्साह आ वेबसीक कछमछी दुनू कवयित्री लोकनिक काव्य मे भरल अछि। नव पीढ़ीक कवयित्री पुरान पीढ़ीक कवयित्री स' बेसी जमलीह अछि, सेहो स्वाभाविके। पुरान पीढ़ीक कवयित्री लोकनि केँ खाली स्त्री-पुरूष सम्बन्ध छलनि— जेना इलारानी सिंह, नीरजा रेणु आ वाणी मिश्रक काव्य मे। मुदा नव पीढ़ीक कवयित्री सम्पूर्ण जीवन (नारी-जीवन समेत) आ जगत के काव्य-विषय

बनौलनि अछि— जेना शारदा झा, नूतन चन्द्र, सुस्मिता पाठक वा मौसमी मुखर्जीक कविता मे। विभारानी व्यक्ति स' समष्टि धरिक यात्रा केलनि अछि। ईहो स्वाभाविके जे दक्षिणपंथी परिवार (थीसिस) मे वामपंथी कवयित्री (एन्टी-थीसिस) क जन्म हेबाक कारणे, प्रगतिशील आ जनवादी काव्य (सिंथेथिस) केर सृजन आ आविर्भाव होअ' लागल अछि। नारी द्वारा रचल गेल नारी-काव्य मे विद्रोह-भाव स्थायी भाव बनि गेल अछि, आ से ज्योत्स्ना चन्द्रम्, सुस्मिता पाठक वा कामिनी आ शारदा झाक काव्य मे जमि क' आएल अछि।

तेँ कविगण द्वारा रचल गेल नारी-काव्य वा कवयित्रीगण द्वारा रचल गेल नारी-काव्य मे (मैथिलीक प्रसंग मे) अनेक स्तर पर स्वाभाविक अन्तर अछि। मुदा दुनूक महत्त्व अक्षुण्ण अछि। जेना कोनो क्रांतिक लेल पृष्ठभूमिक अन्यतम महत्त्व होइछ, तहिना महत्वपूर्ण कविगणक मैथिली नारी-काव्य आ नारी-कथा आछि। आ जतेक फलप्रद क्रांतिक मधुर फल होइछ, से आजुक मैथिली 'नारी-काव्य' थिक।

अर्थ-गाम्भीर्य, कथ्य आ काव्यक तेवर नव-कवयित्रीगणक प्रशंसनीय अछि। मुदा अर्थ आ भावक लयात्मकता प्रायः हिनका सभ मे खण्डित भेलनि अछि। पुरान पीढ़ीक कवयित्री सभ रामायण, महाभारत, पुराणक मिथकीय उपयोग केलनि अछि, जखनकि आधुनिका कवयित्री सभ आधुनिक जीवनक प्रतीक सभ केँ चुनलनि अछि अथवा सोझ-सपाट ढंगे वक्तव्यपरक, वैचारिक-प्रधान काव्य रचलनि अछि। काव्य-कलाक उत्कर्षक एखन अनेक कवयित्री सभ मे अभाव छनि। से क्रमशः आबिए जेतनि। मैथिलीक साधनहीन काव्य-क्षेत्र मे सुदीर्ध पारी खेलेबाक शुभकामनाक संग, कवयित्री लोकनिक स्वागत करैत, अपार हर्ष भ' रहल अछि।

•

समकालीन मैथिली कविताक व्याकरण

प्रायः सभ समकालीन नव-कविक आत्म-कथ्य, जे हमरा लोकनि केँ पढ़बा लेल भेटैत रहल अछि, ताहि सँ काव्य-सम्बन्धी हुनक टटका अवधारणा आ दृष्टिकोण पाठक केँ स्पष्ट होइत अछि। कविक दृष्टिकोण सँ हुनक काव्य-सृजन, लेखनक रणनीति, सोद्येश्यता आ भाषा-नीति सेहो पाठक केँ सु-स्पष्ट होइत छै।

तेँ समकालीन कविताक व्याकरण आ ककहरा सदा-सर्वदा सँ 'बहु-विवादित' रहल अछि। ओना त' काव्यक कोनो टा ककहराक पूर्ण-रूपेण स्थूल-निर्धारण, सर्वमान्य रूप मे संभव नहि अछि, आ ने तकर कोनो स्थायी-प्रक्रिया वा व्याकरणक स्थायी प्रारूपक मानकीकरण संभव अछि। काव्य-सृजन सन नैसर्गिक, सोद्येश्य आ आनन्दपूर्ण प्रक्रिया केँ कोनो 'वैयाकरणी-गछाड़ मे गछाड़ब' ओतबे कठिन आ अन्यायपूर्ण अछि, जतेक जीवन-प्रवाह' केँ हरी मे ठोकब! जखन भाषाक व्याकरण प्रगतिशील आ परिवर्त्तनशील होइत अछि (जे पाणिनिक अष्टाध्यायी-व्याकरण छल, से पतंजलिक महाभाष्य नहि रहल) तखन 'कविताक व्याकरण' जँ स्थायी रूप-आकार ग्रहण क' लेत, त' कविताक थोभाएल पानि महकारी भ' जायत! तेँ काव्य-प्रवाह केँ 'वैयाकरणी' खुट्टा मे खुटेसब, मात्र अस्थायी भ' सकैत अछि।

मुदा तथ्य ईहो थिक, जे सभ युग मे कविताक प्रतिमान आ व्याकरणक एकटा 'मानक ककहरा' होइत रहल अछि, ताहि परंपरोक अस्तित्व केँ नकारल नहि जा सकैछ। मैथिली कविताक आदि, मध्य आ आधुनिक काल मे, काव्यक प्रतिमान आ व्याकरण सतत् प्रवहमान आ प्रगतिशील रहैत आयल अछि। सुदीर्घ अन्तराल मे, अनेकानेक उद्भट विद्वान अपन-अपन मान्यता प्रकाशित करैत रहल छथि। भारतीय वाङमय मे, संस्कृत साहित्यक काव्य-शास्त्र आ रस-शास्त्रक जे सुदीर्घ परंपरा स्थापित रहल अछि, सैह मैथिलीक काव्य-शास्त्रोक आधार-स्तंभ रहल अछि आ अंशतः आइयो विद्यमान अछि। काव्य मे (अंशतः गद्यो मे) रस-परिपाकक संस्कृत-काव्य-शास्त्रीय नियमावली, रस-सिद्धान्त वा रस-शास्त्र, केँ मैथिलीए

काव्य-शास्त्र नहि, अपितु समस्त भारतीय भाषाक काव्य-शास्त्र, हृदय सँ आभार व्यक्त करए लेल बाध्य अछि। मम्मट आ पंडितराज जगन्नाथक 'काव्य-शास्त्रीय रस-निष्पत्ति आ वर्णना' भारतीय, संस्कृत आ मैथिलीक काव्य-व्याकरणक अक्षय निधि थिक, जकरे प्रगति मे, कालान्तर मे, अन्य उद्‌भट विद्वान आ कविगण अपन-अपन योगदान द' काव्य-प्रवाह आ रस-प्रवाह' केँ अग्रगामी बनौलनि! नओ रसक क्रम-निर्धारण, महत्व आ प्रासंगिकताक प्राथमिकता-निर्धारण, फेर दसम रसक सृजन आ स्थापना, सभ किछु भेल अछि, काव्य आ काव्यालोचना साहित्य मे, से इतिहास-सम्मत तथ्य थिक। मुदा तैओ काव्य-सृजन (समकालीन आ आधुनिक) प्राचीन काव्य-शास्त्रक, 'जड़ दास' नहि बनल! काव्य-सृजनक प्रक्रिया त' एक कवि सँ दोसर कविक मनो-मस्तिष्क मे परिवर्त्तित आ अन्तर्भूत होइते रहल, काव्य-प्रवाहक निरंतर विकास होइत गेल, रस-निष्पत्तिक लीक सँ वाम-दहिन होइत-होइत! एतावता आधुनिक समकालीन समाज आ काव्य-साहित्य मे, रस-शास्त्र, 'बन्धन'क रूप मे विद्यमान नहि अछि, अपितु कविता अपना सुविधा सँ रस-शास्त्रक 'उपयोग आ प्रयोग' करैत अछि! काव्य-सृजन-प्रवाह मे, से बहुत पैघ विकास आ सकारात्मक परिवर्त्तन थिक।

तेँ, समकालीन कविताक व्याकरण आ ककहरा, आजुक दुनियाँक चुनौती सभ केँ देखैत, की आ केहेन हेबाक चाही, से एकटा ज्वलंत प्रश्न थिक! एहि विषय पर गंभीर मतभेद आ 'मुण्डे-मुण्डे-मतिर्भिन्ना' हएब अवश्यंभावी छल आ से भेनाइ मैथिली काव्य-साहित्य लेल शुभ आ प्रगतिशीलताक पथ-प्रवर्त्तक प्रमाणित भेल अछि। तर्कसंगत मत-भिन्नता मैथिली कविताक बहु-आयामी विकास मे पैघ भूमिका अदा केलक अछि! काव्य-शास्त्र-सम्बन्धी प्राचीन-रूढ़, छन्दवादी मान्यता सभक प्रतिरोध भेला सँ रूढ़ि आ जड़ता खण्डित भेल अछि आ काव्य-सरिता अपन नव-नव रस्ता चुनलक अछि, जाहि सँ मैथिली कविता धनीक बनल अछि। नव पीढ़ी अपन एहि आस्थाक संग काव्य-यात्री बनैत अछि, जे कविताक व्याकरण आ वर्णमाला अपन स्वरूप आ स्वभाव केँ 'रुढ़' नहि होम' देत आ अपन 'जड़िआइत सीमाक' ध्यान रखैत वा तकरा 'तोड़बाक क्षमता'क प्रदर्शन करैत, काव्य-सृजन प्रक्रिया मे नित नवीन योगदान करैत रहत। साहित्य आ समाजक अन्तर्सम्बन्धक अभिज्ञान सँ लैस भेल समकालीन कवि, 'अनेरोक

मनोरंजन-काव्य' नहि लिखैत अछि आ– 'स्वान्तः सुखाय रघुनाथ गाथा' वा 'नख-शिख-नायिका-वर्णना' त' साढ़े पाँच सय वर्ष पहिनहि पाछाँ छूटि गेल! वस्तुतः समाजोपयोगी काव्ये शाश्वत होइत अदि, जकर कथ्य आ अर्थ-गांभीर्य, शिल्प सँ बेशी सदा प्रासंगिक बनल रहैत अछि। तेँ काव्यक जे 'प्रसादगुण' काव्यक वाह्य-स्वरूप मे गुंफित रहैत छल वा मानल जाइत छल, से काल-क्रमे उचिते स्थान परिवर्त्तन क' काव्यक अन्तरात्मा मे (कथ्य-रूप मे) अन्तर्लीन भेल आ मानल जाय लागल, से कविताक प्रसाद-गुणक, सही दिशा मे सही यात्रा छल आ तकरा बूझि आजुक कवि अपन 'सार्थक' काव्य-यात्रा आरंभ करैत छथि। तेँ कविताक व्याकरण जे मैथिली-काव्य-साहित्यक आदिकाल मे छल, से आधुनिक-काल मे नहि रहल! आ जे आधुनिकताक आरंभ काल मे छल, से आजुक समय मे अत्यधिक परिवर्त्तनक संग आगू बढ़ि गेल अछि।

आजुक मैथिली कविताक मूल-स्वर प्रतिरोध संघर्ष आ जीवनक प्रति बदलैत मूल्य आ दृष्टिकोण अछि। जीवन केँ अपन सम्पूर्णता आ सोद्देश्यता मे उचित सौन्दर्य-बोधक संग देखब, आजुक कविताक प्रवृत्ति थिक। जीवनक उत्ताप आ सकारात्मक दृष्टिकोण, सामाजिक संवेदना आ सरोकार, कविताक सामाजिक दायित्वक अभिव्यक्ति, संघर्षशीलताक जय आ तकर संग जीवनक जटिलता एवं सौन्दर्य-बोध, हुनक अन्योन्याश्रितता आदि आजुक कविताक विविध अवश्यंभावी स्वर, प्रवृत्ति, स्वरूप आ आवश्यक शर्त्त थिक!

समकालीन मैथिली कविताक 'मोड़-बिन्दु' किरणजी, यात्रीजी, किसुनजी आ राजकमल चौधरीक काव्य सँ एकहि संग भेल। जीवन आ जगतक प्रति एहि तीनू महाकविक आधुनिक अवधारणा मैथिली-काव्य-संसार मे नव रूप मे, नव कथ्यक संग अत्यंत प्रभावशाली ढंगें आयल। एहि सँ पहिनहुँ अनेकानेक 'मोड़-बिन्दु' आयल छल। जेना महाकवि विद्यापति, चन्दा झा आ भुवनजी, सीताराम झा आदिक काव्य सँ। मुदा यात्री-राजकमलक काव्य अत्यधिक चमत्कारपूर्ण आ चमकदार छल, ताहि मे कोन सन्देह! तकर बादो सोमदेवक सहजतावादी मोड़, मायानन्द मिश्रक अभिव्यंजनावादी मोड़, जीवकान्तक प्राकृतिक जनवादी मोड़, कुलानन्द मिश्र-सुकान्त सोम-महाप्रकाश-हरेकृष्ण झाक वैचारिकी मोड़, कीर्त्ति नारायण मिश्रक तदर्थवादी आर प्रतिबद्धतावादी मोड़ आयल छल। अग्निजीवी पीढ़ीक कविगणक

'अग्निजीवी' मोड़, आयल। तखन फेर आजुक अत्याधुनिक कए कवि अपना ढंगें, मैथिली कविता केँ मोड़ देबाक लेल सक्रिय छथि, जे कि 20म सदीक नवम दशक आ बादक छथि। एहि कविता केँ आधुनिक-कविता, नव-कविता, समकालीन कविता कहल जाइत अछि। शिल्प (रूप-विधान) भाव (दृश्य-संसार) स्वरूप, त्वरा आ आवेग, प्रभावान्विति, सम्प्रेषणक डिग्री, सहजता आदि सभ स्तर पर, ई पूर्वक पारंपरिक 'जीर्ण-जड़-काव्य' सँ एकदम्मे अलग छल। तेँ नव-कविताक नाम पर नक-घोंकचीक बेमारी सँ ग्रस्त प्राचीनतावादी मानसिकताक व्यक्तिक परवाह करबाक कोनोटा बेगरता नहि अछि। जिनका 1932 ई. क 'अपन' 'दिशा' मे 'आशा' बुझाइत होइनि, तिनकर, नव-कविताक प्रति निराशा सहजहि बूझल जा सकैछ। जे एकैसमो सदी मे 'ठाँहि-पठाँहि' 'विषवमन' करैत छथि, तिनकर काल-निर्णय स्वतः भ' जाइत अछि आ कविता, प्राचीन शिल्प मे खाँखड़ साबित होइत अछि। समकालीन मैथिली कविता अपन समृद्ध काव्य-परंपराक अनेक वस्तु आ तत्वक नव रूप मे विकास क' नव-नव संस्करण प्रस्तुत केलक अछि। विद्यापतिक काव्य मे जे जीवनक प्रति दृष्टिकोण अछि, जीवनक विद्रुपताक सजीव चित्रण अछि, तकर ऋण सँ समकालीन मैथिली-काव्य कोना उऋण भ' सकैछ? एकरा एकटा उदाहरण सँ स्पष्ट करए चाहब। लोकधर्मी कवि विद्यापतिक पाँति अछि— 'जनम होअओ, जनु जौं पुनि होय, जुवती भए जनमओं जनु कोय।' आब देखू जे आजुक समाज आ कविता मे नारी-शोषणक चित्रण अइ पाँतीक कतेक ऋणी अछि। तेँ पारंपरिक कविता मे नुकायल समृद्ध वस्तु आ परंपरा केँ ल' क' ओकर विकास करबाक, नव तत्व आ अन्तर्कथ्यक संधान करबाक, दुनूक जरूरति अछि। निस्संदेह दुनू स्तरक काज करैत, आँखि हमर अपनहि रहत। संगहि, 'गन्हायल जीर्ण-काव्य 'आ 'पारंपरिक काव्य'मे नुकायल समृद्ध वस्तु परंपराक अन्तर केँ बुझबाक अवगति अवश्य चाही। आजुक कविता मे 'लोक-कल्याण' प्रमुख तत्व होइत अछि, जखनकि पूर्व-रागवला काव्यक मुख्य प्रयोजने 'लोक-रंजन' होइ छल!

साबिक युग मे प्रेम-शृंगारक सपाट वर्णनक उद्देश्य की होइ छल? नायिका-वर्णन मे लोक-रंजन, स्वान्तः सुखाय आ रस-वर्णना सँ मानसिक रास-रंग, बस्स! आ ओही वस्तुक जखन आजुक प्रेम-कवि, आधुनिक ढंगें उपयोग करैत अछि, त' जीवनक स्पंदन सँ भरल-पुरल उपमा-उपमान वा

आधुनिक बिम्ब-विधान आ ताहि युगक कविता सँ फराक-स्वरूप, आजुक कविता उपस्थापित करैत अछि, जाहि मे जीवनक सौन्दर्य-बोध, संघर्ष, स्पन्दन आ संवेदना उपस्थित रहैछ। विद्यापति आ ज्योतिरीश्वरक नायिका-वर्णना हमर थाती थिक, जकर न्यों पर कतेको उपलब्धि आ विकास हम सभ कएल अछि। एक सय पारंपरिक वसन्त-वर्णन केँ मोन पाडू आ किरणजीक 'के बताह कवि भाङ पीबि, स्वागत वसन्त अछि गाबि रहल?' केँ मोन पाडू! विद्यापतिक 'कण्टक मांझ कुसुम परगास, भँवर विकल, नहि पाबय पास' केँ मोन पाडू आ राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' क' दीर्घ-कविता 'नहि, आब नहि' मे प्रेमक उत्ताप केँ वा हमर 'न्यूट्रॉन बम निर्जीव नहि बना सकत हमर लेखनी केँ (प्रेम-कविता) मोन पाड़ल जाय वा आने कोनो आधुनिक प्रेम-काव्य केँ मोन पाड़ल जाय! विद्यापतिक राधा-विरह वा मधुपजीक 'राधा-विरह' आ आजुक कोनो कविक 'विरह-काव्य' केँ एक्के ठाम राखि, ई अन्तर सहजहिं स्पष्ट कयल जा सकैछ, जे पारंपरिक काव्यक कोन 'न्यों' पर आजुक अँखिगर कवि केहेन 'भवन' ठाढ़ केलनि अछि? वस्तुतः एहि ढंगक मानक शोध आ आलोचना-अन्वेषण एखन भेवे कहाँ कयल अछि मैथिली मे? समकालीन कविता मे (विशेषतः 20म सदीक अन्तिम दशक आ एकैसम सदीक एखन धरिक) जीवन, समय आ साहित्यक प्रति आस्था आ विश्वासक स्वर एतेक देखार आ गहींर अछि, जे एकैसम शताब्दीक समयक आ समाज मे अपन हस्तक्षेप प्रासंगिक बनाक' अबस्से राखि सकत। हमरा लोकनिक पीढ़ीक कविता टन-टन बजैए आ ओकर प्रतिध्वनि कान मे 'गूँज' उत्पन्न करैए, जखन कि प्राचीनतावादी पीढ़ीक कविता गोङ आ एकरस होइ छल आ होइए। संकेतक मात्र। ओइ मे कए तरहक 'बोल्डनेस' आ सकारात्मकताक अभाव अछि। सामाजिक विकृति, प्राचीनतावादी आ नवतावादी दुनू पीढ़ीक कविता मे अबैत अछि। मुदा समाधान-संकेत मात्र विकृतिक 'सपाट वर्णन' अछि। कथाकाव्य मे कथात्मकता आ तुकबन्दी हावी अछि आ 'काव्यात्मा' (कथ्य वा थीम) निपत्ता छल। काव्य तत्व एतेक कमजोर आ निरसल जे छन्द-ताल-तुकबन्दीक 'हठयोग' बिना कवि केँ कविता जमबाक भरोसे नहि होइत छल।

मानवीय मूल्यक प्रति प्रतिबद्धता, समष्टिगत दृष्टिकोण, इतिहास आ परंपराक मूल्यांकन-क्षमता, जनवादी नजरिया, बहुजन समाजक जीवनक विविध आयामक कविता मे समावेश, माटि पर छिड़ियायल जनवादी

सांस्कृतिक तत्व सभक समावेश, कथ्यक पिजाओल धार आ काव्यक ऊपरी स्वरूप मे उभरैत परिवर्त्तन आदि, एहेन तत्व थिक, जे नव-शताब्दीक काव्य मे स्पष्टतः दृष्टिगोचर अछि। जीवनक जटिल चुनौतीए जकाँ, आजुक कविक काव्य केँ गोलबन्द होइत, समवेत स्वरक आगू-आगू चलवाक साधंस छै, आँखि आ अन्तर्दृष्टि सेहो छै। भविष्यो मे आजुक कविताक प्रासंगिकता बनल रहबाक ई प्रबल कारण थिक, जे नव-नव जटिल समस्याक आक्रमणक सामना सफलतापूर्वक क' सकैत अछि आ समाज केँ दिशाबोध सेहो करा सकैत अछि। से समस्या सभ थिक—नव ढंगक आर्थिक उप-निवेशवाद, उत्तर-आधुनिकता-सम्बन्धी-समस्या, एलेक्ट्रोनिक आ सूचना-तंत्रक आक्रमण, भूमंडलीकरण, हथियार-संस्कृति, सामन्ती-पूँजीवादी अवशेष द्वारा बूनल जा रहल नव प्रकारक दासत्व-जाल, अनियोजित विकासक कुप्रभाव, संवेदन-संस्कृति पर कट्टरताक संस्कृतिक आक्रमण, जाति-सम्प्रदाय-नस्लभेद आदि! आधुनिक पीढ़ी लग ओ आँखि छै, जे अइ सभ चुनौतीक संज्ञान ल' सकैत अछि। पूर्व-पीढ़ीक बचल-खुचल कवि सँ, आब कोनो नव आ बेशी आशा नहि कयल जा सकैछ, अर्थात हुनका लोकनिक काव्य मे ओइ तत्व सभक नितांत अभाव अछि जे विद्यमान शताब्दीक चुनौती सभक सक्षमतापूर्वक सामना क' सकय। आब ओ सभ अपन नव छवि स्थापित नहि क' सकताह, अपन परंपराक अनुरूप काज करैत रहताह!

वर्त्तमान-काल मे अनेक पीढ़ीक कवि एक संग सृजनरत छथि। हमरा लोकनिक पीढ़ीक 'सीमाक संख्या' पूर्व-पीढ़ीक कविगणक अपेक्षा न्यूनतम अछि। तथापि मोटा-मोटी एकटा पैघ सीमा अथवा अभाव ई अछि जे काव्य मे नागर ओ दलित-जीवन प्रमुखता सँ नहि आबि रहल अछि। आजुक कविता मे नारी-जीवनक दंश त' खूबे आबि रहल अछि, मुदा विभिन्न प्रकारक पिछड़ल आ सर्वहाराक जीवनक विभिन्न प्रकारक दर्दक अनुभूतिक अनुपस्थित रहब, समाज-समय-साहित्य-कविता, सभक लेल दुःखद आ चिन्ताजनक थिक। वर्त्तमान शताब्दी नारी आ 'वास्तविक दलितक' थिकनि, से निस्संदेह कहल जा सकैछ। तेँ एहना स्थिति मे तकर चिन्ता समकालीन मैथिली कविता केँ करबाक छैक। फेर काव्य मे ऐतिहासिक आ राजनैतिक चेतना आनब समयक मांग थिक। आइ हम सभ छटपटा रहल छी जे काव्य मे नव बिम्ब-विधानक रचना कोना हो? काव्य-तत्व केँ सुरक्षित रखैत,

सहजताक प्रतिशत कोना बढ़ाओल जाय? ई सभ चिन्ता आंङुर पर गनल कविएक दिमाग आ कविता मे रूपायित भेल अछि। गाम आ शहरक दर्दक संतुलित चित्रण, नव-संस्कृति-बोधक संग हो-से आवश्यक अछि। जीवन केँ 'लीड' करएवला विधा साहित्ये थिक। समुचित वैज्ञानिक दृष्टिकोणक काव्य मे समावेश हएब एखन शेष अछि, जे कि अपरिहार्य अछि। समाजशास्त्रीय आ मनोवैज्ञानिक तत्वक आधुनिक काव्य मे प्रदर्शन आवश्यक अछि, जे जमिक' हेबाके चाही। कविताक नेपथ्य मे अन्तर्निहित यथार्थ-संसार पर बहस हेबाक बेगरता छैक। कविता जतेक अभिजात-वर्ग सँ दूर हैत, आमजन सँ जतेक नजदीक हैत, ततेक दीर्घजीवी हैत। तेँ आम लोकक दर्द-पीड़ाक अभिव्यक्ति, काव्य केँ 'तृणमूलीय' बनबैत अछि आ 'मनोरंजन-हास्य-तुकबन्दी प्रधान अभिजात-वर्गीय कविता' 'गगन-विहारी' बनि हवा मे उड़ि जाइत अछि।

समकालीन काव्य मे अल्प-उपस्थित रहयवला अगिला कारक थिक, मुक्तक-काव्यक स्वरूप मे क्रमिक परिवर्त्तनक गद्यात्मक शिल्पक विकास, जे कि पाठकीयताक आकर्षण आ प्रगति लेल जरूरी अछि। हमर अग्रज पीढ़ीक एहि शिल्प केँ धन्यवाद दैत, आब 'बाइ-बाइ' करबाक समय आबि तुलायल अछि। मुदा काव्यक आत्मा सुरक्षित रखबाक शर्त्त पर! कविताक सुदीर्घ जीवन आ सु-स्वास्थ्य लेल, ई 'रिमोडलिंग' करबाक बात समय आ जीवनक जटिलता पाठकीयताक ह्रासमान परिस्थिति देखैत, करब जरूरी अछि।

कविताक निष्पक्ष समीक्षा आलोचना एखनो पूर्णरूपेण अनुपस्थिते अछि, जकरा अभाव मे नियंत्रित आगिक बिना सोना-चमकि नहि पाबि रहल अछि। प्राध्यापकीय 'एकेडमिक निबंध,' राजमोहन झा ब्रान्ड अनावश्यक विशेषणी चकाचौंधवला पक्षपाती संपादकीय, कएटा आन समीक्षकक असंतुलित समीक्षा सँ से तत्काल संभव नहि बुझाइए! राजमोहन झा एकबेर बजलाह जे साहित्यक बदौलत कोनो क्रान्ति, परिवर्त्तन वा सामाजिक आन्दोलन नहि कयल जा सकैए। ओ नव-कविता नहि बुझै छथि, तेँ नव-कविताक समीक्षा नहि लिखैत छथि, मुदा अपन पत्रिका 'आरंभ' मे धुरझाड़ छापलनि अछि। एकठाम से गछैत छथि आ दोसर ठाम विवेकानन्द ठाकुरक काव्यक 'संपादकीय' मे एकभगाह प्रशंसा छापलनि। केहेन विरोधामास अछि? तेँ उचित समीक्षा आलोचना, ने त' विद्वानक 'सुच्चा पारंपरिक दृष्टिकोण आ सर्वेक्षण-मात्र' सँ भ' पाबि रहल अछि, ने त' स्व.

जीवकान्तजीक सूत्र-शैली सँ भ' सकल, ने अनेक विद्वानक गुटबन्दी-कूटनीति-आधारित लेख' सँ भ' सकल आ ने अनुज-पीढ़ीक 'अनलकांती-तिकड़म-प्रेरित 'अंतिकाब्रान्ड-आलेख आ 'दुष्ट आलोचना-टाइप संपादकीय' सँ। तखन मिथिलाक माटि त' एखन काक-बंझा नहिए भेल अछि। अग्निपुष्पजीक नाम गनेबाक शैलीक समर्थन त' नहिए कयल जा सकैछ। कोनो नव कविक विशेष योगदानक प्रवृत्ति, (काव्य) शैली, शिल्प, कथ्य, भाव-भंगिमा, वैचारिक प्रगतिशीलता आ प्रतिबद्धता-आधारित बहस हेबाक चाही। बीसम सदीक अन्तिम दशकीय सक्रिय कविगण, जे अनेक पीढ़ीक छलाह आ तहिना एकैसम सदीक दू दशकीय सक्रिय कविगणक काव्य-प्रवृत्ति आ क्रियाकलाप, संज्ञान लेबा योग्य अछि। कविगणक काव्य-दृष्टि, जीवन-दृष्टि, समकालीन समय आ समाज, जीवन आ काव्यक समक्ष ठाढ़ संकट आ चुनौतीक जे कवि जतेक बहादुरीपूर्वक सामना करताह, तिनकर नामक खुलासा आजुक प्रतिनिधि कविक रूप मे काल्हि हएत। समय स्वतः क' देत। किछु पहिने तक, नवागन्तुक पीढ़ीक गोटेक-आधेक कवयित्रिक स्थिति नैराश्य उत्पन्न करैत छल। ओ लोकनि हिन्दीक मानदण्ड, हिन्दी-कविता आ हिन्दी पाठकीयता सँ प्रभावित करबाक प्रयास करैत छलीह। मैथिली-मिथिला-प्रेमक प्रतिशत, हुनकर व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा (हिन्दीक चमक-दमक) तर दबल छलनि।

एना पूर्व-पीढ़ीक कएटा कवि सेहो केलनि, कोनो विशेष फायदा (नागार्जुन-राजकमल-रेणुक अलावें) ककरो नहि भेलनि। नवागंतुक केँ अपन 'भाखा-नीति' पर 'विद्यापतिक भाखा-नीतिक' आधार पर पुनर्विचार करबाक छलनि। ओ सभ सबेर-सकाल अपन 'अहं' केर शिकार सेहो भ' जाइत छलाह। मैथिलीक सुच्चा रचनाकार केँ पिछड़ल हैबाक भ्रम पालि लैत रहथि। अध्ययनहीनताक कारणे कएटा अनुज रचनाकार केँ मैथिली साहित्य, मिथिलाक परंपरा, संस्कृति आ इतिहासक अल्पज्ञान-मात्र रहैत छलनि। ग्रामीण जीवन केँ चिन्हवाक धैर्यक अभाव रहैत छलनि, अनेरोक आक्रोशक प्राचुर्य, गुटबन्दीक आकर्षण आ स्थापनाक हड़बड़ी रहैत छलनि। क्षणिक आ तपाकी प्रतिक्रिया, आवेश आ आवेग-आधारित हल्लुकपन, हिन्दी-अध्ययन-अतिरेक, हिन्दीदाँ-दंभ, किछु नवोदित कविक सृजन-क्षमता केँ घून जकाँ तरे-तर खा रहल छलनि। हिन्दी सँ पैंच लेल मानदण्ड पर मैथिली साहित्य केँ, मौखिक रूपें तौलबा पर बिर्त्त छलाह ओ सभ, जखनकि आलोचना-शास्त्रक नव

प्रतिमान केँ मैथिली मे स्थापित करबाक लेल कलम उठेबा सँ परहेजो करैत छलाह आ क्यो लिखितो छलाह त' कूटनीति आ तिकड़म-ग्रस्त भ' क'। मैथिली काव्यालोचनाक अपन नव 'निकष' केर विकास अत्यावश्यक अछि। एहि सभ बात पर शालीन भ' क' विचार केनिहार नव-कवि, नीक-काजक परंपरा केँ आगू ल' जा सकताह, से आब ओ सभ साकांक्ष भ' गेल छथि। प्रतीत होइछ जे हिन्दी-भ्रम मुक्त भ' गेल छथि। तेँ महान मठाधीश लोकनिक निम्न-स्तरीय गुटबन्दी आ पुरस्कारक-लौल सँ बाँचि सकताह। नव पीढ़ीक सृजन-सामर्थ्य अ-संदिग्ध अछि। हेबनि मे उभरल नव प्रतिभा सभ छथि-कृष्ण मोहन झा, विद्यानन्द झा, अजित आजाद , रमेश रंजन, कामिनी, नूतन चन्द्र झा, विजेता चौधरी, वन्दना झा, दिलीप कुमार झा, रमण कुमार सिंह, शारदा झा, प्रवीण कश्यप, चन्दन कुमार झा, विनय कुमार झा, निशाकर, रघुनाथ मुखिया, नन्दिनी पाठक, सुरेन्द्र नाथ, नील माधव चौधरी, मैथिल प्रशान्त, विकास वत्सनाभ, निक्की प्रियदर्शिनी, अरुणाभ सौरभ, विनीत उत्पल, मनोज शाण्डिल्य, रूपेश त्योंथ, शिव कुमार टिल्लू, प्रणव नार्मदेय, दीप नारायण विद्यार्थी आदि...। वस्तुतः कविता सम्पूर्णतः जीवन आ समाज-सापेक्ष विधा थिक। आजुक कविता केँ जनोन्मुखी हएब बाध्यता छैक। कविता साधने टा नहि, जीवन समाज, भाषा आ साहित्यक प्रतिबिम्ब आ प्रतिनिधि सेहो थिक। जीवन केहनो परिस्थिति मे, सभ दिन कवितामय रहत। जहिया वर्गविहीन समाजक संरचना रूपायित हएत, तहियो काव्यक अस्तित्व सुरक्षित रहत,— हर्ष-विषाद, भावना-संवेदना, तत्कालीन आवश्यकताक अनुरूप जीवनक संघर्षशीलता आ काव्यमय जीवन-शैली मे!

कोनो कवि मे वैचारिक प्रगतिशीलता आ प्रतिबद्धता हएब परिपक्व बात आ शर्त्त थिक। जँ विरोधाभास आ अन्तर्विरोध सँ कवि मुक्त हो, त' काव्य-क्षेत्रक अन्तर्लोक आ बाह्य-रूपक गुंफन मे निर्भय प्रयोग कयल जा सकैछ। कयले जयबाक चाही। शिल्पक स्तर पर 'तिल-तिल नूतन होय' (विद्यापति) वला प्रेम आ कविता 'शाश्वत' होइत अछि आ एकरसताक शिकार प्रेम आ कविता' 'सामयिक' प्रमाणित होइत अछि। काव्यक अन्तर्लोक आ बाह्य-स्वरूप 'नित नवीन' भेला सँ कविता सामाजिक विकृतिक जटिल संरचना पर बेशी धरगर प्रहार करैछ आ ध्यानाकर्षण करबा मे सेहो सफल होइछ। प्राचीन शिल्प, तुकबन्दी, मनोरंजन, काव्यक गेयधर्मिता, हास्य-आसक्ति

आदि कालातीत भ' चुकल अछि आ काव्य-सृजनक गंभीरतो केँ खंडित करैत अछि। काव्यक मुख्य प्रयोजन जीवन जगत केर इमानदार व्याख्या-विश्लेषण थिक, जाहि दायित्व सँ कविता पाछू नहि हँटि सकैछ। समकालीन काव्य 'दरबारी दास' बनिक' नहि रहि सकैत अछि, आ ने उपनयन-विवाहक अवसर पर 'भाट'क मुँह सँ मनोरंजनार्थ निकलि अपन स्वाभिमान पर किछु व्यक्तिक व्यंग्य-चोट वा आत्म-चोट सहत।

समय आ समाज मे बहुत परिवर्त्तन भेल आ भ' रहल अछि। बदलैत समय, जीवन-दर्शन, जीवन-शैली, एलेक्ट्रॉनिक माध्यमक विस्फोट, जीवनक बुनियादी समस्याक जटिलता, विदेशी बाजारु उपभोक्ता-संस्कृति केँ वीभत्स आक्रमण आदिक कारणें, जनजीवन मे संघर्ष लेल ई आवश्यक भ' गेल अछि जे, कविता फेर एकबेर अपन बाह्य-स्वरूप मे नवीनता आनय आ आन्तरिक संरचना एवं अन्तर्वस्तु मे आर अर्थपूर्ण, संघर्षशील, धरगर, मारुख आ मारक-क्षमता सँ लैस, आ जीवन-रसक परिपाक सँ ओत-प्रोत हो। तेँ निराला, काव्यक छन्द-मुक्तिक प्रखर ओकालति करैत छथि। तेँ कविता मे पारंपरिक स्वरूप आ शिल्पक त' छूति धरि हैब अनुपयोगी-अनावश्यक, त्याज्य आ बेजाय अछिये, अपितु मुक्त छन्द आ अतुकान्तहु सँ आगू बढ़िक' ओकरा गद्यात्मक आ गद्य-स्वरूपक हेबाक चाही। ई परिवर्त्तन काव्य केँ लोकोन्मुखी आ संघर्षशील बनेबाक औजार हएत, रूपवादी-कलावादी प्रयोग सँ दूर! आइ गद्यक पाठक क्यो तुरंते बनि जाइत अछि आ कविताक परंपरिक शिल्प, मुक्तक स्वरूप, तुकबन्दी-विहीन नव-काव्य देखिए क' पाठक मुँह कोंचियाक' भागि जाइत अछि। गद्य-काव्य आ गद्यात्मक काव्य पाठक केँ पढ़बा लेल बाध्य क' सकैछ। आइ गद्यक पाठक, कविता सँ कतओक बेशी अछि आ कविता केँ पाठकीयताक संकट आन कोनो विधा सँ कतओक बेशी अछि। काव्य जतेक गद्यात्मक हैत, संप्रेषणक संकट ततेक दूर हैत आ काव्यक संघर्ष-क्षमता ततेक मारक-क्षमता अर्जित करत। अंततः समाजक 'जड़ पाथर' केँ तोड़बाक छैक कविता केँ आ उपजाउ माटि बनेबाक छैक। अंग्रेजी साहित्य मे उनैसम सदीक अन्त आ बीसम सदीक पहिले दशक मे 'लेडी चैटर्लीज लभर' केर यशस्वी लेखक डी. एच. लॉरेन्स आ प्रख्यात अंग्रेजी आलोचक एजरा पाउन्ड द्वारा रॉबर्ट फ्रॉस्टक छन्दवादक विरुद्ध आ गद्य-कविताक पक्ष मे, जबर्दस्त बहस कयल गेल छल, तकर परिणामस्वरुप अंग्रेजी आ हिन्दी मे

गद्य-कविताक धारा चलल छल। हिन्दी मे रघुवीर सहाय, मंगलेश डबराल, राजकमल चौधरी (मैथिली मे सेहो) एवं कात्यायनी सन-सन यशस्वी कवि-कवयित्रीगण खूबे गद्य-काव्य लिखलनि आ समाज-साहित्य केँ दिशा देलनि। हम सभ कतेक पाछू छी! राजकमल चौधरीक गद्यात्मक कविताक पुरातन-पंथी सभ कोनो परंपरा चलए नहि देलनि, कारण, हुनकर 'स्वरगंधा' 'जड़-विद्वान' सभ केँ 'दुर्गंधा' बुझेलनि, जखनकि नव-कविताक रचनाकार सभ 'यात्रीजीक परंपरा' मे आबि गेलाह। गद्य कविता पर आसन्न खतरा सँ लड़बाक लेल।

मुदा कविताक शिल्प मे गद्यात्मकता अनबाक ई अर्थ नहि अछि, जे कथ्य मे काव्यात्मकता आ काव्य-तत्वक क्षरण आ ह्रास हो वा अभिधाक प्रतिशत सय छूब' लागय। तखन त' ओ ललित-निबन्ध बनि जायत, जे काम्य नहि अछि। अन्तर्वस्तु काव्यमय, वैज्ञानिक, जनवादी, प्रगतिवादी आ उचित रस-परिपाक भेले पर, ओकर बाह्य स्वरूप केँ अधिकतम गद्यात्मक बनेबाक ओकालति कयल जा सकैछ। तखन फेर कविताक बिम्ब-योजना, रचना-शास्त्र, व्याकरण, आ शब्द-शास्त्रहुँ मे आइ युगानुकूल परिवर्त्तन आनब जरूरी अछि। तखनहि कविता अपन नव प्रतिमान स्थापित क' सकत— जे कविता केँ नव समाजक संरचना लेल करबाके टा छैक। ई सभ कलाकारी समाजेक हित मे हएत, रूपवादी-कलावादी-रसोद्रेक आ रास-रंग लेल नहि। काव्य केँ परिपुष्ट बनेबाक लेल, सभ विषयक समावेश काव्य-कथ्य मे हेबाक चाही। कोनो शास्त्र अपैत नहि होइत अछि। विज्ञानक सभ शाखाक सम्बन्ध जीवन सँ अन्योन्याश्रित अछि आ जीवन मे जाहि कोनो विषयक प्रासंगिकता अछि, तकर प्रासंगिकता साहित्यो मे निर्विवाद अछि। कोनो विषयक साहित्य-समाज-हित मे दोहनक क्षमता त' कोनो कविक लेल व्यक्तिगत बात थिक। तेँ काव्य-क्षेत्र केँ व्यापक बनायब, जीवनक सभ आसंग सँ जोड़ब आ तकर संतुलन राखब, तखन फेर जीवन केँ काव्यमय, आ काव्य केँ जीवनमय बनायब समकालीन कविक आकांक्षा हेबाक चाही। आइ जाहि साहित्यक वा विधाक वैज्ञानिकता आ तार्किक आधार पुष्ट नहि रहत, तकरा एहि घोड़दौड़ मे ठठब कठिन अछि। हँ, ई वैज्ञानिक संरचनात्मक आ सृजनात्मक हएत, ध्वंसात्मक नहि।

काव्य मे समकालीनता आ स्थानीयता सँ ल' क' विश्व-स्तर धरिक दर्द-संवेदना, अनुराग-विराग, हर्ष-शोक, जय-पराजय, इतिहास आ वर्त्तमान

अनबाक छै। जे क्यो समसामयिक जीवनक यथार्थ-दंश आ जीवनक बँचल-खुचल सौन्दर्य-बोधक चिन्ता सँ बेशी महत्वपूर्ण, जीर्ण-पारंपरिक आ प्राचीन-काव्य केँ मानैत छथि, तिनका नव-कविताक गद्यात्मक शिल्प सँ बेशी एखनहुँ छन्दमय, गेयधर्मितायुक्त, लयाश्रित तुकांत काव्य, महत्वपूर्ण बुझाइ छनि, से आमजन-मध्य काव्य-प्रतियोगिताक आयोजन क' प्राचीन आ नवीन-काव्यक सामर्थ्यक तुलना करबा सकैत छथि।

मान्यता ईहो अछि जे...जे कवि अनपच आ उकड़ू पर-भाषिक शब्दक प्रभाव सँ, जतेक बाँचल रहताह— जनभाषा आ माटिपानि सँ जतेक नजदीक आ संपृक्त रहताह- तिनकर कविता अपन अभीष्ट मे ततबे प्रभावशाली आ सफल हैत। कविता मे मानवक बंधन-मुक्तिक रस्ता खोलबाक सामर्थ्य होइ छै, से ओ 'बन्धनक जकड़जाला' आ 'मोहक मकड़जाला' कटैत अछि। जे कविता जीवन-सापेक्ष, समकालीन, सामयिक चेतना सँ भरपूर आ संघर्ष-गाथा-प्रेमी हएत, सैह कालजयी आ शाश्वत प्रमाणित हएत। अन्यथा, 'जगत् चबेना काल का' (कबीर) त' शाश्वत सत्य थीके। आइ सातम-आठम सदीक बौद्ध-गान-दोहा 'चर्यापद', सोलहम सदीक विद्यापति आ तुलसी केर महाकाव्य, मनबोध, चन्दा झा, लालदासक महाकाव्य, बारहम-तेरहम सदीक ज्योतिरीश्वरक 'वर्ण रत्नाकर' (मैथिलीक पहिल गद्य-काव्य) अपन लोकधर्मी आ जनोन्मुखी स्वरूपक कारणें, आइयो मैथिली-समाज मे देदीप्यमान अछि, जखनकि कविशेखर बदरीनाथक 'एकावली-परिणय' वा गोविन्द दासक 'जटिल शास्त्रीय' महाकाव्य वा काव्य, अपन शास्त्रीय चरित्रेक कारणें, मात्र विद्वत्-वर्गक विश्लेषण-योग्य रहि गेल अछि। किछु कविता कालजयी कोना भ' जाइए आ किछु कविता इतिहासक अभिलेखागार मे सुसज्जित भ' क' कोना रहि जाइए? तकर कारक तत्व सभक विश्लेषण कहिया हैत आ के करत? महाकवि डाक आ फतूरी लाल वा विद्यापतिए जन-जनक कंठ मे कोना जिबैत छथि आ 'पाण्डित्यपूर्ण-कबिलैती वला कविता' कोना काल-कवलित भ' गेलै?

वस्तुतः कोनो भाषाक लोकोन्मुखी-कविता, ओइ भाषाक 'शब्द-शास्त्रक' उपयोग आ प्रयोग करैत अछि। से हथियार रूप मे। कविता 'शब्द-सेवा' नहि करैत अछि, ई 'रूपवाद-कलावाद' थिक। अइ विषयक ज्याँ पॉल सार्त्रक मान्यता 'तत्कालीन शास्त्रीय-काव्यक आ उनैसम सदीक गद्यक सन्दर्भ मे अछि, जे पुरान भ' गेल अछि आ आजुक तिथि मे अमान्य अछि। तृणमूलीय शब्द, जमीनी-अर्थ

आ तृणमूलीय काव्य-निर्माण, एक अंतहीन प्रक्रिया थिक। एखन धरि, 'काव्य मे शब्दक मितव्ययिताक' ओकालति करैत, अनघोल मचाओल गेल अछि आ प्रकारान्तर सँ कए कवि अपन 'शब्द-दारिद्रय' केँ झँपैत रहलाह अछि। काव्यक गतान (कम्पैक्टनेस) पर अनावश्यक अतिरिक्त ऊर्जा खर्चैत, ओ अपन काव्य केँ अति-यांत्रिकता आ एकरसताक शिकारे टा बनबैत छथि। एहेन कविताक प्रति 'शब्द-खेल' मात्रक धारणा बनैत अछि। ई लोकनि वैविध्य सँ दूर आ अपन 'एकबेर स्थापित छवि केँ तोड़बा मे असमर्थ' होइत छथि। 'शब्द-अपव्ययक' अनघोल मे 'शब्द-दारिद्रय' केँ आवरण देबाक निष्फल प्रयास करैत, ई लोकनि अंततः अपना-आप केँ कालातीत (आउटडेटेड) बना लैत छथि।

कविता मे अंकुरैत आ प्रतिष्ठित होइत वैचारिकता, भावक धनिकपना संवेदनाक प्रति संलग्नता, मानवीय-मूल्यक प्रति कटिबद्धता, रूपायित होइत सपना, कल्पनाक समर्थ उड़ान मे यथार्थक दिग्दर्शन आ जमीनी-पकाड़, जीवन आ रचनाक प्रति आस्था, सकारात्मक जीवन-दर्शन, ऋषितुल्य-आकुलता, समाज लेल व्याकुलता, सांस्कृतिक स्वीकार आ विकृतिक अस्वीकार, आत्मावलोकन आ आत्मालोचन भ्रमहीन भ' समाजक आलोचना स्वीकार आ समाजक प्रति प्रेम, दुष्टभावक प्रतिरोध लेल विद्रोह-ताप केँ बचाक' राखब, हृदय आ मस्तिष्कक संतुलन, कथ्य आ शिल्प दुनू स्तर पर नव्यताक आग्रही हैब आ काव्यक सभ पक्षक बीच संतुलनक सौन्दर्य-बोध, एहि सभ स्थापित तथ्य केँ स्वीकार करब, समकालीन कवि लेल अत्यावश्यक अछि। लोक-जीवन मे पैसब आवश्यक, काव्योद्देश्यक मोताबिक शब्द-चयन आवश्यक, अति-शुद्धतावादी प्रवृत्ति सँ बाँचब आ शब्दक मैथिलीकरण करब— दुनूक बीचक संतुलनो आवश्यक अछि। लोक-जीवनक कहबी-फकड़ा-पदबन्ध, मोहविरा आ सन्दर्भक हेरायल शब्दक लोकोक्तिक उपयोग, कविता केँ लोकमानस मे पैसेबाक लेल, संप्रेषणक सहजता लेल, लोक-स्वीकार लेल, आवश्यक अछि।

कथ्य-वैविध्य आ तकर क्षितिज-विस्तार, रूप-वैविध्य, ध्वन्यात्मकता, अन्तर्वस्तुक स्तर पर लयात्मकता आ सांगीतिकता, अर्थक लय-बद्धता, नव बिम्ब-विधानक रचना, ऐतिहासिक दृष्टिकोण आ ऐतिहासिक चेतनाक समावेश, सामाजिक चेतनाक विविध आयामक उद्घाटन, काव्य केँ परिपुष्ट आ सक्षम बनेबाक लेल समयक मांग थिक। अंततः कविक जीवन मे

विद्यमान पीड़ाक प्रतिशत, संघर्ष-सामर्थ्य आ आलोचनाक आँखि, ओइ कविक कविताक स्वरूप, सामर्थ्य आ उपलब्धिक निर्धारण कइये दैत अछि। तेँ वैचारिक स्तर पर अंततः द्वैधमुक्ति सेहो ततबे आवश्यक अछि। जहिना काव्यक प्रत्येक ग्राम्य-तत्व केँ 'नॉस्टेल्जिया' कहिक' खारिज करबाक प्रवृत्ति घातक अछि, तहिना मिथिलाक कस्बा-शहरक उपेक्षा करैत आजुक 'परिवर्त्तनशील गाम' केँ दू दशक प्राचीन आँखि सँ देखब आ समकालीन मैथिली काव्य पर टिप्पणी करबाक फूहड़ दंभ पोसब' घातक अछि, तहिना 'फरमान-शैली मे 'आलोचकीय स्वीकृतिक प्रमाण-पत्र' जारी करब अधलाह थिक। 'मैथिल जीवनक अतिवाद'क शिकार समीक्षकगण भ' जाथि, से मिथिला-मैथिली लेल दुर्भाग्यपूर्ण थिक। जहिना 'ग्रामीण कविता'क नाम पर, ग्राम्यदोषक ओट ल' क' काव्य केँ कवित्तविहीन एकरस कथा-काव्यक 'असंख्य गछाड़' मे जकड़ि देब अनुचित थिक, तहिना गामक संक्रमणकालीन परिवर्त्तन सबहक संज्ञान लेबा सँ सायास भागबाक प्रवृत्ति, कोनो कवि लेल अनुचित थिक। इतिहासक धारा केँ उनटा बहेवाक आ साहित्यक सहज आ प्रवहमान विकास केँ अवरूद्ध करवाक प्रवृत्ति ककरो लेल कल्याणकारी नहि थिक। 'मात्र मनोरम शब्दचित्र घिचबाक कलाबाजी' कोनो कविक वैचारिक खोखलापन आ सीमा केँ देखार क' क' राखि दैत अछि। अनुभवक विविधता आ विस्तृत कैनवासक अभाव ओइ कविक 'काव्य-जीवन' केँ क्षणभंगूर बनाक' राखि दैत अछि। एहेन कवि 'आवृत्ति-दोषक' शिकार सबेरे-सकाल भ' जाइत छथि। संगहि हुनकर जीवन आ साहित्य मे संघर्षशीलताक अभाव, स्वाभाविक दृष्टिहीनता, काव्य-फलकक संकीर्णता, वैचारिक विकासक अवरोध कथात्मकता मे हेराइत काव्य-भाव आदिक कारणे, कोनो आलोचकीय सोङर हुनका ठाढ़ राखि नहि पबैछ।

सृजन, मानवक नैसर्गिक स्वभाव आ विशेषता थिक। जीवन आ गतिशील मूल्यक विध्वंसक प्रतिरोध आवश्यक। मुदा उकड़ू आ अ-जनवादी, जन-विरोधी तंत्रक विध्वंसो आवश्यक अछि। 'समाज-सापेक्ष' हएब कतहु सँ 'विकृति-सापेक्ष' हएब नहि थिक। जीवनक सभ प्रकारक सकारात्मक सृजनक प्रति आस्था रखैत कहल जा सकैछ, जे साहित्य आ काव्य-सृष्टि कनेक बेशी महत्वपूर्ण अछि। जनोन्मुखी समाज-स्वीकृतिक अपेक्षाक संग अपन सृजन केँ आत्म-स्वीकृति प्रदान करब, 'साहित्यिक आचार्यगण'क

स्वीकृतिक आकांक्षा पर विजय प्राप्त करब थिक। काव्य-सृजन मे सक्रिय रहब एकटा समाजोपयोगी सार्थक जीवन थिक, जाहि मे यातना-मध्य ओहिना आनन्द सुरक्षित अछि, जेना 'कण्टक माँझ कुसुम परगास'। व्यक्तिगत उपलब्धि-मात्रक अनुचित कामना मे, अपन माटि-पानिक प्रति बेइमानी, एकदम्मे त्याज्य थिक। ग्रामीण वा शहरी पीड़ा आ यातनाक सम्पूर्ण सौन्दर्य-बोधक अभिज्ञान रखैत, सम्पूर्णतः जनोन्मुखी कविता केँ स्वीकार करैत, सूत्रवादी-फरमानवादी गुटबादी लेखन केँ अस्वीकार करैत, समकालीन कविगण अपन काव्य-यात्रा मे प्रवृत्त हेताह, त' नकारात्मक आ निन्दारूपी आलोचनाक कोनोटा परवाहि हुनका नहि हेतनि आ से समाज, साहित्य, काव्य आ कवि लेल सर्वतोभावेन कल्याणकारी सिद्ध हैत! आइ युग-सापेक्ष परिवर्त्तनक मांग करैत, काव्य-शिल्प आ काव्य-कथ्य, अपना हाथ मे नव-व्याकरणक माटि लेने, समकालीन कविगण केँ टोकारा' द' रहल अछि। ओकरा भविष्य मे 'ललकारा' ने देब' पड़ैक।

•

देसिल बयना,
हैदराबाद, मई, 2017

मैथिली साहित्यक अन्तर्राष्ट्रीयकरणक प्रयास

मैथिलीक किछु साहित्यकार, जे अपन पुरोधा लेखक आ साहित्यिक थातीक संरक्षण-संवर्द्धन आ विश्वक मानस-पटल पर प्रदर्शन करवाक लेल, अपन ऊर्जा खर्च करैत छथि, ताहि मे, डॉ. जयकान्ते मिश्र जकाँ, पंचानन मिश्र सेहो अग्रगण्य छथि। हुनकर सघः-संपादित आ प्रकाशित अंग्रेजी-पोथी 'जयकान्त मिश्राः सेलेक्टेड राइटिंग्स ऑन मैथिली लिटरेचर' मे ओ अपन चयन-दृष्टि, संचयन-संपादन आ साहित्य-संरक्षण-कौशलक अद्‌भुत प्रदर्शन करैत, छात्रोपयोगी समाज-साहित्य आ विश्व-उपयोगी, भव्य पोथी प्रस्तुत केलनि अछि।

डॉ. जयकान्त मिश्रक लेखन-संसार, मिथिलाक इमानदार मैथिल, मैथिली भाषा आ साहित्य लेल, आधार-स्वरूप आ थाती बनि गेल अछि। हुनकर सर्वविदित मातृभाषा-प्रतिबद्धता, हुनका अभिप्रेरित केलक जे ओ मैथिली भाषा-साहित्य केँ, अपन अंग्रेजी-साहित्य-ज्ञानक माध्यमें, विश्व-साहित्य-पटल पर जगजियार करथि आ ताहि मे हुनका प्रचूर सफलतो भेटलनि। मैथिली साहित्यक अन्तर्राष्ट्रीयकरणक जहिया इतिहास लिखल जायत, डॉ. मिश्रक नाम सोनाक कलम सँ लिखल जायत।

ओना अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय केँ, डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन मैथिलीक परिचय(बिहारी भाषाक रूप मे, मगही-भोजपुरीक संग) अपन 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इन्डीयाक भौल्यूम—10/11' मे देने छलाह आ किछु साहित्यक परिचय सेहो। तहिना डॉ. सुनीति कु. चट्टोपाध्याय विद्यापति आ मैथिलीक परिचय अपन रॉयल एशियाटिक सोसाइटीक जर्नल्स केर अनेक अंक मे देने छलाह। मुदा अपन विपुल साहित्यिक परंपराक विशद् परिचय डॉ. जयकान्त मिश्रक प्रसिद्ध अंग्रेजी पोथी 'हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर'क माध्यमें प्राप्त भेल छल। हुनकर मैथिली-मय अंग्रेजी-लेखन सकल विश्व केँ चौंका देने छल। विवेच्य पोथी कहैत अछि जे अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था। पत्र पी. ई.एन. समेत ओ कोनो विश्व आ भारतीय फोरम केँ नही छोड़लनि, जत' मैथिलीक घनघोर गर्जना नहि केलनि।

रॉयल एशियाटिक सोसाइटीक जर्नल्स केर अनेकानेक अंक मे तँ मैथिली साहित्यक विविध विषयक आलेख प्रकाशनक ओ पथाड़े लगा देलनि आ डॉ. सुनीति चटर्जीक मोने टा नही मोहलनि, अपितु मैथिली साहित्य केँ विश्व-फलक आ विश्व-मानस मे स्थापितो क' देलनि। से आलेख सभ पंचानन मिश्र रॉयल एशियाटिक सोसाइटीक जर्नल्स मे सँ साभार खोजि-हेरि एहि पोथी मे संचयित केलनि अछि।

वस्तुतः 'हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचरक' दोसर खण्ड लिखि क' अद्यतन नहि क' सकवाक संतापे 'डॉ. मिश्र' अनेकानेक आलेख, अंग्रेजी मे लिखि क' छपबौलनि, जकर संग्रह पंचानन मिश्र क' क', मूल लेखकक ओही मूल उद्देश्यक पूर्ति हेतु, मैथिली आ अन्तर्राष्ट्रीय जगत्‌क समक्ष प्रस्तुत केलनि अछि। निस्संदेह ई पोथी 'हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' केँ पूरक-स्वरूप, अभाव-पूर्त्ति करैत अछि।

मैथिली साहित्यक इतिहासक काल-विभाजन, जे डॉ. मिश्र केलनि अछि, से वैज्ञानिक आ भारतीय इतिहासक काल-विभाजनक अनुकूल अछि। मैथिली साहित्यक आदिकालीन (भारतीय इतिहासक पूर्व-मध्यकालीन) बौद्ध-दोहा-गान (चर्यापद)क पृष्ठभूमि केँ छुबैत, मध्यकालीन मैथिली साहित्य, आधुनिक मैथिली साहित्य,स्वातंत्र्योत्तर मैथिली साहित्य, मैथिली उपन्यास, मैथिली नाटक, मैथिली आलोचना, जॉन डॉन आ टी.एस. इलियट के सन्दर्भ मे मैथिली कविता, मैथिली भाषा आ साहित्य पर संस्कृतक प्रभाव, मैथिली साहित्य मे गाँधी जी, मैथिली साहित्य मे देशभक्तिक स्वर, मैथिली रामायणक महत्व, बाधक तत्वक विरूद्ध मैथिलीक संघर्ष, मैथिलीक नव-लेखनारंभ, 1971 ई. मे मैथिली, नाटकक आगामी विकास, मैथिली भाषा आ ओकर साहित्य, मैथिलीक पत्र-पत्रिकाक इतिहासक संग ओ मिथिला आसाम तथा शंकरदेव आ मैथिलीक अन्तर्सम्बन्ध सेहो नीक क' फड़िछौलनि अछि। साहित्यक अभिजात्यकरण आ साहित्यकारक उच्च-भावना (वस्तुतः हीन-भावना) सन विषय पर विरल आ विशेष आलेख डॉ. मिश्र लिखने छथि, जे पोथी केँ महत्वपूर्ण बनबैत अछि।

मुदा विवेच्य पोथी केँ आर महत्वपूर्ण बनबैत अछि विद्यापतिक सतरह गोट प्रख्यात गीतक अंग्रेजी अनुवाद, जे डॉ. मिश्रक अनुवाद-कौशल प्रमाणित करैत अछि तथा वस्तुतः भावानुवादक नव आस्वादन अंग्रेजी-संसार

केँ करबैत अछि। ततबे नहि, डॉ. मिश्रक द्वारा आधुनिक मैथिली-काव्यक पुरोधागण— श्री सुमनजीक कविता-'तरु'; यात्रीजीक 'आन्हर जिनगी', पं. राधवाचार्य शास्त्रीक 'प्रतिज्ञा', 'मधुपजीक' 'माइलक पाथर' आ कवयित्री अपराजिता देवीक दू कविता (बरबाद हुअ' सँ पहिने आ अगम अथाह सन) केर अंग्रेजी काव्यानुवाद सेहो केने छलाह, जकरा पोथीक अन्त मे परिशिष्ट जकाँ 'संचित' केलनि अछि संपादक।

एतावता, पूर्वहिं सँ धरोहर बनल डॉ. जयकान्त मिश्रक समक्ष नत-मस्तक मैथिली-समाज, श्री पंचानन मिश्रक सत्प्रयासें, एक बेर फेर उपकृत भेल अछि आ विश्व-अध्येताकेँ एक बेर फेर, डॉ. मिश्रक माध्यमें, मैथिली साहित्यक धनीक परंपरा सँ, धनीभूत परिचय स्थापित भेलनि अछि, यद्यपि डॉ जयकान्त मिश्रक स्थापना-मान्यता आ इतिहासावधि पूर्ववत् रहल अछि आ नवका पीढ़ी धरि इतिहासक अद्यतनीकरण, नव चुनौती जकाँ, नव-साहित्यकार-संवर्गक समक्ष, एखनहुँ प्रश्नचेन्ह बनल, हवा मे टाङल अछि।

•

मिथिला दर्शन
कोलकाता
सितंबर-अक्टूबर- 2016 ई.

मैथिलीस्ट माने डॉ. जयकान्त मिश्र

साहित्य अकादेनीक विनिबंध (मनोग्राफ)-लेखन-योजनान्तर्गत अद्यावधि प्रकाशित विनिबंध मे सँ किछुए पोथी, स्तरीयताक अनुकूल उतरल अछि। अधिकतर विनिबंध स्तरहीनताक प्रतिमान बनि गेल अछि। कएटा विनिबंध 'नकली-साहित्य-निर्माताक'सामान्य-जीवन पर लिखल गेल, तँ एकटा विनिबंध, भुसकौलक टारी पैरवी पर बनल लेखक आ संयोजकक दुरभिसंधि केर भेंट चढ़ि गेल।

विनिबंधक माध्यमें मैथिली साहित्य आ तकर निर्माताक, कमजोर छवि, बाह्य-संसार मे प्रतिबिम्बित क' कएटा प्रतिनिधि अपन कारी इतिहास निर्मित केलनि।

मुदा ताहि परंपरा सँ फराको, किछु विनिबन्ध, वास्तविक साहित्य-निर्माताक प्रेरणास्पद, समर्पित आ क्रान्तिकारी जीवन पर, हुनक कृतित्व-आधारित तथ्यक उपस्थापन आ गंभीर विश्लेषण-परक, सेहो लिखल गेल। ताही स्वस्थ-परंपराक सार्थक विनिबंध, गम्भीर दृष्टिकोणवला सक्रिय लेखक पंचानन मिश्र, डॉ. जयकान्त मिश्रक महान जीवन आ पथाड़ लागल कृतित्वक आधार पर प्रस्तुत केलनि अछि, जे साहित्य अकादेमी सँ एही वर्ष(2016) मे छपल अछि। मुल्की रास स्रोत सँ तथ्यक अनुसंधान आ अन्वेषण क' पंचानन मिश्र, डॉ. जयकान्त मिश्र सन अथक योद्धा, समर्पित आ गहींर विद्वान, हरफनमौला-मैथिलीस्ट, अत्यंत महत्वपूर्ण एकटा आदि-पुरूष, मैथिली-साहित्यक इतिहास-लेखक इतिहास-पुरूष, माटि पर सँ ल' क' विश्व-स्तर धरिक मैथिलीक कार्यकर्त्ता, आधुनिक मिथिला-मैथिलीक कर्त्ता- पुरूष, नव-पीढ़ीक प्रेरणा-प्रतिमूर्तिक जीवनी आ कृतित्व-आधारित कीर्तिक बखान, बेकछा-बेकछा क' केलनि अछि, जे विनिबंध केँ अ-पारंपरिक बनबैत अछि। संधर्ष सँ भरल विरल जीवन, जे समाज, भाषा आ साहित्ये टा लेल छल। तेहेन सेनानीक विनिबंध विशिष्टे ढंग सँ प्रस्तुत करब उपेक्षित छल। ताहि मे पंचानन मिश्र निराश नहीं केलनि अछि। डॉ. जयकान्त मिश्र भरि जीवन मैथिलीक लेल लड़ैत-ओकालति करैत, देश भरिक फोरम केँ धङैत रहलाह। साहित्य-निर्माण आ संपादन लेल भारत सँ नेपाल धरि दौड़ैत रहलाह। मैथिली आन्दोलन आ

मिथिला-समाजक अनेकानेक औचित्यपूर्ण मांगक निमित्त अपन जीवन होम करैत रहलाह। तेहेन व्यक्ति पर सटीक आ गवेषणापूर्ण विनिबंध मात्र पंचानन मिश्र टा लिखि सकैत छलाह। कोनो एक मनुक्ख वा लेखक तीन जनम मे जतेक काज क' सकैत अछि, ताहू सँ वेशी काज जयकान्त बाबू एक जीवन मे केलनि, से विनिबंध मे प्रस्तुत हुनक 'कृतित्वक सूची' सँ प्रमाणित अछि।

'पुरोवाक्' मे अपन अनुसंधान-अन्वेषणक खेरहा कहैत, पंचानन मिश्र, डॉ0 जयकान्त मिश्रक 'वंश-परिवारक' विशद् परिचय दैत, म.म. जयदेव मिश्र (पितामह) आ म.म. उमेश मिश्र (पिता)क विद्वता-विरासतक वर्णन करैत; हुनक 'देस-काल' आ तकर हुनकर व्यक्तित्व पर पड़ल प्रभाव, हुनका भाषा-साहित्य-समाज दिस उन्मुख करएवला प्रेरक तत्व सभक सम्यक् विशलेषण सेहो केलनि अछि, जाहि सँ हुनक व्यक्तित्व-निर्माणक पृष्ठभूमि नव-पीढ़ी केँ संज्ञान मे अबैत छै।

हुनकर 'जीवन-वृत्त'क विकास-क्रम केँ व्यक्तित्व आ आधुनिक विचारधाराक विकास-क्रम सँ जोड़ि क' प्रस्तुत करब, हुनक जीवनी-लेखन केँ तर्कसंगत बनौलक अछि।

मैथिली-संस्कृत-अंग्रेजी मे अनवरत एक रंग लेखन-अध्यापन करएवला, बहुभाषा-विद, मैथिल आ मैथिलेत्तर समाज पर अपन सृजनात्मक क्रियाकलापक अमिट छाप छोड़एवला भारतीय इतिहासक ज्ञाता, हिन्दी साहित्य सम्मेलन सेवक, प्रयाग-नगरी केँ अपन कर्मभूमि बनौलनि आ अपन 'सांस्थानिक सक्रियता' सँ तत्कालीन राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्-वर्ग केँ चकचोन्ही लगा देलनि डॉ. जयकान्त मिश्र। कतेक संस्थाक स्थापना केलनि आ कतेक केँ सदस्य आ अधिकारी बनि संचालन केलनि—तकर लेखा-जोखा पंचानने मिश्र प्रस्तुत क' सकैत छलाह। अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य-संस्था पी.ई.एन. सँ ल' क' अ.भा. प्राच्य विद्या सम्मेलन, अ. भा. मै. सा. समिति (प्रयाग) गंगानाथ झा केन्द्रीय सं0 विद्यापीठ, ईश्वरी प्रसाद इतिहास संस्थान, प्रयाग महिला विद्यापीठ, मैथिली महिला विद्यापीठ, गजहरा मे संस्कृत महाविद्यालयक स्थापना आ संचालन धरि मे अपन सक्रिय सहभागिता देखौलनि।

पी.ई.एन. मे मैथिलीक प्रवेश हो वा साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक प्रवेशक अन्तर्कथा आ संघर्ष हो वा प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मैथिली केँबनेवाक लेल उच्च न्यायालय आ सर्वोच्च न्यायालयक लड़ाइ हो, किंवा

आकाशवाणी मे मैथिलीक प्रवेश हो वा दरभंगा मे आकाशवाणी-केन्द्रक स्थापनाक मांग हो, वा प्रयाग आ दिल्ली मे मैथिली-पुस्तक-प्रदर्शनीक आयोजन क' जवाहरलाल नेहरू केँ प्रभावित करवाक हो वा मैथिलीक पहिल प्रतिनिधि बनि साहित्य-अकादेमी मे मैथिलीक प्रवेश-निमित्त नेहरूजी केँ राजी करवाक हो वा अंग्रेजी मे दर्जनक-दर्जन निबंध लिखि मैथिलीक ओकालति करैत, देस-विदेसक दिमाग मे मैथिली केँ स्थापित करवाक हो, जयकान्त बाबू सन अथक आ समर्पित सेनानी आर के भ' सकैत छलाह, जिनका मे प्रतिभा आ योग्यता सेहो रहय आ निःस्वार्थ-सेवा-भावना सेहो रहितय?

मैथिली मे 'कीर्तनियाँ नाटक' 'मैथिली साहित्यक इतिहास', तिरहुता ककहरा पोथी, घनेरो भाषणमाला आ निबंध प्रकाशित छनि डॉ. जयकान्त मिश्रक। तहिना संपादन-संकलन मे मुख्य अछि—वृहत् मै. शब्दकोष भाग—1 तथा 2, मैथिली धूर्त-समागम (ज्योतिरीश्वर ठाकुर), गौरी-परिणय (शिवदत्त), गोरक्षविजय (विद्यापति), रूक्मिणी-परिणय (रमापति) कीर्तिपताका-कीर्त्तिलता (विद्यापति), मैथिली समाचार, श्री कृष्णकेलिमाला, गौरी-स्वयंवर, विद्याविलाप, श्रीकृष्ण जन्मरहस्य, आदि। असम के 'अंकिया नाट' आ 'कीर्त्तनियाँ-नाटक' प्रसंग आचार्य रमानाथ झाक संग तर्क-वितर्क नामीए अछि हिनक। तहिना अंग्रेजी मे मौलिक ग्रंथक पथाड़ लागल अछि—हिस्ट्री ऑफ मै. लिटरेचर (कुल तीन खण्ड), इन्ट्रोडक्शन टु दी फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला, फॉरमेशन ऑफ ए सेपरेट प्रोभिंस ऑफ मिथिला, ए शार्ट हिस्ट्री ऑफ मिथिला (अप्रकाशित) सम आस्पेक्ट्स ऑफ मिथिला कल्चरल लाइफ, दी केस ऑफ मैथिली, मैथिली एड्भान्सेज, केस ऑफ रेडियो स्टेशन इन दरभंगा, दी मै. समाचार, उमेश मिश्र(मोनोग्राफ) केर अंग्रेजी अनुवाद आ मैथिलीक ओकालति मे असंख्य अंग्रेजी लेख जे तत्कालीन जर्नल्स मे छपल अछि।

अंग्रेजी आ संस्कृत वा हिन्दी साहित्य मे योगदानक तँ एतय गप्पे ने हो, मैथिलीक 'लोक-साहित्यक' दिग्दर्शन जे ओ करौलनि, से हुनकर महत्वपूर्ण अवदान छनि। 'स्फुट रचना'क तँ ओ मोहुक फूल जकाँ पथाड़ लगा देलनि, जकर निरंतर संग्रह केने जा रहल छथि पंचानन मिश्र आ से हुनके सँ हो!

मिथिला राज्य-निर्माण लेल हुनकर पदयात्रा आ रने-वने छिछियायब, तत्सम्बन्धी आलेख-लेखन, मैथिली केँ सांविधानिक मान्यता दिएवाक लेल हुनकर कछमछी अतुलनीय अछि। डॉ. मिश्र अपन कृतित्व आ सार्थक

क्रियाकलापक आधार पर अपन कएटा समकालीन स्वनामधन्य पर भारी पड़ैत छथि, से पंचानन मिश्रक विनिबंध टन-टन बजैत अछि। डॉ. जयकान्त मिश्र सन पुरोधा आ मैथिलीस्ट केर जन्म बेर-बेर मिथिला मे हो, से मिथिलाक माँटि आइयो बजैत अछि।

•

मिथिला दर्शन
कोलकाता, 2017

प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथाक दृष्टिकोण

माया बाबूक कथा संसारक फलक व्यापक अछि।

ओ कथाक 'प्लॉट'क चयन मे माहिर आ आधुनिक छथि। ओ पैघ आ छोट सभ आकारक कथा लिखलनि अछि। कथालेखनक क्रम मे ओ पैघ कालखण्ड देखलनि आ भोगलनि अछि। ओ कएटा प्रसिद्ध कथाक यशभागी बनलाह अछि। ओ कए पीढ़ीक जीवन केँ देखलनि आ लिखलनि अछि। हुनकर लेखन मे लक्षित वर्ग थिक– मध्यवर्ग आ निम्न-मध्यवर्ग आ कौखन क' राजनीतिक आ पूँजीपति-वर्ग सेहो।

ओ नव-पीढ़ीक 'अंडा-प्रेम' (आधुनिकता) आ पुरान पीढ़ी (पिता) क पुरातनपंथी-नकघोंकची, दुनू पर व्यंग्य केलनि अछि आ अपना हिसाबें देखार करबाक कोशिश केलनि अछि। दुनू पीढ़ीक सोच मे विकृति केँ बीछि-बीछि क' देखार करितो, प्राचीन शिक्षक-पिताक प्रति सहानुभूति रखितो, नव पीढ़ीक दिक्कत बुझितो, आधुनिक आ प्रगतिशील सोच केँ आत्मसात नहि क' सकलाह अछि। बेटाक नौकरीक लिलसा मे मंत्रीक 'अभिनन्दन' लिखयवला प्रोफेसरक दुर्दशाक खिस्सा मायानन्द मिश्रे टा लिखि सकैत छलाह। लक्ष्मीक आगू सरस्वतीक नतमस्तक हैब आ राजनीतिक समक्ष योग्यता, कला-संस्कृतिक पराजयक बोध मायाबाबू करौलनि। मुदा प्रोफेसरक विवशताक आगूक चरण छल– प्रोफेसरक विद्रोह-भाव आ संघर्षशीलता, जे गुरु भइयो क' शिष्यक समक्ष प्रदर्शित नहि क' पबैत छथि। पाठक केँ ई कथाकारोक वैचारिक सीमा बुझा सकैत अछि।

अपन 'भैरव' कथा मे एकटा युवाकवि केँ एकटा एमेलेक 'उप-ग्रह' (ओकर नारा-सर्जकक रूप मे) चित्रित केलनि अछि मायाबाबू आ ओकरा विकृत यथार्थक स्थिति मे, ओही रूप मे छोड़ि, दुनू केँ देखार करितो, यथास्थितिवाद लग ठमकि जाइत छथि। यैह 'भैरव', 'माध्यम' नामक कथा मे 'बीडिओक भैरव' (महादेवक भैरव) बनिक' अबैत अछि। 'भैरव'मे युवा-कवि' 'माध्यम' बनिक' अबैत अछि आ 'माध्यम'मे बीडिओ सैहैबक चम्मच (भैरव) बनिक' अबैत अछि। दुनू कथा, खलनायकगण (मुख्य, गौण आ बिचौलिया) केँ देखार करितो 'जनहित मे उपयोगी' नहि भ' क' मात्र 'साहित्य-हित'मे

उपयोगी भ' पबैत अछि, जे कला, मात्र कलाक लेल' भ' क' रहि जाइत अछि।

कथाक उद्देश्य मात्र विकृतिक वा संस्कृतिक चित्रण टा नहि होइत अछि। चित्रण केँ समाधान-संकेतक चासनी सँ बोरबाक कला चाही। जाहि कथा केँ कथाकार जनमानसक संग जोड़ि पबैत अछि, से कथा चिरायु भ' पबैत अछि।

'नमकहराम' (जे कि 'निमकहराम' हेबाक चाहैत छल) मे चौठिया केँ 'अगुरवान' बनाक' सफलतापूर्वक परसल गेल अछि। माया बाबूक शिल्प-शैली त' कमाले अछि। ओ व्यंग्यात्मक शीर्षक चुनैत छथि आ ताही भाषा-शैलीक उपयोग करैत छथि। व्यापारी-वर्ग द्वारा आम जनताक प्रति कयल गेल निमकहरामीक चित्रण नीक जकाँ करैत सभ प्रकारक दुरभिसंधि केँ देखार करैत छथि। ई व्यापार-तकनीक, व्यापार-समझौता, कालाबजारीक बीजमंत्र पाठक 'भये प्रकट कृपाला' मे खूबे पढ़ैत अछि। बोगलाजीक मृत्यु-महत्ताक सजीव वर्णन करितो, कथाकार बोगलाजीक शॉर्टकट रास्तासँ महा-उत्थानक जे अन्तर्कथा कहैत छथि– सैह कथाक प्राण थिक। व्यंग्यात्मक टोन पाठक केँ 'बोर' हेबासँ बँचबैत अछि।

तहिना 'दीन दयाला' राजनैतिक कुचक्र, मंत्री-मुख्यमंत्री, एमेले-हाकिमक दुरभिसंधि, भ्रष्टाचार, आवरण-योजना, ड्राइंगरूम-मैनेजमेंट, पी.ए.टाइप लोकक पी.ए.गिरी आदि नव मुदा घृणित दुनियाँ सँ मैथिली साहित्य केँ परिचित करबितो, ओइ दुनियाँक प्रखर विरोध कथाकार सँ नहि भ' पबैत अछि। फेर 'कौशल्या हितकारी' बनितो स्वास्थ्य-मंत्रीक 'इस्तीफा' मात्र मूक-विरोध संकेतित क' पबैत अछि आ एकटा पलायन-भावक प्रदर्शन कथान्त मे होइत अछि। कौशल्याक शील-हरण, स्थायी विद्रोहक सृष्टि नहि क' पबैत अछि आ कएटा गर्भपाती क्रान्ति जकाँ शिथिल इतिहास दोहरा जाइत अछि।

उपर्युक्त कथा सभक प्रकाशन कालो आ आइयो संक्रान्तिये काल थिक। भारतीय सामाजिक आ राजनैतिक व्यवस्था विकृतिक पराकाष्ठा पर अछि आ समाज लहालोट भ' रहल अछि। मुदा संगहि संग विकृत-चेतनाक सु-संस्कृत चेतना, विकृतिक प्रति जनमानस मे घृणा-भाव आ चेतन-लोक मे विद्रोह-भाव सभ किछु एकहि संग अस्तित्व मे अछि आ विचारधाराक संघर्षक शृंखला सु-स्पष्ट अछि। एहना स्थिति मे कला-चातुर्य सँ परिपूर्ण,

सक्षम कथाकारक दायित्व थिक जे यथास्थिति पर आनिक' कथा, पात्र वा पाठक केँ नहि छोड़थि। हुनका नकारात्मक विकृतिक चित्रण मे अपन ऊर्जा नहि खपाक' सकारात्मक बाट, नकारात्मक विकृतिक लहासक बीच सँ निकालबाक ईमानदार आ श्रमपूर्ण प्रयास करबाक छलनि। सकारात्मक चेतना केँ ऑक्सीजन देबाक काज साहित्यकारे टा करैत छथि। शेष संवर्ग केँ विधात्मक सीमा होइत छनि।

मायाबाबू केँ समस्त सामाजिक आ राजनैतिक विकृति बूझल छनि। हुनका पैघ दुनियाँ सँ परिचय छनि। ओ अपना-आप केँ मैथिली कथा-साहित्यक 'त्रिपुण्ड'क एकटा 'पुण्ड' मानलनि अछि। मुदा ललित-राजकमलक विद्रोह-चेतना वा समकालीन सोचक टन-टन आवाज, हिनका कथा-साहित्य सँ लुप्तप्राय अछि। से आश्चर्यजनक आ सत्य सेहो अछि। अपन कथा सभ मे प्लॉटक स्तर पर नव आ आधुनिक लगितो, कथ्य (थीम)क स्तर पर मायाबाबू कोनो तेहेन सन आगू नहि जा पबैत छथि। मनोरम शिल्प, सुन्दर 'ट्रीटमेंट' आ भाषाधिकार; कथा-कलाक मेंही-मेंही तत्व सँ सराबोर मायाबाबूक आकर्षक कथा-संसार, मिथिलाक नव पीढ़ी केँ मात्र सुधारवादी-संशोधनवादी संदेश द' पबैत अछि आ कोनो नब रस्ता नहि देखा पबैत अछि, जखनकि समकालीन वैचारिक मुख्यधारा मायाबाबूक पाठक आ नव पीढ़ी केँ पहिनहि सँ बूझल छैक।

मायाबाबूक कथा मे तथाकथित 'हरिजन नेता' वा एमेले, बड़जन-मुख्यमंत्रीक नाङरि बनिक' पाछू-पाछू चलैत अछि-'हा-हुसैन'क मुद्रा मे। ई बिहारक कांग्रेसी-मंत्रीमंडल मे होइते छल। डॉ. जगन्नाथ मिश्र अपना मंत्रिमंडल मे कोनो-ने-कोनो बिलट पासवान केँ रखिते छलाह। मायाबाबूक कथा-संसार मे नारी आ दलित वर्गक मात्र दुर्दशे टा आयल अछि, से ओइ दिनक समय आ मायाबाबू दुनूक सीमा थिक। सेहो दुर्दशा-वर्णन गरिमायुक्त भ' क' नहि आयल अछि।

मायाबाबूक कथा-कला प्रभासेजी जकाँ 'धनीक' अछि। सेहो राजमोहन झाक 'नागर-भाषा'मे नहि, अपितु खाँटी 'भाखा'मे। हिनकर कथा-लोक रमणीक आ रसगर चित्रण सँ भरल-पूरल अछि। वर्णन कखनो उस्सठ नहि होइत अछि हिनकर। मिथिलाक पारिवारिक आ सामाजिक सम्बन्धक हिनका गहींर अवधारणा छनि, से कएटा कथा साबित करैत अछि। उपन्यासो मे से

आयल अछि।

हिनकर बहु-आयामी व्यक्तित्व मिथिला-मैथिली केँ अत्यंत समृद्ध केलक अछि आ मैथिली-कथा मे हिनकर अवदान केँ कमजोर केलक अछि। हिनकर मंचीय व्यक्तित्व, गरिमाक प्रति तृष्णा, भोगक प्रति अति-लालसा हिनक कथाक प्रति परिश्रम, समर्पण आ अन्ततः कथाक धार केँ भोथ केलक अछि। मैथिली आन्दोलन मे हिनकर संघर्षशीलता जेहेन रहल, तेहेन संघर्षशीलता कथा-लेखन मे द्रष्टव्य नहि अछि, यद्यपि जाहि कालखण्ड मे ई कथा सभ लिखल गेल छल, 'नवीन' मानल गेल छल। मुदा आइ नवीन तत्व सभक परीक्षण केला पर कथा सभ 'रमणीक' बुझाइतो, ततेक नव आ धरगर नहि बुझाइत अछि। तहिना अभिव्यंजनाक काव्य-शृंखलाक कविता सभ 'रमणीक' बुझाइतो ततेक नव आ धरगर नहि बुझाइत अछि। तहिया अभिव्यंजनाकक काव्य-शृंखलाक कविता सभ खूबे 'नवीन' मानल गेल छल। मुदा आधुनिकताक टन-टनाटन ध्वनि जे यात्री-राजकमलक काव्य मे आयल, से हिनक काव्य मे विलुप्तप्राये रहल। कथे जकाँ हिनकर उपन्यासो मे आधुनिकता आ पात्रक संघर्षशीलता कोनो तेहेन जगजियार नहि भ' सकल। फेर हिनकर गीत, गीतल आ मंच-संचालन मे खूबे रस आ नवीनता अछि, मुदा सेहो मात्र शिल्प आ प्रयोगेक स्तर पर। वस्तुतः संघर्षशीलता आ जिजीविषा प्रायः सभ विधा मे विलुप्तप्राय अछि।

मायाबाबू अपना जीवन मे खूब सार्थक काज सभ केलनि अछि। हिनकर जीवनक उपलब्धिक प्रशंसनीय पथार लागल अछि। मुदा अपन समय-सीमा केँ उपन्यास, कथा अथवा कवितो मे नहि तोड़ि सकल छथि। ऐतिहासिक उपन्यास सभ केँ प्राचीने राष्ट्रवादी, गौरववादी दृष्टिकोण सँ लिखलनि अछि। कोनो आधुनिक संदर्भ मे, वैज्ञानिक मार्क्सवादी दृष्टिकोण सँ नहिए लिखि सकल छथि। मंत्रपुत्र, स्त्रीधन वा पुरोहित मे प्राचीन इतिहासक पुराने व्याख्या प्रस्तुत केलनिहेँ। प्राचीन भारत, प्राचीन समाज, पुरातन आ सनातन-व्यवस्थाक प्रति हिनकर 'नजरिया' पारम्परिक राष्ट्रवादी-गौरववादी-स्कूल जकाँ अछि, जाहि स्कूलक यू. एन. घोषाल, के. पी. जायसवाल, आर. सी. मजूमदार, हेमचंद्र रायचौधुरी, के. के. दत्त, राधाकृष्ण चौधरी, बाल गंगाधर तिलक आदि छलाह। ई लोकनि प्राचीन भारतक गौरव-बोध सँ ब्रिटिश साम्राज्यवाद केँ चकचोन्ही लगाक' निचैन सँ

सूति रहैत छलाह आ इतिहास केँ वैज्ञानिक पद्धति सँ दूर क', मात्र 'ब्रिटिश-विरोधक औजार' मानैत छलाह। तकर बाद ऐतिहासिक यथार्थ सभ उपेक्षित भ' जाइत छल। राजसत्ता आ प्राचीन-व्यवस्थाक यशोगानक अलावें, प्रजाक दुःख-दर्द इतिहास-लेखनक एहि 'तंत्र' मे नहि छल। एहने पुनरूत्थानवादी जीर्ण-शीर्ण अवधारणा, जकरा रामचैतन्य धीरज 'वैज्ञानिक ब्राह्मणवाद' कहैत छथि, जकाँ, जँ उपन्यास-कथा-लेखन हो, त' प्राचीन समाज केँ नव सन्दर्भ मे देखब असंभव जकाँ भ' जाइत अछि। इतिहासक घटना सभक अध्ययन वा पात्र आ परिवेशक मनोरम चित्रण एक बात थिक आ वैज्ञानिक इतिहास-दृष्टि सँ निष्कर्ष बहार क' समाज केँ चेतना-सम्पृक्त करब दोसर बात थिक। इतिहास-दृष्टिक विकास पाछू मुहेँ नहि होइत अछि, आ ने हेबाक चाही। आगू मुहेँ विकास ओ थिक जे प्रगतिशील इतिहासकारगण अपन-अपन कृति सभ मे केलनि अछि। ओ लोकनि राजसत्ताक गौरव-गाथाक उपेक्षा क' तत्कालीन समाजक अभगदशा केँ देखार क', नव, जनवादी दृष्टि सँ ऐतिहासिक तथ्य सभक परीक्षण आ तर्कसंगत व्याख्या केलनि आ प्राचीन इतिहास केँ निस्सन वैज्ञानिकताक आधार देलनि। हिन्दी साहित्य मे इतिहास-दृष्टि आधारित उपन्यास सभ बहुत प्रासंगिक बनल, मुदा मैथिलीक ऐतिहासिक चेतना-सम्पृक्त उपन्यास पछुआयल विचारधारा-आधारित भ' गेल। ऐतिहासिक घटना सभक नीक संयोजन, तथ्य, पात्र, संस्कृति-तत्व सभ सँ परिपूर्ण रहितो, उपन्यास तत्व आ कला चातुर्य सँ 'धनीक' रहितो, वैचारिक स्तर पर प्रगतिशील नहि हेबाक कारणेँ 'मंत्रपुत्र' अपन महत्व केँ घटा लैत अछि; जखनकि एस.ए. डाँगे, साधु-समाजवाद केँ तत्कालीन समाजक एक 'यथार्थ' मानने छथि। ओना ई तथ्य मायाबाबूक पक्ष मे जाइत अछि, जे ऐतिहासिक उपन्यासक मामिला मे दरिद्र मैथिलीक भण्डार केँ श्रीवृद्धि ई उपन्यास करैत अछि। आ अइ बातक ग्लानि त' अछिए जे 'पुरोहित' आ 'स्त्रीधन' मैथिलीक भण्डार सँ बाहरे रहल। वैदिक-कालीन दासत्व पर मणिपद्मक 'आदिम गुलाम' जे लेखकीय नजरिया आ माटिक प्रति प्रतिबद्धता प्रस्तुत केलक, से मंत्रपुत्रक शास्त्रीय 'एप्रोच' प्रस्तुत नहि क' सकल।

मायाबाबू अपन कथा सभ मे ऊपरी स्तर मे जे आधुनिक बुझाइत छथि, तेहेन वैचारिकताक स्तर पर प्रगतिकामी नहि बुझाइत छथि। हुनकर वैचारिकता

जहिना उपन्यास मे रहल, तहिना कथो मे रहल, से स्वाभाविके छल। कोनो रचनाकार दू विधा मे अलग-अलग विचारक हो, से ने त' संभव अछि आ ने उचिते। व्यक्ति अपन जीवन, साहित्य आ सभ क्षेत्र मे प्रायः एक्कहि विचारधाराक रहय, सैह नीक, आ सैह रहितो अछि। आ से नहि रहला पर पकड़ाइयो जाइत अछि। मायाबाबू जे छथि, से सभठाँ छथि– एक्के रंग। जीवनो मे रसगर, मंचो पर रसगर, उपन्यास, कथा, गीत, काव्य सभठाँ 'रसगर'। सभठाँ रमनगर वर्णन, सभ विधा मे शिल्प-शैली मे महारत-प्राप्त। कला-चातुरी-युक्त, सक्षम खेलाड़ी। सफलता प्राप्त करबाक बीज-मंत्रक विशेषज्ञ। मुदा जीवन-दर्शन आ वैचारिकता मे, मयूरक पैर जकाँ सुखायल। पुरान वैचारिकता, नृत्य-कौशलप्रेमी दर्शक केँ, मयूरक पैर देखिते झूड़-झमान बना दैत अछि।

मायाबाबू-यात्री-राजकमल-ललित-किसुनजी केँ देखने-पढ़ने छलाह। किरणजीक परम्परा हुनका बूझल छलनि। तेँ किछु बेसी आशा अहू बिन्दु पर छल। हिनका 'सोनाक नैया' रचय अबैत छलनि। 'माटिक लोक'क सेहो हिनका परिचय छलनि। तेँ माटि पर ठाढ़ लोकक जनवादी आ प्रगतिशील आँखि केँ चीन्हिक' पात्र आ परिवेशक रचना करब अपेक्षित छल। कोनो साहित्यकार सँ आजुक लोक, समाज आ समय, ई आशा रखैत अछि। मुदा सर्वतोभावेन साहित्यिक सक्षमताक बावजूदो 'जीर्ण दरभंगिया-इसकूल'क तेजगर छात्र बनबाक 'दुर्घटना' हिनको संग भइयेटा गेल। से मात्र वैचारिकताक कारणेँ। अन्यथा, दड़िभंगाक कएटा 'गुरु-घंटाल'सँ कतओक आगू जयबाक क्षमता हिनका मे छल। मात्र अहीटा बात केँ छोड़िक', माया बाबू अपना काल-खण्डक एकटा अत्यन्त सक्षम, बहुआयामी साहित्यकार छथि आ अपन समयक मिथिला, मैथिल, मैथिली केँ अपन असंख्य योगदान सँ परिपूरित केलनि अछि। हुनकर ऊर्जा स्तुत्य अछि। मुदा ऊर्जाक 'आउटपुट' कलाक चरमोत्कर्ष पर होइतो, वैचारिक रूपेँ आलोच्य अछि।

•

मिथिला दर्शन, कोलकाता
अप्रील-जून, 2014

बाल-कथा केँ आधार दैत लिली रे

लिली रे मैथिलीक युग-प्रवर्त्तक, साहित्य आ समाज केँ दिशा प्रदान केनिहारि लेखिका बनि गेलीह अछि। ओ अपना समय आ समाज केँ बहुत प्रभावित केलनि अछि। ओ अपना कथा, दीर्घकथा, उपन्यास, उपन्यासिका आ आत्म-कथा मे अपना समय आ समाजक मनोहारी चित्रणे नहि, अपितु बड्ड नीक विश्लेषणो प्रस्तुत केलनि अछि। हुनकर प्रदत्त दिशाक मूल्य-बोध केँ जँ मैथिली-समाज हुलसिक' ग्रहण आ आत्मसात् नहि केलक वा नहि क' रहल अछि, त' से समाजेक जड़ संस्कार आ स्वभाव थिक। ओ अपन सम्पूर्ण लेखन मे तत्कालीन आ समकालीन मिथिला एवं उत्तर-भारतीय समाजक नव-नव क्षितिजक उद्घाटन, अत्यन्त तथ्यात्मक विश्वसनीयताक संग, यथार्थवादी कल्पनाक संगम करैत, ततबे इमानदारीक निर्वाह करैत, केलनि अछि। प्रचूर वस्तुनिष्ठताक संग, जीवन आ जगतक व्याख्या करैत, कथा-लेखन (वस्तुतः कथा-वाचन) केलनि अछि। कथा-वाचनक एहेन सक्षमता, ईमानदार जीवन आ लेखने सँ अबैत अछि।

विश्व आ भारतीय साहित्यक इतिहासमे स्थापित तथ्य थिक, जे पैघ लेखकक कलम सँ बाल-साहित्य निःसृत होइतहिं टा अछि। ओ अवडेरिक' चलिए नहि सकैछ आ ओकर कलम कहियो-ने-कहियो, बाल-साहित्यक कोनो-ने-कोनो विधा पर उठिते टा छै। तहिना लिली रेक कलम मैथिली बाल-कथा पर, अद्भुत आश्चर्यक सृष्टि करैत, उठल अछि। मुदा धन्यवादक पात्र, 'भारती-मंडन', 'कर्णामृत', 'साहित्यिकी' (सरिसव पाही) आ डॉ. रमानन्द झा 'रमण' सेहो छथि, जिनका सौजन्य सँ लिली रेक छओ टा मैथिली बाल-कथा, हुनकर तीनू सद्यः-प्रकाशित कथा-संग्रह मे संकलित भ' क' पुनर्प्रकाशित भेले पर, आइ विचारण आ विश्लेषण करबाक सुविधा भ' सकल अछि।

'बुड़बक बाघ' (रंगीन परदा), 'बेङ मरड़क जन्मदिन' (लाली गुराँस), 'कौआक बेटीक विदागरी', 'बाल-श्रमिक', 'मूसक शिकार', 'आश्विन राजाक तीन दोस्त : भुल्ली, छिट्टी आ चित्ती (विशाखन), कुल छओ टा कथा, हिनकर

बाल-कथाक विश्लेषण लेल, पर्याप्त तँ नहि, मुदा कम-सम सेहो नहि अछि।

एहि सभक अतिरिक्त, मिथिला मिहिर आ अन्य पत्रिकादि मे हिनकर बाल-कथा छिड़िआयल हेबाक प्रचूर संभावना अछि, मुदा छओटा कथा, सम्यक-विश्लेषणक आधार त' बनिते अछि, विशेषतः ओहि युग मे, जखन एकहु-कथा-आधारित मूल्यांकनक परंपरा त' बनिये गेल अछि, आइ-काल्हि।

मैथिली बाल-कथा मे आइ-काल्हि कएटा कथाकार जमिक' कार्यारंभ केलनि अछि, जाहि मे डॉ. नीता झा, नारायणजी, प्रवीण भारद्वाज, ऋषि बशिष्ठ उल्लेखनीय काज क' रहल छथि। मुदा तकर पृष्ठभूमि की थिक आ कत' अछि?

बीसम सदीक स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कथा मे, बाल-कथा अपन विशेष स्थान नहि बना सकल। पैघ-पैघ कथाकार केँ बाल-कथा जमिक' लिखबाक सौकर्य नहि भेलनि, तेँ से विधा उपेक्षिते रहल। मिथिला मिहिरक 'नेना भुटकाक चौपाड़ि' बाल-कविता केँ अवश्य प्रेरित केलक, मुदा बाल-कथा-लेखनक परंपरा नहि बनि सकल। जीवकान्त आ राम लोचन ठाकुर सन रचनाकारगण छन्दोबद्ध 'बाल-कविता' केँ वा गीतकार 'बाल-गीत' केँ अवश्य पुष्ट करैत रहला मुदा नामवर कथा-सर्जकगण बाल-कथा-लेखनक प्रयोजन केँ उचित प्राथमिकता नहि देलनि, जखनकि 'बटुक' (पत्रिका), 'भारतीक बिलाड़ि' नामक उपन्यास (मणिपद्म) संकेत देने छल। मुदा जेना एत', समाज मे, स्वस्थ परंपरा जल्दी नहि बनि पबैत अछि, तहिना साहित्यो मे, मूक-लेखनीक दंश भोगैत, कए दशक धरि मैथिली बाल-कथा ठहरल रहल। तहिया आ तेहेन सन परिस्थिति मे लिली रेक धनीक कलम, बाल-कथा केँ जियाक' राखबे नहि केलक, अपितु एकटा निस्सन आधार सेहो प्रदान केलक।

मैथिली बाल-कथाक अनेक आयाम अछि वा भ' सकैत अछि, यथा- (1) बाल-वयसक लेल कथा (2) किशोर-वयसक लेल कथा (3) मानव-पात्र आधारित कथा (4) पशु-पक्षी, जीव-जन्तु-वला पात्र आधारित कथा (5) लोक-कथा, दंत-कथा, धर्म-आधारित कथा, आदि...

आधुनिक समय मे उर्पयुक्त सभ आयामक मैथिली बाल-कथा लिखा रहल अछि, से हर्षक विषय थिक। मुदा 'तहियाक विडंबनापूर्ण 'शून्यकाल' मे एक्कहि टा, असगरुआ दीप, भकरार भ' क' प्रज्ज्वलित

छल— लिली रे!

लिली रेक जे सभ कथा उपरि-उल्लिखित भेल अछि, ताहि मे एकटा बाल कथा (बाल-श्रमिक) मात्र एहेन अछि, जाहि मे किशोर-पात्र (मिलन) आ अन्य मानव-पात्र (मिसेज स्मिथ, मिलनक माय) आधारित कथा अछि। दू टा कथा (मूसक शिकार) आ (आश्विन राजाक तीन दोस्त...) जे वस्तुतः एक्के टा कथावस्तुक दू टा बाल-कथा थिक, जकरा फराक-फराक सफलतापूर्वक प्रस्तुत कयल गेल अछि, जाहि मे बाल-पात्र (आश्विन राजा) आ आश्विनक माता-पिताक संग, मूस, भुल्ली बिलाइ, तकर दू टा बच्चा— छिट्टी आ चित्ती, सेहो पात्र बनि आयल अछि। 'कौआक बेटीक विदागरी' मे सभ पात्र चिड़ै-चुनमुन्नी आ जीव-जन्तुए अछि। तहिना 'बुड़बक बाघ' मे बाघ, दोसर बाघिन आ तकर दू टा बच्चे अछि। तहिना 'बेङ मरड़क जन्मदिन' मे जीव-जन्तु आ जानवर (हाथी) पात्र अछि। तेँ हिनकर बाल-कथा लेखनक उद्देश्यक केन्द्रबिन्दु त' बाल आ किशोर अछि, मुदा पात्र अधिकतर जीव-जन्तु, चिड़ै-चुनमुन्नी, जानवर, कीड़ा-मकोड़ा सैह, बनैत अछि। छओ मे स' पाँच कथा तेहने अछि, जे विष्णु शर्माक 'पचतंत्रक' बाल-खिस्सा-पिहानी केँ मोन पाड़ैत अछि। लिली रे जाहि काल-खण्ड मे बाल-कथा-लेखन केलनि, ताहि समय मे ई एकदम्मे स्वाभाविक छल, कारण सभ भारतीय भाषाक बाल-साहित्य (कथा) पर ओकर प्रभाव पड़ल। पैघ बात ई थिक जे तकर उपयोग कोन बाल-कथाकार कोना केलनि? लिली रेक बाल-कथा बहुत सहज आ सामाजिक-पारिवारिक छल। ओकर स्वरूप वैज्ञानिक आ आधुनिक छल, जकर सहज-सन्देश बाल-वर्ग केँ सुग्राह्य छैक। ओ पंचतंत्रक पिहानीक नैतिक उपदेश बाल-वर्ग पर नहि लादिक' कथा आ पात्रेक माध्यमे कथ्य बुझा देलनि। छिट्टी, चित्ती आ भुल्ली बिलाइक माध्यमे आश्विन राजा केँ सामाजिकताक संदेश, पारिवारिक भावना, मूस पकड़बाक व्यावहारिक कलाकारी, पालतू पशुक नैसर्गिक स्नेह आ मालिकक प्रति इमानदारी आदिक अनेकानेक स्वस्थ सन्देश भेटैत छनि, त' चित्ती सँ छिट्टी केँ ज्ञान भेटै छै जे कोनो काज केँ बीचहि मे छोड़ि क' नहि चलि दी, मनोयोगपूर्वक सम्पन्न करी आ कोनो प्रतिफल (शिकार) के मिलि-बाँटिक' खाइ जाइ।

'कौआक बेटीक विदागरी' एतेक रोचक बाल-कथा अछि आ ताहि मे मैना, कोइली, रानी माछी, मधु-माछी, सभक बीचक सहयोग-साहचर्य, जैव-विविधता, विविध प्राणीक साहचर्य आ सह-अस्तित्व केर संग पारस्परिक

सहयोग-सहकार सँ कौआक बेटीक विदाइ सम्पन्न करबैत अछि, से सामूहिकता-सामाजिकताक विरल संदेश बाल-मन पर सहज रूपें अंकित करैत अछि, कारण, बाल-सुलभ क्रियाकलाप हिनकर सृजित बाल-पात्र आ पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, सभक अछि। 'बाल-श्रमिक' केँ त' बाल-कथाक श्रेणी मे राखलो जा सकैछ आ किशोर-कथा सेहो कहल जा सकैछ आ 'मिसेज स्मिथ' केँ मुख्य-पात्र मानि 'परिपक्व-कथा' सेहो मानल जा सकैछ। मुदा चित्रित आ वर्णित परिस्थिति एतेक विडम्बनापूर्ण अछि आ से बाल-श्रमिक आधारित अछि, कारण, मिसेज स्मिथ सेहो पहिने एकटा बाल-श्रमिके छलीह। तेँ मिलन नामक बाल-श्रमिक केँ 'मीठ-मेम साहेबी तरीका' सँ खटबैत अपना-आप केँ न्यायपूर्णो मानैत छथि। मिलनक गाल पर उखड़ल चटकनवला आडुरक चेन्हासियो मोन पाड़ैत छथि। मुदा बाल-श्रमिक सँ काजो लैत रहैत छथि, जे उच्च आ उच्च-मध्य वर्गक दुमूँहापन-केँ तथा बाल-श्रमिकक विडम्बनापूर्ण निरीहता-निस्सहायता केँ देखारो करैत अछि। अइ अद्‌भुत कथा मे मिलनक बाल-मनक उद्वेगक चित्रण भेल अछि आ मिलन केँ अपन काज ईमानदारी सँ करबाक पाठ त' भेटिते छै। वस्तुतः मिसेज स्मिथ अपना जीवनक बाल-श्रमिकवला चरणक विडंबना नहियो बिसरिक' बिसरिए जाइत छथि आ बाल-श्रमिकक सामाजिक शोषणक परंपरा केँ आगूए बढ़ा दैत छथि, दयालुताक पाखंड क' क'। समाजक ई विडंबनापूर्ण परिस्थिति आइयो देश भरि मे देखल जा सकैत अछि। बाल-श्रमिक कानून पारित आ लागू भेलाक बावजूद परिस्थिति ओहिनाक-ओहिना अछि– सम्पूर्ण देश मे। आ कथा ओतबे प्रासंगिक आइयो बनल अछि।

सामाजिक मूल्य, लिली रेक बाल-कथा सभ मे उभरि-उभरिक' आयल अछि। सभ पात्रक बीच मे स्नेह-सौजन्यक प्रदर्शन अद्‌भुत अछि। जतबे आश्विन राजा केँ मम्मी-पापा दुलार करैत छथिन, ततबे भुल्ली बिलाड़ि अपन दुनू बच्चा छिट्टी आ चित्ती केँ। 'कौआक बेटीक विदागरी' मे कौआ दुनू बेकती अपना बेटी केँ करुणापूर्ण दुलार आ विदागरी करैत अछि, जेना मैथिल मनुक्ख दुनू बेकती अपना बेटीक विदागरी लेल फिरीशान होइत अछि। कौआक जमाय ओहिना विदागरीक लेल जिद्द पकड़ैत आ रूसैत अछि, जेना मिथिलावासीक जमाय। कौआ कोइलीक अभिमान केँ वार्त्तालाप द्वारा ई कहि चूर-चूर क' दैत अछि, जे कोइलीक अंडा केँ कौआ सेबैत अछि।

तहिना 'बेङ मरड़क जन्मदिन' मे वनराज हाथीक अभिमान बेङ आ

गिरगिट एकताबद्ध भ' क' आ हाथीक कनेक उपेक्षा क' क' तोड़ैत अछि आ फेर अपन-अपन गलती केँ सकारि, एकठाम जुटिक' हँसी-खुशी सँ बेङ राजाक जन्मदिन मनबैत अछि।

सभ बाल-कथा मे फकड़ा-फुकड़ी भरल पड़ल अछि, जे कथा सभ केँ रसगर आ जीवन्त बनौने अछि। से प्रसंगानुकूल, सहज सरल बाल-काव्य मे अछि।

जंगली जीव सभक मध्य सामाजिकता आ सामूहिक जीवनवला भावना हिनकर बाल-कथा सभ मे भरपूर अछि। बच्चा केँ की आ केहेन कथा चाही, तकर अभिज्ञान बाल-कथाकार केँ हैब जरूरी अछि। एकताबद्ध भ' क' कोनो बलशाली आ जड़-पशु केँ वा जीव-जन्तुक 'बॉसगिरी' केँ चुनौती द' क' तोड़बाक चित्रण हिनकर अनेक बाल-कथा मे भेल अछि। 'बुड़बक बाघ' मे बाघ केँ, बाघिन वास्तव मे सक्रिय भ' क', सांभरक उचित रीति सँ शिकार क' बुड़बक साबित कइये दैत अछि आ फेर बाघिनक बच्चा सभ बाघ केँ व्यंग्य-गीत गाबि-गाबिक' सुनाबैत अछि। जाहि बाघ केँ शिकार नहि आओत, तकर भूखमरी निश्चितप्राय अछि। जाहि बिलाड़ि केँ मूसक शिकार करए नहि आओत, तकर जीवन रसहीन भ' जायत। अस्तित्व-रक्षाक सन्देश बाल-मन केँ सहजहि प्राप्य अछि, हिनका कथा मे!

लिली रेक बाल-कथाक कथ्य, पारंपरिक कम, आधुनिक बेशी अछि। जेना हुनका जीवन मे परंपरा आ आधुनिकताक प्रतिशत छल, तहिना साहित्यो मे आ बाल-कथो मे आयल अछि। तीन दशक पूर्व, बालकथा मे 'बेङ मरड़क जन्मदिन'क उत्सव मनाओल जायब, कमाल के 'अप-टु-डेट' दूर-दृष्टि छल, जे आइ सभ स्तरक परिवारक बाल-बच्चाक जन्मदिन मनेबाक उत्सवी-परंपरा मे देखा रहल अछि। जहिया 'बाल-श्रमिक प्रतिषेध अधिनियम' देश मे पारितो नहि भेल छल, तहिया 'बाल-श्रमिक' केँ कथाक प्रतिपाद्य बनायब 'साहसिक आ नव बात' छल। मुदा ततहि फेर 'कौआक बेटीक विदागरी' मे 'डाला साँठब' मिथिलाक ताही परंपरा केर अनुकूल छल, जकर परिचयो बाल-पाठक केँ देब जरूरी छल।

काल्हि लिली रेक 'मूसक शिकार' आ 'भुल्ली-छिट्टी-चित्ती', बिलाइक खिस्सा लिखायल, तेँ ताहि निस्सन आधारभूमि पर आइ डॉ. नीता झाक 'बिलाइ मौसी' लिखा रहल अछि वा प्रवीण भारद्वाज 'दादी माँक खिस्सा' लिखि रहल छथि, वा ऋषि बशिष्ठ 'नित-नित नूतन होय' लिखि सकलाह

वा डॉ. नारायणजी 'काँकोड़' अथवा अन्य बाल-कथा लिखि रहल छथि। ई बाल-कथा-लेखनक परंपरा बनब पैघ बात थिक, जकरा निस्सन आधार लिली रे देलनि अछि, अपना लेखन-काल मे। आइ लिली रेक बाल-कथा, नहि लिखइतय, त' दीव्या निशाक दहेज-विरोधी बाल-कथा 'बाल-मिथिला' (सं. प्रभात, पटना) मे नहि छपितय।

लिली रे जंगली जीवन, जंगल-न्याय, पशु-पक्षी, जीव-जन्तुक प्रचूर परिचय, विस्तारपूर्वक, सेहो वैज्ञानिक शैली मे बाल-कथाक पाठक केँ देलनि अछि। बाल-कथा-लेखन मे कल्पनाक संगम ओ बड्ड नीक ढंग सँ यथार्थक संग करैत छथि आ जंगल-न्यायक (जेना मत्स्य-न्यायक) कानूनक परिचय कही वा डार्विनक 'सर्वोत्तम आ सर्वाधिक उपयुक्तक अस्तित्व-संरक्षण'क सिद्धान्तक जानकारी कथाक माध्यमे प्रदान करैत छथि, बिना उपदेशात्मक भेने। कथाक गुणसूत्रे हिनकर संदेशमय भेल करैत अछि। हुनकर पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, आ ताहू मे बाल-पात्र मानवीय भावना-संवेदना सँ भरल पड़ल अछि, से अपना-आप मे, बाल-पाठक केँ आदर्श जीवन-मूल्य दिस प्रेरित क' सकैछ।

हुनकर मूसक शिकार मे, मूस केँ बिलाड़ि खाइत अछि, त' बाघिन (बुड़बक बाघ) सांभरक शिकार करैत अछि, बेङ (बेङ मरड़क जन्म-दिन) कीड़ा-मकोड़ा आ तकर अंडा केँ खाइत अछि, पैघ जीव अपना सँ छोट जीवक शिकार करैत अछि। मुदा कथा मांगक अनुरूप फेर एकता आ मित्रताक निर्वाह सेहो करैत अछि। ई यथार्थवादी-वैज्ञानिक दृष्टिकोण मैथिली कथा मे आयब जरूरी छल आ से ताहि जमाना मे अनलनि लिली रे!

बाल-कथा लिखैत लिली रे बाल आ किशोर-मानस-अनुकूल अपन सहज भाषाक सौन्दर्य-बोध सँ कथा केँ ओत-प्रोत क' दैत छथि। कतहु जबदाह परिवेशक चित्रण नहि करैत छथि, आ ने जबदाह भाषाक प्रयोग करैत छथि। रोचकता आ सहज-वर्णन सहज-भाव आ सहज भासाक चासनी मे बोरि क' हिनकर बाल-कथा 'चन्द्रकला-मधुर' (मिठाइ) बनि जाइत अछि, जकर एकहि 'बाइट' सँ मुँह मे रस भरि जाइत अछि। लिली रे अपन बाल-कथो मे अनुपमेय, आधुनिक आ वैज्ञानिक-सोचक संग छथि। से मैथिली बाल-कथा केँ निस्सन आधार दैत अछि, जाहि पर आजुक बाल-कथाकारगण 'सुपर-स्ट्रक्चर' ठाढ़ करबा मे लागल छथि।

•

घर-बाहर

अप्रील-जून, 2016

'पिता'क संक्रमणकालीन कछमछी

'पिता' प्रभास कुमार चौधरीक एहेन कथा थिक, जे गप्प-सप्पक खिसक्कड़ी शैलीक प्रारंभिक रूपक झाँकी देखबैत 1973 ई. मे पाठक सँ प्रत्यक्षित भेल छल, जाहि मे बहन्ना अर्थात शिल्पगत सूत्रधारक काज कयलक जीवकान्तजीक कल्पित अथवा एकटा वास्तविक पत्रक किछु पाँती।

जीवकान्तजीक चिट्ठी सँ कथाक विश्वसनीयता बाँचल रहि सकल, कारण, कथा मे निबन्धात्मकताक पर्याप्त समावेश कयल गेल छल आ तेँ कथाकार केँ ई ताना-बाना बूनब आवश्यक छलनि। कथाक नायक पिता छथिन जिनकर परिवेशात्मक ईकाई गाम छनि। कथाक मुख्य प्रयोजन गाम, देस आ समाज (सतही रूप मे) बुझाइछ, जकर बहन्ना 'पिता' केँ बनबैत छथि कथाकार। प्रतिनिधिक रूप मे।

मुदा... मैथिली कथाक एकटा एहेन युग रहल, जाहि मे सम्बन्ध ोपरक पारिवारिक कथा लिखल जयबाक एकटा धारा चलल छल। जेना—बाबी, मामी, पिता... आदि...।

एहि धाराक अन्तर्गत लिखल गेलाक बावजूदो 'पिता' मे प्रभासजी मिथिलाक एकटा कोनो गाम मे, एकटा कोनो परिवार मे, बनैत-बिगड़ैत सम्बन्ध-बन्ध आ विघटन-टूटन केर अलगे तरहक संकेत 1973 ई. मे करैत छथि। एहि अन्योन्याश्रित सम्बन्धक बीच कोना एकटा नोकरिहारा माय-कनियाँ अथवा पिता-पुत्रक मध्य पेंडुलम जकाँ डोलैत रहैए जिनगी भरि अथवा पिता-पत्नीक मध्य कोना अहुरिया कटैछ—से जीवकान्तजीक पाँती सँ प्रथम द्रष्टया द्योतित होइछ। मुदा ताहि सँ कथाकार कतेक सहमत भ' पबैत छथि आ पाठक 'पिता' कथाक आधार पर कतेक सहमत हेताह, से त' पड़ताल करहि पड़त।

कोनो कथाकार अपन समकालीन समाजक रेखाचित्र बनाबथि वा विकृतिक सही वर्णन करथि, से एकटा अपरिहार्य कौशल थिक। प्रभासजी निस्संदेह एहि कौशल सँ युक्त कथाकार छथि।

कथाकार (हम) आ हुनक पिताक ई गाम मिथिलाक एकटा

प्रतिनिधि गाम थिक– से कथाकार प्रमाणित करए चाहलनि अछि। मिथिला वा भारतक आठम दशकक प्रारंभिक वर्ष मे एकटा औसत गामक विद्यमान स्वरूप आ विकृतिक रेखाचित्र घिच' मे माहिर साबित भेलाह-ए प्रभासजी, तकर प्रमाण थिक 'पिता' कथा। विकृतिक चित्र सुकान्त सोम सेहो बनौलनि 'रक्तबीज' नामक अपन कथा मे। मुदा से मनोरम नहि भ' क' पर्याप्त जबदाह भ' गेल आ से कथाक अभिप्रेत आ संप्रेषण केँ आघात कयलक। मुदा ओहि कथाक सिजरियन सर्जरी एतय अभिप्रेत नहि, अपितु प्रसंगवशहि चर्च कयल।

'पिताक' गामक प्रसंग मे मोहन भारद्वाज स्वीकार करैत छथि जे टुटैत कृषियुगीन आ नव-औद्योगिक संस्कृतिक बीच संक्रान्ति-काल मे ठाढ़ अछि– पिता। कथाक गाम आ पिता तेहेन यथार्थ बिन्दु सभ केँ ल' क' बनल अछि, जे ई सहजहिं कोनो भारतीय गाम वा गाम सँ जुड़ल पिताक प्रतिनिधि चित्र भ' क' ठाढ़ भ' जाइत अछि। मोहन भारद्वाजक एहि बात सँ सहमत नहि हेबाक कोनो टा कारण नहि अछि।

प्रभासजी ग्रामीण परिवेशक आ मध्यवित्त आ निम्नमध्यवर्गीय चेतनाक एहेन कथाकार छलाह, जिनका गामक अवधारणा गहींर रूपें छलनि। विस्तृत कथाधार पर गाम आ परिवारक उत्साह आ अवसाद केँ चित्रित करबाकाल ओ ग्रामीण जीवन्तता आ माटि-पानिक सोन्हगर सुगंध केँ नहि बिसरैत छलाह। समकालीनताक अवधारणा आ अपन परिवेशक पूर्ण ज्ञानक संग ओ कलम उठबैत छलाह, से 'पिता' कथा सँ सेहो बुझाइछ।

जे 'पिता'क पृष्ठभूमि थिक, से प्रभासजीक समस्त लेखनक पृष्ठभूमि थिक आ सैह आधुनिक भारतीय समाज वा गामक पृष्ठभूमि सेहो थिक। पूर्व-मध्यकाल मे जनमल आ मध्यकाल मे जुआँठ भेल भारतीय सामन्तवाद जखन उत्तर-मध्यकाल वा पूर्व-आधुनिक काल मे पतनशील भेल त' ओ पतन मात्र राजनीतिक सामन्तवादक स्तर मे नहि छल, अपितु सामाजिक स्वरूप आ आर्थिक सामन्तवादक स्तर मे सेहो जगजियार भेल। सामन्तावादक खाढ़ी वा सीढ़ी मे जखन विघटन प्रारंभ भेल त' समाजक तानी-भरनी काँच सूत जकाँ टूटय लागल छल– जे संयुक्त परिवारक व्यवस्था मे ह्रासक रूप मे समक्ष आयल। परमाणविक-विखण्डन शृंखला-प्रतिक्रिया जकाँ ई विखण्डन आइयो दाम्पत्य-विखण्डन, वैयक्तिक टूट आ नेह-विखण्डनक रूप मे गतिमान अछि। तहिना जाति आ उप-जाति विखण्डनक प्रक्रिया गतिमान भेल आ

आइ अपन निकृष्टतम रूप मे गतिमान अछि। तहिना आर्थिको स्वरूप मे (ग्रामीण समाज मे) ई टूटन पूर्व-आधुनिक काल मे अपन चरम रूप मे छल। ताहि परिवेश पर जखन नव-औद्योगिक तत्वसभक आक्रमण भेल त' संक्रमणकालीन उथल-पुथल आ परिवर्तनक कछमछी भारतीय समाज मे देखार होअय लागल छल। स्वभावतः साहित्य एहि सँ निरपेक्ष नहि रहि सकैत छल, आ ने रहल। समकालीन भारतीय समाज, साहित्य प्रभासजीक लेखन आ 'पिता'क पृष्ठभूमिक यैह यथार्थ थिक। सामन्तवादी समाजक आर्थिक अवमूल्यन आ मध्यवर्गक टूटन, संक्रान्तिकालीन मैथिल समाजक द्वन्द्व आ ताहि मे जखन अपन समकालीन जीवनक आयाम सभ केँ मिझहर क' क' प्रभासजी कथा परसैत छथि त' बुझाइछ जेना आजुक साहित्यकार आ साहित्य लेल ओ कतेक आवश्यक सीढ़ी छलाह। 'सामन्तवादी साहित्य' सँ सोझे 'आधुनिक साहित्य' पर हनुमान-कूद होइत त' मैथिलीक कथा अविश्वसनीयताक ग्रास बनैत। प्रभासजी एकटा एहेन सेतु बनलाह जे एहि खतरा सँ मैथिलीक कथा केँ मुक्ति देलनि। मोहन भारद्वाज 'पिता'क प्रसंग कतेक सटीक कहै छथि, जखन ओ कहैत छथि जे मिथिलाक बदलैत गाम, गामक बदलैत लोक आ ओहि लोकक स्वरूपक जे खाँटी रूप हिनक कथा मे भेटैछ, से अन्यत्र दुर्लभ! ग्रामीण चरित्र आ स्थापित मूल्यक विघटनक सजीव चित्रण आ स्थानापन्न होइत जीवन-मूल्यक जाहि स्थिति केँ सोझ-सोझ भाषा मे राखल गेलए से कथाकारक अनुभवक उपजा थिक, तमसगीरक प्रतिवेदन नहि। वस्तुतः 'पिता'क ठोस आधार कथाकारक अनुभव आ तत्कालीन सामन्ती अवशेष सँ उपजल अवसादे थिक। अन्ततः कोन-कोन एहेन तत्व थिक, जे कि एहि कथा मे विद्यमान अछि, आ जे एहि कथा केँ खाँटी मैथिलीक कथा बनबैत अछि।

कोनो गाम मे दैतक खुनाओल पोखरि हैब मिथिलांचलक जनमानस मे दन्तकथा सन भ' गेल अछि। जे कोनो पैघ सन पोखरि कोनो गाम मे अछि त' तकरा पाछू एकटा दन्तकथा अछि जे ई दैत्यक खूनल पोखरि थिक। ताहि दन्तकथाक चर्च प्रभासजी प्रसंगवश नहि करितथि, से संभव नहि छल। एहि पोखरिक (अपना गामक) उन्नति-अवनतिक वर्णन ओ 'पिता' कथा मे एना कयलनि अछि जेना अपना गामक। पोखरि केँ गाम अथवा मिथिला वा देसक बिम्बस्वरूपहि प्रस्तुत कयल गेल अछि। सौंसे

पोखरि कुम्भी सँ छारल आ जाठि निपत्ता-पोखरि अथवा समाज मे भरल विकृति आ नेतृत्ववर्गक सकारात्मकताक अवसानक प्रतीक थिक। आइ पोखरिक उपयोगिता समाप्तप्राय अछि— ने त' नहयबा योग्य आ ने एकर पानि अदहन चढ़यबा योग्य। गामघर मे नहुँ-नहुँ ढुकैत परिवर्त्तनेक गति जे धनुकटोली सँ बभनटोली धरि आ मलहटोली सँ खतबेटोली धरि आब कलेक पानि सँ भानस करैछ, पोखरिक पानि सँ नहि। पोखरि जे संयुक्त परिवार सन गंगा छल, तकर जरूरति आब लोक केँ नहि रहलैक आ कल जे व्यक्तिगत परिवारिक एकटा मुख्य तत्व थिक, से घरे-घर भ' गेल। मुदा ततहि ईहो ध्यातव्य थिक जे पोखरिक पानि कतबो शुद्ध छल त' कलक पानिवला शुद्धताक आशा ओकरा सँ नहि कयल जा सकैत छल। एहना स्थिति मे एहि परिवर्तनक प्रासंगिकतो ततबे छैक। अन्ततः गाम शुद्ध-जलापूर्तिक अभियान सँ बाँचल रहैत त' से गाम केँ वैज्ञानिक लाभ सँ वंचित करबाक कसाइपना होइत। वस्तुतः अनियोजित विकास-संस्कृतिक समानान्तर विकृतिक-धारा बहैत अछि। परिवर्त्तनक सकारात्मक आ नकारात्मक दुनू पक्ष एक संग दृश्यमान अछि मिथिलाक कोनो औसत गाम मे। ताहि परिवर्त्तन केँ स्वयं प्रत्यक्षीकरण करब आ तखन ओकरा स्वर देब, कथाकारक लेल उचिते छल।

मुदा ई परिवर्त्तन तात्कालिक आ प्रायोजित प्रमाणित होइछ। कथाक अगिले अनुच्छेद कहैछ जे कल टोले-टोल गाड़ल गेल रहैक पछिला एलेक्शनक प्रसाद-स्वरूपहि। सरकार आरो बहुत रास काज कए सकैत छलै। मुदा किऐक? भोट दुआरे। भोटक समय मे सड़क पर माटि खसाओल गेलैक, रोड़ा खसाओल गेलैक जे पिचरोड बनतैक। इलाका आसमर्द भ' गेलै जे असंभव काज संभव भ' रहल अछि। क्यो दोकान खोलबाक सपना देख' लागल त' क्यो मोटर चलयबाक लेल परमिटक सपना। बाधे-बाध बिजलीक खंभा खस' लागल। एक-दोसरक मोन मे ग्रामीण ईर्ष्या सेहो जनम' लागल।

मुदा एलेक्शनक बाद बिजलीक खंभाक निपत्ता हैब भारतीय राजनीति आ प्रशासनक पोल खोलिक' राखि देलक। राजनीतिक छल-छद्म बिजली-बत्तीक सपना निपत्ता क' देलक आ डिबियाक टिमटिमायब आइयो बन्न नहि भेल अछि मिथिलाक गाम मे। सरकारी-तंत्रक पूर्ण-विफलताक चित्र सँ भरल अछि ई कथा। परिस्थिति, देशक आजादीक एतेक दिनक

बादो (1973 मे) यैह छल जे वित्तमंत्रीक आगमन आ भाषणबाजीक बावजूदो इसकुलक भवन नहि बनि सकल। हेडमास्टरी लेल मोकदिमाबाजी शिक्षा-व्यवस्था मे पैसल ओ चकरी मारिक' बैसल अनुचित महत्वाकांक्षाक साँप थिक, जे शिक्षाक व्यवसायीकरण क' देलक अछि। फेर हड़ताल, विद्यालय-बन्दी, छात्र-राजनीति आ गुटबन्दी, हु-ले-ले-ले-फुर्र... आदि की थिक? प्रजातंत्रक विकृति कहू वा भोट-राजनीतिक बाइ-प्रोडक्ट? जे कही, मुदा दुनू स्थिति समाज आ शिक्षा केँ भयावह दुर्दशाक स्थिति मे आनि पटकलक अछि। गामक एहि युगसत्य आ युग-चिन्ताक संग जँ 'पिता' कथा भाँज पुरैत अछि त' से कथाकारक सम्यक् दायित्व-निर्वाह थिक।

मुदा 'बाहरी' सिमान परक इसकुल (छात्र)क गप्प सँ आर भयावह स्थिति 'भितरिया' (कन्या-विद्यालय) इसकुलक हालत कहल गेल अछि कथा मे। ई स्वाभाविको अछि जे बालक पाठशाला सँ बेशी भयावह दुर्दशा कन्या-पाठशालाक हो। कन्या पाठशालाक एकमात्र छाहरि बेलक झमटगर गाछ अछि। जमीन रजिस्ट्रीक उपरान्तो मास्टरनीक दलान पर इसकुल चलब नारी-शिक्षाक उपेक्षाक कथा कहैए। समाज आ सरकारक दृष्टिकोण आ नारी-संवर्गक प्रति अनुदारता स्वतःस्पष्ट आ स्वयंसिद्ध भ' जाइछ। तकर कारणो स्पष्ट अछि जे नारीक भोटक प्रति त' नेतृत्व-वर्ग आश्वस्ते रहैछ, जँ पुरुष-समुदाय केँ लाठी, टाका वा जाति-सम्प्रदायक नाम ल' क' पटा लेलक। तेँ नारीक ओहो टा सामाजिक उपयोगिता आ महत्व पृष्ठभूमि मे नुका जाइछ। आइयो विद्यालय आ नारीक स्थिति मे सतहे पर थोड़ेक अन्तर आयल अछि। आइ जँ गाम मे इसकुल-भवन अछि त' चटिया नहि अछि, मास्टर जी नागा करैत छथि आ अनेक कारणेँ शिक्षा-संस्कृतिक अभाव अछि इसकुल मे। आ नारी त' 'भोग्या आ पीड़िता' आइयो अछि, घर-बाहर मे।

कोनो टा सामाजिक विकृतिक विरुद्ध विरोधक समानान्तर धारा सेहो उत्पन्न आ गतिमान होइत रहैछ। नदीक कछेर सँ बालू उठाब'वला लोक सँ फी टायरगाड़ी दू टाका टैक्स असूलि क' कन्या पाठशाला मे लगयबाक योजना एकटा सुविचारित समाधान छल। मुदा अनेक बेरक क्रान्तिक गर्भपात जकाँ एहू बेर यैह होइछ जे एकटा दलाल-वर्गक जन्म भ' जाइछ नदीक कातक बालुपर आ ओ बालुओ केँ गीड़य लगैछ, गीड़ू साहु जकाँ। असंख्य 'टैक्स कलेक्टर' कोना टैक्स-असूली मे अराजकता उत्पन्न

क' दैत अछि आ अराजकताक तब पर अपन सोहारी पकाब' आ भकोस' लगैत अछि— तकर नीक उदाहरण थिक बालुक टैक्स ओसूली मे जनमल दलाल-वर्ग। मोन पाड़ल जा सकैछ जे 1973 क मिथिला आ भारत मे भरिसक्के कोनो एहेन क्षेत्र रहल हो, जाहि मे दलाल-वर्गक अस्तित्व नहि रहल हो आ हर धंधा मे गोरखधन्धा नहि हो।

चालनि जकाँ सहस्त्र-छेद भेल भारतीय समाजक अव्यवस्थाक वर्णन कथाकार अंकित करैत छथि जखन धारक पानि, नाव आ नैयाक खेरहा ओ कहैत छथि। बुढ़बा-पीढ़ीक मूक भ' शोषण भोगब आ नवका पीढ़ीक सोडावाटरक बोतल सँ उफनैत अस्तित्व-विहीन, अस्थायी, दिशाहीन विद्रोह केँ संकेतित करैत छथि कथाकार। पुरना नाव मे भूरे-भूर हैब जतय प्राचीन व्यवस्थाक जर्जरताक खिस्सा कहैछ ततहि नवका नावक आकांक्षा नव-पीढ़ीक उत्साह आ महत्वाकांक्षा केँ। मुदा सामाजिक जड़ताक, परिणामस्वरूप पुरना नाह अधिककाल बालु पर उनटले पड़ल रहैछ आ यथास्थितिवादी लोक सभ घुमानवला रस्ता सँ पुल पर द' क' नदी पार करैत अछि वा धोती उछेहि क' पार होइछ।

स्त्रीगण समाजक नूआ उछेहि क' धार पार करब आ ओहेन स्थिति मे ककरो देखि लेला पर नवकनियाँक लाजें कानय लागब कतेक कारुणिक अछि! ठीक ओतबे कारुणिक, जतेक सामाजिक जड़ता संवेदनहीनता आ कसाइपन!

व्यक्तिगत स्वार्थ कोनो सामूहिक दसगर्दा काज केँ गीड़ि जाइत अछि। गामक अव्यवस्था आ अनुशासनहीनता कतेक प्रबल अछि? नवतुर जँ थोड़ेक सक्रिय भ' क' पोखरि मे मछहर क' क' सफाइ कराब' चाहलक त' ललमुहाँ रोहु देखिते पट्टीदार सभ बखरा बाँटबाक लेल धड़फड़न खसा देलनि आ माँछ लूटि क' पोखरि मे कुंभी आ मच्छर भनभनाइत छोड़ि देलनि। यैह हाल गामक कवीश्वर चन्दा झाक नाम पर बनल पुस्तकालयक सेहो होइत अछि।

किछु गोटेक उत्साह सँ पुस्तकालयक अस्तित्व आ फेर अस्तित्व-मर्दन सँ पुस्तकालय वर्त्तमान सँ अतीत बनि जाइछ। कारी इतिहास। मानि लिय' जे कथाकारक ई गाम जँ पिंडारुच थिक त' हमरो गाम (मेंहथ) मे पुस्तकालयक दुर्दशाक यैह खिस्सा थिक। सत्य मानू, हमरहु गाम के अपना-आप पर गौरव आ गुमान छैक, जखन कि पुस्तकालयक आलमारी ककरा घर गेल आ पोथी सभ कोन दोकानक ठोंगा बनल, तकर कोनो टा

ठेकान नहि। जड़ल जौड़क ऐंठन मिथिलाक सभ औसत गाम मे एखनहुँ छैक। 1973 क कोन गप्प? हाथी बिका गेल, सिक्कड़ बकूटने, ऐंठल जुन्ना बनिक' टर्र भेल छी। सामन्तवादी अवशेषवला समाज मे ई गौरवाह-मानसिकता आइयो कौखन क' देखार भ' जाइत अछि, जखन तथाकथित उच्च जातिक लोक अनका 'छोटहा' आ 'राड़' कहिक' अपन गारिवला संस्कार आ कुप्रवृत्ति केँ देखार करैछ।

मुदा 'पिता' कथाक पहिल साढ़े तीन पृष्ठ पिताक गामक पृष्ठभूमि पर खर्च कयल गेल अछि आ शेष साढ़े तीन पृष्ठ पिताक कथा कहैत अछि। कमाल के संतुलन—गाम आ पिताक चरित्र विश्लेषण मे भेल अछि, जखनकि दुनूक चरित्रगत असंतुलनक कारणेँ एहि कथाक सृष्टि भेल अछि। असल मे 'पिता' कथाकारोक पिता छथि। मुदा, वस्तुतः ओ गाम भरिक 'पिता' छथि। अथवा एना कहू जे गामक नेतृत्व करबाक आकांक्षा सँ युक्त ओ एहेन प्रतिनिधि वा नेता छथि जिनकर छवि आदर्शवादी राजनीति कयनिहारक वास्तविक निराशाग्रस्त केर बनैत अछि।

वा प्रतिनिधि जाहि परिवेश मे बसैत हो, तकर पृष्ठभुमिक विशद चित्रण हैब ओतबे आवश्यक अछि, जतबा प्रमुख नायकक चरित्र पर ध्यान देब। तेँ कथाकारक गामक विकृतिक विभिन्न आसंग पर एतेक शब्द खर्च करबाक औचित्य त' छैके। वस्तुतः सातम दशकक कालखण्डक चित्रण थिक 'पिता' मे गामक चित्र। गाम त' एकटा ईकाई-मात्र थिक। यैह हाल वस्तुतः सातम दशकक सम्पूर्ण समाज आ देशक छल। यैह पृष्ठभूमि थिक जाहि पर 1977क रक्तहीन 'बैलट-क्रान्ति' अपन रस्ता (भाया तानाशाही विरोध) बनौलक। सामाजिक विकृतिक समानान्तर विरोधक ई कथा एकटा आदर्श उदाहरण भ' सकैत छल। विकृतिक ढेरी पर सामाजिक चेतना कोना गोबरछत्ताक रूप मे जनमैत अछि आ 'थीसिस' मे कोना 'एन्टी-थीसिस' केँ बीया नुकायल रहैछ जे उचित नमी पाबि अंकुरैत अछि— से सातम दशकक भारतक खिस्सा मे देखल जा सकैछ। मुदा से सभ सँ पैघ बात नहि।

बेर-बेर कोनो असहज राजनीतिक क्रान्ति, जकर आधार पदलोलुपता रहैछ, तकर कोना गर्भपात होइत अछि वा भेल अछि(1977-80 क मध्यक राजनैतिक नाटक) तकरो खिस्सा प्रभासजी कहलनि अछि, अपन समाजक विकृतिक (चित्रणक...) क्रम मे। आजुक यथास्थिति सातम दशकक यथास्थिति

सँ बेशी भयावह अछि। यथास्थिति मे सकारात्मकता अबैत त' एकर स्वरूप केँ कल्याणकारी यथार्थ मानबाक प्रक्रिया प्रारंभ करितहुँ वा कम-सँ-कम सुधारवादोक नाम दितहुँ। मुदा सुधारवादियो धारा एहि समाज मे एखनहुँ तात्कालिके आ क्षणभंगुरे प्रमाणित भ' पाबि रहल अछि। नकारात्मकता, विकृति, जड़ता आ दुर्दशा, छल-छद्म, प्रपंच-पाखण्ड आइ शताब्दीक चरम शिखर पर अछि। ओना से एतय विवेच्य नहि, मुदा, तकरो झाँकी-दर्शन एहि कथा मे कयले जा सकैछ। एहि कथा मे वर्णित अनेक क्रान्तिक अकाल-मृत्यु ओहने अछि, जेना 1977क क्रान्तिक अकाल मृत्यु राजनीतिक कुकुरा-लूझि सँ भेल छल। 'सम्पूर्ण-क्रान्ति' अन्ततः 'आंशिको क्रान्ति' नहि प्रमाणित भ' सकल। आइ समाज भूखल पेटक आजादी केँ लौंगिया मेरचाइ जकाँ सुआदि रहल अछि-सुसुआ रहल अछि आ जे. पी. आन्दोलनक 'बाइ-प्रोडक्ट' इंदिरा गाँधीक आपातकालीन छड़ी ल' क' गाँधी मैदान मे भेड़-बकरी जकाँ जनता केँ डपटिक' हाँकि रहल अछि– 'चोप्प! बैठ जाओ! हम जे कहते हैं, से ध्यान से सुनो!'

मोन पाड़ू कृपया सातम दशकक राजनीतिक क्षितिजक वक्तव्य सभ–

(1) जे.पी. कोई मसीहा नहीं हैं।' –मोरारजी देसाई।

(2) 'मैं कान्ति (देसाई) को बलि का बकरा नहीं बना सकता।' –मोरारजी देसाई

(3) दल-बदल आ कूटनीतिक तोड़-जोड़ सत्ताखेलक-कीर्तिमान-चरण सिंह-देवीलाल-गायत्री-राज नारायण

(4) 'हमाम मे सभी नंगे हैं।

(5) कानून के हाथ बड़े लम्बे होते हैं। –मोरारजी

(मुदा ककरा पकड़बाक लेल? जनसामान्य केँ।)

मोन पाड़ू ओहि समयक कहबी– 'कहा पठौलनि मोरारजी भाइ, मुँहक नापें भेटत मिठाइ।'

उपर्युक्त सभ वक्तव्य तथ्य 1977क बैलट-क्रान्ति पर व्यंग्यात्मक अट्टहास छल। सम्पूर्ण-क्रान्तिक ओहिना सम्पूर्ण गर्भपात भेल–जेना प्रभासजीक 'पिता' कथाक गामक पुस्तकालय, पोखरि, बालक-बालिका विद्यालय, धारक नाह-व्यवस्था, मछहरिक अराजकता, बालुक टैक्स व्यवस्था मे पैसल

दलाली) मे। ई सभ गर्भपात दलाल-वर्ग द्वारा प्रायोजित छल, जकर जन्मदाता राजनीति आ राजनीतिये टा छल। तकर सहयोगी भले व्यापारी वा नौकरशाह रहल हो। विश्व भरि मे एहेन असंख्य क्रान्तिपात भेल अछि, तकर इतिहास गवाह अछि। ठीकम-ठीक 'पिता' कथा जकाँ विकृति केँ विनष्ट करबाक अभियानक क्रम मे जखन कखनो सामाजिक चेतनाक भ्रूण बनैछ, नेता दलाल-ठिकेदार-वर्ग अहिना अपन खलनायकी देखबैत स्वार्थान्ध भए गर्भपात प्रायोजित करैछ आ कौआ-लूटि होअय लगैछ। मुदा की कोनो समाजक लेल ई विकृतिकरण, चेतनाक नैसर्गिक भ्रूणीकरण आ प्रायोजित गर्भपातीकरक प्रक्रिया शाश्वत थिक? नहि, किन्नहुँ नहि।

ई सामयिक, क्षणभंगुर तात्कालिक, संक्रान्ति-कालीन, सत्तावादी थिक। चेतना त' आत्माक अमरत्वक सिद्धान्त जकाँ अज्जर-अम्मर होइत अछि। चेतना सदतिकाल संघर्षरत रहैत अछि–भले ओ हमरा लोकनिक आँखिक स्थूलताक कारणेँ अदृश्य हो आ सूक्ष्म-दृष्टि अर्जित केला सँ दृश्य। त' की प्रभासजीक उद्देश्य छल, विकृति आ गर्भपातक मात्र वर्णन क' क' यथास्थितिक गौरवान्वीकरण? की ओ विकृतिक वर्णन मे मगज खपौलनि आ चेतनाक जीवन्तता सँ बेशी गर्भपात मे आस्था देखौलनि? की ई आरोप दमगर अछि? की ओ चेतनाक असहज दीर्घ-जीवन इमानदार रहि प्रस्तुत क' सकैत छलाह आ से यथार्थ होइत? की चेतनाक काल्पनिक विषयक चित्रण क' क' 'स्यूडो मार्क्सवादी कथाकार बनितथि' त' हुनक लेखकीय व्यक्तित्व एतेक विश्वसनीय होइत, जतेक आइ अछि? प्रश्न फेर ईहो उठैछ जे की प्रभासजी मे अपन युगक सीमा तोड़बाक लेखकीय सामर्थ्य छल आ से ओ क' सकलाह?

नहि, हुनका मे अपन युगक सीमा तोड़बाक लेखकीय सामर्थ्य नहि छल। ई आश राखब थोड़ेक बेशी हैत। प्रभास जीक जीवन आ पृष्ठभूमि केँ देखी त' स्पष्ट हैत जे ओ ओतबे क' सकैत छलाह जतेक केलनि। किछु दिन आर जीवन रहितनि त' आर-आर परिमाण मे उपलब्धि अवश्य होइत, किछु आर विविधता केँ ओ अपन उपलब्धिक राजमुकुट मे अवश्य जोड़ितथि। मुदा तकरो ई अर्थ नहि जे हुनक उपलब्धिक स्टॉक कोनो कम अछि।

प्रभासजी अपन 'पिता' कथा मे बहुत स्पष्ट छथि। बाद मे, देखल गेल जे 'नवारंभ' अथवा अपन आन-आन उपन्यास सभ मे ओ आर घनगर

चित्र प्रस्तुत कयलनि आ चेतना केँ पुष्ट बनयबाक प्रयास कयलनि। ताहि सँ हुनक लेखकीय दायित्वक निर्वाह भेल।

मुदा क्षमा करब!

ई त' हम किदन-कहाँदन कहि देल! हम त' एकटा गामक गप्प कह' चाहैत रही जतय प्रभासक कथाकारक पिता रहैत छलाह। पिता आदर्शवादी हेडमास्टर छलथिन, तेँ वित्तमंत्री सँ इसकुल लेल अनुदानक याचना केलनि। 'पिता' अत्यंत सक्रिय सामाजिक कार्यकर्त्ता छलथिन आ सामाजिक समरसता मे रमिक' समाजोत्थानक उत्साह प्रदर्शित करैत छलाह। नवका पीढ़ी केँ दिशा-निर्देश देबाक लेल सतत तैयार अपन पीढ़ीक प्रतिनिधि 'पिता' (अर्थात् 'दादा') एकदिन एतेक श्लथ आ शिथिल भ' जाइत छथि नैराश्य सँ आ 'यूरीनिया'क रोगी बनि जाइत छथि। कथाकार अर्थात् नवका पीढ़ी ओहू हालत मे हुनका सँ दिग्दर्शन संदेशक आश रखैत अछि। टूटनक दंश भोगैत आ 'डिप्रेशन' क गहींर अवसाद मे डूबल कोनो व्यक्ति (पिता) महाप्रयाणो कालक संदेश देबा मे समर्थ नहि छलाह। ममता, नेह आ आत्मीयता सँ भरल कोनो व्यक्ति (पिता) प्रतिहिंसा नहि पोसि सकैत छलाह। आ सेहो एहेन आदर्शवादी आ गाँधीवादी! हुनकर सामाजिक संलग्नता गाँधीवादी समाजवादक नजदीक 'पिता' केँ अवश्य ठाढ़ करैत अछि, जतय हिंसा प्रतिहिंसा निषेध थिक।

मुदा गामक एतेक चिन्ता कयनिहार पिताक संग गाम नहि अछि आ ओ एकसर रुग्ण पड़ल छथि मृत्युशय्या पर आ सेहो भीतर सँ टूटिक'। जहिया युद्धक्षेत्र आ कर्मक्षेत्र मानि इसकुल जाइत छलाह, तहियो सम्पूर्णता मे गामक करैत छलाह आ कथाकार-पुत्र केँ अपन-पत्र मे गामक तथाकथित अ-घटनो सभ केँ विशद वर्णन करैत लिखैत छलाह। शर-शय्या धेने होथि,... आ से भीष्म पितामह जँ असगर शर-शय्या धेने होथि, बाध्यता मे अपना अन्तस मे डूबल, त' गामक बइमानीक मादे आर किछु कहब शेष नहि रहि जाइछ। कथाकार फेर ईहो गछैत छथि जे जँ 'दादा' (पिता)क पत्र मे वर्णित गामक परिचय नहि रहितनि त' ओ गाम सँ दूर भ' जइतथि। अपन पूर्व-पीढ़ीक योगदान केँ गछब कथाकारक कृतज्ञ-भावना थिक, जे इमानदार अछि।

कथाक अन्त अपन युगक मांगक अनरुपहि कारुणिक आ दर्दनाक अछि—से पैघ बात नहि थिक। पैघ बात ई थिक जे जीवकान्त, कथाकार प्रभास

पर ई आरोप लगौलनि वा प्रशंसा केलनि जे प्रभासजी द्वारा सृष्ट कथानायक सामान्यतः 'एकोमोडेटिंग' होइत छनि। जीवकान्तजी ईहो लिखने रहथिन जे प्रभास जीक कथा मे प्रायः दू बिन्दु होइत छनि— एक पिता आ एक पत्नी। आ कथानायक प्रायः दुनू बिन्दुक बीच डोलैत वा 'ओसिलेट' करैत रहैत छथि।

मुदा कथाकार जखन घोषणा करैत छथि जे ओ पहिल बिन्दु आब टूटि गेल त' बहुत दर्दनाक स्थिति उत्पन्न होइछ। कथाकार अर्थात 'हम' एतेक विचलित होइत छथि, जे ओहि दू बिन्दू केँ अस्वीकार कए अपन कथा मे मात्र एक बिन्दु रहबाक बात करैत छथि आ तकर चारू कात शेष सभ सम्बन्ध, गाम-घर, सम्पूर्ण जीवन आ लेखकीय वा वैयक्तिक सामर्थ्य केँ। आ से एक बिन्दु ओ 'पिता' के मानलनि। ओही पुरान एकमात्र बिन्दु पर अहुरिया काटि-काटिक' घूरब आ रहब कथाकार अपन नियति कहलनि अछि। मुदा से कतेक तथ्यात्मक थिक? कतेक सत्य?

सत्य मात्र 'पिता' कथाक सन्दर्भ मे मानल जा सकैछ। ओ मात्र 'दादा' केँ स्वीकार कयलनि आ शेष सभ बिन्दु (पत्नीयो केँ) अस्वीकार क' देलनि। से 'पिता' कथाक पिताक चरित्रक गढ़नि लेल हुनका आवश्यक बुझयलनि। पिताक एहेन प्रभाव 1973 धरि कथाकारक जीवन पर छल। समाजक 'पिता'क रूप मे हुनकर 'दादा' त' परमादरणीय छथिने, अपितु पुरुष-प्रधान समाजहु मे बहुधा पुरुषे आदर्श-पुरुष बनिक' नेतृत्व मे ठाढ़ होइत छै, तेँ प्रभासजी द्वारा माता अथवा पत्नी केँ प्रधान बनाक' एहेन कथा लिखब अपन समकालीन समाज आ युगक सीमा तोड़बाक प्रयास होइत।

मुदा से काज ओ 'पिता' कथा लिखबाक काल नहि क' सकलाह। ओ से कइयो नहि सकैत छलाह, कारण 'दिदवल' (पत्नी) केर जरूरति 'पिता' कथा मे नहि छलनि आ ने 'दिदवल'क तेहेन प्रभाव 1973 मे कथाकार पर छलनि। असल मे अपन पुरुष-प्रधान समाज मे 'पिता'क' अछैत 'पत्नी' केँ दोसर बिन्दु ओ नहि बना सकैत छलाह।

मुदा, बाद मे, हमरा लोकनि देखल जे 'दिदवल' कथाकारक दोसर बिन्दु अवश्य प्रमाणित भेलखिन।

मुदा की जीवकान्तक (दू बिन्दुक बीच 'ओसिलेट' करबाक) बात गछिक' कथाकार अथवा व्यक्ति प्रभासजी जँ उदारता देखबितथि, त' की हुनकर कथाकार-व्यक्तित्वक अहित होइतनि वा 'पिता' कथा पर तकर

नकारात्मक प्रभाव पड़ैत?

आइ प्रभासजी व्यक्ति रूप मे उपस्थित नहि छथि। आइ हमरा लोकनि हुनकर जीवनो केँ अपेक्षित निरपेक्षता आ निर्वैयक्तिकताक संग मूल्यांकित क' सकैत छी आ तकर आधार आन कोनो रचनाक अपेक्षा 'पिता' कथा बेशी प्रावधान करैत अछि।

असल मे, प्रभास जीक जीवन एहि बातक प्रमाण अछि जे ओ दू बिन्दुक बीच कहियो 'ओसिलेट' नहि केलनि। जहिया पिता जिबैत रहथिन, ओ पिता मे लिप्त छलाह। मात्र पिता-टा मे। जहिया पिता चलि गेलखिन, पत्नी (दिदवल) मे लेपित रहलाह, बाल-बच्चा आ साहित्य मे लेपित रहलाह। एतावता एक कालखण्ड मे 'एकटा बिन्दु' प्रधान रहैत छल, हुनका जीवन मे। तेँ 'ओसिलेट' करैत रहबाक बात केँ, ओ स्वभावतः 'पिता' कथा मे नकारलनि। जीवकान्तजीक बात सही नहि छल।

'पिता' कथा मे प्रभासजी पुरना पीढ़ी बनाम नबका पीढ़ीक सीमा आ दूरी सेहो संकेतित केलनि अछि। 'पिता' सन जिम्मेवार नेता वा प्रतिनिधि केँ त' गाम नहिए चीन्हि सकल, नबका पीढ़ी अपनो लेल अपन सीमाक निर्माण करैछ आ पुरनो पीढ़ी केँ गाम सँ काटबाक प्रयास करैछ। पुरना पीढ़ी केँ अपना सीमा मे रहबाक आदति लगेबाक उपदेश कथाकार 'पिता' केँ दैत छथि। ई स्पष्टतः दू पीढ़ी मे सोचक अन्तर आ एक तरहेँ नबका पीढ़ीक पतने मानल जायत। तकर कारण ई जे गाम केँ ओकर दुर्गुणक संग स्वीकार करबे, गामक संग प्रेम करब थिक। एतय ई स्पष्ट करी, जे गाम केँ दुर्गुणक संग स्वीकार करब, गामक दुर्गुण केँ समर्थन करब नै थिक। ककरो प्रति प्रेमभाव पोसबाक ई अर्थ किन्नहुँ नहि, जे खाली ओकर गुण सँ प्रेम कयल जाय, बल्कि, ओकरा सम्पूर्णता मे स्वीकार करबे प्रेम थिक आ ताही स्वीकार सँ अवगुणक विनाशक रस्ता निकालल जाइत छै। नबका पीढ़ी गामक दुर्गुण सभ सँ बिखिन्न भ' भ' गाम सँ पड़ाइत रहय त' ओ गाम सँ प्रेम करबाक दाबी नहि राखय। से नबका पीढ़ीक सीमो देखार होइए 'पिता' मे आ गामो अपन सीमा 'पिता'क' मृत्युशय्या-स्थिति मे देखार करैए।

वस्तुतः 'पिता' कथाक घटना टूटनक एकटा निरंतर (परमाणविक) प्रक्रिया। शृंखला थिक। सामन्तवादी व्यवस्थाक टूट, गामक टूट, सामाजिक आ सामूहिक भावनाक टूट, संयुक्त परिवारक टूट, व्यक्तिगत परिवारक टूट

आ अन्ततः एकटा व्यक्तिक टूट, मूल्य आ आदर्शक टूट...। एहि टूटक लेल जतबे जिम्मेवार पुरातनपंथी आ सामन्ती ऐंठी आ प्राचीनताक विखण्डन अछि, ततबे पाश्यात्य-हवाक विकृति सेहो। ई दुनू धाराक विकृतिक घालमेल सँ एहेन परिस्थिति उत्पन्न भेल अछि जे 'पिता' असगर मृत्युशय्या पर शरबिद्ध भेल असगर पड़ल छथि आ समुच्चा गाम नितुआन भेल अछि वा स्वार्थान्धता मे आकंठ डूबल अछि। गामक 'दादा' लेल ककरो मोन वा मुँह मे कोनो संवेदना बाँचल नहि छैक।

'पिता' कथा मे एकटा टूटैत परिवार, अवसान होइत पीढ़ी (दादा) आ आकार लैत एकटा नव पीढ़ीक बीचक द्वन्द्वक कथाकार चित्रण करैत छथि। ओना ई कहब (जीवकान्तजीक) उचित छनि वा नहि जे—प्रभासक कथानायक बड़ 'एकोमोडेटिंग' होइत छनि, से फूट पड़ताल करबाक विषय थिक। कम-सँ-कम 'पिता' कथाक नायक (दादा) वा गाम वा परिस्थिति वा नबका पीढ़ीक संग 'एकोमोडेटिंग' रूखिक प्रदर्शन नहिए टा करैत छथि— से स्पष्ट छैक। आब जीवकान्तजी की लिखने रहथिन वा लिखनहुँ रहथिन कि नहि— से आब त' कहब असंभव अछि। प्रभासजी त' जे कहबाक छलनि, कहि गेलाह। जे लिखबाक छलनि, से लिखि गेलाह। भ' सकैछ, ई मात्र शिल्पगत प्रयोग होइन्हि, प्रभासजीक!

•

सन्धान-3

जनवरी-1999.

जीवकान्तक दलित-कथा मे वर्गीय चेतना

जीवकान्तजी जहिया यात्रीजीक प्रसंग लिखलनि, जे 'यात्रीजी मार्क्सवादक ढोलिया छथि' तहिया कतओक लोक केँ हुनका दुनूक प्रसंग भ्रम भेल रहनि। वस्तुतः यात्रीजी प्रगतिशील मार्क्सवादक भरिया छलाह आ जड़ वामपंथी आ रूढ़ वामपंथक वा वामपंथी पार्टी सभक वर्चस्व-युद्धक विरोधी छलाह। ओ वामपंथी विचारधारा मे आस्था रखैत, पार्टी कार्यकर्त्ताक जड़त्व, बूड़ित्व, भ्रष्ट आचरण आ रूढ़िवादी वाम-मार्गक अपक्ष छलाह, अपन धार्मिकता आ बौद्धत्वक संग। समकालीन इतिहास फेर साक्षी भेल, जे उपर्युक्त कारणेँ उठल 'ग्लासनोस्त आ पेरेस्त्रोइकाक' बिहाड़ि मे सोवियत-संघ विखंडित भ' गेल, मुदा प्रतिबद्ध आ उदारवादी मार्क्सवादी विचारधारा एखनहुँ जनमानस मे जिबैत अछि। ई यात्रीजीक दृष्टि-संपन्नता छल, तेँ जीवकान्तजीक ओ बयान शत-प्रतिशत सटीक नहि भ' क', 90 प्रतीशत सटीक छल, जखनकि 10 प्रतिशत स्वाधीनता यात्रीजी सन विवेकशील साहित्यकार अपना हाथ मे कोना नहि रखितथि? ओ कोनो सी.पी.एम. केर कार्यकर्त्ता भ' क' कलम नहि उठाबैत रहथि? ओना हुनका प्रसंग 'ढोलिया' शब्दक प्रयोग जीवकान्तजी नकारात्मक आ 'वादक बन्धनक' रूप मे केने छलाह, जखनकि आइयो हम सभ 'भारतीय प्रगतिशील विचारधाराक' 'ढोलिया' बनब सकारात्मक आ गौरवक बात बुझैत छी।

जीवकान्त जीक ओ कथन, हुनको प्रति भ्रम उत्पन्न केने छल, जे ओ अपनहुँ मार्क्सवादक विरोधी छथि, जखनकि हुनकर एकटा निबंध (मिथिला मिहिर) कार्ल मार्क्स आ हुनकर विचारधाराक विश्लेषण पर आधारित छल। निबंध सँ 'अन्डर-टोन' स्पष्ट छल जे हुनका मार्क्सवाद सँ कोनो परहेज नहि छल आ ने विरोध छल। कार्ल मार्क्स, एंजेल्सक जीवन आ दर्शनक प्रति हुनका आस्था छलनि। बस्स, एक पाँती कहा गेल छलनि, जेना कोनो साक्षात्कार मे, प्रदीप बिहारी केँ 'मैथिलीक प्रमुख कवि' कहा गेल छलनि। एना होइ छै, पैघ साहित्यकारक, पैघ साहित्यिक जीवन मे।

उपर्युक्त पृष्ठभूमि मे, जीवकान्तजीक वैचारिक विकास-क्रमक जखन

संज्ञान लैत छी, त' ध्यान जाइत अछि जे मैथिली साहित्य मे एकटा अग्निजीवी पीढ़ीक जे 'क्रान्तिकारी लाल-धारा' चलल, जे तत्कालीन समयक काल-सापेक्ष अन्तर्धारा छल, ताहि मे डुबने बिना ओ ओही धाराक एकटा कथा लिखलनि– 'अन्हरिया पखक चान', जाहि मे एकटा जमीन्दारक खेत मे राता-राती लाल-झंडा गाड़िक' बोनिहार वर्ग खेतक फसिल काटि अनैत अछि आ जमीन दखल क' लैत अछि। ओइ कथा मे जीवकान्त जीक वर्ग-संघर्षक मार्क्सवादी चेतना अभिधा जकाँ सुस्पष्ट छल।

मुदा एहि प्रेरणा आ अन्तर्धारा मे बहुत दिन धरि हुनका सन बहुआयामी, लिक्खाड़ आ पढ़ाकू साहित्यकारक मोन रमनाइ संभव नहि भ' सकल। जेँ कि ओ अपना लेखन मे एकटा सुदीर्घ कालखण्ड केँ देखलनि, भोगलनि आ लिखलनि, तेँ हुनकर कथा-निबंध-लेखन मे सागरक तल जकाँ लहड़िक तर मे कएटा अन्तर्धारा अछि। एकटा पैघ आ मजगूत अन्तर्धारा अछि दलित-लेखन। विशेषतया कथा-विधा मे हुनकर दलित-लेखन वा दलितवादक दिग्दर्शन होइत अछि, हुनकर प्रसिद्ध कथा– 'सीड़क' मे। 'सीड़क' मिथिलाक 'अन्त्यज' आ दलित (डोम) परिवारक कथा थिक, जाहि मे श्मशान घाट पर बलगर डोम (भाय) आ तकर पितिऔत बहिन (डोमिन) मे, मुर्दाक संग फेकल गेल 'सीड़क' लेल पटकम-पटका, बजड़म-बजड़ा होइत अछि आ अंततः बहिन सँ भाय (पितिऔत) 'सीड़क' छीनि लैत अछि– अपन वर्चस्व जमाबैत। डोमिन बहिन (स्त्री)क रोदना आ करुणा मे संवेदनाक स्तर प्रेमचन्दक 'कफन' नामक कथो सँ ऊँच अछि। एहि कारुणिक दृश्यक चित्रण जाहि सजीव ढंगे आ तल्लीनताक संग ओ केलनि, से 'मैथिली दलित-लेखन'क 'प्रस्थान बिन्दु' प्रमाणित भेल। आ तकर बाद तँ रमानन्द रेणु, विभूति आनन्द आ अनेक कथाकार अपना ढंगें पथार लगा देलनि। निम्नवर्गीय जीवन केँ कथावस्तु बनेवाक एकटा सुदीर्घ परंपरा स्थापित भ' गेल। निम्नवर्गक जीवन मैथिली कथा-निबंध-लेखनक मुख्यधारा मे आबि गेल, भलें क्यो दलितवादी आ क्यो मार्क्सवादी दृष्टिकोण सँ लिखय लगलाह।

मुदा जीवकान्तजीक दलित-लेखन मे तहियो ('सीड़क' कथा मे सेहो) वर्गवादी चेतना सुस्पष्ट भेल, जे दलित समुदायक आर्थिक आ शारीरिक रूप सँ बलगर व्यक्ति ओही वर्गक विपन्न आ कमजोर केँ पछाड़ि केना 'सुख-सुविधा'

हथिया लैत अछि। फेर 'सीड़क' मे संघर्षशील स्त्री-शक्तिक (दलित-वर्गक) सेहो ओ परिचय करबैत छथि। जकरा 'सीड़क' (अपन अधिकार) लेल श्मशान धरि जयबा मे वा फरीक (पितिऔत) सँ उट्ठा-बजड़ी करबा मे कोनो परहेज नहि छैक। जय-पराजय सन सामाजिक यथार्थक ध्यान रखितो, जीवकान्त डोमिन बहिनक प्रति सहानुभूति उत्पन्न करबा मे सफल भ' पबैत छथि।

'पहल' केर मराठी (दलित-लेखन) विशेषांक मे एकटा मराठी लेखकक उक्ति (साक्षात्कार मे) ध्यातव्य अछि। ओ कहने छलाह जे "जँ भारतक कल्याण भेनाइ छै त' न्यूनतम एक शताब्दी धरि मार्क्सवाद-दलितवाद-गाँधीवादक संगम आ समन्वय क' क' समाज, साहित्य आ सरकार केँ चलय पड़तैक।" जीवकान्तजी 'पहल' सँ जुड़ल छलाह आ मैथिलेत्तर साहित्योक पैघ पाठक छलाह।

तेँ विश्वास करबाक पर्याप्त आधार अछि जे 'पहल'क ओ अंक ओ जरूरे पढ़ने हेताह। हुनका लेखन मे ई समन्वयात्मक अन्तर्धारा क्रमशः आर स्पष्ट होइत गेल, जखन ओ 'बभनाक खेत' नामक कथा लिखलनि, कथा-गोष्ठी (दरभंगा) मे पढ़लनि आ कालक्रमे कथा गोष्ठीक कथासंग्रह 'एकैसम शताब्दीक घोषणापत्र' मे ओ छपल।

पहिले नजरि मे ई कथा पूर्णतः आ विशुद्ध रूपें दलितवादी नजरिया सँ लिखल बुझायल। कथाक शीर्षक 'बभनाक खेत'-गामघर मे एहेन नामकरण खेत आ बाधक होइत छै, मुदा एहि नाम मे ब्राह्मण वर्गक प्रति आक्रोश अन्तर्निहित छैक, तेँ निम्नवर्गीय लोक 'बाभन' नहि कहि, कने अपभ्रंश शब्द 'बभना' बजैत अछि, जे ब्राह्मणवर्गीय जमींदार द्वारा अतीत मे कयल गेल अत्याचारक कारणें परंपरा बनि गेल अछि। कथाक शीर्षक आ दलितवादी बुनाबटि पर दरभंगा-कथागोष्ठी (संस्कृत विश्वविद्यालयक हॉल) मे अत्यधिक गरमा-गरम विमर्श आ बहस भेल छल, ओहिना, जेना ओही कथागोष्ठी मे हमर कथा 'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो' पर तारानन्द वियोगी, विद्यानन्द झा आ अन्य केने छलाह।

जीवकान्तजीक एहि छोट सन कथाक बुनाबटि अत्यंत संश्लिष्ट अछि, जे खाँटी जीवकान्ती शैली मे कएटा सामाजिक आ साहित्यिक बहस ठाढ़ करैत अछि। सुमरित, कथा-नायक एकटा निम्नवर्गीय परिवारक गुजर, दू महींस, एक बाछा, बटाइदारीवला जमीन (बभनाक खेत)क सहारें टुकधुम-टुकधुम क' रहल अछि। दुनू बेटा साधनहीनता आ रोजगार-हीनताक

कारणें पंजाब पकड़ने अछि, तेँ दुनू पुतोह नैहर पकड़ने छथि। अपन दुनू बेटी किएक नैहर पकड़ने छनि, तकर कारण अस्पष्ट अछि। मुदा महींस वैह सभ सम्हारने छै। अपन स्वास्थ्य आ उमेर ढलान पर छै, तेँ हरवाही सँ लाचार आ बाछाक भाँज नहि लागि सकबाक कारणे , हरजोती भ' नहि पाबि रहल छै, एके संग खेरही-जनेर-बगहा धान बाउग भ' नहि पाबि रहल छै।

कथाक ईकाई परिवार छै, जकर नायक परिवार-प्रधान अछि। एक दिस खेतिहार मजदूर-परिवार आ दोसर दिस गिरहतनी सीमान्त अथवा भूमिहीन कृषक (एक एकड़ धरि) जे 'शुद्ध' अथवा नीक लोक सेहो छैक मुदा 'बभिनियाँ' गिरहतनी कोनो हालति मे लघु कृषक (पाँच एकड़धारी) नहि छैक। मुदा अपना मजबूरी मे सुमरित ठीक सँ खेत उपजा क' द' नहि पाबि रहल छै आ जमीनक मोह ममता कही वा गुजर-बसर के चिन्ता, खेत छोड़लो ने जाइत छै। एकदम सँ होरी, सोनियाँ, गोबर (गोदान) वला अभगदशा सुमरित, करमाहावाली आ दुनू बेटीक छैक, से बीसम शताब्दीक अंत मे। आ विश्लेषण-वर्ष एकैसम शताब्दीक थिक, जहिया स्थिति वैह, ओहने आ ओही ठाम छैक।

जेना गामघर मे परिवार-प्रधान तमसायल मूड मे बेटीक नाम बिगाड़िक' सोर पाड़ैत अछि, तहिना सुमरित करैत अछि, जे ग्रामीण जीवनक पिछड़ापन वा सौन्दर्य-बोध जे कही, कहि सकैत छी। एगारह बजे दिन मे सुमरित केँ किछु खा क' पानि पीबाक इच्छा छै, मुदा घर मे उपलब्धता शून्य आ सभ सदस्यक 'मूड' खौंझायल-किचकिचायल। खेत दोसर बटाइदार केँ गिरहतनी द' देतैक, से सुनि सुमरितक मोन लहरनाइ उचिते, कारण, एक दशक सँ जोतैत-कोड़ैत आयल छै खेत केँ। यद्यपि बभिनियाँ गिरहतनी कोनो पैघ जोतक मलिकाइनि बनिक' कथा मे नहि आयल अछि तेँ एहिठाम वर्ग-संघर्ष सँ बेशी जाति-विभेदक कटुता सेहो छैक। मुदा करमाहावाली आ बेटी सभ सुमरित केँ गिरहतनी सँ बेशी दोषी मानैत अछि, कारण सुमरित उपजाक' ने अपना घर आनि पबैत अछि आ ने गिरहतनी केँ द' पबैत अछि। सुमरित केँ परिवार दायित्व-बोध करा रहल छै मुदा स्वास्थ्य-उमेर ओकर बाधा छै। तेँ ओ कानूनी दुनियाँ मे अपन बटाइदारीवला जमीनक सुरक्षा खोज' लगैत अछि, बटाइदारी अधिनियमक 48 D आ E मे। ओकरा बटाइदारीक कागत भेटबाक आशा छैक, यद्यपि कोनो प्रक्रिया तक ने त'

ओकरा बूझल छै, ने आवेदन द' (सी. ओ. केँ) प्रारंभे केलक अछि। एक एकड़वाली गिरहतनी पर अथवा बारह वर्ष सँ कम केर जोतदार पर कानून लागूए नहि हेतैक। ने त' ओकरा सिकमी-बटाइबला कागत पहिने सँ छै, ने त' बटाइदारी-बोर्डक गठने भेलैए। मुदा सुनता बातक आधार पर सरकार पर आशा बनल छै। एकटा एहेन फोंकिला ढाढ़स जे रमेसरा (बिहार शरीफ मे रहैत) सँ ओकरा सुनल छैक। 'बभना' जमींदारो नहि छै, नोकरिहारा छै। दलिते वर्गक बालचन मातबर छै, जे बभनाक खेत मे माल-जाल चरा देलकै आ बजला पर मारबो केलकै। सुमरितक शिकाइत केलो पर बभना-बभिनियाँ किछु नहि क' सकलै, दबंग बालचन आ ओकर बेटा (दलित-वर्ग) केँ। गिरहतक कमजोरी वा मजबूरी केँ सुमरित गओं सँ गमने अछि। गिरहतनी जानि-बुझिक' मातवर दलित (बालचन) सँ टकराहटि मोल लेब' नहि चाहैत छै। आब समाजिक रूपे, मातबर हेबाक कारणेँ पूर्वक 'बलचनमा' आब 'बालचन' भ' चुकल अछि— कारण, दिन धराबय तीन नाम!

मुदा सुमरित केँ दोषी मानैत अछि करमाहावाली, किएक त' बभनाक खेत केँ तीन दिस सँ अरिया सभ धकिऔने छैक, जे ग्रामीण क्षेत्रक यथार्थ छिऐक, तकरा बटाइदार अथवा गिरहत दुनू ठीक नहि क' पाबि रहल छै, कारण, दुनू अपना-अपना कारणेँ कमजोर अछि आ मध्यकालीन कहावत छै जे— 'जोरू-जमीन जोर के, नही तो किसी और के!'

सुमरितक कमजोरी ओकर बेटा सभक पंजाब-प्रवास सेहो छैक, जखनकि सभ पंजाबी। बिहारी भैयाक पिताक ई कमजोरी नहि, सकारात्मक बात भ' गेलैक अछि। पंजाबक कमाइ सँ उच्च-जातिक जमीन दलित-वर्ग आब खूबे कीनि रहल अछि। दलित-युवा त' गामक धान-गहूम खेती आ पंजाबक कमाइ-दुनू क' पाबि रहल अछि आब। पंजाब जेबाक मजबूरीक बावजूद! मुदा सुमरितक बात भिन्न छै— ओ सभ गाम पर रहितैक त' भिनाउज क' लेने रहितैक से विश्वास छै। एतय फेर मिथिला-समाजक सभ जातिक परिवार टूटक यथार्थ चित्रण थिक। मुदा सुमरित किछु खा-पीबि नहि पबैत अछि आ बेटी जे बाध सँ महींस ल' क' घुरैत अछि, सुमरित केँ सूचना दैत अछि जे बभनाक खेत मे मुहचीरा हर चढ़ा देने छै। सुमरित केँ भचक्का लागि जाइत छै आ एहि परिस्थिति केँ ओ स्वीकार नहि क' पबैत अछि। ओ मुहचीरा केँ गाड़ि पढ़ैत बटाइदारी कानूनक रटना रटैत, बभनाक

खेत दिस विदा होइत अछि। मुहचीरा ओही दलित-वर्गक नया बटाइदार थिक, जे बभिनियाँ गिरहतनी ठेमौलकै अछि। दुनू बटाइदार दलिते-वर्गक थिक। मुँहचीरा मलाह थिक, जकरा सुमरित 'सार मलहे' कहैत अछि। ओ दबंग अछि आ सुमरित कमजोर। मुदा शरीरक पौरुषक विपरीत ओकर जीह खूबे चलैत अछि— नव बटाइदार केँ गरियाब' मे। बुढ़ारी नहि रहितैक त' मुहचीराक टाँगे चीरि दितैक सुमरित— तेहेन जोश आ तामस!

गिरहत-गिरहतनी केँ त' कानूनक छेद बुझले रहतै आ तेँ बटाइदार बदलिक' लड़ेबे करतै नव-पुरान बटाइदार केँ। नीको उपजा सुमरित दितैक तैओ समय पर खेत छिनेबे करितैक-बटाइदार कानूनक डर सँ। मुदा एतय दलित-चेतनाक उभार, स्वार्थ आधारित विकृति, दलित वर्गक आभ्यन्तरिक आ आपसी संघर्ष, वर्गवादी चेतना महत्वपूर्ण अछि, से लालू यादवक तथाकथित (अ)सामाजिक न्यायक अनघोल-राजक दौरान आयल रहैक। मिथिला-समाजक संघर्षशील कृषि-मजदूरक चेतना आ बलंठ दलित बालचनक बेटा अथवा मुहचीराक नङटपना मे संघर्ष एक स्तर पर अछि आ बभना-बभिनियाँ (गिरहत-गिरहतनी) आ सुमरितक बीच नुकायल संघर्ष दोसर स्तर पर अछि। मुदा सुमरित बभना सँ बेशी मुहचीरा पर तमसायल अछि, कारण दस सालक जोतल खेत ओकरा चलते हाथ सँ जा रहल छै। बभना सँ त' ओ लइये लितय खेत, बटाइ-कानून आ कागत सरकार सँ भेटला पर! से अपन तमाम तरहक कमजोरी केँ बुझितो ओ संघर्षशीलता नहि छोड़ैत अछि आ हारि नहि मानैत अछि। यैह आशा जीवन थिकइ।

अइठाम वर्गीय चेतनाक संग-संग दलित-उभार-चेतना सेहो अछि, जे जीवकान्तजी संकेतित करैत छथि। मिथिला-समाजक जाति-आधारित वर्गीय चेतनाक यथार्थ आन समाजक जाति-संघर्ष वा वर्ग-संघर्षक चेतना सँ कनेक फराक, महीन आ जटिल अछि। तकरा बिटियाक' पकड़ि छोटकी टा कथा मे उकेरनाइ 'बभनाक खेत' मे संभव भ' सकल अछि, से थोड़ेक चकित करैत अछि। ओ लिक्खाड़-लेखक हेबाक बावजूद, एक विचारधाराक प्रासंगिक समन्वय करवाक कोशिश करैत, चेतनाक आयाम सभ केँ बिटियाक' पकड़बाक कोशिश करैत, अपन द्वैध आ विरोधाभास सभ सँ परहेज करैत आ आवरण दैत, बहुत लिखबाक खतराक परवाह केने बिना आलस्य आ जड़त्वक विरुद्ध सक्रियता केँ जीवनक मूलमंत्र बना, अपन

बहु'आयामी' आ विशिष्ट स्थानीय छाप छोड़ि गेलाह अछि जीवकान्तजी।

मुदा ताहि लेल ओ जे कथा-भाषा चुनलनि अछि, से कथावाचकक अर्थात कथाकारक अपन सामान्य भाषा थिक, दलित-वर्गक नहि। जेना रमानन्द रेणु, विभूति आनन्द दलितक मूल-भाषा मे पात्र-परिवेश गढ़बाक कोशिश केलनि, तेना जीवकान्तजी जरूरी नहि बुझलनि। पात्र-परिवेश दलित-वर्गक गढ़ितो, भाषाक स्तर पर अभिजात वर्गीय सामान्य मैथिलीएक वर्त्तनी जीवकान्तजी अपनबैत छथि। मुदा से अपना तरहक भाषा नीति अपनेबाक हुनका अधिकार छलनि। वस्तुतः ओ ओहि वर्ग सँ तटस्थ रहि कथा कहलनि अछि, ओहि वर्गक जीवन मे डूबिक' नहि। आ से हुनकर निजता थिकनि, हुनके साहित्यिक सक्रियता जकाँ। वस्तुतः दलितवादक नाभिक मे अन्तर्निहित वर्गवादी-चेतनाक कटु यथार्थ केँ चिन्हनाइ हुनका सँ संभव भेल।

•

कर्णामृत
जीवकान्त-विशेषांक
अप्रील-2014

'चौमास' मे जीवनक रचना

कएटा रचनाकार अत्यधिक बेक्खर, छिनार, बेकछा-बेकछा क'ऱ्याख्या करएवला,' गारिक नीक स्टॉकिस्ट आ लोकजीवनक विशेषज्ञ होइ छथि। हुनकर भाषा ठेँठ मोहविरा-लोकोक्ति स' भरल-पुरल आ जनजीवनक चौमास(खेत) मे गारिक बीया गहूमक पेँपी जकाँ(धरगर मुदा कोमल) अकास छेंदैत रहैत अछि। एहेन रचनाकार स्वभावतः लोकजीवनक संग लोकभाषाक सेहो विशेषज्ञ होइ छथि आ हिनकर रचना आर जे हो, रमनगर जरूर होइत अछि। मैथिली कथा के ऐहन कएटा कथाकार प्राप्त भेलैए, जाहि मे उपेन्द्र दोषी सेहो अत्यंत महत्वपूर्ण छथि।

उपेन्द्र दोषी नामक कथाकारक मिथिला मे जन्म आ पाँचे वर्खक उभेर मे मातृहीन भ' जायब जहिना प्रकृति, समय आ समाज पर व्यंग्य छल, तहिना 'दोषी' उपनाम धारण करब समाज आ साहित्य पर व्यंग्य छल। समाजक विसंगति लेल उपेन्द्र नारायण दास 'दोषी' भेलाह आ पिताजीक 'मोटरी' बनल सम्पूर्ण बाल्यकाल मे रने-बने ढहनाइत रहलाह आ विसंगतिक विरोध करवाक लेल अन्ततः 'दोषी'ए प्रमाणित भेलाह। मुदा ई नहि फरिया सकलहुँ हम सभ जे ओ वास्तब मे 'कौना बात के दोषी?', –छलाह? दुनियाँ मे जन्म लेवाक दोषी, कि रचना (लेखन)क दोषी कि नौकरी करबाक दोषी, कि घर-परिवार बसेवाक दोषी, व्यंग्य-भाव संस्कारक दोषी, कि हास्य-प्रेमक दोषी, कि इमानदारी आ बेबाकीक दोषी, कि निश्छल-हृदय मुदा कटाह-स्वभावक दोषी? कथीक दोषी?...?...?...? आर्थिक चेफड़ीपनाक दोषी वा यायावरी स्वभावक दोषी? किरानी साहित्यकार हेवाक दोषी वा 'धुरी' स' छिटकि क' अपन फूट विचारधारा ग्रहण करबाक दोषी? कोनो बात ने। हुनकर जीवन चौमास छल। चानन छिलकल खेत-सादगी स' मह-मह।

जखने हुनकर कथाक प्रेरणास्रोत-व्यंग्य-पुरुष हरिमोहन झा भेलखिन, हुनकर भाषा में व्यंग्यक 'धार' एनाइ अवश्यंभावी छल। जखने हुनकर कथाक प्रेरणास्रोत राजकमल चौधरी भेलखिन, हुनका कथा मे काम-दृश्यक रमनगर आ'बोल्ड' चित्रण भेनाइये छल। जखने हुनकर कथाक प्रेरणास्रोत मणिपद्मजी भेलाह, हुनकर कथावस्तु आ 'कथा भाषा लोकनीवन स' सराबोर भेनाइए छल। दोषी जीक प्रेरणास्रोत (अइ तीनु महापुरूषक) हेबाक घोषणा हमरा धार-तीन(उपेन्द्र

दोषी पर केन्द्रित) आ अइ सब गुण स' ओत-प्रोत हेबाक बात हमरा हिनकर कथा 'चौमास' मे भेटल अछि। अत्यंत कसाइपनाक संग झाँपल-तोपल शुद्धतावादी मिथिला-समाज केँ देखार आ उधार करब हिनकर जीवन आ साहित्यक मुख्य ध्येय रहल आ तेँ अपन रचना-प्रक्रिया पर उठाओल सवाल केँ ई नव-दम्पत्तिक शयन-कक्षक खिड़की सँ परदा उठा क' हुलकी मारब कहलनि। मुदा फेर हुलकी मरवाक काज खूब केलनि दोषी जी! ई हुलकी ओ शयन-कक्षे मे नहि मारलनि(गंधवाह) अपितु बस में (गनगुआरि) आ बाध-बोनक अन्हार एकान्त(चौमास) मे सेहो खूब मारलनि। एहेन बात नहि जे अइ हुलकी मारवाक सत्प्रयास मे हुनका अपना'रस' नहि एलनि। ओ खूब रस लेलनि, जे हुनकर प्रिय काज छल। मुदा ततबे सक्षमतापूर्वक ओ रसक परिपाक अपना रचना मे सेहो केलनि। जें कि हिनकर अधिकांश कथा भोगल यथार्थ होइ छल (धार-तीनः रचना-प्रक्रिया), तें एहन सभ कथाक पृष्ठ-भूमि मे वा मंच पर हिनकर रस-प्रेमी रचनाकार रमनगर मूड में उपस्थित रहैत छल। ओ जीवने जकाँ कथा के चास-समार-तेखार क'क' तखन कथा-भूमि केँ चौमास बना क' गहुमक बीया छीटैत छलाह आ पेंपी उपजा क' ओइ पर अकास स' पैंच ल' क' पोर-पोर मे ओस बैसाबैत छलाह आ भिनसर मे जखन'पीयर-पीयर रौद' पेंपी पर पड़ैत छल, तखन कविता कर' लगैत छलाह। ओ रचि-रचि क' रचना रचैत छलाह आ समाज पर व्यंग्य बनल पुरातन-पंथी सभ केँ व्यंग्य-प्रहार स' मर्माहत करैत छलाह। ओ बड्ड खूजल छलाह।

बड़का-बड़का राकसरूपी 'डॉक्टर-प्रोफेसर' सबहक लेल ओ फूजल ऊक छलाह।

जीवन आ साहित्य दुनू में ओ संघर्ष-प्रेमी छलाह आ विसंगतिक विरोध करैत ओ प्रगतिशील भ' गेल छलाह। ओ एकदम प्रारंभ मे, से नहिं छलाह, अन्यथा अपन प्रेरणास्रोत मे ओ अमरजी आ केदारनाथ लाभक नाम नहि लितथि। मुदा राजकमल, यात्री आ किसुनजीक प्रभाव हुनका पर विचारधाराक स्तर पर बेशी पड़ल वा बाद मे वेशी जगजियार भेल, जखनकि भाषाक स्तर पर हरिमोहन बाबूक वेशी प्रभाव रहल। पूर्ववर्त्ती पीढ़ीक प्रभाव केँ एतेक खुलि क' एतेक इमानदारीक संग स्वीकार करब हुनकर इमानहारीक प्रमाण थिक।

ओ कथा मे भाषाक सभ जीवंत तत्वक समावेश करैत छलाह आ लोकभाषा मे बोरि क' चासनीक माधुर्य उत्पन्न करैत छलाह। तेँ रूलदार कागत पर कलम बोरि—बोरि क' लिखब हुनका नीक लगैत छलनि आ लीडपेन

ततेक पसिन्न नहि छलनि। रचना-भूमिक उर्वरताक ध्यान रखैते ई रचना-भूमिक चौमास करैत छलाह। कथाक सन्दर्भ मे हिनकर धारणा स्पष्ट छल जे—''कथा आदिम सत्य सँ युक्त अनुभूतिक रागात्मक अभिव्यक्ति थिक। एकर सार्थकता तखने छैक जखन कथा जनशक्ति केँ संग ल'क' जीवन-संघर्षक स्थिति में विवेक, आत्मविश्वास आ निर्भयताक दिशा प्रदान करय।'' (अप्पन बातःगंधवाह) ई पाँती हुनकर प्रगतिशील विचारधारा केँ स्पष्ट करैत अछि। कएटा कथाक कथावस्तु सेहो (जेना पहिल डेग) विद्रोह केँ स्वर द'क' हिनकर प्रगतिशीलता केँ स्पष्ट करैत अछि, जखनकि मैथिली- साहित्यक सभ गुटक संग हिनकर व्यक्तिगत सम्बन्धक अन्तरंगताक कारणें, हिनका-जीवन-काल में हिनकर वैचारिक स्पष्टता प्रायः धुमिल रहल। तकर एकटा मुख्य कारण ईहो छल जे 'धुरी'क आन तीनू रचनाकार प्रायः परंपरा-पीड़ित आ विचारधाराक स्तर पर पुरान वा पारंपरिक छथि आ तिनका लोकनिक संग हिनकर पहिल संग्रह आयब स्वाभाविके भ्रम उत्पन्न केलक। तखन फेर हिनका कथा सभ मे काम-प्रवृतिक छौंक स' फ्रायडवादी हेवाक भ्रम सेहो उत्पन्न भेल। मुदा नहि।

से सभ भ्रम छल। ओ सभ रचना के खूब बोल्ड आ रमनगर बनौलक। जीवन-रस केँ पचौलक रचना मे। ओ जीवनो मे ठोकरा ओलि-ओलि क' चौमास करैत रहलाह आ साहित्यो मे। जेना प्रोफेसरी-ठोकरा(बाबा बासुकीनाथ महादेव की जय!) ओलवाक लेल ओ 'किरानी साहित्यकार' बनि गेलाह। तहिना कथाक ठोकरा सभ केँ बिछवाक लेल ओ तीन-तीन बेर कथा लिखैत छलाह-मास-मास धरि। ओ विरल साहित्यकार छलाह आ अपना तरहक विरल कथाकर छलाह। हुनकर कथा सभ मे प्रयुक्त गारि डहकन जकाँ मह-मह करैत छल। ओ सुन्दर आ कोमल गारि सबहक गन्धवाह छलाह। ओ मूलरूपे मैथिलीएक कथाकार वा कवि भ' सकैत छलाह। हुनकर मौलिकता स्वतः-स्पष्ट अछि। ओ हिन्दी मे लौले टा करैत छलाह आ से प्रवासी परिस्थितिक कारणें करैत छलाह। ओ खाँटी मैथिल संस्कारक छलाह, मुदा शुद्धतावादी, ब्राह्मणवादी, कर्मकांडी नहि।

ओ प्रेमक रचनाकार छलाह आ प्रेमक पक्ष मे लिखैत छलाह। हुनकर प्रेम-संवेदना 'अप्पन लोक' क औनपाबाप आ बँसबिट्टीवालीक 'उतरा-चौरी मे 'मधुरमनि' जकाँ अभिव्यक्त भेल अछि। बँसबिट्टीवालीक 'भथियान पर मसल्ला पीस'वला औनपाबाप, जे पुरूष-प्रधान मिथिला समाजक पुरूष थिक, से अन्ततः बँसबिट्टीवालीक प्रेम मे पसीझि जाइत अछि आ भनसाघर मे आबि क' सिलौट पर वास्तव मे मसल्ला पीस' लगैत अछि। एतय पुरूषवादी 'अहं'

केर पराजय आ नारीक गरिमा-स्थापना दोषीजी केँ प्रगतिशील बनबैत अछि।

तहिना 'चौमास' क रमनगर दृश्यक चित्रणक 'खुलापन' समधिक दाँत स' कटाइत ओलक तरूआ आ डहकनक महमही स' महमहाइत अङना जकाँ लगैत अछि। दोषीजी जे 'चौमास' मे चौपाल करौलनि, से कमाल अछि। नद्दी फिरैत चारिटा स्त्रीगणक कथावस्तुक चयन हुनका जुआयल कथाकार बनबैत अछि।

कएटा प्रसंग विविधताक संग 'चौमास' मे हुलकी मारलक आ चारू जनी कें प्राकृतिक स्थिति मे देखलक। चारू जनी लग मे मधुश्रावणी आ कोजगरा आबि क' नाङट भेल। बाभन आ कैथक वर्ण-व्यवस्था आबि क' उघार भेल। कैथवाद हुनकर भोगल यथार्थ छल आ ब्राह्मणवादी व्यवस्थाक ओ शिकारे छलाह (दोषीजी)।

चौमासक ढ़ोकाइ सिंह 'राजा' पैघ ब्राह्मणवादी छलाह। महा-गँड़िखड़। आ जगतारणि त' बुझु जे यात्रीएजीक पात्रा। किए नै हो? यात्रीजी केँ प्रेरणास्रोत जे मानलनि दोषीजी? तेँ जगतारणि वर्ण-व्यवस्थाक विद्रोहिणी! तर्कक तीर चलाब' मे माहिर! गरीबी के चुप भ' क' भौगैत यात्रीजीक जगतारणि नहि, बामा हाथें पेट, पेरू आ नाभि-लोक केँ हंसोथैत दोषीजीक जगतारणि (वा सियावत्ती)। पेट पर वृत बनायब दुनू भूख केँ इंगित करैत अछि। दराड़ि फाटल पेट आ पेरू (मैथिलानीक) क माध्यमें कथाकार नारीक दुर्दशा कहै छथि मिथिला मे, साले-साले बच्चा हेवाक परंपरा (तरघुसकी सेक्सक प्रसादात) पर व्यंग्य भेल अछि। समलम्ब चतुर्भज, असामान्य वृत्त, नैहर ओगरवाक करूणा, मैथिलानी के कण्डोम आ ब्राक अनुपलब्धता, मिथिलाक ओल सन छातीक, बेल सन ओंघरायल रहब,(नारी-सौन्दर्यक उपेक्षा) आदि नारीक करूण-गाथा सुनबैत अछि। फेर जे.पी.(जयप्रकाश नारायण अर्थात हुनकर सम्पूर्ण क्रान्ति) रौदी-दाही, सरकारक अ-सरकारीपना-सबकिछु आ सब क्यों चौमास' मे आबि क' नाङट भेल आ मिथिलाक महिला समाज के नाङट देखलक आ मर्दवादी-व्यवस्थाक भंडा फोड़लक। आ अन्त मे, जे किछु 'नङटइ' बाँकी छल, से ढ़ोकाइसिंहक वर्णवादी-ब्राह्मणवादी गारि (बरहबरना...) मे नाङट भ' गेल।

मुदा 'चौमास' कथा पर एकटा पैघ तकनीकी प्रश्न ठाढ़ अछि, जकर जबाव देबालेल आब दोषीजी हमरा सबहक बीच नहि छथि। कथा प्रारंभ भेल छल साँझू पहर अन्हार मे, जखनकि अन्तिम मे ढ़ोकाइ सिंह के भोरे-भोरे

गारि-पुराणक परायण करैत कथाकार देखौलनि अछि। त' की राति-भरि चारू जनी चौमास मे बैसल रहि गेलीह, दस-बारह घंटा? ई अविश्वसनीय अछि आ कथाकारक तकनीकी भूल छियनि।

मुदा 'चौमास' करूण-कथा थिक। जे चौमास उपजा क' ढोकाइ सिंह राजा बनि गेल, ताहि चौमास मे पैखानों जेवाक अनुमति महिला केँ नहि छैक जखनकि महिलागणक ओ आनन्द-स्थल छल। ई कथा महिलाक लेल गाम-घर मे शौचालय नहि रहबाक दुःस्थितिक कथा सेहो कहैत अछि आ घरक चौकठि नांघि पुरूषे जकाँ बाध-बोन जेवाक औनाहटिक कथा सेहो कहैत अछि। मुदा आब मिथिलाक नारी-मन औनाहटि-छटपटाहटिक स्थिति मे नहि अछि। राज मोहन झा ठीके गछलनि अछि जे आब बुच्ची दाइ वाचाल भ' चुकल दथि। मुदा अद्यतन गप्प तँ ई छी जे बुच्चीदाइ विद्रोह पर उतरि चुकल छथि। जेना नूतनचन्द्रझा वा कामिनीक कविता मे...कविताक विद्रोही-तेवर नारी-मिथिलाक विद्रोहक बात स्पष्टताक संग कहैत अछि।

तेँ चौमासक कथावस्तु बाइस होइतो प्रासंगिक अछि, मुदा कथा तँ थोड़ेक बाइस भइए चुकल अछि। से स्वाभाविके! काल-सापेक्ष मूल्यांकनक अवधारणा उचिते जिबैत अछि एखन।

मुदा कुलानन्द मिश्रक ई बात मानबा मे तँ असौकर्य भ' रहल अछि जे उपेन्द्र दोषीक कथाकारक दुनिया बहुत ब्यापक नहि छलनि। सत्त पूछी त' मिथिला आ मैथिलक कथा-लेखनक संग-संग ओ दक्षिण बिहारक आदिवासी जीवनक कथा सँ ल' क' नेपाली बहादुर (सिमरक फूल) धरिक कथा लिखने छथि। सचिवालयी भ्रष्टाचार(अन्हार, अन्हार आ अन्हार) सँ ल' शहरी विसंगति धरिक कथा-क्षेत्रक चित्रण केने छथि। आ ग्रामीण कथावस्तुक कथा-लेखन मे त' माहिरे छलाह। प्रेम, सेक्स, अर्थक विसंगति, सामाजिक विद्रूपता—सभ किछु हुनका कथा-क्षेत्रक अन्तर्गत छल। जीवनक सौन्दर्य-बोध, साहित्यक सौन्दर्य बोध सँ बरोवरि भेंट होइत अछि, हुनका कथा-संसार मे। कथात्मकता तँ जमिक' आयल अछि हुनका कथा सभ मे। हुनकर कथा सपाटबयानी स' मुक्त अछि। जकरा भाइ सैहैब 'कन्सिस्टेंसीक संग' कथा लिखब कहैत छथि, से राजमोहन जीक कथा सँ कनियो कम उपेन्द्र दोषीक कथा मे हमरा नहि लगैत अछि।

•

'आरंभ' पटना

उपेन्द्र दोषी विशेषांक

मानवीय मूल्यक 'ध्वंस' सँ छटपटाइत महाप्रकाश

बीसम शताब्दीक आठम दशक, जे मैथिली साहित्य केँ अनेक बहुमूल्य रत्न कथा-विधा मे देलक अछि, ताहि मे ''महाप्रकाश'', सामान्य जय 'प्रकाश' वर्मा नहि छलाह। ई साहित्यिक नामकरण (महाप्रकाश) जेना भेल हो, मुदा मैथिली कथाक विकास मे ओ वस्तुतः महाप्रकाश सँ ज्योतित महा-प्रकाशे छलाह। समान्य प्रकाश सँ ज्योतित नहि मानल जा सकैछ हुनका।

ओ वस्तुतः मध्य-वित्त-वर्ग सँ नहि अबैत छलाह, निम्न-मध्य-वर्ग सँ अबैत लोक कहुना क' मानल जा सकैछ हुनका। हुनकर आर्थिक दशा आ वित्तीय अभगदशा, पहिरवाक झाँझड़ अर्थ-व्यवस्था हुनकर 'हौसला' केँ कहियो 'खाली' नही क' सकल आ ओ कथाक मध्यमे अपन अन्तसक व्यथा केँ जगजियर करैत रहलाह।

ई भने-निकें कहल जा सकैछ जे जँ महिषी, मंडन-भारती, तारा माइ-तारा भाइ आ राजकमल सँ जगजियार अछि, तं वनगामो बाबा लक्ष्मीनाथ गोसाईंक योग-आध्यात्मिकता आ महाप्रकाशक साहित्य सँ जगमगाइत अछि-तहिना। कनेको न्यून नहिं। ओ वनगामक साहित्य-रत्न छलाह!

मैथिलीक कथा-रत्न महाप्रकाशक कथा सभ मे जीवन-संधर्षक तापमानक डिग्री जतेक सेल्सियस आयल अछि, ततेक डिग्री सेल्सियस मैथिलीक किछुए कथाकारक जीवन आ कथा मे आयल अछि। महाप्रकाशक जीवन आ साहित्य मे तापमानक डिग्री एके रंग आयल अछि। तापमानक ई उच्च डिग्री भारतीय, अफ्रिकी, ऐशियाई, अरब आ तेसर दुनियाँक सभ समाजक जीवन मे आइयो विद्यमान अछि।

महाप्रकाशजी मैथिलीक ओहेन साहित्यकार-संवर्ग सँ अबैत छलाह, जिनका अपन पाइ लगा क' पोथी छपेवाक सुविधा नहिए टा छल। तेँ पोथी-प्रकाशनक चर्च होइतहिं हुनका चेहरा पर उदासी कट' लगैत छल आ तकरा ओ समाजेक दायित्व मानैत छलाह।

आर कोनोटा विकल्प हुनका लग नहि छल। मुदा हुनका कथा मे जे 'तत्व' रहैत छल, तकर कारणें पत्रिका सभ हुनकर कथा लेल लालायित रहैत छल

आ कोनो विशेष आयोजन सँ हुनकर कथा अनुपस्थित नहि रहि सकैत छल।

ऐहने सन स्थिति मे सहरसा-कथागोष्ठी मे (सगर राति दीप जरय) जखन कथागोष्ठी-आधारित कथा-संग्रह प्रकाशनक प्रस्ताव हमरा दिस सँ आयल, तं ओ उत्साहपूर्वक स्वागत केलनि आ केदार काननक सौजन्य सँ हुनकर टटका कथा 'ध्वंस' 'एकैसम शताब्दीक घोषणा पत्र' (कथा-संग्रह) लेल उपलब्ध भेल आ छापल गेल। कथा एतेक समकालीन, राजनीतिक चेतना सँ सम्पृक्त आ अन्तर्राष्ट्रीय राजनयिक प्रवृतिक आलोचना करैत छल जे संपादक-मंडल धन्यता-बोध सँ भरि गेल छल आ कथा-संग्रह सार्थक भ' गेल छल। कथा फेर 'धार' पत्रिका मे सेहो छपल छल।

जँ महाप्रकाशजीक कथाकारक विकास-क्रम पर ध्यान देल जाय तँ सहजहिं सु-स्पष्ट भ' जायत जे 'सागर मुद्रा' आ 'खाली हौसला' क आत्मनिष्ठ अभिव्यक्ति सहज विकास 'देबाल' (फरीकी दुरभिसंधिक विरुद्ध परिवारिक संघर्ष मे व्यक्तिक योगदान) मे होइत अछि आ तखन फेर 'ध्वंस' मे आबि क' हुनकर कथाकारक स्वस्थ सामाजिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय मानवीय-मूल्यक पक्ष मे ताल ठोकैत प्रगतिकामी-पक्षधरता सुस्पष्ट होइत अछि। एतय प्रसंगवश ईहो कहब जरूरी अछि जे महाप्रकाशक व्यक्तिक जे अन्तर्राष्ट्रीय राजनय आ अर्थव्यवस्थाक चक्रव्यूह, भूमंडलीकरण आ नव-उदारतावादक अवधारणा छल— से अदभुत रुपें सही आ सु-स्पष्ट छल। ताहि अवधारणा सँ हुनकर कथाकार कोना वंचित रहि सकैत छल? हुनकर मानवीय मूल्यक अवधारणा सभ 'ध्वंस' कथा में प्रचुरता सँ भेटैत अछि।

'एकैसम शताब्दीक धोषणा-पत्र' आ 'ध्वंस' कथा 2001 ई0 मे छपल छल, जे तेल-कूटनीति-आधारित इराक-अमेरिकी-युद्ध, सद्दाम हुसैनक तानाशाहीक बर्बादी, इराकक तबाही, अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुशक तानाशाही आ अहंकारक विजय, अमरीकी दादा-गिरी-घौंसपट्टी, संयुक्त राष्ट्रसंघक बेचारापन आ तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गाँधीक टी.भी. अधारित श्वेत-क्रान्तिक पृष्ठभूमि पर सृजित कयल गेल छल। आइ सँ डेढ़ दशक पूर्व, महाप्रकाशजीक अर्थ-चक्र, भारतीय अर्थ-व्यवस्थाक दुश्चक्र, तेसर दुनियाँक आर्थिक-व्यथा, एके रंग झाँझड़ छल। तहिना तीव्रगतिएँ झाँझड़ भ' रहल छल— भारतीय आ विश्व-समाज मे मानवीय मूल्यसभ। तमाम तरहक आदर्श-मर्यादा-मूल्य ताड़-ताड़ भ' रहल छल। मैथिली कथा अडैठी-मोड़ ल'

रहल छल। राजकमलक व्यक्तिवादी-चेतनाक आ यात्रीजीक समष्टिगत चेतनाक मध्य सँ महाप्रकाशक अन्तर्राष्ट्रीय मानवतावादक चेतना 'ध्वंस' कथाक माध्यमे मुखर भ' क' आबि रहल छल। मैथिली कथाक भाव-भूमि आ अर्न्तवस्तु केँ व्यापकता प्रदान करैत, अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर होइत 'ध्वंस' के, अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर चित्रण करैत, राष्ट्रीय-सामाजिक मूल्यक क्षरण केर खीसा लिखि रहल छलाह—(2000 ई0 मे)—अर्थतंत्र सँ सीदित महाप्रकाश। ई हुनकर अन्तर्व्यथा, विडंबना आ विशेषता— तीनू एकहि संग छल।

प्रगति-कामी चेतना आ प्रतिबद्ध वैचारिकता सिद्धान्ततः ई मानैत अछि जे नव-निर्माण लेल पूर्व-तंत्रक ध्वंस जरूरी अछि। मुदा तकर अर्थ ई नहि जे ध्वंस लेल अनेरोक प्रायोजित हिंसा आ जन-विनाश कयल जाय। शान्त-क्रान्ति, धीमी-गति-क्रान्ति, स्पॉन्टेनिसय-क्रान्ति— सब तरहक उदाहरण दुनियाँ मे अछि। खूनीओ क्रान्ति भेल अछि। मुदा वैचारिक आधार बिना कोनो क्रान्ति संभव नहि अछि। वैचारिकताक बिना भेल कोनो क्रान्ति, क्रान्ति नहि, मात्र उदेश्यविहीन विद्रोह वा हिंसक घटना मानल जायत। बीसम शताब्दीक अन्तिम दशक मे टी. भी.क ब्याजें, अन्तर्राष्ट्रीय घटना-क्रमक फलक पर मानवीय मूल्यक क्षरण केँ कथावस्तु बना क' कथा-सृजन (ध्वंस) करब अद्‌भुत सुखद छल। सामाजवादी चिंतक लेल 'ध्वंस' आवश्यक छल आ महाप्रकाशजी समाजवादी होइत, ध्वंसक प्रतिरोध क' रहल छलाह। मुदा ओ तंत्रक ध्वंसक प्रतिरोध नहि, मानवीय-मूल्यक ध्वंसक प्रतिरोध क' रहल छलाह— से स्पष्ट आ कल्याणकारी छल।

'ध्वंस' कथा एकहि संग कए स्तर पर चलैत अछि। एलेक्ट्रानिक श्वेत-क्रान्तिक परिणाम टी.भी. पर, इराकक बमबारीक-दृश्य सँ प्रारंभ होइत अछि। भीषण युद्धक भीषण-वर्णन करैत कथाकार अपन मित्र रणजीवजी सँ सहमत होइत छथि जे तर्कपूर्ण वार्त्ताक अवसर देने बिना, इराक पर बुश अनावश्यक युद्ध थोपलक अछि। यू.एन.ओ.क निष्क्रियताक चर्च करैत दुनू मित्र गंभीर वार्त्ता करैत छथि जे ने तं अमरीका आब अपन 'गॉडेस ऑफ लिबर्टी'क सत्यक संग रहल आ ने आब गाँधीजीक सत्य भारत मे जीबैत रहल। अमरीकाक श्वेत-वर्णी अंग्रेज लेल 'स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी'क सत्य (स्वतंत्रता) कायम अछि, जखनकि नीग्रो-रेड इंडियन लेल ओइ सत्य (स्वतंत्रता)क अवसान भ' चुकल अछि। अमरीकी समाज मे सेहो विभेदक यथार्थ सत्य बनि गेल अछि।

तखन फेर कथाक स्तर 'शिफ्ट' करैत अछि। कथाकार फेर भारतीय

समाज मे भेल सत्य-अहिंसा-मानवीय मूल्यक ह्रासक व्याख्या, गाँधीवादी प्रतीकक माध्यमे करैत छथि। वस्तुतः गाँधीवादी आदर्श मात्र राजघाटक सामाजिक घेरा मे सीमित भ' गेल अछि, आर कत्तहु नहि रहल आब। कतेक क्लेशदायक यथार्थ थिक ई! वस्तुतः सम्पूर्ण विश्व मे चिन्तक आ बुद्धिजीवीक कंठ औंठा-छाप राजनीतिज्ञक हाथ मे अछि। से खाहे सखारोव, गाँधी वा अब्राहम लिंकन होथि। इराकक तेल अमरीका पहुँचत, मुदा इराकक तेल-कूप पर भेल बमबारीक आगिक लपट केँ अमरीकी मीडिया, अमरीकी जनता घरि नहीं पहुँचय देत।

यैह सभ मूल्य-ध्वंस अइ कथाक प्रतिपाद्य आ कथा-वस्तु थिक। मीडिया बिकायल अछि, आम जनक भाग्य मे मात्र पीड़ा-यंत्रणाक शृंखला अछि, इराक सँ भारत धरि, जखनकि प्रजातंत्र वा कोनो तंत्र आमेजनक लेल होइत अछि। सम्पूर्ण इराकी-समाज मे अपराध आ अत्याचार— उद्‌भूत-चीत्कार, चीत्कार आ चीत्कार! अमरीकी फौजक बूट आ बलात्कारक चीत्कार! कथाकारक वर्णन एहेन भीषण अछि जे युद्धक्षेत्र इराक नहि टी.भी.क चलतें कथाकारक कोठली बुझाय लगैत छै। मूल्य-ध्वंस इराक, भारत (राजघाट) आ अमरीका (स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी) मे एकहि संग आ एकहि रंग होइत, कथा मे बुझाइत अछि— से कथाकारक चमत्कृत करएवला क्षमता बुझाइत अछि।

कथाक चरमोत्कर्ष (क्लाइमेक्स) तं तखन अदभुत संवेदना झंकृत करैत अछि, जखन दुनू मित्र चाहक दोकान मे निशा-रात्रि मे यांत्रिक रूपें जाइत छथि आ चाह दोकानक बाल-श्रमिक के दुलार दैत युद्ध-मानसिकताक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति लेल सिकरेटक डिब्बा सभ सँ रणजीवजी तोप तैयार करैत छथि— जखनकि ओ चॉकलेटक पन्नी सभ सँ मोर आ नर्तकी तैयार क' सकैत छलाह।

मुदा सांस्कृतिक आसंग सभ तँ युद्धग्रस्त समाज मे ध्वस्त भ' चुकल अछि। बच्चा सभ, जे सद्दाम हुसैन आ जार्ज बुशक परिचय प्राप्त करए चाहैत अछि, तकर मोर आ नर्त्तकी बनबाब' मे किऐक अभिरूचि हेतैक? युद्धक वातावण सँ युद्धक मानसिकताक निर्माण होइत छै आ विध्वंस-यंत्र तोप मे चाह दोकानक बाल-श्रमिकोक अभिरूचि हेतैक। एतेक धरि जे संस्कृति-निर्माता कलाकारोक युद्ध-मानसिकता अचेतन-अवचेतन मे तोप बनेवाक प्रेरणाक काज क' रहल छैक। अंततः तैयार तोप मे सलाइक काठी राखि, आगि लेसि

तोप छोड़ैत छथि रणजीव— जकर लक्ष्य क्रोधक कारणें अमरीके भ' सकैछ। तोप-गोला देवाल पर लागल दिव्या भारती (हीरोइनक) ब्लो-अप पर लगैत अछि, जे संस्कृतिएक प्रतीक थिक। बच्चा सभ सद्दाम-बुशक नामे जपैत थोपड़ी पाड़ैत अछि आ आनन्दित होइत अछि। ओकरा सबहक लेल ई तोप दोसरो अर्थ रखने अछि— राजीव गाँधीक बोफोर्स-तोपवला अर्थ! ओ सभ बोफोर्स! बोफोर्स!— सेहो चिचियाइत अछि! तोप एक संग इराक आ भारतीय अर्थव्यवस्था दुनूक ध्वंस द्योतित करैत अछि।

वस्तुतः चाहक दोकान मे प्रतीकात्मक युद्धक ओरिआओन करब, कथाकारक 'भिजन' आ उर्वरता केँ प्रमाणित करैत अछि। आ तोपक आक्रमण संस्कृति-प्रतीक, सिने-नायिका पर होयब- अकारण नहि अछि। दोकानक दुनू बाल-श्रमिक मे स एकटा बुश आ दोसर सद्दाम बनि जाइत अछि आ दोकान सँ भागि दोकानदार केँ चिन्तित करैत अछि। दोकनदार जे लगातार रोकड़-मिलान मे डूबल छल—आपत्ति करैत, दुनू मित्र केँ 'घसकल बुद्धिजीवी आ समाज केँ बाँटि क' लड़ाब'वला— कहि दैत अछि।

मुदा वाह रे कथाकार!

कथाक सौन्दर्य-बोध केँ नष्ट नहि होब' दैत छथि! आगू बढ़बैत कथा केँ निष्पत्ति धरि पहुँचबैत छथि। दोकानदार केँ चुप करैत छथि, ई कहैत जे, जँ अइ छौड़ा सभ केँ राजीव गाँधीक एकैसम शताब्दी मे जेनाइ छै, तँ हथियार सबहक परिचय राखहि पड़तै! तकर कारण जे अपन देश आब महात्मा गाँधीक देश नहीं रहलै, राजीव गाँधीक देश भ' गेलैक। दुनू गाँधी मे बहुते अन्तर छैक! नामक उपाधि एक रंग भेने की हेतैक? ई भीषण निष्कर्ष पाठक केँ उद्वेलित आ स्तब्ध क' दैत छै।

जीवन-यथार्थक ई सौन्दर्य-बोध महाप्रकाशेक कथाकार बूझि सकैत छल। यैह हिनकर निजता थिक— जे आन समकालीन कथाकार सँ हिनका बेराबैत अछि। एहेन गतानल (कम्पैक्ट) कथा जे बाते-बात मे अद्‌भुत परिवेश-चित्रण प्रस्तुत करैत अछि आ सभ पात्र केँ सार्थकता प्रदान करैत अछि। घर आ बाहर-दुनू ठाम होइत मूल्य-ध्वंस केँ एक कथा मे, एक संग, पाठक केँ स्पष्ट संदेश दैत अछि— सूक्ष्म-रुपें, स्थूल-रुपें नहि ।

केसरी दोकानदार केँ भने बाल-श्रमिक सबहक एकैसम शताब्दी (भविष्य) सँ कोनो मतलब नहीं होइक आ तें खौंझायलो हो कथाकार दुनू मित्र सँ।

मुदा कथाकारक संलग्नता आ सहानुभूति बच्चा सबहक संग— सुस्पष्ट आछि।

कथा-भाषा, एक दिस कथा में वर्णित कथावस्तुक अनुकूल अछि तँ दोसर दिस, कथाकारक मूल्यबोध आ मानवीय मूल्यक ध्वंसक प्रति कछमछी— सराहनीय अछि। कथाक स्थूल-वर्णनक भीतरे-भीतरे मूल्यबोधक एकटा एहन अन्तर्धारा चलैत अछि, जाहि अन्तर्धाराक संचालन महाप्रकाशेजीक कथाकार क' सकैत छलाह! कथाक रूप-सौष्ठव/शिल्प आ प्रसादगुण कथाकारक एकटा विशेष निजी सौन्दर्य-शास्त्र दिस इंगित करैत अछि।

'ध्वंस' कथा मे अन्तर्निहित संदेश कथासंग्रह(एकैसभ शताब्दीक घोषणा-पत्र)क नाम केँ सार्थक बनबैत अछि आ से कथागोष्ठी(सगर राति दीप जरय)क पाँचम कथासंग्रह लेल गौरवक बात थिक। कथाकार भौतिक रूपें आइ हमरा लोकनिक बीच उपस्थित नहीं छथि— से कथा-पाठक दौरान अथवा उपरान्तो, पाठक केँ नहि बुझाइत अछि। ओ प्राणवंत कथा मे जीवंत ढंग सँ उपस्थित छथि। अपन बेबाक 'टोन'क संग।

•

घर-बाहर, पटना
जुलाइ-सितंबर
2014

‘आरंभ’क कुलानन्द मिश्र विशेषांक

‘आरंभक’ प्रखर कवि-आलोचक कुलानन्द मिश्र पर केन्द्रित विशेषांक मे किछु मूल्यांकन, किछु संस्मरण, ठीक-ठाक रहल, जे एतय प्रतिपाद्य नहि अछि। वस्तुतः कुलानन्दजी विचार-दीप्त व्यक्तित्व रहथि आ हुनकर कविता सेहो विचार-दीप्त छल। भावपक्ष प्रायः कमजोर होइ छल हुनका कविता मे आ तेँ असंतुलन के खतरा सदतिकाल हुनका कविता पर रहैत छल। वक्तव्य हुनका काव्य मे बेशी होइ छल। किछु वक्तव्य सटीक होइ छल, किछु वक्तव्य अनावश्यक होइ छल, मुदा अनर्गल नहि। हुनकर आलोचना गंभीर, मुदा जटिल होइ छल। आलोचनाक हुनकर भाषा आलोच्य अछि, आ आलोचनाक मूल-भाव पक्ष शत-प्रतिशत स्वीकार्य अछि। मैथिलीक मार्क्सवादी आ वैज्ञानिक आलोचनाक ओ आधार-स्तंभ ठाढ़ केलनि, कारण, मैथिली आ संस्कृत साहित्यक आदि, मध्य आ,आधुनिक कालक हुनका गहींर अध्ययन रहनि। शास्त्रीय-आलोचनाक अथवा आलोचना-शास्त्रक सैद्धान्तिक आधार हुनकर मजगूत नहि रहितनि, त’ ओ कदाचू एहेन आलोचना नहि लिखि सकितथि। ओ जँ व्यक्तिगत जीवन मे आ विचारधाराक स्तर पर प्रगतिशील नहि रहितथि त’ हुनकर लिखल आलोचना एतेक नहि जमैत। हुनका पर केन्द्रित अंक बहार क’ संपादक मैथिलीक साहित्यकारक हुनका दिसि ध्यानाकर्षण क’ सकलाह अछि, जकर जरूरति हुनका नहि छल। कारण, संपादक-प्रायोजित अनलकांत (गौरीनाथ) क लेख ने त’ लेख भेल, ने मूल्यांकन आ ने संस्मरण। ओ असहज आ ‘समन्वय-विहीन खिच्चड़ि’ भ’ गेल, जकर चाउर फराक, दालि फराक आ नोन-हरदि-मेरचाइ एतेक कटु, जे ‘मसालेदार तड़का’ भ’ गेल। ओ प्रतिक्रियाक असहज मानसिकता मे लिखल जयबाक कारणेँ, ‘सभ किछु’ बनबाक चक्कर मे ‘किच्छु नहि’, बनि सकल। लेखे केन्द्रित भेनाइ छल कुलानन्द मिश्र पर आ केन्द्रित भ’ गेल जीवकान्तजी कें गरियाब’ पर। संपादकीय दायित्व छल जे गौरीनाथक लेखक आपत्तिजनक पाँती सभ केँ कतरव्योंतक उपरान्त छापल जाइत। साबित अछि, जे संपादक केँ जीवकांतजी केँ गारि पढ़बाब’ मे रस अयलनि अछि अथवा अनलकांतक पाँती केँ कतरबा मे अपन गुट-भंग के ‘डर’ भेलनि अछि। अथवा ‘स्प्लिंटर’

छिड़िया क’ पत्रिका केँ सस्ता-लोकप्रियता दिअयबाक ‘संपादकीय अभियानक’ अन्तर्गत ई आलेख छापब आवश्यक बुझना गेलनि। जेना नवोदित बूढ़-कवि विवेकानन्द ठाकुरक प्रसंग (एकसरे ठाढ़) ‘संपादकीय’ अभियान भेल छल वा ‘ए.जी. ब्रान्ड-आन्दोलन’ चलाओल गेल छल। पत्रिकाक हथियार सँ कचबा-वध करबा मे अनलकांत आ हुनकर ‘लेटेस्ट राजनैतिक गुरु’ एक्के रंग माहिर छथि, से एकबेर फेर प्रमाणित भेल। हँ, ‘बात जानी साफ-साफ।’

वस्तुतः ई लेख कुलानन्दजी पर केन्द्रित हेबाक छल, मुदा जीवकान्तजी पर अनेरे केन्द्रित भ’ गेल। कुलानन्दजी अपना लेखन आ लेखन-पक्षीय व्यक्तित्वक कारणेँ महान छलाह। ओ अपन व्यक्तिगत जीवनक दुर्गुण वा भाङक गोलाक कारणेँ नहि महान छलाह। तहिना अनलकांतक गारिक कारण जीवकान्तजी घटिया भ’ गेलाह, सेहो बात नहि। अनलकांत अपन कुंठा बोकरि मैथिली साहित्य केँ निरंतर घिना रहल छथि से जगजाहिर अछि। ई काज ओ कोनो आइये नहि केलनि अछि। ओ जन्मजात संपादक बनि गेलाह। कमलेश्वरक नाम-जप सँ ओतेक फायदा नहि भेलनि, त’ राजेन्द्र यादव लग ‘सीढ़ी’ लगा क’ ‘अंतिकाधीश’ बनि गेलाह। ई गुण बहुत कम लोक मे रहै छै। राजेन्द्र यादवक सान्निध्य मे रहितो एखन धरि ‘खाँटी दलितवादी’ नहि भेलाह अछि आ मैथिलीक साहित्यकारक ‘स्वयंभू आ स्वघोषित मार्क्सवादी नेता’ बनि गेलाह अछि, ‘आरंभ’क’ एही अंक सँ। महाशयजी, मार्क्सवादी गुटक नेता कतहु साहित्यक स्तर सँ एतेक निचाँ खसि क’ गारि पढ़य? कुलानन्दजी केँ महत्ता स्थापित करबा लेल जीवकान्तजी केँ एक हजार गारि पढ़बाक कोन बेगरता छल? ई त’ हाँसुक विआह मे खुरपीक गीत भ’ गेल? कुलानन्द मिश्र पर आयोजन छल, से लेखक-संपादक दुनू सायास बिसरि गेलाह! वाह रे ‘आलू, चना’ (आलोचना) आ वाह रे ‘जड़ि’ सँ कटल ‘महानगरीय पत्रकारिता’? तेँ, गूड़क मारि त’ धोकड़े जनैत अछि। जीवकान्तजी जँ चीन्हि सकितथि त’ कोनो ‘गँड़िखड़’ केँ साहित्यकार बनेबाक वा कम काटरक कारणें विवाह करेबाक वा ‘साहित्यिक अगुरवान’ केँ ‘जमाय’ बनेबाक धृष्टता’ कहियो नहि करितथि। जीवकान्तजीक व्यक्तित्व, साहित्य, निबंध, साक्षात्कार, पत्र, साहित्यिक क्रियाकलाप आ अनेक आधार पर आलोच्य अछि। मुदा ओ अस्वस्थ-आलोचना वा गारिक योग्य छथि, से कोनो भङतराहे (गौरी+नाथ) वा अगिया-बैताल (अनल+कांत)

कहि सकैत अछि। एतेक हल्लुक लेखक बदौलत जीवकान्तजीक आलोचना असंभव। हुनकर 'आलोचना' गंभीर अध्ययन मंगैत अछि। गारि, निन्दा, आलोचना, समालोचना, विश्लेषण— अइ सभ मे मेंही आ मोटो अन्तर अछि, जे 'हंस-वृत्ति' स' संभव त' अछि, मुदा 'हंस' केँ इमानदार होयब जरूरी अछि। अन्यथा, हंस 'नीर' सँ 'क्षीर' बहार नहिएटा क' सकत। आ हुनकर 'आलोचना' 'आलू+चना' बनि क' रहि जायत। आरंभ'क' अइ अंक मे मैथिलीक समस्त लेखकगण केँ 'धिक्कार' पठेवाक लेल जे 'धिक्कार-रैली' क आयोजन सफलतापूर्वक कयल गेल, से अइ पत्रिका केँ अन्ततः 'धिक्कार-पत्रिका' बना देलक अछि। ई 'धिक्कार' मैथिलीक घोषित (मुदा तत्कालीन निष्क्रिय) मार्क्सवादी-गुट लेत वा घोषित आ सक्रिय 'दलितवादी-गुट' लेत वा तटस्थतावादी-मध्यभागी गुट लेत वा 'निर्गुट-सम्मेलनक महंथगण' लैत जेताह? सभ क्यो ल' सकैत छलाह, जँ गौरीनाथक आह्वान इमानदार रहितनि। जँ व्यक्तिगत वर्चस्ववादी कूटनीति, अति-महत्वाकांक्षा-प्रेरित आ फोंकिला नहि रहैत। मुदा से त', जे किने से, गौरीनाथक गारिवला मानसिकता, हुनकर अध्ययनहीनता आ दोषपूर्ण नजरियाक कारणें वा जीवकान्तजीक प्रति व्यक्तिगत राग-द्वेषक कारणें, संभवे नहि भ' सकल। हँ 'आरंभक' एक-दोसर केँ लड़ा क' आ गारि पढ़बा क' 'झिल्ली झाड़बाक योजना' बहुत हद धरि सफल रहल अछि। 'अंतिका' आ आरंभ' क बीचक 'दुरभिसंधि' खूबे नकारात्मक प्रभाव छोड़लक अछि। नकारात्मक उपलब्धि लेल दुनू संपादक बध ाइक पात्र छथि। दिल्ली-पटनाक अधिकतम प्रदूषण, मैथिली साहित्य मे आनि देलक, ई दुनू पत्रिका आ सम्पादक-लेखक-द्वय। मुदा कुलानन्द जीक सम्यक् मूल्यांकन, जे नहि भेनाइ छल, से नहिए टा भेल।

•

आरंभ - 32
पटना

पाश्चात्य निकष मे 'मीन-मेष' :

प्रो. रमाकान्त मिश्र

प्रो. रमाकान्त मिश्रक आलोचनात्मक आलेखक संग्रह 'मीन-मेष' छात्रोपयोगी नयनाभिराम-पोथीक रुप मे प्रकाशित भेल अछि, जे तत्कालीन ऐतिहासिक, साहित्यिक पात्र 'रामू' द्वारा मैथिली साहित्यक 'त्रिमूर्ति (ललित-राजकमल-मायानन्द) केँ समर्पित कयल गेल अछि, जिनका मायाबाबू 'त्रिपुण्ड' कहने छलाह। संग्रहीत कुल नौ टा आलोचनात्मक आलेख केँ कतहु आलोचना, कतहु समीक्षा, कतहु समालोचनाक नाम लेखक देलनि अछि, जाहि सँ 'विधात्मक भ्रम' (लेखकक) वा 'विधात्मक खिच्चड़ि' क धारणा (पाठक केँ) संप्रेषित होइत अछि। संगहि, दू टा संस्मरणात्मक आलेख (मन पड़ैत छथि ललित आ स्मृति राजकमलक) केँ समीक्षा-आलोचनाक संग 'मिज्झड़-साँझड़' क' देनाइ 'खिच्चड़िया एप्रोच' मानल जायत। पोथी मे कथा-विधा मे मात्र ललित आ धुमकेतुक कथाक 'मूल्यांकन' कयल गेल अछि, जखनकि काव्य-क्षेत्र मे राजकमल, जीवकान्त, उदयचन्द्र झा 'विनोद'क कवि-व्यक्तित्वक मूल्यांकन आ तीन कविक तीन पोथीक, क्रमशः 'आउ किछु गप्प करी' (कुलानन्द मिश्र) 'कविताधन' (डॉ. भीमनाथ झा) एना त नहि जे (हरेकृष्ण झा) केर समीक्षा कयल गेल अछि। पुनः मार्कण्डेय प्रवासीक गीतकारक मूल्यांकन सेहो कयल गेल अछि। तेँ वस्तुतः आलोचना-समालोचना-समीक्षा आ मूल्यांकनक घालमेल(तालमेल नहि) भ' गेल अछि। आ रहल-सहल कसरि दू टा 'संस्मरण' पूर्ण क' देलक अछि, जे भरिसक पोथी केँ मोट बनेबा लेल जोड़ि देल गेल अछि अथवा 'संस्मरण-विधा' मे 'लेखकीय विपन्नताक स्थिति' प्रदर्शित करैत अछि वा आब आगू संस्मरण नहि लिखबाक लेखकीय निर्णय संकेतित करैत हो!

वस्तुतः साहित्यक मूल्यांकन-प्रणाली, अकठ-काठ आ हरथन-भरथन, माल-उत्पाद, जोख' तौल' वला बड़का काँटा-तराजू सन नहि होइत अछि, अपितु मूल्यवान धातु केँ जोखयवला निकती सन होइत अछि। तेँ पोथी सभक समीक्षा आ कवि-कथाकार-गीतकारक मूल्यांकन मे जाहि निर्वैयक्तिकता

(liquididy) आ वस्तुनिष्ठताक (objectivity) अपेक्षा रहैत अछि, से कोनो मूल्यांकनकर्त्ता मे अबैत अछि-व्यक्ति-निष्ठता वा आत्म-निष्ठताक (subjectivity परित्याग केला सँ, आ अपन दृष्टिकोण मे वस्तुनिष्ठता आ निरपेक्षताक प्रतिशत बढ़ौला सँ। संगहि, मूल्यांकनकर्त्ताक सामाजिक चेतना, मानवीय आ सामाजिक मूल्यक प्रति अवधारणात्मक एप्रोच 'प्रगतिशील आ प्रतिबद्ध वैचारिकता (कट्टरता सँ फराक) सेहो प्रभूत अर्थ रखैत अछि। अन्यथा, आलेखक 'दुष्ट आलोचना' (स्व. राजमोहन झाक शब्द मे) बनि जेबाक खतरा आसन्न रहैत छै आ 'मीन-मेष' निकालबाक प्रवृत्ति 'सृजनात्मक आलोचना' नहि बनि क' मात्र 'गल्तीनामा' क परम्परा (राजमोहन झा) केँ, कनियें आगू बढ़ा पबैत अछि। मूल्यांकनाधीन पोथी मे सेहो रचनाकारगणक मूल्यांकन आत्मनिष्ठ (subjective) भ' गेल अछि आ रचनाकारक व्यक्तित्वक संस्मरण, रचनाक ईकाइ (Textual evaluation) पर हावी भ' गेल अछि, जखनकि पोथी सभक समीक्षाक क्रम मे सेहो रचयिताक 'छवि' कनेक बेशीए हुलकी मारैत रहल! मुदा 'रचना'क दर्पण मे, समाजक मूल्यांकन आ सामाजिक चेतना, प्रगतिशील मूल्यक आलोक मे रचनाक मूल्यांकन भेनाइ छल, से नहि भ' सकल। विशेष रूपेँ ललितक कथा-संसार आ राजकमलक कविता-संसारक मूल्यांकन करैत काल, मूल्यांकन हेतु ललित-राजकमलक रचना केँ 'ईकाइ' (unit) नहि बनाओल जा सकल आ हुनका दुनूक व्यक्तित्वक संस्मरण (रामू वा रामूक) प्रो. रमाकान्त मिश्र (मूल्यांकनकर्त्ता) पर हावी भ' गेल। एतहि विद्वान मूल्यांकन-कर्त्ता केँ वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण' लेखकीय निरपेक्षता आ तरलता, दृष्टिकोणक प्रगतिशीलताक बचाव आ विकास केनाइ छलनि, निर्वैयक्तिकताक संग। वस्तुतः तटस्थताक परित्याग अपन संलग्नता (Affiliation) क निर्णयक ततमत्ती, 'मूल्यांकन-औजार' केँ भोथ बना दैत अछि, जखनकि पाश्चात्य-साहित्य-अध्ययनक 'सुपर-इगो' क 'हैंग-औभर' लेखकक 'मूल्यांकन-दृष्टिकोण' केँ सीमित क' देलक अछि। तेँ पाठ-केन्द्रित (Textual) मूल्यांकनक दाबी, जे लेखक द्वारा 'अपन बात' मे कयल गेल छल, से 'पाठकक पाठ-केन्द्रित पाठकीयता' मे, एकबेर पुनः कथित पुराने पाश्चात्य धारणाक अनुकूल, समीक्षक केँ, 'साहित्यक फेलहा लोक', सैह साबित केलक। जेना दुनू संस्मरणात्मक आलेख केँ लेल जाय, तँ व्यक्तित्व आ क्रियाकलाप आधारित मूल्यांकन भेनाइ अवश्यंभावी छल, कारण, संस्मरणक आधारे दुनू रचनाकार

छलाह, तेँ हुनका दुनूक रचना (ईकाइ) केर 'पाठ-आधारित मूल्यांकन' संभवे नहि छल।

लेखक गछैत छथि जे हुनका मात्र 'पाश्चात्य-साहित्य, विशेषतः अंग्रेजीक अध्ययन आ तत्सम्बन्धी निकष उपलब्ध छनि आ संस्कृत-साहित्यक काव्यशास्त्र वा मानदंड पढ़ल आ उपलब्ध नहि छनि। अर्थात 'मूल्यांकनक भारतीय परम्पराक मानदंड'क अभाव अछि, से तथ्य पोथी-पाठक क्रम मे सेहो पाठक केँ सत्य बुझाइ छै आ तकरा सकारि क' लेखक उदारता त' प्रदर्शित केलनि, मुदा पाठक केँ कने समीक्षकक प्रति उदासीन बना देलनि आ पाठकक पाठ मे अन्तर्निहित आनन्द के सीमित क' देलनि। मैथिली मे ठीके संस्कृतक 'वादे-वादे जायते तत्वबोधः' केर स्वस्थ परम्परा (डॉ.नामवर सिंहक 'वाद-विवाद-संवाद' वला) वा हुनके 'दोसर परम्पराक खोज' क परम्पराक, एखनहुँ धरि विकास नहि भ' सकल अछि आ कएटा लेखक गर्वपूर्वक घोषणा करैत फिरैत छथि, जे 'हम 'वादक' छाता ओढ़ि क' नहि चलैत छी। तटस्थतावादी आ उदारवादी छी हम! ओ अपन सीमा देखा क' अपना प्रति जनमानसक गंभीरता घटा लैत छथि— से बिना बुझने घोषणा करैत छथि। एहेन घोषणा सँ हुनका तुरंते प्राचीनतावादी लेखक-समूहक समर्थन आ अकादेमी-पुरस्कारक एक तरहेँ गारंटी, भेटि जाइ छनि आ अकादेमी-प्रतिनिधिक उपेक्षाक संभावना क्षीण भ' जाइ छनि। से लोभ-लाभ बहुत पैघ बुझाइ छनि!

लेखक प्रो. मिश्र केँ 'अपन बात' मे सेहो रचनाकार सभक मूल्यांकन करा गेलनि अछि आ लेखो सभ मे मूल्यांकनक क्रम मे कए ठाम विरोधाभासी उपस्थापन भ' गेल अछि। हरेकृष्ण झा केँ एकहि संग 'विशिष्ट' आ 'क्लिष्ट' दुनू विशेषण द' देल गेलनि अछि। एकदिस हनुकर 'खाँटी साम्यवादी कविता' सभ केँ 'अभिजात (Elite) काव्य' कहि देलनि अछि आ दोसर दिस हुनक काव्य-पोथी केँ 'मैथिलीक आधुनिक काव्य-परिदृश्यक सभसँ विशिष्ट आ परिपक्व कृति' मानैत, 'आम पाठकक लेल असहज आ अनुपयुक्त' मानलनि अछि। हरेकृष्ण झाक वैचारिक संलग्नताक प्रति, सायास परहेजी होइतहुँ, हुनका ओ 'प्रथम गंभीर आ परिपक्व कवि' मानैत छथि मुदा हुनके विशिष्टता सभक 'नकारात्मक व्याख्या' प्रस्तुत करैत छथि। जँ मूल्यांकनकर्त्ता भारतीय काव्य-परंपरा आ

काव्य-शास्त्रक अध्येता रहितथि, तँ अवश्य बुझितथि जे आलोचना मे 'विरोधाभास-अलंकार' कविता जकाँ नहि चलि सकैत अछि आ विरोधाभासी तथ्यक बेरम-बेर उपस्थापन (विरोधाभासक अनुप्रास) तँ एकदम्मे नहि चलि सकैत अछि। से बात 'रस-अध्येता' नहि बूझत तँ 'रसाभास' वा 'रसदोषक' दिक्कत निश्चितप्राय अछि।

लेखक केँ ईहो आशंका छनि जे रॉकेट-युग मे आजुक भारतीय 'लघु-कथा' स्थापित ने भ' जाय आ फेर अंग्रेजीक 'शार्ट स्टोरी' क आकारक समर्थन करैत छथि आ फेर 'नीक कथाकार केँ महान गप्पी हेबाक' समर्थनो करैत छथि (ललित जकाँ कथा मे नाटकीयता उत्पन्न करबाक लेल) कथाकार अनिवार्य रूपेँ गप्पी हैत, तखन फेर कथाक आकार छोट कोना हैत? आ छोट भेला पर ओ 'शार्ट स्टोरी' रहियो सकैत अछि आ 'लघु-कथा' सेहो बनि जा सकैत अछि। 'शार्ट-स्टोरी' क प्रति एतेक 'अङरेजिया मोह' किए आ 'भारतीय लघु-कथा'क प्रति एतेक उपेक्षा-भाव किए? आ की यैह थिक लेखकक 'उदारताबाद'? सभ आकार-प्रकारक कथाक सह-अस्तित्व कोनो अंग्रेजी-दाँ केँ पचैत किए नहि छनि? ई शोधक विषय थिक। की सभ दिन कथा लू-शुन आकारीय, भी. सखारोव आ ओ. हेनरी-आकारीये रहत?

नव विधा, नव-आकार-प्रकार, नव-प्रयोग, नव प्रसाद-गुण केँ, पुराने चश्मा सँ देखबाक परम्पराक लोप, दिन तका क' हैत की? अंग्रेजी मे तँ कथा-साहित्य आब 'शार्ट-स्टोरी' लग अछिए नहि, तखन मैथिलीए लेल ई व्यामोह किए? आ तखन ई कट्टरताक उदाहरण भेल कि उदारताक? ई एम. फॉर्स्टर केर 'ए पैसेज टू इन्डीया' 'एक्के पैसेज' छल वा एकटा सम्पूर्ण पोथीक नाम छल? 'शार्ट स्टोरी' क शाब्दिक आ रुढ़ अर्थ लेला सँ, कोना भाषा, साहित्य आ समाजक कल्याण हैत?

असल मे, राजकमल अपन स्थापित छविक अनुकूल, 'ललका पाग' मे जाहि भारतीय परम्परानुकूल निष्कर्ष देलनि, तकर ठीक विपरीत, ललित 'मुक्ति' नामक कथा मे, पाश्चात्य-परम्परानुकूल, काम-संतुष्टि केँ प्राथमिकता दैत, प्रेमी-पति केँ बेमारीक अवस्था मे छोड़ि, शेफाली द्वारा मोछियल पहलमानक संग भगनाइ (देवघर सँ) केँ 'मुक्ति' कहलनि, जखनकि आन सभ ठाम प्रायः ललित भारतीय परम्पराक निष्पत्तिक समर्थक छथि!

मुदा राजकमल, जे जीवन आ साहित्य दुनू मे 'स्वच्छन्द-सेक्सवादी'

छलाह से 'मुक्तिक' 'प्रतिक्रिया मे' भारतीय पारम्परिक निष्पत्तिवला कथा 'फुलपरासवाली' किए लिखलनि? 'फुलपरासवाली' अपन 'दीयर' पर अपन 'बेमार ' पति केँ प्राथमिकता द' क' दीयरक 'भ्रम' तोड़ि सकदम क' दैत छथि-से कथा राजकमल अपन स्थापित छविक प्रतिकूल लिखलनि। तकर कोन बेगरता रहनि? एहि दुनू महान कथाकारक, दुनू महान कथाक आ तकर पृष्ठभूमिक 'तुलनात्मक विश्लेषण'क अपेक्षा 'रामू' सँ तँ पाठक अबस्से करितय, प्रो. रमाकान्तो मिश्र सँ करब उचिते होइत। हुनका तँ पृष्ठभूमि (संस्मरण) क अभिज्ञानक संग, पाठ-आधारित रचना-विश्लेषणक क्षमता सेहो छलनि? दुनू कथाक पृष्ठभूमि आ निष्कर्ष तँ गओर करबा योग्य अछिए, दुनू महान कथाकारक व्यक्तित्व-चरित्र-मूल्यांकनो मे महत्वपूर्ण आ नव-दृष्टिबोधक अछि।

राजकमल काव्यक मूल्यांकन हुनकर व्यक्तित्व सम्बन्धी छद्म आ पूर्वाग्रह-आधारित आ काव्य-उद्धरण कोंचि-कोंचि क' उनटा दिशा मे कयल गेल अछि, जे अपूर्ण आ असम्यक् रहल। लेखक, राजकमलक कविता केँ, हुनक विशेष प्रसंगवशात् आत्म-स्वीकृतिक आधार पर, वस्तुतः काँचे मानि लेलनि, जखनकि ओकर प्रसंग दोसर मुख्य पाँती (एहि जाड़नि सँ उठल कहाँ धधरा?) सँ सम्पृक्त छल। तकर सद्यः अर्थ छल, जे 'हुनका जीवन-काल मे, हुनकर कविता, जन-आन्दोलनक भाव-भूमि' नहि बनि सकल, तकर दुःख ओइ कविता मे व्यक्त भेल अछि। तेँ अपन कविता केँ ओ उदारता आ बहादुरीपूर्वक 'काँच' कहि देलनि। मुदा बरमहल हुनकर 'दुःख' केँ नहि ल' क' 'काँच' शब्द केँ शब्दशः ल' लेल जाइत छनि, जे हुनकर तात्पर्ये नहि छल आ से हुनका प्रति अन्याय थिक। ई तँ 'दुष्टे आलोचनाक' प्रतिमान भ' गेल, जकर अपेक्षा 'त्रिमूर्तिक रामू' सँ तँ एकदम्मे नहि कयल जा सकैछ। राजकमलक कविताक 'नव-प्रसाद-गुण' आधुनिक आ समकालीन-सोच, विशिष्ट शिल्प, विशिष्ट जनोन्मुखी सोच, आदिक आधार पर 'काँच वा पाकल' माननाइ छलनि लेखक केँ, नहि कि राजकमलक व्यक्तित्वक चकाचौंधक नकारात्मकता केँ, रचना-आधारित-मूल्यांकन पर हावी होअ' देनाइ छलनि। राजकमल केँ मैथिलीक महत्वपूर्ण कवि नहि मानि 'मात्र गद्यकार' मानब, हुनका प्रति प्राकृतिक-न्याय नहि थिक। राजकमलक 'डायरी-काव्य' तँ मैथिलीक कतेक कवि आ कटहरक कोकणल ढ़ेंग सभ पर भारी पड़त तकर ठेकाने नहिं। हुनका कविता केँ काँच' मानयवला 'पाकल

करची' सभ, जे लीब' लेल तैयार नहि छथि, से अपने मोने असमय, पाकि गेल छथि! असल मे, राजकमल केँ बुझबाक लेल एलेन गिन्सबर्ग आ अमेरिकाक 'बिटनिक आन्दोलन', बीसम सदीक सातम दशकक भारतीय अकाल, मिथिलाक बाढ़िक विभिषिका (सन्दर्भः 'अपराजिता' नामक कथा) 'स्वरगंधा'क भूमिका, आम जनताक नामे हुनकर 'समर्पण', दरभंगा टावर पर एक थाड़ी भोजन लेल अपन देह-बिक्रीक 'ऑफर' दैत हुनकर कथा-नायिका आदि, हुनकर मूल्यांकन लेल सदा प्रासंगिक बनल रहत। 'भुक्खड़ पीढ़ीक' लेखक, जकर व्यक्ति आ रचना दुनूक स्वभाव 'विद्रोही' छल, तकर मूल्यांकन मात्र 'यौन-दृष्टिएँ' संभव नहि अछि। राजकमल आ हुनक काव्य केँ 'विद्रोही' नहि मानल जायत तँ की सुमनजी आ हुनक 'नव-कविता' (पाँतरक पीपड़) वा अमरजीक 'कहू कुशल' केँ 'विद्रोह-काव्य' मानल जायत? राजकमलक कविता पर मैथिलीक पाठक खूबे 'इतराइत' अछि, लेखक भले सरसकवि ईशनाथक 'गीत-माला' पर इतराथु! हुनकर 'महावन' नामक कविता मैथिल-परिवारोक इतिहास आ वर्त्तमान थिक आ मैथिल-व्यक्तिक छिछियाइत आत्माक पीड़ा सेहो थिक। व्यक्तिक अंतस मे टीसैत पीड़ाक काव्यमय अभिव्यक्ति, प्रथमतः राजकमलेक काव्य मे भेल छल आधुनिक ढंगें। एजरा पाउण्ड जाहि गद्य-कविताक ओकालति केलनि-तकर बेछप स्वाद राजकमले प्रथमतः मैथिलीक पाठक केँ देलनि! लेखक प्रो. मिश्रक मैथिली-साहित्यक अध्ययनहीनता तखन देखार भ' जाइत अछि, जखन ओ कहैत छथि जे राजकमलक मैथिली कविता पर केन्द्रित कोनो समीक्षकक लेख हुनका पढ़ल वा स्मरण नहिं छनि।' मिथिला मिहिरक-'राजकमल विशेषांक' मे कुलानन्द मिश्रक 'किरणमालाक संधान मे अन्हार भोगैत चेतना' नामक निबंध लेखक केँ अबस्से पढ़ल हेतनि। विडंबना ईहो अछि, जे कोनो समीक्षक, राजकमलक काव्य पर जँ कलम नहि उठौलनि, (साहसक अभाव मे) तँ राजकमलक कविता केँ प्रो. मिश्र तेँ कमजोर मानि लेलनि? समीक्षकक दृष्टि-दारिद्रय, उपेक्षा आ घृणा-भाव वा कूटनीति लेल, राजकमलक-काव्य कोना दोषी आ कमजोर भ' सकैछ?

असल मे, लेखक उनैसम सदीक उत्तरार्द्ध आ बीसम सदीक पूर्वार्द्धक अंग्रेजी साहित्य सँ, ततेक ने आक्रान्त छथि, जे तत्कालीन यूरोपीय उपयोगितावादी आ उदारवादी आन्दोलनक प्रभावक संग अंग्रेजी साहित्यक 'रोमान्टिसिज्म'(ओड, एलेजी, सॉनेट, बैले आदि) वला

आलोचकीय उद्धरणक जाल, फ्रायडक इसकुलक 'पुरान मनोविश्लेषण' आदि सँ महाआक्रान्त भ', पाश्चात्य निकष-औजार पैंच ल' क' मोह-ग्रहस्तताक अधीन भ', मैथिली साहित्य केँ करचीक खरड़ा सँ खरड़ि देलनि अछि। आजुक अंग्रेजी आ भारतीय आलोचना-शास्त्र डी. एच. लॉरेन्स आ राबर्ट फ्रॉस्टक तुकबन्दी, 'स्पॉन्टेनियस फ्लो' वा वर्ड्सवर्थक रोमान्टिक प्रकृतिवाद सँ कतओक आगू अछि जीवकान्तक कविताक 'जनोन्मुखी प्रकृतिवाद'! विवेचनाधीन पोथी मे, बोझिल उद्धरणक जाल मे, पाठके फंसि क' अहुरिया काट' लगैत अछि! मन पड़ैत अछि, फणीश्वरनाथ रेणुक, आलोचक सुरेन्द्र चौधरी द्वारा मूल्यांकन! बिना एक पाँती उद्धरण उद्धृत केने-'रमणीय सम्यक् मूल्यांकन!' से हमरा मैथिली मे कहिया हैत?

तहिना धुमकेतुक कथाक मूल्यांकनक क्रम मे पवित्रतावादी सोचक अन्तर्गत लेखक मानैत छथि जे धूमकेतु बेक्खड़ भ' ग्राम्य-शब्दक प्रयोग नहि करैत छथि, तेँ अश्लील नहि छथि। उपेन्द्र दोषी अपन कए कथा मे बेक्खड़-ग्राम्य शब्दक प्रयोगो केलनि अछि आ अश्लीलो नहि भेलाह अछि! यैह त' कलाकारी छिऐ! श्लीलता-अश्लीलता शब्द-आधारित नहि, अर्थ-सापेक्ष होइत अछि। 'लोकल टच' मे ललितक कथाक 'बोङहा' शब्द अश्लील नहि भेल, से लेखको मानैत छथि। पवित्रतावादी मानसिकता आ आदर-सूचकतावला कृत्रिमतायुक्त अभिजात मैथिली सँ आक्रान्त भ', आदरसूचकता-विहीन भाषा-साहित्य (Non-honorific) क सम्यक् मूल्यांकन कोना भ' सकैछ? मैथिलीक आजुक कथाकार बेक्खड़ भ' ग्राम्य-शब्दक प्रयोग मे किए संकोच करताह? जीवन मे जे किछु छै, साहित्य मे एबाके चाही आ साहित्यक अनिवार्यरूपेण 'सुन्दरम' हेबाक शर्त्त केँ आजुक रचनाकार कोना मानि लेताह? तखन 'वीभत्स-रस' कत' जायत? आ प्राचीन काव्य-शास्त्रक रस निष्पत्ति मे तकर स्थान मम्मट आ पंडितराज जगन्नाथ किए निरुपित केलनि? नओ टा मूल-रस मे वीभत्स-रस परिगणित अछि। वात्सल्य-रस जकाँ दसम मे परिगणित नहि अछि, अतिरिक्तरुपेण। मुदा रस-शास्त्र तँ लेखक केँ पढ़ले नहिं छनि? नओटा 'मूल-रस' मे 'वात्सल्य-रस' (मनबोध-सूर-तुलसी) वला हैसियत नहि अछि वीभत्स रसक!

तखन एकांगी आ अपूर्ण पाश्चात्य निकष पर मूल्यांकन करबाक बाध्यता पाठक केँ बूझहि पड़तनि? मुदा तखन पाठक अपेक्षा रखैत अछि

जे ओ पाश्चात्यो मानदंडक पूर्ण उपयोग अद्यतन भ' क' करितथि! मुदा धुमकेतुक कथा आ राजकमलक काव्यक मूल्यांकन करैत काल ओ पश्चात्य मार्क्सवादी-समाजवादी आ समाजशास्त्रीय-दृष्टिकोणक सेहो पूर्णतः उपेक्षा करैत छथि, जखनकि मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण मे मात्र 'फ्रायडीय औजारक' उपयोग क' पबैत छथि। यद्यपि फ्रायडक शिष्यगण 'नव-फ्रायडवादी' (Neo-Freudians- जुंग, एडलर आदि) अपन गुरूदेव फ्रायडक अनेकानेक मनोवैज्ञानिक-विश्लेषण-सिद्धान्त केँ ओहिना उनटि क' सुनटा राखि देलनि, जेना हीगेलक डायलेक्टिवस' (द्वन्द्वात्मकता) केँ कार्ल मार्क्स अपन द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (डायलेक्टिकल मेटेरियलिज्म) आ' ऐतिहासिक भौतिकवाद (हिस्टोरिकल मेटेरियलिज्म) मे! अथवा जेना बेंथमक दर्शन केँ जे.एस.मिल, हुनके शिष्य, उधेसि क' राखि देलनि, तहिना फ्रायडक बहुत रास यौन-बिम्ब खण्डित भेल। तेँ धूमकेतु आ राजकमल-साहित्य लेल नव-फ्रायडवादी इसकुलक निकष वेशी उपयोगी होइत। धूमकेतुक कए कथाक मूल्यांकन मे, 'समाजशास्त्रीय निकष' वेशी सटीक होइत, तकरो उपेक्षा भेल। हरेकृष्ण झा, जीवकान्त वा उदयचन्द्र झा 'विनोद'क कविताक ने त' 'समाज-सापेक्ष' आ 'मानवीय-मूल्य-आधारित मूल्यांकन भ' सकल आ ने 'मार्क्सवादी औजार' आधारित। 'पारंपरिक-शैलीक 'उद्धरण-जाल' मे जनवादी कविताक साम्यवादी मूल्यांकन नहि भ' सकल। ओ तखन संभव होइत, जखन 'थीसिस' (मार्कण्डेय प्रवासीक सामन्ती-पूँजीवादी-धारणा-आधारित प्राचीनशिल्प आ वैचारिकतायुक्त गीत) बनाम 'एन्टी-थीसिस' (मैथिलीक अग्निजीवी पीढ़िक अग्नि-काव्य) सिन्थेसिस (परिणाम, जनवादी नव-कविता) गद्य-कविता-वला 'विश्लेषणक निकती' पर समकालीन मैथिली कविता जोखल-तौलल जाइत! से सपने रहल।

फ्रेंच,अंग्रेजी-जापानी आ हिन्दीक समकालीन आलोचना-शास्त्र मे, उत्तर-आधुनिकतावादी मूल्यांकन-औजार, जे फूकोयामा आ देरिदा (विखंडनवाद) देलनि अछि, तकरा सँ असहमत हेबाक अनेक कारण अछि। मुदा मूल्यांकन उपकरणक रूप मे, तकरो सँ भरल अछि विश्व-साहित्य। समकालीन साहित्य लेल ओकर उपयोग कोनो नव बात नहि। आब तँ विखंडनवाद सँ असहमत होइत, साम्यवादी मूल्यांकन पद्धति मे 'विखंडनवादी-उपकरणक' उपयोग होए लागल अछि। अंग्रेजीक उद्भट विद्वान तकरा सँ अपरिचित कोना भ' सकैत छथि? तेँ लेखकक मूल्यांकन-प्रणाली'एकेडमिक' एकेडमिक-ब्रान्ड शुष्क-निष्कर्ष सभ सँ भरल पड़ल', अंग्रेजीक शास्त्रीय-साहित्य-युगीन',

अद्यतन-विहीन-कालातीत', आ 'तकियाकलाम' लीक पर चलैत भ' गेल अछि। कए ठाम लेखक, बिना प्रमाणक सपाटबयानी करैत, शहंशाह शैली मे एक पाँतीक फतवा-फरमान जारी करैत छथि, जे पारम्परिक– आलोचना-शैलीक' उदाहरण थिक। ओ कहैत छथि- धुमकेतु एहेन कथाकारक कथा मैथिलीयो मे आ आनो कोनो भाषा मे नहि भेटलनि। धूमकेतुजी ठीके गौरव छथि मैथिली लेल। मुदा हुनकर यौन-विषयक कथा सँ कनियों उनैस राजकमलक 'ननदि-भाउज' नामक कथा (मैथिली मे) नहि अछि। राजकमल त' सेक्सक अलावा 'इन्सेस्ट' आ 'लिबिडो' क संग 'परभर्सन' केँ सेहो खूबे लिखलनि। आ उर्दू साहित्य मे त' सआदत हसन मंटो आ इस्मत चुगताई, धूमकेतुजी सँ पूर्वहि, एक-सँ-एक यौन-विषयाधारित कथाक पथाड़ लगौने छथि, जे 'सारिका' क 'प्रतिबंधित कथा विशेषांक' सभ मे प्रो. मिश्र अबस्से पढ़ने हेताह।

उदयचन्द्र झा 'विनोद' क कए कविता मे अन्तर्निहित व्यंग्यात्मक शैली आ अन्योक्ति-वक्रोक्ति केँ लेखक नहि बुझि पबैत छथि, कारण,'रस-सिद्ध' नहि छथि ओ। ओ रस-सिद्धान्तक प्रति अपरिचय व्यक्तो करैत छथि आ 'पारम्परिक-समीक्षाक प्रसाद-गुण' (पुरान) क निकष केँ उपयोगो करैत छथि। तकरे कारणें विनोदजीक कविता मे उपस्थित करुण क्रन्दन आ आर्त्तनाद केँ 'भावुकता' कहि दैत छथि। फेर विरोधाभासी निष्कर्ष देखल जाय, जे विनोदजीक उपस्थिति केँ मैथिली भाषाक उपलब्धि मानैत छथि। मुदा विरोधाभासक अनुप्रास देखल जाय, जे यात्राजीक उपरान्त जाहि 'चारि टा महत्वपूर्ण कविक' नाम गनौलनि अछि (जीवकान्त, कुलानन्द मिश्र, हरेकृष्ण झा आ पंकज पराशर) ताहि मे स्थान देबा योग्यो विनोदजी केँ नहि बुझैत छथि। डॉ. भीमनाथ झा केँ त' ओ माधुर्यविहीन-कवि' आ मुख्यतः 'गद्यकार' मानैत छथि, जखनकि काव्यक माधुर्य आ मधुरिमा वा काव्य-भाषाक माधुर्य मे भीमनाथ झा ओहिना बेछप छथि, जेना कविवर सीताराम झा वा यात्रीजी! विनोदजी एहेन 'मंच-सफल' आ 'आदि-लोकप्रिय' कवि केँ ओ अपेक्षाक प्रतिकूल 'कम लोकप्रिय' कोना कहि देलनि अछि? भ' सकैछ, 'तड़िपिब्बा जकाँ' मंच पर तलमलाइत, कविता पाठ क' लाखो थोपड़ी आ लोकप्रियता बटोरबाक कारणेँ, आलोचक केँ विनोदजी 'कम लोकप्रिय' लागल हेथिन, जखनकि लोकप्रियता विनोद-काव्यक एक मुख्य तत्व अछि।

तहिना कुलानन्द मिश्र केँ 'चारि महत्वपूर्ण कवि' मे स्थान दैतो हुनका एहेन रस-परिपाक-काव्य मे, मन केँ बहुत मनौलाक बादो (लेखक केँ) भावक कोनो लक्षण परिलक्षित नहि होइत छनि, जखनकि 'चन्द्र-बदन-काव्य'

मे 'रति-भाव' (Erotic) फेर अगिले पाँती मे भेटियो जाइत छनि!

जीवनकान्त जीक कविता केँ अभिधात्मक गद्यमय काव्य-भाषाक कारणेँ कविता मानबा मे असौकर्य होइ छनि, तँ पाठके पर तकर निर्णयक दायित्व छोड़ि दैत छथि लेखक। मुदा तैओ विरोधाभास ई जे 'चारिटा प्रमुख कवि' मे प्रथम-स्थानीय जीवकान्तेजी केँ बनाबैत छथि। से तखन त' जीवकान्तजी पर उपकारे बूझल जाय! वस्तुतः मूल्यांकनकर्त्ता कविता मे कीट्स-शैली-वर्डसपर्थ आ राबर्ट फ्रास्टवला तुकबन्दी-छन्द-लय-ताल-यति, गीतात्मकता, 'स्पॉन्टेनियस फ्लो' आदि 'प्राचीन तत्व' सभ तकैत छथि, हुनकर सभक 'कथ्यक आधुनिकता आ अर्थ-गांभीर्य उपेक्षिते रहि जाइत अछि। आ हुनका भेटैत छनि जीवकान्त, भीमनाथ झा वा कुलानन्द मिश्रवला 'गद्यात्मकता' (शिल्प-संगीत-मादकताक स्थान पर)! वस्तुतः ओ अंग्रेजीयो साहित्यक 'रोमान्टिके युगक' प्रभाव मे छथि, 'रेशनल-युग' सँ अछूत! एहेन शिल्प-प्रधान साहित्य 'मनोरंजन-प्रधान' आ 'समाज-निरपेक्ष' बनि जाइत अछि। 'स्पॉन्टेनियस फ्लो' केर 'शब्द-चमत्कार-चक्कर ' मे 'सृजनात्मक लेखनक अर्थ-गांभीर्ये' हेरा जाइत अछि प्रायः। बीसम सदीक अंग्रेजी साहित्य मे 'भूखल पेट रोमान्टिसिज्म' केर स्थान पर 'चॉकलेट क्रीम सोल्जर' (आर्म्स एण्ड दी मैन— जार्ज बनार्ड शॉ) क परिकल्पना आ पाश्चात्य-युद्ध मे तकर यथार्थो आबि गेल छल, जखन सिपाहीक हाथ मे हथियार आ जेबी मे भूख-शमनार्थ चॉकलेट भेल करैत छल! तेँ पाश्चात्य-साहित्यक विद्धान केँ मैथिली मे लियो टॉल्सटॉयक 'अन्ना केरेनीना' क 'रोमान्स' सँ वेशी, मैक्सिम गोर्कीक 'माँ' (यथार्थ) क आकांक्षा करबाक छलनि, 'अपन बात' मे! ओ टॉल्सटॉय सँ 'गोर्कीक साम्यवाद' धरिक दूरी तय नहि क' सकलाह, तेँ हुनका राजकमलक काव्य पूर्णतः विद्रोही आ व्यवस्था-विरोधी नहि बुझाइत छनि। अवतार सिंह पाश (पंजाबी) वला विद्रोह-चेतना अछि राजकमल मे, भलें ओ आत्मनिष्ठ, वस्तुनिष्ठ, समाज आ देशपरक सेहो अछि। जाहि यात्रीजीक काव्य लेल, लेखक कशीदा गढ़लनि अछि, सैह यात्रीजी राजकमलक प्रसंग कहने रहथिन—'वह उस धातु का बना था, जिसे राजकमल होना था। वह सौ प्रतिशत सोना था!' तकर अर्थ किछु ने लगलनि आलोचकगण केँ? राजकमल जँ प्राचीन व्यवस्था-विरोधी नहि, तँ की मार्कण्डेय प्रवासी केँ से मानल जाय?

गद्य-कविता, कविताक गद्यात्मकता आ छन्द-मुक्त कविताक पक्ष मे बजैत, एजरा पाउन्ड आ डी. एच. लॉरेन्स सन गैर-परम्परावादी कएटा आलोचकक उदाहरण-उद्धरण, पोथी मे देल गेल अछि। मुदा गद्य-कविताक

प्रसंग, तकर सकारात्मक वैचारिकताक उपयोग, राजकमलक गद्य-कविता, जीवकान्त वा कुलानन्द मिश्रक कविताक गद्यात्मकताक मूल्यांकन हेतु, औजार-स्वरुप' नहि क' सकलाह प्रो. मिश्र। तखन तँ हुनकर पाश्चात्य निकषे मे 'मीन-मेष' रहि गेल! अपन 'शास्त्रीय-अंग्रेजी-साहित्य-युगीन सोचक अनुकूल' जाहि पाश्चात्य-मानदंडक उपयोग केलनि अछि, से 'कन्जर्वेटिभ' (अप्रगतिशील) रहल आ प्रो. रमानाथ झाक मूल्यांकन-प्रणाली सँ पाछूए रहल! प्रो. रमानाथ झाक 'हंस-वृत्ति' (नीर-क्षीर-विवेचन) क हिसाबेँ देखल जाय तँ प्रो. मिश्रक 'नीर' 'थोभाएल पानि' बनि गेल आ 'क्षीर' बिना जोड़नक दही बनि क' पौड़ा गेल। राजकमल-ललितक साहचर्य, पाश्चात्य साहित्यक अध्ययनक संग, लेखक केँ किरणजी आ यात्रीजीक 'टटका हवा' सेहो लागल छलनि। मुदा आलोचना-प्रणालीक 'ताजगी' आ 'मूल्यांकनक नव स्वाद' पाठक केँ भेटि नहि सकल। संस्कृत-निष्ठ मैथिलीक विद्वाने जकाँ, अंग्रेजीदाँ विद्वानोक सुइया ग्रामोफोनक रेकर्ड पर अटकले रहि गेल, से दुःखद आश्चर्यक सृष्टि करैत अछि।

यात्रीजीक उपरान्त, चारि प्रमुख कवि मे सँ एक, पंकज पराशर केँ मानलनि अछि प्रो. मिश्र। मुदा हुनकर काव्य-पोथी (समय केँ अकानैत) पर कोनो आलेख संग्रहित नहिं अछि 'मीन-मेष' मे। मान्यताक औचित्य, आधारहीन भ' जाइत अछि। तेँ लेखक केँ ई जानि दुःखद आश्चर्य होइतनि जे पंकज पराशरक काव्य-रचनाक मौलिकता पर, दू बेर प्रश्नचेन्ह लागि चुकल छनि, अर्थात 'काव्य-चौर्यक' अभियोग! पहिल बेर 2002-03 मे, हिन्दीक कवि प्रो. अरुण कमलक कविताक चौर्य ('नये इलाके मे' काव्य-पोथी सँ) जे 'आरंभ' (मै. पत्रिका, सं. राज मोहन झा) मे सहरसाक लेखकगणक पत्र रूप मे छपि क' रहस्योद्घाटन भेल। फेर दोसर बेर 'विदेह-मैथिली-ई-पत्रिका, सदेह (सं. गजेन्द्र ठाकुर-2010-12) द्वारा प्रकाशित आ उद्घाटित भेल, जे अंग्रेजी कवि डी. केलनरक कविताक चोरि क' छपबौलनि पंकज पराशर, अपना नामे। प्रो. मिश्र भरिसक पंकज पराशरक ओहि काव्य-पोथीक 'भूमिका' मे तीसटा विदेशी-कविक नामोल्लेख सँ भ्रमित भ' चारि प्रमुख कवि मे स्थान द' देलनि। जँ मैथिली कविताक अद्यतन धारा आ कविक अध्ययन मे, लेखक 'अप-टु-डेट' रहितथि, तँ अपन मान्यता एना सपाट ढंगें अभिव्यक्त क' क' नहि फँसितथि'!

आ चारि प्रमुख कविक नाम गना क' त' लेखक कए पीढ़ीक दर्जनो कवि केँ मारि देलनि अछि। सुकान्त सोम, कुणाल, अग्निपुष्प, महाप्रकाश, सोमदेव, डॉ. धीरेन्द्र, रमानन्द रेणु, विभूति आनन्द, अशोक, शिवशंकर

श्रीनिवास, शैलेन्द्र आनन्द, राज, तारानन्द वियोगी, वीरेन्द्र मल्लिक, राम लोचन ठाकुर, उपेन्द्र दोषी, आ जानि नहि कतेक कविक उपलब्धि केँ अस्वीकार भ' गेल। ई अन्याय अनायास वा सायास भेल अछि-से लेखके जनितथि! कोन बाध्यता छलनि चारि प्रमुख कविक नाम गनेबाक? जँ चारू मैथिली-काव्यक प्रस्थान-बिन्दु त' तकर औचित्य प्रतिपादित करितथि लेखक! गीतकार मार्कण्डेय प्रवासी केँ लेखक 'गीतक बिड़ला' अर्थात् 'बिजनेसमैन' वा 'गीतक वृहत् उत्पादन करएवला फैक्ट्रीक' अर्थ मे कहने हेताह! से तँ प्रवासीजीक छवि केँ आर खराबे करैत अछि। प्राचीन तुकबन्दी सँ आक्रान्त, गीत-काव्यक प्रति जड़ मान्यताक गीतकारक 'जड़-मति' (प्राचीन सोच) केँ ई निबन्ध ने तँ शिल्पक, आ ने कथ्यक सम्यक् आलोचना वा परिष्कार क' सकल। 'गीतक बिड़ला' कहि देला सँ विराट् गीतकार-व्यक्तित्व ध्वनित नहि भ' क' 'गीतक पैघ व्यवसायी' सहजहिं ध्वनित भ' गेल अछि।

प्रवासीजी 'नव-कविता/नव रचनाकार लेल पूर्वाग्रह-ग्रस्त आ 'अशिष्ट भाषाक उपयोगकर्त्ता'(लेखकक शब्द मे) छलाह! ओ वस्तुतः पद-ललित्यक जड़-अर्थ-ग्राही, लयबद्धताक स्थूल-अवधारणायुक्त, अर्थक लयात्मकता सँ दूर, शब्द-जाल-प्रणेता, जीर्ण-शीर्ण-विचारधारा केँ गीत मे गंथनिहार आ गीते मे अशिष्ट टिप्पणीक बदौलत (कहाँदन) 'विशिष्ट गीतकार' छलाह। जँ कवि-सम्मेलन-मंच पर 'गीतक व्यवसाय' करैत छल हेताह, तँ गीतक बिड़ला' ठीके कहलनि अछि लेखक। मुदा गीत मे 'सुग्राह्य नव-प्रयोग' आ 'प्रगतिशील वैचारिकता' लेल त' डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, डॉ. शान्ति सुमन, लोकगीतकार रविन्द्रनाथ ठाकुर, जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' आदि नामी छथि। मुदा से गीतक नव्य-धारा' 'नव वैचारिकतायुक्त कथ्य' 'अर्थ-लयात्मकता-स्तरीय-नव भाव-भंगिमा' लेल छथि नामी! टाटा-बिड़लाक नीमक आ सीमेन्ट-व्यवसाय लेल नहि। आ से भरिसक आजुक गीतकार पसिन्नो नहि करताह! गीत जँ 'रजनी-सजनी' रहि गेल, ओकर तेवर जनोन्मुखी नहि भेल, त' नवीन कथ्यक अभाव मे, 'नवीन गीत' नहि बनि पबैछ! ओकरा 'प्राचीने गीत' किए ने मानल जाय? 'नवीन गीत' मे तँ 'तिल-तिल नूतन होय' जरूरी अछि! प्रवासीजीक गीत मे त' वैचारिकता केँ लकवा मारने अछि! नव-कविता केँ चिचिया-चिचिया क' गारि पढ़ला सँ, गीतक 'मोल' जँ बढ़य, तँ प्रवासीजी ठीके 'बिड़ला'! अन्यथा, जनवादक जड़ि सँ दूर, अमरलत्ती जकाँ लतरबाक प्रयास करैत, प्रवासक प्रवासीए रहलाह, प्रवासीजी!

तेँ एतावता, प्रो. रमाकान्त मिश्र सन विद्वान लेखक आ 'रामू' सन 'स्रोता' –वक्ता सँ, स्वस्थ आलोचनाक अपेक्षा, 'हरि अनन्त, हरि कथा अनन्ता' जकाँ बनले रहि गेल अछि। तेँ आलोच्य पोथीक प्रत्यालोचनाक औचित्य बनले रहि गेल अछि! प्रवासीएजी जकाँ, प्रो. मिश्रक पुरान दृष्टिकोणक आलोच्य परम्परा, कोनो नव परम्परा आ प्रतिमानक विकास नहि क' सकल।

•

भीमनाथ झाक 'धुरी'-काव्य : आत्मनिष्ठ कविक आत्मालाप

''धुरी'' एकटा सहयोगी काव्य-संग्रह थिक जकर तीन टा कवि आइयो मैथिलीक महत्वपूर्ण आ स्थापित कवि छथि। मुदा एत' पहिल कवि भीमनाथ झाक काव्य-प्रसंग विमर्श करबाक सुविधा अछि, जिनकर पहिले कविता(धुरीक प्रथम काव्य)क नाम (धुरी) केँ आधार बना क' काव्य-पोथीक शीर्षक 'धुरी' राखल गेल अछि। कविगण एकरा 'जीवन-गाड़ीक काव्य-चक्रक आधार-दण्ड' कहलनि अछि आ पोथीक प्रसंग प्रकाशन-वर्ष (1972) स' एक वर्ष पूर्वहिं खूब वाद-विवाद-संवाद केने छलाह। स्पष्ट अछि जे पोथीक नामक प्रसंग सेहो विमर्श भेले हैत। मुदा मैथिली भाषाक क्षेत्र मे वर्तनी उच्चारण आ हिज्जेक प्रसंग मे जे अराजकताक स्थिति, मानकीकरणक अभाव मे, चलि रहल अछि, तकर दृष्टांत एहू पोथी मे भेटैत अछि। पोथीक शीर्षक आ काव्य-शीर्षक 'धुरी' मे ह्रस्व उकारक प्रयोग केलनि अछि, जखन कि 'धुरी' काव्यक कवि 'धुरी' कविताक अन्तिम पाँती मे 'ध ुरी' शब्द मे दीर्घ ऊकारक प्रयोग केलनि अछि। मुदा पोथीक भूमिका-लेखक सोमदेवजी अपन भूमिका मे प्रायः सभ ठाम ध' के संग दीर्घ ऊकार के प्रयोग केलनि अछि आ 'धूरी' लिखलनि अछि। ओइ समयक ई अराजकता आइ चरम पर अछि। ककरो दोष नहि, क्यो गलत नहि। पता नहि, भाषा-शास्त्री, वैयाकरण वा प्राध्यापकगण अइ महत्वपूर्ण काज दिस ध्यान किएक नहि दैत छथि। विडंबना त' ई जे अत्यंत उदारतापूर्वक भूमिका-लेखक ई साटीपीकटो दैत छथि जे धूरीक कविगण भाषिक स्तर पर कतौ भ्रष्ट नहि छथि।

मुदा तथ्य त' ई अछि जे आजुक प्रायः अधिकतर साहित्यकार अनेक प्रकारक वर्त्तनी, हिज्जे, उच्चारण, ध्वन्यात्मकता के अराजकतापूर्वक उपयोग क' रहल छी, जकर दायित्व मानकीकरण अभियानक शिथिलता केँ छैक। 'धुरी' मे कवि भीमनाथ झाक तेरह टा कविता, पोथीक प्रारंभे मे संकलित अछि। प्रायः सभ कविताक मुख्य कथ्य बेरोजगारी, गरीबी, निम्न-मध्य वर्गक

करुणा, सामाजिक विसंगति, राजनैतिक व्यंग्यपूर्ण दशा, आक्रोश, कुंठा आदि अछि। कविता सभ ('धुरी' छोड़ि) प्रायः नव-कविताक शिल्प मे अछि। प्रकृति-वर्णनक जे काव्य संकलित अछि, सेहो शरदक प्रात वा पहाड़ी प्रदेशक गरमी आ बरखाक ब्याजें सांसारिक विसंगति पर चोट करैत पाठक केँ काव्यानन्द दैत अछि।

संकलित तेरहो टा कविता स' सुस्पष्ट अछि जे कवि प्रवासी भ' क' ई कविता सभ लिखलनि अछि आ पोथियो त' चारू कवि मिलि प्रवासे मे छपबौलनि अछि। राँचीक पृष्ठभूमि प्रायः सभ कविता मे अछि आ 'धुरी' मे ग्रामीण आ पारिवारिक करूणदशाक मारूख स्मृति चित्रणक अछैत कवि प्रवासीए छथि। तेँ आ तखने स्मृति-चित्र!

कथ्यक वैविध्य त' आछिए आ नव-नव कथ्य सेहो भेटैए। मुदा कए कविता मे एकहि कथ्यक पुनरावृत्ति सेहो भेल अछि। जेना बेरोजगारीक दर्द स' आक्रान्त कवि कए टा कविता मे बेरोजगारीएक रूप-विधान बदलिक' चित्रण केलनि अछि। कथ्यक पुनरावृत्ति स' कथ्य घसा-पिटा जाइ छै वा घसल-पिटल बुझाइ छै आ एकरसताक दोष काव्य मे आबि जाइ छै। कवि भीमनाथ झा त' मैथिली लोक-भाषाक विशेषज्ञ एहू संग्रहक कविता मे बुझाइत छथि आ मिथिलाक जन-जीवनक धूरी-तत्व सबहक जीवनानुभव छनि, से त' स्पष्टे अछि। हिनकर मैथिलीक शब्द-सामर्थ्य स्वाभाविक रूपें अति-समृद्ध अछि आ काव्य-भाषाक प्रवाह अनुपमेय अछि।

ओना 'धुरी' मे वर्णित प्रवासीक स्मृति-दर्द, ग्रामीण आ परिवार-जनक दर्द, तुकबन्दी-काव्यक कथ्य आ शिल्प, परिवार आ तत्कालीन संरचना पुराने अछि। परिवार-चक्र, दरिद्र्य-चक्र, सम्बन्ध-चक्र ओहने वर्णित अछि जेहेन पारंपरिक परिवारक होइत आयल अछि। परिवारक मुखिया अथवा एक कमौआ पर टकटकी लगौने अनेक वा सभ सदस्य, सबहक निर्भरता आ निष्क्रियता परजीवी चरित्रवला सदस्य सभक भार एकहिटा 'धुरी' पर पड़ब, मिथिलाक कोनो परिवारक समान्य नकारात्मक विशेषता थिक, जे कविता मे ध्वनित अछि। तेँ कमौआक पत्नीक ''करम कूटब'' आ कमौआ व्यक्तिक 'नियत-वादी' हैब सत्ते मजगूत कते नियतिक ई 'धूरी' छै!

प्रायः अवश्यंभावी एही कारणें छै, जे सम्पूर्ण जीवन, जीवन-संघर्षे मे बीति जाइ छै। परिवार-पालन आ विकास ले गाम सँ पलायन मुदा

मनोवैज्ञानिक बोझ एक व्यक्तिक कमाइ स' कोना उतरि सकैए जखनकि 'गेन देवीथान मे भगवानजी लोकैत रहता'? अइ दारूण व्यथाक करूण स्मृति, मिथिलाक कोनो औसत परिवार आ प्रवासी मुखियाक हीया आइयो सालि रहल अछि आ 'स्मृति-काव्यक ई भीमनाथी परंपरा' कवि विवेकानन्द ठाकुर मे अति-भयंकर विकास पओलक अछि।

'बीन्हि लेलक बिढ़नी' मे कवि बेरोजगारक संवेदना पर होइत आक्रमण स' स्वाभाविके तिलमिलाइत छथि। मुदा कम्पनीक मैनेजर जे ग्रेजुएटक प्रति पूर्वाग्रह-ग्रस्त भेलाह अछि, से शिक्षाक आ ग्रेजुएटक स्तरहीनता देखैत बहुत अनुचितो नहि कहल जा सकैछ। ओना मैनेजर के देल गेल जवाब त' बेरोजगारक आक्रोशक अभिव्यक्ति होइतहुँ सटीक अछि। 1972 ई.क सामान्य आ अभिधात्मक कथा-काव्य होइतहुँ विकृत मानसिकता पर कैल गेल सोद्देश्य व्यंग्य स्पष्ट आ आक्रामक अछि। कविता मे पैघ-पैघ 'हिन्दियाइज्ड' उद्धरणक अछैत जीवनानुभवो प्रचुर अछि। छने-छने सहस्त्रोटा बिढ़नीक बिन्हैत रहने विष-मानव बनब निश्चितप्राय होइ छै आ परिणामतः विष-मानव समाज के हबकबे टा करतै। अइ कविता मे कवि अपन आक्रोश के सामाजिक अभिव्यक्ति देवाक चेष्टा केलनि अछि, जे कवि स' तत्कालीन अपेक्षा कैले जा सकैत छल।

''हुल द' निकलि गेलै मेल ट्रेन'' एकटा बिम्ब आ वर्णनक संतुलनक कविता थिक जकर शीर्षक मे 'गेलै' शब्द आ काव्यक अंतिम पाँती मे 'जेतै' शब्द जीवनक अतीत आ भविष्य दुनुक दुःखमय हेवाक संकेतक थिक। अइ कथाकाव्य मे क्षीण व्यंग्य आ कविक प्रारंभिक-कालक सोझ-सपाट अभिव्यक्ति कारणें, 'धुरी' वला कथ्यक आवृति (गरीबी-बेरोजगारी-भगवानजीक गामे मे बैसल रहब) आदिक कारणें, ट्रेन केँ जीवनक प्रतीक बनौलाक बावजूदो, प्रभावहीनता आबि गेल अछि।

तहिना 'बाजि उठल बहरी केवाड़ीक जिंजिर' कथा-काव्येक शिल्प स' आक्रान्त अछि। आदर्श दारिद्रय, नौकरी, आदिक सन्दर्भ मे ठाहिं-पठाहिं, कवित्त-विहीन, उतरा-चौड़ी वक्तव्य सभ, अइ काव्य मे आयल अछि। दरिद्रा के भाग्य दिस स' व्यंग्यपूर्ण चुनौती भेटैत अछि, बेरोजगारक ओइठाँ 'डिपटी' बजैवाक।

''पाँच सात बारह'' नामक कविता मे योग्यताक अनुकूल नौकरी नै भेटवाक आ विरोधाभासी नौकरी भेटवाक दुःखद परिस्थिति काव्य-कथ्य

बनल अछि। ईहो काव्य-चित्र चित्र-काव्ये बनि क' रहि गेल अछि।

'बहालीक चिट्ठी' मे काव्य-शिल्प मे कथात्मकता गाँथल अछि। कविक वर्णन-प्रधान काव्य बेशी अछि आ ताहि मे 'कथाक कथावस्तु' वेशी स्थान पबैत अछि। एहेन काव्य मे शब्दक अपव्ययक गुंजाइश रहै छै। जँ हिनकर वक्तव्यमय कविता सभ मे व्यंग्यक तीक्ष्णता नहि रहैत, तँ ई कविता सभ कत' भ' क' रहैत, से नहि जानि। तखन नौकरी भेलाक बाद कमौआ पूतक व्यक्तिगत सुख मे डूबि अपन परिवार के बिसरि जैब एकटा करूण सत्य थिक— जकरा स' ई कविता साक्षात्कार करबैत अछि। 'लिय' ने कते लेब कविता' मे परंपराक समर्थन, नवीनताक विरोध स्पष्ट अछि। नारा जकाँ निरोधक प्रचार भ' गेल अछि, निरोध पर सपाट व्यंग्य करैत, परिवार-नियोजनक लाल तिकोनक विरोध कवि के परंपरावादी खाढ़ी मे ठाढ़ क' दैत अछि। 'निरोधक शोध' पर प्रश्नचेन्ह लगौला स' कविक वैचारिक नवीनता पर सेहो प्रश्नचेन्ह लगैत अछि।

मैथिलक सुच्चा द्वैध-चरित्रक सटीक चरित्र-चित्रण 'एक लाख तकरो' मे भेल अछि। शब्दचित्र आ आत्म-टिप्पणि (मैथिल पर) के रूप मे आयल ई आत्म-व्यंग्य थीक, जे काव्य-सौन्दर्य स' दूर अछि। 'भरि गेल धुआँ' अह्वानपरक काव्य थिक, जाहि स' अग्निजीबी पीढ़ीक काव्यक 'भ्रम' होइछ। कविता मे अंतर्निहित 'आह्वान' सकारात्मक बुझाइछ। मुदा सकारात्मक अंतिम पाँती के शीर्षक बनवाक चाहैत छल, जखन कि विकृतिक प्रतीक 'धुआँ' के शीर्षक बनौल गेल अछि। कवि भीमनाथ झाक अग्निजीवी पीढ़ीक अग्नि-काव्य लिखवाक भ्रम जल्दीए टूटि गेल। मुदा 'धुरी'क हुनकर कए गोट कविता से 'भ्रम' तहिया देने रहय।

आइ से कवि शुद्ध परंपरावादी आ प्राचीन विचारक रचनाकारक रूप मे स्थापित छथि। कवि के घर परिवार स' ल' क' अन्तर्राष्ट्रीय स्तर धरि विकृति(धुआँ)क प्रत्यक्षीकरण भ' रहल छनि। मुदा तकर समाधान मात्र पानि ढारि क' धुकारी बन्न क' देबा मे बुझाइ छनि। विध्वंसक उपरांत नव-निर्माणक सपना स्वभावतः कोनो अ-प्रगतिशील रचनाकार मे नहि भेटि सकैछ।

समकालीन सोच स' रहित कोनो रचनाकारक सुधारवादी-संशोधनवादी भ' जेवाक खतरा रहिते टा छै।

''बाजि उठल भोंपू'' मे नौकरिहाराक बाध्यताक कारणें वैज्ञानिक स'

कलाकार आ कलाकार स' वैज्ञानिक बनवाक व्यक्तित्वक तरलता के मुख्य कथ्य बनाओल गेल अछि, जे 1972 ई. मे सुखद आश्चर्य छल। विरोधाभास आ विडंबनाक, स्थिति आ यथास्थितिक नीक चित्रण भेल अछि। मुदा विविधता विहीन, शिल्पक एकरसता काव्यानन्द केँ छिटकी मारैत अछि।

पहाड़ी-प्रदेशक गरमी आ बरखा कविक रोजगार-विहीनता पर आत्म कथ्य बुझाइए। मेघ बनाम बेरोजगारीक ब्याजें कविक आत्म-रुदनक अभिव्यक्ति भेल अछि। प्रकृतिए जकाँ काव्यो अनेरो नमरि गेल अछि, मुदा ताहिस' कविक भाषा-प्रवाह प्रभावित नै भेल अछि। पाथर मे आगि बारबाक उपमान कवि अपन 'कपारक' धाह स' दैत छथि, जे बेरोजगारीक स्थितिक तीक्ष्ण व्यंग्य आ सूक्ष्म प्रतीक थिक। कवि अपन कएटा कविता मे 'स्पष्टतः' नियतिवादी-भाग्यवादी छथि, गें-गो क' क' नहि। 'शरदक पात' नामक कविता मे कवि अपन सम्पूर्ण मौलिकताक संग प्रकृति-वर्णन सुतारलनि अछि। प्रकृति-काव्यक कवि, समाजक बैकवार्ड-फारवार्ड मे बँटल प्रदूषित मानसिकता पर अपन चिर-समधानल व्यंग्य-अस्त्र स' प्रहार करै छथि, प्रकृति-चित्रणक मध्य। यैह कलाकारी जीवन के प्रकृति स' एक दिस आ साहित्य स' दोसर दिस जोड़ैत अछि। मुदा कवि अपन कएटा कविता जकाँ एहू मे 'भूतकाली'—चित्रण' आ 'भूत-प्रेम' स' आक्रान्त छथि। अधिकतर कविताक चित्रण 'भूतकाली-चित्रण' मे कैल गेल अछि जे काव्यक 'थीम' कथावस्तु जकाँ वा 'कथात्मक' हेवाक कारणें एक प्रकारक बाध्यता छल, कविक लेल। अधिकतर काव्य मे काव्य तत्व मात्र व्यंग्यक आधार पर कहुना अड़कल अछि, आ कथात्मकता वा कथोपकथन आ भाषाक मंचध्वनि वर्णन-चातूर्य प्रधान अछि। कवि अधिकतर काव्य मे अपन आत्मनिष्ठ टिप्पणिक मध्य मिथिलाक परिवारिक, सामाजिक आ आर्थिक जीवनक विद्रूपता सभ पर आत्म-रुदन क' रहल छथि, 'धुरी'क अपन तेरहो कविता मे।

से कोनो तेहेन आश्चर्यजनक नहिं अछि, कारण, अपन काव्य-जीवनक प्रारंभ मे प्रायः सभ कवि आत्मनिष्ठता स' वस्तुनिष्ठता धरिक दूरी तय करैत अछि। ई यात्रा क्रमशः परिपक्वता प्राप्त करैत अछि आ कवि 'व्यक्ति' स' 'समष्टि' दिस उन्मुख भ' 'समष्टि' कें अपन रचनात्मक 'इकाइ' बनबैत अछि। से 'धुरी'क कविता मे कवि भीमनाथ प्रायः नै क' सकैत छलाह।

'धुरी' मे 'धुर-दक्षिण पंथी' बिचारक कवि ओ नहि छलाह। तकर मात्र संकेत छल, जे बाद मे क्रमशः स्पष्ट भेल। मुदा लोक-रंजन, लोक-कल्याण भावनाक अन्तर्निहित धारा, व्यंग्यक कारणें 'धुरी'क तेरहो काव्य मे संकेतित अछि। 'धुरी'क भीमनाथी-काव्य मे आक्रोशक प्राचुर्य अछि जे बाद मे क्रमशः पचैत चलि गेल अछि। कविक तत्कालीन जीवन आ रोजगारक अ-स्थायित्व कविता सभ मे स्वतः स्पष्ट अछि। कविता सभ मे 'वक्तव्य' आ 'भाषा' ततेक चढंत भ' गेल अछि जे 'भाव' कमजोर भ' गेल अछि। काव्य सभ मे 'नवीनता' आ 'समकालीनता'क अभावे जकाँ रहल, मुदा नव-कविताक शिल्प अपनाओल गेल। मुदा ताहि स' सर्वतोभावेन 'नव-कविता' नै बनि सकल अछि। काव्य अपन 'अन्तर्वस्तु' मे जतेक नवीन होइत अछि, 'तिल तिल नूतन' होइत अछि, ततेक शाश्वत बनैत अछि। मात्र 'वर्णन-चातुरी' कोनो कवि के 'रुपवाद-कलावाद' दिस ठेलि दैत अछि, जतय 'कलाकारी' मात्र 'कला' लेल होइत अछि, साहित्य आ समाज लेल नहि।

•

जनभाखा, राँची
2008 ई.

‘गुलो’क अस्तित्व : मैथिली समाजक आलोचना

2015 मे पुस्तकाकार रूप मे आ ताहि सँ पूर्व ‘मिथिला दर्शन’क साहित्य-विशेषांक (दिसम्बर 2014) मे प्रकाशित डॉ. सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास ‘गुलो’ पाठक केँ कए कारणेँ आन्दोलित क’ क’ राखि देलक अछि!

प्रेमचन्द जाहि शताब्दी मे साहित्य केँ समाजक दर्पण कहने छलाह से कहिया ने बीति गेल। साहित्य आइयो दर्पणक भूमिका (अतिरिक्त रूपें) क’ रहल अछि। मुदा तहिया सँ भारतीय समाज आ साहित्य पैघ दूरी तय केलक, से विश्वास करबाक अनेक आधार अछि। मुदा की मिथिला मे से भ’ सकल? साहित्य सर्वविधि सामाजिक भूमिका मे भारतीय समाज मे अपन अस्तित्व केँ सार्थक क’ रहल अछि। मुदा मैथिली-समाज मे ई सर्वविधि बहुमुखी भूमिका मे आबि सकल अछि की? मैथिली-समाज आ साहित्य किरण, यात्री, राजकमल, हरि मोहन झा आदिक उपरान्त, कतेक दूरी तय क’ सकल? की मैथिली-समाज आइयो ओतहि नहि अछि, जत’ मैथिली भाषा आ साहित्य मे सम्पूर्ण समाजक प्रतिबिम्ब आ चेहरा नहि समा पबैत हो? जँ सम्पूर्ण समाजक आंशिक प्रतिबिम्ब आबियो रहल हो, त’ से साहित्यक दर्पण मे खण्डित आ विकृते भ’ क’ अबैत हो, सेहो संभव! निश्चितरूपेण, मैथिली साहित्य मे सम्पूर्ण समाजक प्रतिबिम्बन एखन धरि नहि भ’ सकल अछि। आ तेँ मैथिली-साहित्यक हैसियत एखनहुँ धरि मैथिली समाज लेल दर्पण सँ आगू नहि बढ़ि पाबि रहल अछि।

एकटा समय छल जे प्रेमन्दक ‘गोदान’क होरी, सोनियाँ आ गोबरक दर्पण मे, भारतीय समाज अपन मुखड़ा देखैत छल। बाबा यात्री, किरणजी, राजकमल आ रेणुक जनवादक संग आधुनिकता आ प्रगतिवाद, भाया ललित-किसुन-मायानन्द, मैथिल समाज मे एकटा नवीन संवेदनाक संचार त’ केलक, मुदा ओ भारतक सीमान्त कृषक आ पशुपालकक दुःख-दर्द छल। कृषक मजदूरक दुःख-दर्द छल। ‘गुलो’ त’ वर्गे-विहीन अछि। ओकर ने त’ कोनो संवर्ग छै आ ने वर्ग। ओइ दिशाहारा पर त’ कोनो सुभाषचन्द्र यादवेक नजरि पड़नाइए छलै। ‘गुलो’क जीवनक उपन्यास मे डूबबाक योग्यतो

मैथिलीक सभ लेखक मे संभव नहि छलैक। जेना राजमोहन झा कोनो जनम मे ई उपन्यास नहि लिखि सकैत छलाह, यद्यपि ओ उपन्यास लिखियो नहि सकलाह! ई सुभाषेजी लिखि सकैत छलाह! ‘गुलो’ केँ त’ घराड़ियो अपन नहि छै। ओकर पिते सँ भागिन प्रपञ्च रचि गोंठ-सिपौलक घराड़ी लिखा लेलकै। मैथिल-जन लेल मसोमातक घराड़ी आ इज्जति लुटनाइ वामा हाथक खेल रहल अछि। से ‘जीवन्त’-परम्परा ‘गुलो’ लग आबियो क’ ‘सुतन्त’ नहि भ’ सकल! तेँ ओ गोंठ-सिपौल सँ उपटिक’ पूर्वी कोसी बान्हक पूरब अवस्थित पुनर्वास लग बिहार सरकारक सड़कक कातक जमीन पर खोपड़ी-एकचारी ठाढ़ क’ घर आ दोकानक माध्यमे जीवन गुदस्त क’ रहल अछि! के सी.ओ. ओकरा किसानी लेल जमीन बन्दोबस्ती देतै आ कृषक मजदूर बनबा योग्य आब ओकर स्वास्थ्ये नहि रहलै! दोकान योग्य पूँजी नहि छै, तेँ टुकदुम-टुकदुम चलै छै। किछु नहि छै, दिशाहारा-सर्वहारो मे निम्नतम पायदान पर छै। मरैत-मरैत जीबि रहल छै। कोनो जीवने ने जीबि रहल छै, जीवने ‘कबिराहा निर्गुन’ बनि गेल छै! ढेपमारा गोसांई अपनो परिवार मे!

कखनो कनियाँ (बेलावाली) दवाइ लेल गारि पढ़ै छै, त’ कखनो सरहोजि गंजन करै छै! कखनो पुतोह (कन्दाहावाली) पाइ अछैत परिवार केँ भूखल-दुःखल राखि ‘गुलो’ केँ हैसियत बुझा दै छै, कखनो बेटी (रिनियाँ) ‘झुट्ठा’ कहि दै छै (उचित सख-सेहेन्ता पूरा नहि भ’ पओला पर) त’ कखनो बेटा (छोटुआ) झझकारि दै छै! तैओ’ ‘गार्जन’ भ’ क’ परिवारक गाड़ी घिचनाइ छै! कहियो अनवर सँ बेटीक लेल दवाइ मंगैत अछि, कहियो डीलरक कृपा सँ गरचुन्नी माँछ आ छागरक मासुक चरी-भोंटी-अंतड़ी-भोंतड़ी सँ फगुआ आ पावनि-तिहारक सख-सेहेन्ता पूर करैत अछि। पता नहि ओ किए जिबैत अछि? आ कखनो तमसाइए त’ परिवारो मे झाड़ि दै छै– ‘गुलो मंडल नाम छिऐ हमर! ठेंठपना नै देखा हमरा!’

ओ स्वतंत्र भारतक समाजक बिक्ख सँ विखिन्न भेल मतदाता आ नागरिक थिक। फूसक घर आ चापाकल ठीक करेबाक लेल बेलल्ला! सदिखन भानसेक चिन्ता। एहेन ओ असगर नहि अछि देश मे? करोड़क-करोड़ छै! सैह विडम्बना छिऐ। तैओ ओ भोट नहि बेचैत अछि! ओकरा लेल सरकार, समाज, नेता, मुखिया, ग्रामसेवक, भी.एल.डबलू, लोन देबएवला बैंक, विकास अधिकारी, क्यो नहि छै।

कोनो पावनि-तिहारक कोनो अर्थे नहि छै। ओकरा मुँह सँ 'सम्मानजनक बोली' कोना निकलतै? अपनो परिवारक लेल गारिये निकलै छै। के छै हित-मीत ओकर, जे चिन्ता करतै? जीलै त', मुइलै त'... संवेदना ककरा छै?

ओकरा लेल ग्राम स्वरोजगार योजना कत' छै? ओकरा बेटी (रिनियाँ) लेल कन्या विवाह योजना नहि छै, तेँ दू टा गाछ गुलो ओकरा विवाहक नाम पर उसरगिक' राखने छै आ बेच' लेल तैयार नहि होइ छै। इन्दिरा आवास नहिए छै ओकरा लेल। अपने मोने बैंक लोन आ इन्दिरा आवास नहि पहुँचि जेतै ओकरा दोकान पर! आ ओकरा रास्ता देखल नहि छै बलौक आ बैंकक! कोन जमीनक खाता-खेसरा देतै, कोनो वासगीत पर्चा भेटल छै? मुखिया-मनेजर लेल एहेन लोकक कोन महत्व छै? सरकारी योजना पैरवी, घूस आ राजनीति पर चलै छै? छोटुआ लेल न्यूनतम मजदूरी एक्ट (पलाइ-फैक्ट्री) केँ कोनो अर्थ नहि छै, पचास टाका रोज (दोसर ठाम साठि टाका रोज कहल गेल अछि) पर! बस्स परिवारक प्राण-रक्षा होइ छै कहुना! कन्दाहावाली कृषक मजदूर छै! मुदा कृषक मजदूर वा महिला मजदूर केँ कतेक मजदूरी भेटै छै! ओकर घरवाला त' रोजगारेक अभाव मे पलायन क' गेल छै आ नरेगा-मनरेगा टुकुर-टुकुर तकिते रहि जाइ छै— 'जॉब कार्ड' दिस! बालिका। महिला समृद्धि योजना, बाल-स्वास्थ्य योजना ने त' बेलावाली-कन्दाहावाली-रिनियाँ लेल छै आ ने सुजीत लेल! आब स्वास्थ्य-बजट पास भेला सँ त' चालीक दवाइ रिनियाँ केँ वा खोंखीक दवाइ बेलावाली-गुलो केँ नहिए भेटि जेतै! एखन धरि सुप्रीम कोर्टक परतापें विरधा पेंसिन, अन्नपूर्णा अन्न योजनाक अरबा चाउर आ रिनियाँ केँ पोशाकवला पाइ (इसकुल सँ) कहुनाक' कहियो काल, चाहक दोकाने जकाँ टुकदुम-टुकदुम करैत, पहुँचि जाइ छै, से गुलोक सौभाग्य! काल्हि भ' क' सुजीत केँ गुलो धन्यवाद देत। ओकरा सी.ओ. कर्मचारीक कृतज्ञ रहनाइ छै जे सड़कक जमीन अतिक्रमण लेल दोकान-घर उजाड़ि नहि रहल छै, जे कि ओकरा पर क्यो दरखास नहि देलकै अछि! ई स्थिति पुनर्वास परहक थिक, कोसी पेटक लोकक दुःख-दर्द आर करुण-क्रन्दन-युक्त अछि। अनियोजित आ गड्ड-मड्ड विकास, योजना मे सैह होइ छै!

तखन ई कहब अनुचित हैत जे कोसीये क्षेत्र मे ई परिस्थिति अछि। वस्तुतः सम्पूर्ण मैथिली-समाज मे सम्पूर्ण भौगोलिक आ सांस्कृतिक मिथिलांचल

मे, अनेक जातिक निम्नवर्ग मे वा वर्गहीन मनुक्खक यैह दुःस्थिति अछि। तेँ गुलो एकटा व्यक्ति नहि अपन वर्ग आ वृहत्तर मैथिली समाजक प्रतिनिधि-पात्र थिक, जकर सृजन लेल लेखक चिर-स्मरणीय रहताह!

विविध प्रकारक मैथिली राष्ट्रीयता, जकर अस्तित्व सामाजिक आ आर्थिक रूपें कमजोर छै, हुकुर-हुकुर क' दम तोड़ि रहल अछि! सरकार-समाज संरक्षण देबाक बजाय उन्मूलन करए मे लागल अछि! वस्तुतः 'गुलो' उपन्यास एकटा 'मॉडल परिवार' एकटा उपेक्षित मुदा अस्तित्व लेल संघर्षशील परिवार आ समाजक करुण-गाथा थिक, जकर सुख-सेहन्ता, कुटुम-कुटमैता, प्राणरक्षा निमित्त कयल जाइवला छोट-छोट बइमानी, पारिवारिक तकरार, प्रेम-प्रदर्शन आ जीवनक सम्पूर्ण सर्वहारा सौन्दर्य-बोधक सांगो-पांग जीवन्त आ प्राणवन्त चित्रण भेल अछि! वस्तुतः 'बलचनमा' (यात्री बाबा) आ 'पृथ्वीपुत्र' (ललित)क उपरान्त समयक विकासक संग जँ कोनो प्रस्थान-बिनु मैथिली उपन्यास-साहित्य मे भ' सकैत छल वा अछि— त' से सुभाषचन्द्र यादवक 'गुलो'ए भ' सकैत छल वा अछि! मैथिली-समाजक अन्तस्तल मे कोन लेखक कतेक अन्दर धरि धंसि सकैत छलाह वा छथि, ताहि मे सर्वाधिक भेदक-क्षमतायुक्त लेखक जे हेताह-से समाजक अन्तिम पाँतीक सर्वाधिक निरसल मनुक्खक जीवन-गाथा धरि पहुँचि सकताह। से पहुँचि सकलाह 'गुलो' धरि डॉ. सुभाषचन्द्र यादव, जखन ओ सुपौल-पुनर्वास पर घर बनौलनि वा पुनर्वासक बगल मे, रस्ता कात मे आबिक' 'गुलो' बसि गेल! अन्यथा, प्रोफेसर कॉलोनी, सहरसा मे ई पात्र भेटब कठिन छलनि। मुदा खाली पात्र भेटि गेने थोड़बे किछु होइ छै? पात्रक अन्तस्तल मे बहैत जीवन-धारा केँ आत्मसात करए पड़ैत छै आ ओकर परिवेश मे रम' पड़ैत छै! लेखकक से रमनाइ रमनगर भेल अछि। लेखक केँ साधुवाद जे ओ लिखैत काल दलितवादी वा पचपनियाँ (जाति) बनिक' नहि लिखलनि, मात्र 'गुलो' वादी आ जनवादी भ' क' लिखलनि, तेँ मानवीय गरिमाक जबर्दस्त मांग करैत, मानवीय भावनाक उद्रेक पाठकक हृदय मे 'गुलो' करैत अछि, जखनकि ओ जबर्दस्त 'पचपनियाँ मैथिली'क सौन्दर्य-बोध सँ आ पात्रानुकूल फोटो-स्केच-चित्र सँ सजा देलनि गुलोक, महा-गाथा केँ!

ओना उपन्यास-कलाक हिसाबें तिलिया-फुलिया-विहीन अइ उपन्यासक औपन्यासिकता वा दीर्घ-कथात्मकता पर फूट सँ बहस उठाओल जा सकैत

अछि। मुदा डॉ. सुभाषचन्द्र यादवक कथाक पाठक केँ से महत्वहीन बुझैतै। ओ त' जीवनक 'सारभूत तत्व' केँ सारिले रूप मे उपस्थापित करैत रहलाह अछि, अपन सभ विधा मे। तेँ ताहि शैलीक प्रभाव, हुनकर उपन्यासो पर भेनाइए छलै। पैघ बात ई थिक जे संवेदनशील पाठकक हृदये मे नहि, शरीर-मन-हृदय आ आत्माक सभ तंत्र मे, गुलोक कथा, निरंतर रक्त परिसंचरण जकाँ उतरैत आ बहैत चलि जाइत अछि, कोनो काव्यमय लोक-गाथा जकाँ। आ जे पाठक गरीबी भोगने अछि, तकरा त' अन्तस्तल केर ओ आवेग, फेर बाह्याभिमुख बनि 'नयन-नीड़' भ' प्रवाहित होइ छै। आर कोन सफलता चाही कोनो उपन्यास केँ? जकरा जीवन मे एकैसम सदीक दोसरो दशक मे सूर्योदय आ सूर्यास्त मे कोनो अन्तर नहि होइत छै, तकरा जीवन केँ प्रतिपाद्य बनौनाइ 'दुस्साहसे लेखिनी' सँ संभव अछि।

'गुलो' सरलताक सौन्दर्य-बोध सँ आप्लावित अछि। एकर कथात्मकताक 'ट्रीटमेंट' निरंतर प्रवहमान धेमुरा-तिलयुगा सन कल-कल निनाद करैत अछि आ पाठकक मनो-मस्तिष्कक तंतु-तंतु केँ झंकृत करैत अछि। पाठक केँ कोनो शिकाइत नहि छै जे उपन्यास केँ अध्याय मे किए ने बाँटल गेलै? गुलोक पारिवारिक जीवन सम्पूर्णताक मांग करैत अछि, खण्ड-खण्डक नहि। तेँ अइ उपन्यासक यैह शिल्प-चयन उचित छल।

जेना डोमक जीवन पर डॉ. महावीर प्र. द्विवेदीक 'डोम' कविता प्रतिमान बनि गेल, जेना हिन्दीक 'मुसलमान' (कविता) मूसलमानक जीवनक (भारत मे) प्रतिमान बनि गेल, तहिना 'गुलो' पिछड़ल-वर्गक जीवनक प्रतिनिधि आ सय प्रतिशत विश्वसनीय दस्तावेज बनि गेल अछि! कोनो कल्पनाशीलता आ 'रोमान्टिसिज्मक एम्ब्रायडरी' नहि अछि 'गुलो' मे। यथार्थ... यथार्थ... आ... यथार्थ... डाँड़क हाड़ सरकाब' वला विडंबना... विडंबना... विडंबना... एहेन 'रेशनलिज्म' जे मैथिली-समाजक कमजोर राष्ट्रीयताक पशुवत् जीवनक... झीनी ...झीनी... बीनी... चदरिया... की कबीरक फक्कड़ जीवन, की मिर्जा गालिब केर फाटल जेबी, की गोनू झाक पेनकट्टा छिट्टावला जीवन, की बहादुर शाह जफरक अंडमान-निकोबार-जेलक फटेहाल जीवन-शायरी, की महाप्रकाश भाइक 'अर्थ-सीदित मुसुकी', तहिना 'गुलोक' महागाथा! झीनी... झीनी... बीनी चदरिया...! चालनि मे पानि भरैत गुलो! जेना आसमाने फाटल हो आ 'गुलो' (दर्जी) भरि जिनगी टाँकेँ लगाबैत हो! जेना मैथिली समाजक

निम्न-वर्ग दुनियाँ मे अबिते अछि करिया कम्मल केँ उज्जर करबाक दायित्व ल' क'! जेहने मे जन्म, तेहने मे जीवन, तेहने मे मृत्यु! 'हा-हा! भारत दुर्दशा न देखी जाइ!'

उपन्यास मैथिली-समाज आ सरकार केँ चेतौनी दैत अछि, जे गुलोक अस्तित्व आ ओकर भाखा केँ सर्वतोभावेन स्वीकारल जाय आ ओकरा मनुक्खक गरिमायुक्त जीवन प्रदान कयल जाय। अन्यथा, उपन्यासक 'शान्तिपूर्ण निष्कर्ष' (याचना) सार्वकालिक नहि रहि सकत आ समाज लेल खतरा बनि जायत। एखन धरि सम्पूर्ण कोसी-क्षेत्र वा सम्पूर्ण मैथिली समाजक 'माओवादीकरण' वा 'नक्सलीकरण' नहि भेल अछि, से समाज आ सरकार लेल राहतवला बात आ एकटा अवसर अछि, जे सामाजिक विषमता दूर करबाक ठोस उपाय करय! अन्यथा, आर्थिक आजादी आ सामाजिक समानताक अभाव मे, पिछड़ल आ कमजोर राष्ट्रीयता सभक अस्तित्व-लोप सँ, अंततः घाटा मिथिला आ भारतक समाजे के छै! आर्थिक आ सामाजिक विषमता समाजक कोनो वर्गक लेल कल्याणकारी नहि मानल जा सकैत अछि। एहेन परिस्थिति मे क्यो दुःख-दैन्य सँ मरैत अछि त' क्यो तद्जन्य उत्पन्न अशांति सँ। सभ्य आ स्वस्थ समाज सर्वाधिक निचला पायदान परहक लोक लेल सभ सँ पहिने आ सभ सँ अधिक सोचैत अछि।

गुलो, रिनियाँ, बेलावाली वा सुजीतक याचना करबाक संस्कार वा स्वभाव उग्र आ विस्फोटक होइतहिं 'क्रूरतम हिंसा' मे परिणत भ' सकैछ, मात्र एक सलाइ-काठीक बदौलत! उपन्यासक से निष्कर्ष गंभीरतापूर्वक ध्यातव्य अछि– मैथिली समाज आ समकालीन शासन-व्यवस्था लेल परिस्थिति विस्फोटक प्रतिशत धरि पहुँचल अछि आ कए क्षेत्र मे विस्फोट निरंतर भ' रहल अछि, तकर 'गंभीर संज्ञान' नहि लेल जा रहल अछि! मात्र-विधि-व्यवस्था संधारण सँ 'असहज शान्ति' स्थापित क' सरकार सभ अबैत अछि आ चल जाइत अछि! उनटे 'गुलो'क सामाजिक आ सांस्कृतिक अस्तित्व (पचपनियाँ मैथिली समेत) क' उपेक्षा क' क' अवडेरल आ 'अस्तित्व-इनकार' कयल जा रहल अछि। एहेन ज्वलंत सामाजिक समस्याक जीवंत उपस्थापन, शान्तिपूर्ण ढंगें, लेखक मर्यादित शैली मे केलनि अछि। मुदा विद्रोहक चित्रण नहि केला सँ 'आन्तरिक तनावक' संज्ञान नहि लेल जाय, से घातक हैत। एहेन सन वर्णित परिस्थिति मे दोसर लेखक हिंसाक निष्कर्षक संग उपन्यास-समापन

(याचना नहि) क' सकैत छथि आ ताहि सँ सामाजिक सौहाद्रोक अंत भ' सकैत अछि। परिस्थिति ततेक जटिल आ गंभीर अछि, जे ताहू लेखक केँ दोष नहि देल जा सकैछ!

तेँ सावधान! जाहि 'गुलो' केँ अहाँ 'पयर तरक लोक' बूझि रहल छी, से 'पयर तरक चिनगीयो' साबित भ' सकैत अछि। तेँ गुलो अपन मैथिली समाज केँ 'अस्तित्वक चुनौतीक' माटि फेकि रहल अछि। ओ आजुक समाजक सभ्य आ सुसंस्कृत समाज आ सरकार द्वारा सकारात्मक रूपें अविलंब संज्ञान लेब' योग्य अछि! अन्यथा अतीते जकाँ, भविष्यो मे अइ पतनशील समाजक 'भगवाने मालिक'। 'गुलोक' साहित्य-दर्पणो मे मैथिली-समाजक चेहराक प्रतिबिम्ब, अत्यधिक विकृत नजरि आबि रहल अछि। आ 'गुलो' द्वारा प्रस्तुत आलोचना (मैथिली समाजक विरुद्ध) त' 'तत्काल लाजवाबे' अछि! पुस्तकाकार छापल उपन्यास मे लेखक किछु पृष्ठ बढ़ाक' आर प्रभावशाली आ करुण-तरीका सँ उपन्यासक कथान्त केलनि अछि। ताहि मे समाजक दलाल-सवर्गक छुद्र आ ठकपनी-कमीशनखोरी शमशान-कब्रिस्तान सँ ल' क' सरकारी ऑफिस धरि भुवकंफ-मुआवजाक बहन्ने, गुलोक मृत्युपरांत, जाइत अछि। गुलोक लहास मे सँ मासु नोचब दलाल- गिद्ध लेल पावनि थिक, चारि लाख मुआवजा मे सँ एक लाख कमीशन मांगनाइ! तें' कब्रिस्तान मे गाड़ल लास केँ उखाड़ल गेल, दाह-संस्कार लेल लकड़ीक अभाव छल। ओहेन लोक की हिन्दू आ की मुसलमान? आ समाज केँ कोन मतलब ओकर धर्मक? जीवन आ मृत्युक एहेन करुण आ मार्मिक चित्रण 'गुलो' केँ मैथिलीक-उपन्यास धारा आ परंपरा सँ फराक करैए आ फुटकाबैए!

आब किछु 'गुलो'क भाखाक प्रसंग गप्प भ' चलय, जकरा सन्दर्भ मे लेखक फराक सँ 'पचपनियाँ मैथिली' शीर्षक निबंध लिखि अपन भाखा-नीति बेकछाबैत छथि। ओ अभिजात मैथिलीक स्थानीकरण आ जनवादी स्वरूप-निर्धारण, वर्त्तनी-अराजकता-उन्मूलन आ सर्वसमावेशी उदार दृष्टिकोणक अपेक्षा, सम्पूर्ण मैथिली समाज सँ करैत छथि। ओ 'गुलो' मे प्रयुक्त 'पचपनियाँ मैथिली'क अस्तित्व-संरक्षणक पक्ष मे छथि!

जहिना 'भासा-नीति' ल' क' विद्यापति आ मैथिली-समाजक फणीश्वर नाथ रेणु, (हिन्दी मे) 'क्रान्तिदर्शी' छलाह, तहिना एक दीर्घ अंतरालक

उपरान्त सुभाषचन्द्र यादव अपन क्रान्तिकारी 'भाखा-नीति' प्रदर्शित केलनि अछि। ई 'शान्त-क्रान्ति' 'गुलो' उपन्यास मौन रहैत करैत अछि, मुदा लेखकक निबंध मुखर भ' क' ओकालति करैत अछि।

वस्तुतः 'गुलो' आ पचपनियाँ मैथिली दुःख-दर्द सँ कहरैत एकटा भूखण्डक आर्त्तनाद आ करुण-गाथा थिक। आदर-रहित बोली केर उपेक्षा, अभिजन-वर्चस्ववला 'मिथिला समाज' मे अवश्यंभावी छल, से मिथिला मिहिर आ अभिजात समाज द्वारा स्थापित वर्त्तनीक भाषाशास्त्रीगण आ 'प्राध्यापकीय गछाड़वला जाल फेकैत 'विद्वत्-समाज' द्वारा कयल गेल। तकर शिकार गैर-अभिजात लेखक आ आदर-रहित बोली, दुनू भेल, तेँ 'बहिर्भुक्ति-कूटनीति' चलि सकल आ 'अन्तर्भुक्तिक उदारता' उपेक्षित आ अपेक्षिते रहल! आब जखन सामाजिक आ भाषिक चेतनाक प्रसार सभ समुदाय मे भ' रहल अछि, अपन-अपन बोली आ टोन लेल उपेक्षित समुदाय त' 'प्रतिक्रिया' अभिव्यक्त करबे करत आ अपन अस्तित्व-चिन्ता केँ भाषाक स्वरूप, भाषागत राजनीति सँ जोड़िक' मांगक औचित्य प्रतिपादित करबे करत! से अनर्गल नहि हैत।

कए दशक सँ लेखकगण चिचिया रहल छथि जे, मुख्य अभिजात मैथिलीक सर्वसमावेशी एकटा वर्त्तनीक आ भाषाक मानकीकरण आ विविध बोलीक विभिन्न वर्त्तनीक विविधताक स्वीकार हेतु भाषाशास्त्रीगण, वैयाकरण आ मैथिली-सेवी संस्था सभक समेकित बैसार हो। मानकीकरण-अभियानक अंतिमीकरण हो। मुदा ताहि मे मैथिली अकादेमी, साहित्य अकादेमी, चेतना समिति, पटना आ सी.आइ.आइ.एल., मैसूरक संश्लिष्ट मैथिलीक भाषाविद आ वैयाकरण सभ फेल केलनि। प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेलाह डॉ. रामावतार यादव (नेपालक मैथिली-भाषाशास्त्री) आ डॉ. सुभाषचन्द्र यादव, जिनकर वर्त्तनी केँ मोजर देबा मे हमरा सभ केँ घाम छूटि रहल अछि! अंततः हम सभ, मैथिलीक मुसलमानी बोली, पचपनियाँ मैथिली, समस्त मिथिला-क्षेत्रीय ठेंठी-बोली (निम्नवर्गक) महानन्दा-सुधानी क्षेत्रक देसिया-पोलिया मूल द्वारा भाषित 'सूर्यापुरी-बोली' (मूल मैथिली ठेंठी+बंगला+नेपाली-टोन मिश्रित) खगड़िया-बेगूसरायक 'छिका-छिकी बोली' (ग्रियर्सन-सर्वेक्षित) वा अंगिका-बज्जिका केँ हृदय सँ, लिखित रूप मे, मिथिलाक 'अप्पन बोलीक' रूप मे कहिया स्वीकारब आ स्थान देब? के करत अभिजन-सीमा सँ ऊपर

उठिक' 'वृहत्तर भाखा शास्त्रक' निर्माण? सर्वसमावेशी, वैज्ञानिक ध्वन्यात्मकतावला स्वरूप-निर्धारण, एकटा पैघ चुनौती थिक। भाषा-शास्त्री आ वैयाकरण 'फाइनल' नहि करताह, त' लेखक सूतल नहि रहल। सी.आइ. आइ.एल. केँ टी.ए.-डी.ए. ल' क' कोन-कोन उपलब्धि भ' सकल अन्तिम रूपें, से तकर विवरण मैथिली-समाज केँ बूझब अपेक्षिते छै।

निम्नवर्गीय पचपनियाँ-मैथिली आ मैथिलीक आन-आन बोलीक अवसान कए सहस्राब्दी धरि संभव नहि अछि आ आदर-सूचकतावला अभिजात मैथिलीक-दीर्घजीविताक गारंटी असंभव अछि, ई दुनू तथ्य जनैत हमर समाज 'कूटनीति' खेला रहल अछि। तेँ जे पचपनियाँ-लेखक 'पचपनियाँ मैथिली' केँ पूर्णतः छोड़ि अभिजात-मैथिलीक लेखक बनैत छथि, त' साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटि जाइ छनि आ सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रह (बनैत-बिगड़ैत) केँ पचपनियाँ मैथिलीक कारणेँ, 'विचार योग्य' नहि बूझल जाइ छनि। कतेक कारुणिक यथार्थ थिक ई? तकियाकलाम लीक पर दकियानूसी सोच सँ चलैत रहबाक पैघ उदाहरण!

'गुलो'क पाठकीयता मे पचपनियाँ-मैथिलीक कारणें, कोनो टा प्रवाह-अवरोध एकदम्मे नहि अछि। ई मैथिली कोसी-क्षेत्रे टा मे नहि, सम्पूर्ण मैथिली-क्षेत्रक निम्न-पिछड़ा वर्ग मे अछि। कोसी-क्षेत्रक टोन मे आन क्षेत्र सँ कनियें विभिन्नता छै। ब्राहमणेतर आ सवर्णेतर पचपन जातियो, केवल कोसीए-क्षेत्र मे नहि, सम्पूर्ण मैथिली-क्षेत्र मे अछि। तखन विचारणीय ईहो अछि जे 'जाति-आधारित' एकीकृत मैथिली-राष्ट्रीयता आ समावेशी अस्मिताक निर्धारण हो अथवा 'वर्ग-आधारित'? मैथिल-महासभा केँ नाजायज आ लव-कुश-महासभा, चन्द्रवंशी-सूर्यवंशी-महासभा, ब्रह्मर्षि-महासभा, यदुवंशी-महासभ आदि केँ, जायज कोना मानल जाय?

मुदा तथ्य ध्यातव्य ईहो थिक जे 'भारतीय समाजवादी चिन्तन' मे वर्गक एक प्रारूप 'जातियो' केँ मानल जाय लागल अछि, जखन कि समाजवादी सपने थिक 'जाति-वर्ग-नस्ल-विहीन' समाजक रचना! तखन जाति आ वर्गक बहन्ने तृणमूलीय बोली' केँ 'निर्मूल' करब, कतेक उचित हैत? ओना कोसिकनहो मे 'भए गेलै' चलै छै, सुभाषजी वला 'भाए गेलै' नहि। मुदा ई अन्तर उच्चारणक ध्वन्यात्मकता मे अन्तरक कारणेँ अछि, जकर वैज्ञानिकता केँ एकाउस्टिक्स' (ध्वनि-शास्त्र) आ 'फोनेटिक्स'

(उच्चारण-शास्त्र) सँ समन्वय क' परेखिक' सर्वसमावेशी मानकीकरण आ मैथिली-राष्ट्रीयताक स्वीकृतिकरण-प्रक्रियाक क्रम मे, समायोजन आ अन्तर्लीनीकरण हेबाक चाही।

'पचपनियाँ मैथिली' अभिजात-मैथिली पर 'उचित प्रहार' थिक। 'पचपनियाँ लेखकगणक 'पचपनियाँ मैथिली' मे लिखब स्वाभाविक रूपें अपेक्षित अछि। ताहि सँ पचपनियाँ मैथिली केँ अनेक लेखक भेटतै, भले तकर कारणें हुनका सभ केँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेट' मे देरीए किए ने होइनि! आब जखन मैथिली मे समीक्षा-आलोचना केँ 'सृजनात्मक' लेखन नहि मानल जेबाक कारणें, कोनो आलोचक केँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार विचार-योग्य नहि मानल जायत, तखन प्रतिनिधि आ जूरीक मूढ़ता, जड़त्व आ बूड़ित्व असंदिग्ध अछि, जखनकि एकेडमिक-ब्रान्ड-निबंध-लेखक केँ पुरस्कृत करबा मे हुनका लोकनि केँ कोनो दिक्कत नहि हेतनि! समस्त मिथिलाक समग्र विकास लेल सभ जाति आ वर्गक 'अन्तर्भुक्तिक राजनय, ओकर बोलीक अस्मिता-स्वीकार जरूरी अछि। मुदा मुख्य-मैथिली त' तेहेन जड़ आ जीर्ण कृत्रिम वर्त्तनीक फाँस मे फाँसल अछि, जे यात्रीयो जीक 'काव्य-भाषाक परंपरा' केँ आगू नहि बढ़ा पबैत छी, त' पचपनियाँ आ आन बोलीक साहित्य केँ छापबाक आ स्वीकार करबाक उदारता केना आओत? जरूरति छै यात्री, किरण, सीताराम झा, चन्दा झा, मनबोधक जमीनी-भाखा आ परंपराक, जखनकि स्थापित कयल जाइछ– कविशेखर बद्रीनाथ, हर्षनाथ, गोविन्द दास, सुमनजीक 'जटिल शास्त्रीय-भाषाक' परंपरा! 'भाषा' सँ 'भाखाक' दूरी मेटा नहि पबैत अछि, त' 'भासा' पर समझौता क' लैत छी। विद्यापतिक 'भासा' (शब्द) केँ त' ल' लेल हम सभ, मुदा 'बिज्जाबइ भासा'क अर्थ-सन्देश केँ लेबाक उदारता देखा नहि पाबि रहल छी। आउ, हम सभ अभिजात मैथिलीक एकाधिकारवादी-दृष्टि आ कृत्रिमताक अलंकरण सँ मुक्ति पाबी! साहित्य केँ अनिवार्यतः सुन्दरम! (सेहो) मानएवला केँ 'आदर रहित मैथिली' (Non-honorific) कोना पचतनि?

ओना 'गुलोक 'पचपनियाँ-मैथिली' मे सेहो वर्त्तनीक एकरूपता सय प्रतिशत 'मेनटेन' नहि भ' सकल अछि– से पुनर्विचार आ संशोधन-योग्य अछि, कारण, साधारण भाषिक अनुशासन त' 'पचपनियाँ मैथिली' मे हेतैक। समस्त मैथिली-समाजक 'निम्नवर्गीय मैथिली' आ 'पचपनियाँ मैथिली' मे

कोनो विशेष मौलिक, वैयाकरणी अन्तर नहि अछि। जेना 'गुलो' मे पात्र द्वारा (लेखकीय-नैरेशन मे नहि) छै, छइ, है, हइ-अनेक प्रारूप प्रयोग मे अछि। कोसी-क्षेत्रक 'पचपनियाँ मैथिली' मे 'लोग'क बदला मे 'लोक' 'केलाक' बदला मे केरा, 'कम्मर'क स्थान पर 'कम्मल' शब्द प्रयुक्त होइत अछि! ओना पाँचे कोस पर भाखाक टोन आ पानि बदलबाक कहबी, मैथिली-समाजक सभ राष्ट्रीयता मे यथार्थपरक अछि। मुदा लेखक 'दै' आ 'दइ' दुनू तरहक शब्द लिखैत छथि। 'जैत' केर स्थान पर 'जायत' आ 'चलबए' के स्थान पर 'चलबय'– पचपनियाँ मैथिली मे लिखैत छथि। 'लाए' आ 'लए' दुनू लिखैत छथि। हुनकर 'लाए' 'काए' 'भाए' अस्वीकार्य आ 'लए' 'कए' 'भए'– कोसिकनहा मे स्वीकार्य आ प्रचलित अछि। ओना एखन मैथिली मे अधिकतर लेखक केँ एना भ' रहल छनि, जे विविध रूपक अभिजात-मैथिलीक कृत्रिमता आ वर्त्तनीक अराजकताक कारणें, लेखन मे 'एकरूपता' 'मेनटेन' नहि भ' पाबि रहल छनि। मुदा एक 'बोलीक' (dialect) वर्त्तनी मे एकरुपता 'मेनटेन' हैब आवश्यक अछि। से तखने संभव हैत, जखन सभ 'बोलीक' फराक-फराक वर्त्तनीक एकरूपताक निर्धारण आ मानकीकरण भ' जाय। तहिना मुख्यधाराक अभिजात मैथिलीक सेहो 'सर्वसमावेशी दृष्टिकोण-आधारित' (एकाधिकारवादी दृष्टिकोण त्यागि) कृत्रिमता-मुक्ति, स्वरूप आ वर्त्तनी-निर्धारण वा मानकीकरण, तकर अन्तिमीकरण (finalisation) एकहि संग हो! आ से भाषा-विज्ञानक 'उदारवादी आ वैज्ञानिक नजरिया' (पारंपरिक एप्रोच केँ छोड़ि) उच्चारण-शास्त्र (फोनेटिक्स) आ ध्वनि-शास्त्र (एकाउस्टिक्स)क समन्वित 'एप्रोच' आ 'समेकित उपयोगक' दृष्टिकोणक आधार पर हो, बिना कोनो कुटिलता आ कूटनीतिक! अनुदार दृष्टिकोणवला जीर्ण-शीर्ण मानसिकता सँ, से हैब संभव नहि। अभिजात-मैथिली केँ सुयश दैत, जाहि तरहक उदारता डॉ. सुभाष चन्द्र यादव अपन निबंध (पचपनियाँ मैथिली) मे प्रदर्शित केलनि अछि, तकरे प्रदर्शन सभ विद्वान केँ मुख्यधाराक अभिजात-मैथिली आ तकर सभ बोलीक प्रति करबाक चाहियनि। तखने अराजकता निवारण आ भाखा-बोलीक वैज्ञानिक स्वरूपक संस्थापन-संरक्षण संभव अछि। तेँ आब विमर्शक चरण सँ आगू बढ़ि, मैथिली-मिथिलाक सिरमौर संस्था आ सम्बन्धित विद्वत् समाज केँ तत्सम्बन्धी कार्यक्रम-आयोजन क्रियाकलाप मे, क्रियाशील भ' जेबाक चाहियनि! अन्यथा, क्षतिपूर्ति संभवे नहि भ' सकत आ

भाषाशास्त्रीगण दशकक अन्तराल पर ज्योतिष-शास्त्रीय शैली मे मुख्यधाराक 'अभिजात मैथिलीक मृत्यु'क भविष्यवाणी करैत रहताह आ अपन-अपन दायित्वक इतिश्री बुझैत रहताह, जखनकि मात्र कृत्रिमता युक्त अभिजात मैथिलीक मृत्युक संभावना बनैत रहत आ तृणमूलीय बोली सभ जिबैत रहत, से भाषा-विज्ञानक जमीनी-संस्करणक इतिहास सँ प्रमाणित होइत अछि।

तेँ सन्देहक कोनो गुंजाइश नहि, जे 'गुलो' अपन अस्तित्व-संरक्षण आ युग-निर्माण, भारतीय आ नेपालीय मैथिली-समाजक राष्ट्रीयता सभक मध्य क' चुकल अछि। हमसभ जहिया ई तथ्य स्वीकार करी! दुनू देशक समस्त मैथिली-समाजक निम्न आ पिछड़ल-वर्गीय राष्ट्रीयता (Nationality) सभक विकास सम्बन्धी महत्वाकांक्षा आ भाखा-संस्कृति बोली-संरक्षण सम्बन्धी महत्वाकांक्षा, सचेत भ' गेल अछि। तकरा अबडेरनाइ संभव आ उचित नहि अछि। 'गुलो' आ 'पचपनियाँ मैथिली' (डॉ. सुभाषचन्द्र यादव) द्वारा ठाढ़ कैल गेल आन्दोलनक स्वागत करैत, हर्ष भ' रहल अछि।

•

बड़की काकी एट हॉट-मेल डॉट कॉम : बहुरंगी कथा-कौशल/श्याद दरिहरे

मैथिली कथा-साहित्यक कथा-कला धनीक अछि। कथाकारिताक कलाकारिता एकटा प्रवृत्तिए बनि गेल अछि, मैथिली कथाधाराक विकास मे। वैचारिक प्रतिबद्धता सँ सायास परहेज करैत कथा-लेखनक, एकटा सुदीर्घ आ स्थापित परंपरा बनि गेल अछि, मैथिली मे। प्रभास कुमार चौधरी, जीवकान्त, धूमकेतु आ राजमोहन झाक कथा-लेखन मे कथा-तत्व आ कथ्यक तथ्य, जीवंत आ बिश्वसनीय रहैत छल। ताहि निस्सन कथा-कला केँ कथागोष्ठी-ओन्दोलन आर पुष्ट क' देलक आ कथाकारक एक-सँ-एक प्रतिभा अपन-अपन कौशलक संग कथा-परिदृश्य केँ बहु-आयामी बना देलक। सोन्हि मे सुइया फाड़ैत आ 'सरिसो' मे भूत' केँ पैसाबैत, ताही परंपरा मे, कथा-तथ्यक आ कथा-शिल्पक तिलिया-फुलिया करैत श्याम दरिहरे 'बड़की काकी' केँ हाइ-टेक बना हॉटमेल' पर बैसा क' बेस चर्चित भेलाह। साहित्य अकादेमी सँ सद्यः पुरस्कृत (2016क पुरस्कार) अपन एहि कथा-संग्रह मे 'वाद-विहीन' आ 'स्वान्तः सुखाय' शब्दक सायास प्रयोग करैत 'साहित्य-कर्म केँ वादक अधीन' नहि मानलनि अछि। यद्यपि एहि रूढ़-अवधारणा केँ मानवाक अधिकार छनि हुनका आ एहेन मान्यतावला लेखक अनेक भेलाह अछि मैथिली मे, तथापि, साहित्य कहियो 'वाद-मुक्त' भ' सकत, से असंभव जकाँ अछि। 'मानवता-वाद' आ 'मूल्य-वाद' सँ, समाज मुक्त नहि हैत, त' साहित्य कोना हैत?

कथा-संग्रहक नामकरण जतबे 'आधुनिक आ समकालीन' भेल अछि, तहिना कएटा कथा मे सेहो प्रगतिशीलता-विहीन आधुनिकता-समकालीनताक चित्रण भेल अछि। सामाजिक विकृतिक दक्षिणपंथी उपस्थापन-विश्लेषण, पारंपरिक मूल्य केँ संपोषित करितो, तथ्य-उपस्थापनक नीक तिलिया-फुलिया अछि। कए कथा मे तथ्यक संयोजन आ सजावटि संज्ञान लेब' योग्य अछि। प्रदीप बिहारी ठीके हिनका लोकप्रिय, सक्रिय आ महत्वपूर्ण कथाकार मानलनि अछि, जे पाठकक, कएटा कथा द्वारा, नीक मनोरंजन करैत, अपनहुँ

कथा-लेखनक आनन्द लैत, पारंपरिक मूल्य केँ बंचयबा लेल संघर्ष करैत मानवीय संवेदनाक हिलोड़ उठेबा मे सक्षम छथि। संवेदना-स्पर्शक प्रासंगिकता त' साहित्य मे सभदिन रहल अछि आ रहत। समकालीन मुख्य-स्वर आ युगसत्य सँ सायास परहेज करितो, सामाजिक विरोधाभासक तन्तु-तन्तु केँ बेकछा क' पकड़नाइ आ तकरा अभिजात आ निम्न-वर्गीय दुनू तरहक भाषाक वैविध्य मे संयोजन क', विविध शिल्प आ टोनक महारत देखबैत, पाठकक समक्ष परसनाइ, क्यो हिनका सँ सीखय।

मिथिलाक भावी पीढ़ी केँ समर्पित, 2013 मे छपल एहि कथा संग्रह मे, कुल्लम अठारह टा कथा संग्रहित भ' नयनाभिराम कलेवर मे आयल अछि, जकर कथा सभक बहु-आयामी परिवेश कथाकारक अनुभव-क्षेत्र केँ 'व्यापक आ विस्तृत' साबित करैत अछि। ग्राम्य आ नगरीय दुनू परिवेशक सिद्धहस्त चित्रण करैत बाह्य-हवाक झोंका केँ विकृति मानैत, छिन्नमूल-प्रवासी केँ लथाड़ैत, जमीन सँ कटल लोकक दर्द बखानैत आ 'बनहुल्लुक' सेहो साबित करैत, गाछक हरियरीयोक चिन्ता एक्के टा कथा करैत अछि, त' कथा केँ बहु-आयामी मानहि पड़त। एक्कहि कथा मे अनेक-अनेक चिन्ता-तथ्यक गुंफन, कथाक-चरित्र केँ औपन्यासिक छटा प्रदान करैत अछि। नकारात्मक परिवर्त्तन मे रमैत गाम मे 'ऑड मैन आउट' बनल नायक, गाछ सँ संवाद करैत, समाजक नजरि मे व्यंग्य आ 'बनहुल्लुक' बनल अछि, तकर नीक यथास्थिति-चित्रण भेल अछि।

'मुनि श्राप जो दीन्हा' मे, तथाकथित सामाजिक न्यायक भ्रष्ट मसीहा मुख्यमंत्रीक राजकाल मे, विपटइ, हवाबाजी, आमजनक प्रजातांत्रिक दुर्दशा, जातिवादी सत्ता-भोग आ खलनायकत्वक यथास्थिति सटीक वर्णन भेल अछि, पूरे पन्द्रह वर्षक राजनीतिक दुर्दशा-पीड़ित बिहार मे नंगटइ-नाटकक दर्शक आ भोक्ता बनल अदूरदर्शी मतदातागण, वस्तुतः प्रस्तर-युगक अनुसंधेय-मूर्तिए बनल छलाह। से कथा आयल अछि, वैज्ञानिक अनुसंधान-यात्राक शिल्प मे! विज्ञानक विध्वंस-पक्षक सटीक उद्घाटन करैत 'कम्प्यूटर-रोबोट सम्मेलनक माध्यमे' 'मानव अभयारण्य' कथा, मैथिली विज्ञान कथाक विकास-क्रम केँ अद्यतन बना देलक अछि। कल्पना आ भयावह परिस्थितिक सम्मिश्रण सँ बूनल कथा-भूमि मे, मानवक नियंत्रण सँ दूर जाइत 'हाइ-टेक शासन' कोनो मानव केँ अपन दास बनाक' राखत वा

रोबोट वैज्ञानिकक नरेटी दाबि देत, ओसामा-2009 विध्वंसक रास्ता चूनत आ वाल्मीकि-9009 सर्जनात्मक बाट चूनत, तकर अभिनव-उपस्थापन 'अद्भुत बाजीगरी'क संग भेल अछि। मैथिली-कथा-कला, समस्याक विश्लेषण करैत, ऊर्ध्वमुखी भ' रहल अछि।

तहिना 'बड़की काकी...' कथा मे टूटैत परिवार (सासु-पुतोहु आ पति-पत्नी)क चित्रक संग, कम्प्यूटर-इन्टरनेटक सबल उपस्थिति दर्ज होयब, अमरीकी आ भारतीय ग्रामीण परिवेशक तालमेल मानवताक विश्वजनीनता आ मर्यादित संघर्षशीलताक बदौलत हाइ-टेक होइत बड़की काकीक माध्यमें संवेदनाशीलताक चित्रण उत्कर्ष पओलक अछि, प्रेम-विवाहक विफलता कहैत।

बाढ़ि-कथाक रूप मे घनेरो करुण-कथा मैथिली मे लिखायल अछि। मुदा दलित-वर्गक बाढि-पीड़ाक एहेन करुण चित्रण मैथिली कथा मे विरल अछि। 'अप्पन बखरिया त' भरलह हो राजाजी' मे, जेनाकि नामहि मे आक्रोश भरल अछि, हेलीकॉप्टरक आनन्द लैत नेतबा (राजाजी) केँ लक्ष्य क' पेना जुमा क' मारैत अछि, ठकायल आ मरैत भोटर-दलित। अस्तित्व-संघर्षक बाढ़ि-काल मे, कोनोटा ने त' सामाजिक सहयोग रहैछ आ ने राजाजीक सामाजिक न्यायक नारा! निम्नवर्गीय खाँटी मैथिली मे लिखल करुणा-प्लावित कथा, पाठक केँ संवेदना आ आक्रोश (राजनीतिज्ञक कृतघ्नताक प्रति) सँ भरि दैत अछि।

प्रतीकात्मक शिल्प-शैली मे लिखल गेल कथा 'सोंटा-सम्मेलन' तथाकथित सामाजिक-न्याय-मसीहा-मुख्यमंत्रीक 'फोंकिला-दलित-प्रेम' आ 'असली सिंहासन प्रेम' केँ देखार करैत, 'लाठी हिलावन, तेल पिलावन' अभियान केँ मोन पाड़ैत अछि। 'सूअर चरानेवालों, भेड़ चरानेवालों' के नारा, आ सर्वग्रास चारा! पीड़ित समुदायक प्रतिक्रिया पर रानजैतिक चेतनाक चासनी चढ़ा क' लिखल कथाक अन्त मे सोंटाक जेड़ मे आगि उचिते लगैत अछि, जे सामाजिक-न्यायक शक्तिक विघटन आ विफलता (स्वार्थक कारणें) केँ द्योतित करैत अछि, विद्रोह-प्रतीक बनैत अछि।

राजनैतिक विकृति पर ताही शृंखलाक कथा थिक– 'इहहि पामर नायक मन्दिरे' जाहि मे 'तथाकथित सामाजिक न्याय'-सत्ता-काल मे पिलुआ जकाँ फड़ैत टुटपुजिया आ ठिकेदार टाइप नेता सँ संघर्ष करैत आ पराजय भोगैत, इमानदार उच्च-जातिक हाकिमक दुःख-दर्दक विशद वर्णन भेल अछि,

जे 1990-2006क अवधि मे राजधानी, मुफस्सिल आ तृणमूल-सभ स्तर मे 'आम बात' भेल करैत छल। बिहारक प्रसंग मे राजनैतिक माफियागिरीक भयावहताक समधानल चित्रण आ 'जंगल-राजक' सम्पूर्ण चित्रण भेल अछि। जकरे नाङरि उठाउ, मादा निकलैत छल आ संघर्षशील नायक 'असगर' होइत छल। ई सभ कथा एकटा कालखण्ड मे सामाजिक न्यायक नाम पर कयल गेल अनीति अराजकताक बखानक संग दलित-वर्गक अपन नायक सँ मोह-भंगक खीसा सेहो कहैत अछि आ दलित-चेतनाक अपना स्वार्थ मे दुरुपयोगक खीसा सेहो। कथा सभ प्रतीकात्मक आ विश्लेषपणात्मक होइतो, रमनगर भेल अछि।

'जनता राशन-कार्ड' तंत्रक लाल-फीताशाही आ आम-जनक अभगदशा देखबैत भी.आइ.पी. संस्कृति पर प्रहार करैत अछि। कथा-नायक (हाकिम) बिना परिचय देने, जनसामान्य बनि, अपन राशन-कार्ड नहि बनबा पबैत छथि आ हुनक अर्दली सिपाही चुटकी बजबैत 'व्यावहारिक तरीका' सँ बनबा क' आनि क' मेम सैहैबक हाथ मे राखि दैत अछि। भोगगल यथार्थ जकाँ, तंत्र केँ देखार करैत, यथार्थक विकृति उजागर भेल अछि।

'योजकाः तत्र दुर्लभाः' मे, स्थापित विवाह-परंपरा सँ प्राप्त पतिक 'गुण' देखवाक सुझाव एक पत्नी केँ रेलयात्राक दौरान देल जाइत अछि, जे जीवन-चलेवाक व्यावहारिक आ पारंपरिक तरीका थिक। मित्रता मे कृतघ्नता केनिहार 'द्रुपद' केर परंपराक विरुद्ध 'एकटा आर द्रुपद' कथा संग्रहित अछि जे पद-धनक अहंकार मे मैत्रिक उपेक्षा करैत अछि आ अवसरवादी बनि 'वर' मंगैत अछि अपन संतान लेल। विडंबना ई जे गलती-आभास भेला पर प्रायश्चित करए अबैत छथि एक्स डीजीपी त' दामोदरक मायक निधन भ' गेल रहैत अछि। दूमुहाँ चरित्रक विरोध करैत, संवेदना सँ सराबोर कथा, जे समाज मे निरंतर भ' रहल अछि।

'जौहर' के नशेमन अपन 'मंगनी' वला प्रस्तावित वरक नौकरी लेल, वर आ माता-पिताक सहमति सँ, डाक बंगला केर 'हाकिम' लग कनैत चलि जाइत अछि। संयोगवशात हाकिम 'इन्सान' निकलैत छै, मुदा गरीबी आ बेरोजगारीक परिस्थिति खलनायक बनि प्रमाणित करैछ जे– 'सभ हाकिमक कोनो-ने-कोनो मोल-दाम होइ छै।' 'प्रेमरस केवलम्' अत्यंते मनोरंजक आ रोचक ढंग सँ प्रस्तुत भेल अछि। आरक्षणक वैसाखीक बदौलत बनल

हाकिम, अपन 'अहं' केँ ससुर आ कनियाँ सँ मुक्त करबा लेल साहित्यकार धरि बनैत छथि। मुदा अहं' त्याग क' कनियाँक प्रेमरस मे डूबहि पड़ैत छनि। अहू ठाम निष्पत्ति पारंपरिक प्रेम दिस जाइत अछि, स्वाभिमान केँ मेटा क'। 'हरिया सँ हरिमोहन' मे अदौकालक विवाह-पद्धतिक प्रक्रिया केर 'उपयोग' क' कथाकार 'स्वान्तः सुखाय रस' सँ ल' क' पाठक-सुखाय-रस' धरि पहुँचलाह अछि, प्रो. हरिमोहने झाक 'रसकथा-शैली' मे। हीनभावना सँ मुक्ति लेल नेयार-भास सँ योजना बना क' पत्नी नाम केवलम्' वाह रे कथाक हाकिम-साहित्यकार! भरि जीवन अवसरवादिता आ दिन धराबय तीन नाम!

'बूमरेंग' आ 'कॉमरेडक पिलिआ' राजनैतिक विचारधाराक प्रतिरोध आ प्रतिक्रिया मे लिखल गेल कथा थिक। से दरिहरेजी सँ सहजहिं अपेक्षित अछि। वामपंथ सँ मोहभंगक कथा ओ 'बूमरेंग' मे विस्तार सँ बाबा रामदेव, पतंजलि योग आ वामपंथी नेता-नेतृ करात-दम्पति आ हुनक सुपुत्रीक 'योगासन-रूझान'क माध्यमे' बेबाकी सँ कहैत छथि। वामपंथी कूटनीतिक भ्रष्टाचार आ पतन केँ देखार करबा लेल परिस्थिति आ परिवेशक कथा मे निर्माण करैत छथि आ ऑस्ट्रलियन जानवर केँ मारल जायवला भालाक, चट्टान सँ उछटि क' कैरम केर गोटीक 'रिबाउन्ड' वला वामपंथी-दलक कूटनीति पर समधानल दक्षिणपंथी प्रहार करैत छथि। समकालीन राजनीति पर कथाकारक टिप्पणी हुनकर घोषित वैचारिकता केर अनुकूलहिं अछि। ओ 'ललका भकरार टिकुली' केँ 'डूबैत सूर्यक' प्रतीक मानलनि अछि आ नव वामपंथी साहित्यकार 'उगैत सूर्यक' प्रतीक मानि सकैत छथि। मुदा जड़ आ भ्रष्ट भारतीय वामदल सभ हिनका रडार पर अछि। रूस-चीनक अनुदान पर सुविधा-भोग करैत, भारतीय जड़ वामपंथी दलक भ्रष्ट आ छिन्नमूल नेतृत्व वर्ग केँ देखार करैत, ओ दोसर एकटा तेहने कथा लिखने छथि– 'कॉमरेडक पिलिआ' जे फेर मनोरंजक, रसगर आ करुण ढंग सँ प्रस्तुत भेल अछि। कॉमरेडक स्त्रीविरोधी मानसिकता आ दोहरा चरित्र केँ ओ देखार करवाक लेल खूब 'रस' लेलनि अछि, जतेक रस ओ कोनो दक्षिणपंथी नेता वा दल केँ देखार करए मे नहि लेलनि अछि अद्य-पर्यंत। ईहो रणनीति-आधारित कॉमरेड-कथा थिक, जाहि मे पिलिआ एक बहन्ना थिक। कॉमरेडक पिलिआ जे ईश्वरवादी कथाकार केँ पहिने हबकैत छल, घर सँ निकालल गेलाक बाद (गर्भवती हेवाक कारणें) कथाकारक पयर पर दयनीय भावें औंघराय लागल

छल। जॉनी 'आभिजात्य वर्गीय देखभाल' सँ सोझे 'जनवादी जमीन' पर आबि गेल छल। साम्यवादक विरोध आ देसी-संस्कृतिक घनघोर समर्थन कथाक मुख्य प्रयोजन छनि। से हुनकर साहित्यिक रणनीतिक ठाँहि-पठाँहि कएल गेल खुलासाक अनुकूलहिं आ अपेक्षित अछि।

फेर अगिला कथा, 'कस्तूरी के मिरग ज्यों' मे ओ सर्वधर्मी सुच्चा अध्यात्मवादी, सनातन उदारवादी, सभ धर्मक सभ प्रकारक ईश्वरक निरंकार-स्वरूप मे दर्शन करएवला साबित होइत छथि आ धर्मक जड़ आ विधि-विधान-कर्मकाण्डवला स्वरूप केँ खारिज करैत 'सूफियाना अन्दाज' मे कथाक' ट्रीटमेन्ट दैत छथि। से पढ़ि सुखद आश्चर्य आ अनपेक्षित होइतो पाठक केँ नीक लगैत छै, क्रान्तिकारी स्वरूपक अध्यात्म-रस मे बोरैत अछि। धर्मक यांत्रिकताक विरोध, सभ धर्म मे अन्तर्निहित करूणाक समर्थन, पंथ सँ ऊपर उठि अध्यात्म आ ईश्वरक समर्थन, साहसिक लेखन थिक। शुष्क विषयक रसगर उपस्थापन लेल सटीक पात्र-परिवेशक चयन मे महारत छनि कथाकार केँ। सभ कथाक नामकरण आकर्षक अछि। 'गामक सुगंध इन्टरनेट' मे, इन्टरनेट कत्तहु नहि अछि। बनारसवालीक वाराणसीक वेश्यावृत्ति छोड़ि, गाम मे गृहस्थी बसेवाक सार्थक निर्णय, गामक सुगंध बनि इन्टरनेटी गति सँ प्रतीकात्मक भ' गाम आबि गेल अछि, से कथा केँ सार्थक बनबैत अछि। वेश्या गृहस्थी बसेवाक लेल सौतिनो स्वीकार क' लैत अछि, तकरा रोचक ढंग सँ उपस्थापित कयल गेल अछि। मुदा संग्रहक अंतिम कथा 'आ अंत मे कछुए जीतत' मे एकटा दन्तकथा मोहविराक आश्रय ल' क' कथाकार दिना-दिष्टी विधवा-विवाहक समर्थन नहि क' क', नुका-चोरा क' करवाक पक्ष लैत छथि आ तकरा सामाजिक परिवर्त्तनक कछुआ-चालि कहि औचित्य प्रमाणित करैत छथि। ओ क्षिप्रगतीय सामाजिक परिवर्त्तन केँ 'थोपल, अस्वाभाविक आ खढिया चालि' मानैत छथि, यद्यपि कथा मे कएटा उत्साही आ क्रान्तिकारी पात्र सेहो अछि। मुदा तकरा सभ केँ चुप कराओल जाइछ, बाबा वाक्यम् प्रमाणम्' द्वारा। ईहो पारंपरिक निष्पत्ति, प्रगतिशील मूल्य सँ सायास परहेज करवाक रणनीतिक अनुकूलहिं अछि। कहब अप्रासंगिक नहि होयत, जे कार्ल मार्क्स 'एशियाटिक मोड ऑफ सोसाइटीक' अपन व्याख्या मे पूर्वी समाज' पर 'ओरिएन्टल डेसपोटिज्म' आ सामाजिक परिवर्त्तनक प्रक्रियाक सुस्त' हेवाक जे आरोप लगौने छलाह, तकरा ई कथा

-कथाकार अनायासहि समर्थन क' देलनि अछि, जखनकि भारतीय वामपंथी चिन्तकगण तकर खण्डन केने छलाह। ई निष्कर्ष भारतीय ग्रामीण समाजक भविष्य लेल एकैसम-सदी मे, कतेक कल्याणकारी अछि, से विचारणीय अछि आ कथाकार केँ 'ठोस सनातन-मूल्यवादी' प्रमाणित करैछ। श्याम दरिहरेक कथा-लेखनक आयाम ठीके विस्तृत छनि। गाम-नगर के कहय, मैथिली-कथाक पात्र-परिवेशक 'अन्तर्राष्ट्रीयकरणक' संग 'हाइ-टेक' बनयबा मे सेहो पैघ योगदान छनि। अठारहो कथा मे किछु-ने-किछु प्रयोगधर्मिता अछि। भारतीय संस्कृतिक 'सनातन आ धर्म-पक्षीय लेखनक' संग, आधुनिकता-समकालीनता आ परिवर्त्तनक विकृत-पक्ष जगजियार भ' गेल अछि आ तकर सभक उदार आ सकारात्मक पक्ष कनेक कमजोर भ' गेल अछि। हिनक समस्त कथा-कला-कौशल, पुरातन धर्म-दर्शन, आस्था, पारंपरिक मूल्यवला सामाजिक तंत्र केँ समर्थक भ' क' आयल अछि। पाश्चात्य आ आधुनिकताक हवाक टटका झोंकाक 'संक्रमण' ई समाज केँ नहि लागय देब' चाहैत छथि आ राजनैतिक चिन्तन मे शत-प्रतशत तहिना भ' क' सोचैत छथि, सेहो आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकी साधनक उपयोगक संग। कथा-भाषा मे बहु-विधि प्रयोग सफलतापूर्वक भेल अछि। बिम्बात्मक शैलीक कए कथा मे नीक प्रयोग भेल अछि। मुख्य धाराक मैथिलीक संग बोली सभक टोन आ वर्त्तनीक प्रयोग सेहो सुतरलनि अछि। किछु अंग्रेजी शब्दक, कथा मे उकडू प्रयोग केँ अनठा देल जाय, त' शेष कथा-भाषा अत्यंत रमणीक भेल अछि, जे कथा सभ केँ रोचक बनौने रहल आ उस्सठ नहि बन' देलक। कथा-संग्रह अपना समय आ समाज पर विशद् टिप्पणी अंकित करैत, विकृतिक आलोचनो प्रस्तुत करैत अछि, मुदा दक्षिणपंथी सुधारवादक दिशा-निर्देश करैत आ वामपंथी साम्यवादी प्रगतिवाद केँ सम्पूर्णतः खारिज करैत। सेहो बहुरंगी कथा-कौशलक प्रदर्शन करैत!

•

घर-बाहर, पटना
अक्टूबर-दिसंबर,
2017

उपन्यास-कलाक चरमोत्कर्ष : घुरि आउ मान्या

मैथिलीक उपन्यास-यात्रा मे सामाजिक-समस्याक निरूपण आ व्याख्या तँ खूबे भेल, मुदा धार्मिक-अध्यात्मिक-आस्था-आधारित वा दर्शन आ विज्ञान-आधारित उपन्यास-लेखन अनुपस्थित आ उपेक्षित रहल, जखनकि मिथिला-समाज आस्थाक मजगूत गढ़ सभदिन रहल। विज्ञान-दर्शन-अध्यात्मक आधारित उपन्यास-लेखनक उपेक्षा, मिथिला-समाजक सम्पूर्ण चित्र साहित्य मे नहीं आब' देलक। ताहि अभावक पूर्त्ति केलनि अछि श्याम दरिहरे, अपन महत्वपूर्ण उपन्यास—'घुरि आउ मान्या' द्वारा।

यद्यपि चर्चित उपन्यास कोनो धार्मिक कथा, कालखण्ड वा पात्र-आधारित नहीं भ' क', ग्रामीणे परिवेशक सामान्य नायिका (सौम्या-शकुंतला-मान्या) प्रधान अछि, जकर रूपांतरण आ कायान्तरण योग, अध्यात्म, ध्यान, तप-जप, ब्रह्मचर्य, धार्मिकता, सदाचरण, भक्ति, ज्ञान-पिपासा, सेवा-सद्भावना, आस्था आदिक माध्यमें, क्रमशः गार्हस्थ्य-परिवार, वाणप्रस्थ आ संन्यास आश्रमक मार्फत, सौम्या सँ शकुंतला आ शकुंतला सँ मान्या मे होइत अछि आ तखन फेर मान्याक गोलोकपुरीक यात्रा बाबा (किशोरी-पारिजाता-माता)क संग होइत अछि, जकर मनोहारी वर्णन भेल अछि।

मोटा-मोटी, रुढ़ भ' गेल उपन्यास-धारा सँ फराक, ई उपन्यास एकटा एहेन कथालोक आ परिवेश-पात्र सृजित करैत अछि, जे मैथिली-उपन्यास-संसार मे एकदम्मे अभिनव आ अनछुअल अछि, यद्यपि किछु लोक केँ विचारधाराक स्तर पर, सुग्राह्य नहियों भ' सकैत अछि। मुदा कथानक आ कथात्मकताक तानी-भरनी एतेक सु-गुम्फित, तर्कपूर्ण, प्रवहमान, विशिष्ट वर्णन-आधारित अछि जे पौने तीन सय पृष्ठक उपन्यास मे 'ब्रेक' लेनाइ पाठक लेल असंभव-जकाँ अछि। दार्शनिक आ अध्यात्मिक-शब्दावलीक बाहुल्यक बावजूदो, रोचकता आ पाठकीयताक प्रतिशत एक सय... भेनाइ, प्रथमहिं कृति सँ, उपन्यासकार केँ सिद्धहस्त साबित करैत अछि।

उपन्यास लेल एहेन अनोख विषय-वस्तु आ कथा-प्लॉटक चयन, जतय लेखक केँ दुस्साहसी प्रमाणित करैत अछि, तदनुकूल पात्र-चयन(स्वामी सिद्धार्थ, सौम्याक सतमाय आ पिता, माता देवकी, गुरू माँ, बाबा-माता पारिजाता) आ तहिना गामक स्वामी सिद्धार्थ-आश्रम सँ ल' क', ऋषिकेशक दुनु आश्रमक परिवेश-चित्रण आ तहिना पात्र सभक चरित्रांकन अद्‌भुत भेल अछि। एम.ए. पास गंभीर आ परिपक्व सौम्या, गामक खलनायकी परिस्थिति आ परिवेश सँ, अनाथ होइतो, संघर्ष करैत अछि, स्वामी सिद्धार्थ केँ प्रेम करैत आ प्रेमक अस्वीकारक प्रतिक्रिया-स्वरूप(भाया-काशी-आयोध्या) हरिद्वार-ऋषिकेश-आश्रमक संन्यास-यात्रा करैत अछि, तकरा करूण आ मार्मिक चित्रण, नास्तिको-पाठक केँ हृदय-विदारक बुझा सकैत अछि। गुफा-तप द्वारा सौम्या आ शकुंतला सँ कायान्तरण आ तखन सूक्ष्म-शरीर द्वारा राधाकृष्णक गोलोकक यात्राक विशद आ अनुपम वर्णन, भौतिकी आ अन्तरिक्ष-विज्ञानक तर्कपूर्ण शैली मे भेल अछि, जाहि मे दर्शन-सिद्धान्तक संग आत्मा-ब्रह्म, इहलोक-परलोक, अधिभौतिक, अध्यात्मिक आ वैज्ञानिक प्रशिक्षण, विश्वसनीय ढंगे शकुंतला केँ देल गेल अछि।

लेखक कए ठाम रहस्य-रोमांच आ चमत्कारपूर्ण घटनाक वर्णन केलनि अछि, जे धर्मक्षेत्रक कथाधारित उपन्यास मे पाठक केँ स्वाभाविक आ आन क्षेत्रक उपन्यास हेतु अस्वाभाविक लागि सकैछ। पोथी मे स्पष्ट अछि जे इहलौकिक संसार आ अंतरिक्ष मे वैज्ञानिक-व्याख्या तर्कपूर्ण अछि आ पारलौकिक, इन्द्रियग्रातीत (गोलोकधाम-टाइप) संसार हेतु विज्ञान आ ओकर व्याख्या सीमित आ असक्षम अछि, कारण प्रकृति, ब्रह्माण्ड आ अंतरिक्ष अनन्त अछि।

मिथिला चित्रकला सन मनोहारी सौन्दर्य-बोध बिलहैत, ई उपन्यास धर्म, अध्यात्म, विज्ञान, दर्शन, तकर सभक सिद्धान्त आ सोच, ताहिं चारू विषयक अद्यतन अनुसंधान आ सीमाक निरूपण करैत, साहित्यक संग संगम आ समन्वय करबाक अनुपम प्रयासक रूप मे चिर-स्मरणीय रहत। जेँ कि लेखक वर्णित तथ्यक वैज्ञानिकता आ भारतीय शास्त्रीयता-प्रमाणिकताक दावा नहिं करैत छथि, मिथक-अध्यात्म-विज्ञान-शास्त्रीयता-आधारित उपन्यास-पाठक आनन्द, पाठक ल' सकैत छथि। हिन्दी मे डॉ. रामकुमार 'भ्रमर' रामकथा पर एगारह खण्ड अथवा एगारह टा धार्मिक उपन्यास

लिखलनि आ अंग्रेजी मे शिव-शंकर भगवानक जीवन पर 'मेलुहा के मृत्युजंय' नामक उपन्यास तीन-चारि खण्ड मे आइ.आइ.एम. के छात्र अमीष त्रिपाठी लिखि क' प्रभूत यशस्वी भेलाह आ मैथिली मे तकर आइ आरंभ भेल अछि। मुदा भेल अछि सशक्त ढंगें। पैघ कैनवास पर, सौम्याक अभिशापित पुनर्जन्म आ तेरहम जन्म मे भाया शकुंतला, मान्याक रूप मे गोलोकधामक यात्रा-वर्णन मे महाकाव्यात्मक विस्तार द' क', आस्थामय वातावरण मे, कथा-उपस्थापन भेल अछि, जे परिवेश, धार्मिकरूपेण रूढ़ि आ अन्धविश्वास सँ मुक्त भ', वैज्ञानिक सोच आ आवरण-मय अछि। प्राचीन अध्यात्म केँ समकालीन संसार मे, वैज्ञानिक-व्याख्याक संग, समाज-हित मे, साहित्यमय-उपस्थापन, मैथिली-उपन्यास-लेखन कें, एक नव प्रकारक कलात्मक चरम उत्कर्ष, प्रदान करैत अछि। सौम्याक निर्णय आ जीवन-चयन, ओकर चरित्रक उदात्तता आ अपन कर्त्तव्यनिष्ठा, वैज्ञानिक आ भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान-पिपासा, सनातन हिन्दू-धर्मक रूढ़ि-विहीन आ प्रगतिशील वैज्ञानिक छवि स्थापित करैत, पहिले-पहिल, संन्यास केँ पलायनक बदला चुनौती मानबा पर पाठक केँ विवश केलक अछि आ संन्यास-आश्रम केँ उदासी आ रूढ़िक भंजन करैत, त्याग आ संयमक वर्णन सुरूचिपूर्ण रूपें परसल गेल अछि। एकटा मैथिलानी नारी जखन, पुरूष-प्रधान मैथिल समाज केँ, विवाह-संस्था-विवेचनाक संदेश दैत, रूढ़-बन्धन-मुक्ति संदेश दैत अछि आ पुनः गाम घुरवाक वचन दैत, पलायन-अभियोग खरिज करैत अछि, तँ मुख्य पात्रक जीवन-यात्रा कृति केँ बहस-योग्य बना दैत अछि।

स्वाभाविक छल जे राधाकृष्ण-सम्प्रदाय मे दीक्षित लेखक नारायणक बैकुण्ठ-धामक बजाय राधाकृष्णक गोलोक धाम-वर्णन केँ वेशी महत्व दितथि आ 'हर-द्वार' केँ 'हरि-द्वार' बना क' ऋषिकेशक हिमालय-गुफा मे कायान्तरण करबितथि आ सैह करबो केलनि। मुदा गोलोक-धाम-च्युत, निर्दोष, अभिशापित-मान्याक कायान्तरण गोवर्द्धन-गुफा मे सेहो कराओल जा सकैत छल, कारण वृन्दावन, रासमंडप, गोवर्द्धन, यमुना (गोलोक धामक विरजा-नदीक स्वरूप), ब्रज-84 कोस, सभ केँ गोलोक-धामक एकटा ब्रह्माण्ड-खण्डे कहल गेल अछि, जखनकि सौम्या-शकुंतलाक यात्रा, ओकर इच्छाक विरूद्ध काशी-अयोध्या-हरिद्वार-ऋषिकेश मे करा गोलोकधामक यात्रा करा देल गेल। भ' सकैछ, चौदहम-जन्म आ उपन्यासक प्रस्तावित दोसर खण्ड मे ब्रज-यात्राक

माध्यमें मान्या अन्तिम गोलोक-यात्रा करथि।

मान्याक अभिशाप-कथा(माता-परिजाता द्वारा) जे गोलोकक चौदहम-गेट पर भेल छल, से बैकुण्ठ-गेट(नारायणक)क तीन द्वारपाल केँ, सनत् कुमार द्वारा अभिशापित आ पुनर्जन्म मे रावण-कुंभकर्ण वा हिरण्यकशिपु- हिरण्याक्ष—कथा केँ मोन पाड़ैत अछि। मुदा मिथकीय छाया केँ, धार्मिक उप-कथाक कल्पना-शीलता सँ उपन्यासक ताना-बाना बुननाइ क्यो श्याम दरिहरे सँ सीखय।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण आ शब्दावलीक सहज-उपयोग आ व्याख्या सँ प्रथमहि कोनो मैथिली उपन्यास पाठकक ध्यान-आकर्षित केलक अछि। गौतिकीमय अन्तरिक्ष-विज्ञान आ अखिल ब्रह्माण्डक सजीव चित्रण मे सुपरनोवा, ब्रह्म-छिद्र, बह्म-द्रव, ग्रह-नक्षत्र-आकाश-गंगा निर्माण-प्रक्रिया, तरेगनक जन्म-मृत्यु, अपन सौर-मंडल आ इन्द्रियातीत निस्मीम ब्रह्माण्डक काल गणना, टेलीपैथी आ टेली-ट्रान्सपोर्टेशन (अन्तर्धान-प्रकटीकरण-तकनीक) अदृश्य ऊजा, ध्वनि-कंपन, तकर संगीत मे रूपांतरण, नैनौ-प्रौद्योगिकी, बहु-आयामी दृष्टि, कृष्ण-विवर, बल, उर्जा, गुरूत्वाकर्षण, महा-विस्फोट (बिग बैंग जे ऊँकार स्वरूप छल) संयुक्त बल सिद्धांत, थर्मोडायनेमिक्स-नियम, परा बल, अन्तर्मन-विज्ञान, अन्धपदार्थ, इसकेप भेलोसिटी, बोसोन, फोटोन सन सूक्ष्म-कण आदिक व्याख्या उपन्यासक चरित्र केँ वैज्ञानिक बना देलक अछि।

संगहि, आश्चर्यजनक तथ्य ईहो अछि, जे सनातन हिन्दू-धर्मक प्राणतत्व (जे शास्त्र आधारिते अछि) सभक विशद समावेश करैत आत्मा, ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मलोक, सत्य-लोक, गोलोक, कामधेनु आ कल्पवृक्ष, ब्रहमक सगुण-निर्गुण-स्वरूपक व्याख्या, साधना-संयम-इन्द्रिय-निग्रहक आ काम-क्रोध-मद-मोह लोभक पारंपरिक व्याख्या, सृष्टि-रचना,जगत् प्रकटीकरण, कार्य-कारण-सम्बन्ध, मृत्युपरान्त आत्माक यात्रा आ चारि प्रकारक गति, भौतिक जीवन आ मुक्ति-पथ, उपनिषदीय ऊँ उद्‌गीथ-व्याख्या, प्राणवायु-अपानवायु, चौबिस तत्वीय मानव देह संरचना, पंच-भूत-तत्व, ब्रह्म-संकल्प सँ पुरूष-प्रकृति प्राकट्य, सत्व-तम-रज-ज्ञानेन्द्रिय-कर्मेन्द्रिय आदि गूढ़-दर्शन-तत्वक व्याख्या सहज आ प्रवहमान भाषा मे करैत, उपन्यासक सामाजिकता, धार्मिकता, अध्यात्म आ वैज्ञानिकताक संग तादात्म्य आ समन्वय कराबैत, कथात्मकताक निर्वाह कयल गेल अछि।

तैओ जेँ कि सगुण-ब्रहम मे मात्र राधाकृष्णक चर्च भेल अछि, लेखक श्रीकृष्ण केँ परम-तत्व(अद्वैत) समष्टि रूपें मानबे करताह।

मुदा शैव शिव केँ, वैष्णव विष्णु केँ, शाक्त शक्ति केँ परम-तत्व मानि सकैत अछि। श्रीकृष्ण सम्पूर्ण अवतार छथि, तैओ अवतार तँ अवतारे थिक, मूल-स्वरूप तँ नारायणे छथि आ निर्गुण-ब्रह्म सेहो परम-तत्व ककरो बुझा सकैछ। सत्य तँ ई थिक जे ब्रह्म लिंग-निर्धारण सँ ऊपर केर अवधारणा थिक। तें मान्याक चौदहम आ अन्तिम पुनर्जन्मक वर्णनक वहन्ने लेखकीय ध्येयक सम्पूर्ण अन्वय आ निरूपण हेतु उपन्यासक दोसर खण्डक आवश्यकता आ गुंजाइश बांचल अछि। तैं गोलोक-धामक स्वर थिक,'घुरि आउ मान्या'। अन्यथा, पृथ्वीलोकक मिथिलाक आवाज होइतय-'घुरि आउ सौम्या!' जे-से, मैथिली-उपन्यास-यात्रा मे पैद्य धाप तँ ई भेबे कयल अछि।

•

मिथिला दर्शन
कोलकाता
सितंबर, 2016

सुकाव्यमय सामाजिक व्याख्या : 'उचरि बैसू कौआ'

लक्ष्मण झा 'सागर'क पहिल काव्य-संग्रह 'उचरि बैसू कौआ' जे 2010 ई मे छपल, तकर उचित आ गंभीर संज्ञान सात वर्ष धरि नहि लेल गेल! आइ विस्तृत समीक्षा भ' रहल अछि, से मैथिली समीक्षा-आलोचनाक जड़ताक भयावह आ दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति केँ प्रमाणित करबा लेल एकटा तथ्य थिक। स्व. सत्यानन्द पाठक द्वारा 'मंजू पाठक मेमोरियल ट्रस्ट के सौजन्य सँ प्रकाशित साठि टा कविताक संग्रह मे लेखकक व्यय नहि भेल अछि, से संग्रह अमूल्यांकित रहि गेल, जखनकि कविक अपेक्षा छल, जे पोथी छपलाक बाद ओ वस्तुतः कवि बनि सकताह। से अपेक्षा-पूर कतेक भेलनि, आकि पोथीक संग कवियो उपेक्षित आ अचर्चित रहलाह? एहेन ओ असगर नहि छथि मैथिली मे। आइयो अपन वित्त-व्यय सँ लेखकगण एक-सँ-एक पोथी छपबैत छथि आ तकर गंभीर समीक्षा-समालोचना नहि लिखाइत अछि, साहित्यो-क्षेत्रक सभ व्यक्ति पढ़ैत नहि अछि। एना सागरजीक 'गुट-निरपेक्ष' रहलाक कारणें भरिसक भेल अछि, कारण कविता-संग्रहक कविता सभक आधार पर सागरजी नव, आधुनिक आ प्रगतिशील विचारधाराक कवि प्रमाणित भेलाह अछि। त' की, अल्प-क्रियाशील वा गुटबन्दी-क्रियाकलापहीन कविक मूल्यांकन नहि हो? ई केहेन परंपरा विकसित भ' रहल अछि मैथिली मे? पुरातन-पंथी जीर्ण-काव्यक समीक्षा, अतिशयोक्तिक संग, यत्त-तत्र छपि जाइत अछि आ अपन युगक, समकालीन युग-सत्यक व्याख्या करैत कविता-संग्रह, उपेक्षित रहि जाय, त' सक्षम समीक्षकगण आ समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता पर प्रश्नचेन्ह लागब स्वाभाविक, कारण विमर्श भइये नहि पबैत अछि। अपन सारगर्भित 'अनुशंसा' मे डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक एहि 'प्रखर चेतना-सम्पन्न, समकालीन बेछप नाम' वला कविक पोथीक 'हुलसि क' स्वागत' करवाक अपेक्षा केलनि, से अपेक्षे रहि गेल। तखन स्व. सत्यानन्द पाठक (गुवाहाटी) सन प्रकाशक दोबारा कोना 'साधंस' करताह?

कविक 'समर्पण' ध्यातत्य अछि! ओ 'अक्षर-बोध करा सक्षम कवि' बनौनिहार 'सम्पूर्ण समाज आ परिवार' केँ पोथी समर्पित करैत छथि आ

अपन 'आहे-माहे' मे लेखनक रणनीतिक स्पष्ट खुलासा करैत छथि, जे ओ स्वान्तः सुखाय नहि लिखि, झोंकियल लेखन' सँ परहेज करैत, एकटा अक्षर-पुरुषक धर्म जकाँ लिखैत छथि'। हुनका कवि बनवाक रहनि, तेँ पत्नी-प्रेरणा सँ पोथी-प्रकाशन-ब्योंत' धरौलनि। आ तेहेन साहित्यिक प्रतिबद्धता वला कविक पोथीक संज्ञान नहि लेल जायब, मैथिली साहित्यक नैराश्यपूर्ण परिस्थिति केँ साबित करैत अछि, जखनकि कविगण कोनो आर्थिक-अपेक्षा नहिऐ रखैत छथि। मैथिली मे अप्पन पाइ सँ पोथी छपाब'वला जतेक लेखक छथि, ताहि सँ कम क्रेता-विक्रेता आ प्रकाशक! पाठक त' घटले जा रहल छथि। तखन समीक्षक कतेक हेताह? आ हेबो करताह त' अपना गुटक लेखकक समीक्षा लिखताह। ककरो कर्जा थोड़े खेने छथिन, जे...?

समीक्ष्य काव्य-संग्रह मे, पोथीक शीर्षकक नाम सँ कोनो कविता संकलित नहि अछि। तेँ पोथीक शीर्षकक नामकरण, रचना-आधारित नहि अछि। शीर्षक केँ 'कुचरि बैसू कौआ' हेवाक चाहैत छलै, जे मिथिला-समाज मे, 'विद्यापति-गीत' अथवा 'परदेसी पिया'क माध्यमे स्थापित अछि। 'उचरनाइ वा उचारनाइ' त' 'खड़ी उचरि' भविष्यवाणी करवाक परंपराक अवशिष्ट-शब्द थिक। तखन बंगाल-असम मे एहेन वैकल्पिक शब्द भइयो सकैछ।

मुदा पैघ बात ई थिक जे सागरजीक कौआ काक-भुशुण्डी जकाँ, मिथिलांगन मे काव्य कुचरैत अछि, रंग-विरंगक सामाजिक व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि। सागरजीक कौआक काव्यमय सामाजिक सरोकार, संग्रहक मोटा-मोटी सभ कविता मे व्यक्त भेल अछि।

संग्रहक आरम्भहि मे काव्य-सम्बन्धी अपन अवधारणा केँ पहिले कविता मे व्यक्त करैत, अपन काव्य-लेखनारंभक अनेक प्रारूपक व्याख्या करैत छथि। किशोर-वय मे सौन्दर्य-शृंगार सँ उद्भूत कविता, सम्पूर्ण जीवनक रंग-विरंगी 'कोलाज' बनबैत, कैंची-वला कतरनी-भूमिका केँ खारिज करैत, माला गंथबाक सुइया बनि जाइत अछि। ई सृजनात्मक दृष्टि हिनक संग्रहक 'प्रस्तावना' थिक।

कोनो व्यक्ति आ कवि जकाँ, हिनको जीवन मे मायक महत्वपूर्ण स्थान भेलनि आ तेँ तत्सम्बन्धी तीन टा कविता (माय, माया हमर गंगा, सिरमा लग टाङल मायक फोटो) संकलित अछि, जे पाठक केँ झकझोड़ि क' राखि दैत छै। तीनू कविता मे मायक पारिवारिक हैसियतक आ विविध

प्रारूपक यंत्रणा-भोगक कारूणिक चित्रण आ संवेदनाक घनीभूत अभिव्यक्ति भेल अछि। माय संवर्गक, पिता द्वारा आ परिवारक सभ सदस्य द्वारा शोषण होयब, जीवनक विविध चरणक कारूणिक चित्र अंकित करैत। मातृरूपेण संस्थिता'वाली मिथिलाक माय त' गंगे होइत छै,? जकर कचोटैत स्मृति सँ बेटा नजरि नहि मिला सकैत अछि। मैक्सिम गोर्कीक माय हो वा अशोकजी (आलोचक-कथाकार) केँ रूस-प्रवास मे भेटल माय (धरती गोल छै) वा सागरजीक माय, माय संवर्गे विश्वजनीन रूपें, एहने होइत रहलैए। तेँ यंत्रणा भोगैत पारंपरिक मायक वात्सल्य-स्वरूप नीक त' अछि, मुदा नव नहि। विभूति आनन्द आ अनेक लेखक अपन 'महान् मायक' एहने 'त्यागी आ यंत्रणा-भोगी मायक छवि अपना कविता-कथा मे स्थापित केलनि अछि, से 'वात्सल्य-स्वरूपा होइतहिं छै 'माय'। तखन 'आजुक मिथिलाक मायक संवर्ग' मे 'खलनायकीक घुसपैठ' भेल अछि, सेहो एकटा तथ्य थिक। भाय-भाय आ पुतोह-पुतोहु मे विभेद करैत माय; पौत्र-पौत्री, पुत्र-पुत्री आ नाति-नातिन मे विभेद करैत माय, मैयाँ केर संज्ञान के लेत? मैथिली साहित्य सँ अनुपस्थिते जकाँ अछि, से यथार्थ! तखन जिबैत मायक विविध सृजनात्मक स्वरूप सँ ल' क' 'मुइल मायक सकारात्मक आ जीवंत स्मृति'क उद्घाटन मार्मिक आत्म-स्वीकृतिक संग, जखन कोनो 'सागर-हृदय' कवि करत, त' ओकर अनुभूति वैयक्तिक नहि रहि, सामूहिक भइये जाइत छै।

मुदा पिताक चरित्र-चित्रण मे एकभगाह नहि रहलाह अछि कवि। पिताक जीवनक विविध प्रारूप आ चरणक वा विरोधाभासी क्रियाकलापक, संक्षिप्त आ शब्द-विन्यासी काव्य-शिल्प (बाप) मे पिताक 'पीड़ित आ पीड़क' दुनू यथार्थ स्वरूपक काव्य-चित्रक संयोजन केलनि अछि। चाण्डाल-स्वरूप तसफेंट्टा आ थाड़ी फेकैत बाप, किंवा पति रहरहाँ अछि, गाम-गाम मे! से पुरुष-संवर्गक काव्यमय उपस्थापन वेसी इमानदारीक संग भेल अछि– 'सागर-काव्य' मे। ताही पुरूष-संवर्गक अभगदशा जखन वृद्धावस्था मे बेटा-पुतोहु द्वारा 'निरसू काकाक सुखरात्रि' केँ 'भुक्खल दुःखरात्रि' मे बदलि क' होइत अछि, दियाबातीक राति मे, त' जीवनक चारिमपन मे व्यंग्य आ करूणा मिझहर भ' जाइत अछि आ मेंही शोषण सँ 'दुर्दशा-काव्यक' जन्म होइत अछि।

वैह पुरुष संवर्ग, पचासो विरोधाभासी स्वरूप मे 'भाइ' बनि क',

प्रवहमान तुकबन्दी काव्य-शिल्प मे, सक्षम शब्द-संयोजन मे, काव्य-रूपायित होइत छथि, त' पुरुष-संवर्गक खलनायकी सँ निर्मल-पाठक परिचित भ' जाइत छथि। सम्बन्ध-बन्धक कड़ी मे अग्रिम काव्य-लक्ष्य बनैत अछि पति-पत्नी-सम्बन्ध, जकरा काव्य-वस्तु बनायब कोनो कविक लेल अत्यधिक साधंस के बात थिक। बहुत कवि 'प्रेम-व्यथा' भोगितो अइ विषय केँ अस्पृष्य मानैत छथि, त' कए कवि 'नाढ़र' भ' प्रेम भोगैत छथि आ ताहि विषय केँ गोपन बनाक' रखवाक रणनीति अन्तर्गत, गप्प करवाक लेल 'नाक पर माँछी' नहि बैस' दैत छथि। 'नाढ़र' स्त्री-पुरुष सम्बन्ध मे व्यभिचारक सुन्दर काव्य-व्याख्या करैत अछि, त' 'अहाँ, हमरा आब नहि सोहाइत छी' मे नैहरक वासंती-कोमलांगी चन्द्रमुखी, जे सासुर (पतिक गाम) मे आबि क' सूर्यमुखी, हन-हन-पट-पट करैत नाक सुकरैत, 63 सँ 36 बनैत, बढ़ैत अद-पद-दायित्व सँ करुणा सिरजैत अछि। विभिन्न चरण मे प्रेमक पतझड़क सनगर काव्य-वर्षा 'धूआँ-मूआँ' लग आबि क' प्रेमक अतीत-वर्त्तमानक सौन्दर्य-बोधक व्याख्या लग आबि हारि मानि लैत अछि। प्रेम-वर्णन मे वीभत्स-रसक प्रयोग विरल अछि। 'नाक पर माँछी' पति-पत्नी-सम्बन्ध मे, विभिन चरण मे, वयसक प्रभावक आकलन करैत, एक-सँ-एक झाँपल आ गोपन रहस्यक काव्यमय अभिव्यक्ति भेल अछि, जे पति-पत्नीक पैघ रसगर-नीरस जीवनक सप्रसंग-व्याख्या प्रस्तुत केलक अछि।

'औजी महाराज' मे जीवनक सौन्दर्य-बोध मे काव्यक सौन्दर्य-बोध आ स्त्री-पुरुष-सम्बन्धक सौन्दर्य-बोध मे आस्थाक गुंफन एना उतरल अछि, जेना जनवादी काव्य मे शृंगार-रसक परिपाक! 'तेना सासुरक परिवर्त्तित होइत स्नेह-समीकरण, 'होटल मे रहैत' पारिवारिक जीवनक स्नेह-सूत्रक स्मृति, 'सेहेन्ता' मे पतिक सेहेन्ताक सार्वजनीन दर्द 'आह! आह!' क' उठैत अछि। एतावता, दाम्पत्यक संग सम्पूर्ण पारिवारिक जीवनक टूट, परिवारक सभ सदस्यक पीड़ा-भोग, सम्पूर्ण सम्बन्ध-बंधक समकालीन यथार्थ, विरोधाभासी विडंबनापूर्ण परिस्थितिक करुण काव्यमय अभिव्यक्ति, जमि क' भेल अछि।

'बेवस्था' आ 'कहबौ त' लगतौ छक द' दुनू गजल थिक, जकर एहि संग्रह मे स्थान नहि हेवाक चाहैत छल। तहिना 'बरखा' 'हथचिट्ठी' आ 'बकरीक आत्मालाप' विशुद्ध गीत हेवाक कारणें संग्रह मे उकड़ू अछि, तेँ विवेच्च नहि अछि। नवकविताक दृष्टिऐं, संग्रह अपना-आप मे परिपूर्ण अछि।

मैथिली आन्दोलनक पोखरि मे मरसम्पय माँछ रहलाक बावजूदो, बिनु बोरेक बन्सी पाथल जेवाक कारणें, बेर-बेर मछहरि विफल भ' जाइत अछि। ताहि पाखण्डक दोसरो कविताक दुनू लजकोटर कुमारि कन्या सम्पुष्टि करैत अछि जकर आपसी प्रेमक कोनो परिणाम समलैगिक हेवाक कारणें असम्भव अछि। एहि पाखण्ड केँ पुनः 'नहि चाही पाखण्डक' पाँचो कविता, प्रकारान्तर सँ, देखार करैत अछि, जे मिथिला-समाज मे विद्यमान अछि। आकंठ मोह-ग्रस्त सासुक अध्यात्म-पाखण्ड हो वा मैथिलानीक व्रत-उपवास आ सोमालियाक भूखमरी वा अहिंसाभावें भरिपेट्टा माँछ खेनाइ वा महींस आ गायक दूहब मे अन्तर करवाक पाखंड, बात एक्कहि थिक। तहिना पुरुषक पाखण्डग्रस्त मानसिकता, घर मे जकरा 'सरभेंटनी' कहैत अछि, तकरे सड़क पर 'कोमलांगी' बुझैत अछि, केँ देखार करैत अछि कविता-'काजक लोक'।

समाज मे बहसल लोकक विभिन्न प्रकारक भ्रष्ट आ व्यभिचारी प्रवृत्ति पर, रंडी-प्रवृत्ति पर (रंडी) कविता लिखल कमाल कथ्य-चयन थिक। जानवरो सँ गेल-गुजरल प्रवृत्ति मनुक्खक भ' गेल अछि। तहिना भरुआ-प्रवृत्ति (हाँजी-हाँजीवला मानसिकता) पर आक्रामक चोट अछि 'भरुआ' नामक कविता मे। पंचसाला राजनीति-तंत्रक खलनायकी-हिजरापन केँ धरगर आ गहींर व्यंग्य सँ नाथल गेल अछि, 'हिजरा' नामक कविता!

'अपन अर्द्ध-शताब्दी पर' कवि केँ कोनो परिवार-प्रधाने जकाँ अनुभव होइ छनि, छिन्नमूल हेवाक, जिनगीक कटु यथार्थ परिभाषा बुझवाक सन्तानरूपी टटका दहीक अम्मत भ' जेवाक। तेँ मरीचिका भगेवाक लेल वा समानधर्माक अर्द्ध-शती मनेवाक ब्योंत मे मोमबत्ती जरेबाक लेल, सलाइक-काठी खरड़ब, सृजनात्मक प्रतीक थिक। जिनगीक 'एक लग्गा सुरुज' ऊपर उठि गेला पर, जखन झलफल मे आँखि चील्ह केँ हवाइ जहाज बूझ' लगैए, उदास प्रिया केँ खड़खड़ तरहत्थी सँ, पीठक घम्हौड़ी कुड़िएवाक आह्वान, सकारात्मक आ आशावादी आह्लादक प्रतिपादन थिक।

'पन्द्रह अगस्त'क दर्द आम-जनजीवन मे न' अगस्त (नागासाकीक विध्वंस)क दर्द ल' क' अबैत अछि आ लोक निवासी मनुक्खक बदला 'खरबन्ना डीह' केर भाग्य देखैत अछि।' 'महाप्रयाण' पूर्ण ध्वंसक भयावह विस्तारित यथार्थक परिकल्पना थिक। 'सन्तति' मे गागर मे सागर भरल

गेल अछि। बेटीक पक्ष मे! 'प्रदूषण' सामाजिक विकृति केँ प्रमाणित क' दैत अछि त' बाध पर बाढ़िक 'बलात्कार' पाठक केँ चौंका दैत अछि। 'साती' मे निम्नवर्गीय कनियाँक ग्रामीण-औद्योगीकरणक सेहन्ता व्यक्त भेल अछि, जाहि सँ पियाक पलायन परदेस मे नहि हो। 'चिन्ताक कोनो बात नहि' मे, समाज मे, होइत नकारात्मक आ सकारात्मक दुनू प्रकारक परिवर्त्तनक संज्ञान लैत, समाज पर व्यंग्य भेल अछि। 'त्यागक' शब्द-विन्यास 'बेंत'क बिम्ब-विन्यास, 'जिज्ञासाक' ग्राम-नगर-विरोधाभास मे सेराइत नव पीढ़ीक उत्साह आ 'मातमपुर्सीक' भयावह यथार्थ पाठकीय आनन्द-प्रदाता भेल अछि। कवि 'परम्परा' पर प्रहारो करैत छथि आ 'प्रगतिक' छद्म-आवरण मे नुकायल सामन्ती मानसिकताक अवशेष पर व्यंग्यो करैत छथि।

'हम अहाँ केँ नहि चिन्हैत छी' मे वर्ग-विभेदक यथार्थक समर्थन भेल अछि, त' किछु पाँती, 'कवि नारायणजीक नाम' मे ग्रामीण जीवनक सौन्दर्यक पक्ष लैत, कविक शहरी जीवनक सन्ताप व्यक्त भेल अछि। कविता कोनो समस्याक तुरत समाधान राजनीति आ शासन जकाँ करवाक लेल सक्षम नहि अछि आ समस्याक कारणो समाजेक लोक अछि, तेँ 'कविक आत्म-समर्पण' उचिते अछि। खाँटी मैथिली मे मार्मिक 'समस्या'-काव्य, वैयाकरणी-शैली मे, एकवचन सँ बहुवचन' भ' जाइत अछि। तामस मे भोजन 'सानी' बनि जाइत छै आ यथार्थक जमीन सँ कटल 'नागुल परहक गाछ' ऑक्टोपसी-उपभोक्तावाद पसारैत अछि।

कवि सागरजीक शुभ-सकारात्मक 'दृष्टि' प्राचीन कवित्त मे नवीन कथ्यक गुंफन थिक, त' 'नेंत' आवरण फाड़ि क' देखार भइये जाइत अछि। 'चुट्टीधारी' मे मनुक्खक हीन आ जीव-जन्तुक उच्च-संस्कार काव्यमय वर्णन पओलक अछि, त' 'सड़कक कतबहि मे कटैत जिनगी' अभिजात आ सर्वहारा-वर्गक विरोधाभासी जीवन-यथार्थक मार्क्सवादी सौन्दर्य-शास्त्रीय व्याख्या, समाजिक थाड़ी मे साँठल भातक डिजाइन जकाँ, प्रस्तुत भेल अछि। 'एना किए होइए?' मे पुरुष-समाजक व्यभिचार आ भ्रष्ट मनोवृत्ति, पतिक तिमनचक्खा प्रवृत्ति आ बोनहुल्लुक-संस्कार बेपर्द भेल अछि।

सम्पूर्ण काव्य-संग्रहक काव्य-कथ्यक परीक्षण सँ कथ्य तथ्यात्मक आ यथार्थवादीए नहि, वर्ग-संघर्षो केँ आधार दैत उपस्थापित भेल अछि। सागरजीक 'दृष्टि-कैमराक कैनवास' चकित करैत अछि। जीवनानुभवक

क्षेत्र-विस्तार पैघ छनि आ शब्द-संचयक बखारी पैघ आ भरल-पुरल। शब्द-सामर्थ्य सँ ल' क' शब्द-विन्यास धरि चमत्कारिक आ खाँटी तृणमूलीय! हिनक काव्य-भाषा, अपन अभिव्यक्ति मे टनाटन अछि। मुदा सहज अछि। किछु कविता मे सहज-प्रवाह मे तुकबन्दी स्वयमेव आबि गेल अछि, मुदा सेहो कवित्त आ शब्द-विन्यासक क्रम मे आयल अछि।

हिनकर कविता केँ सर्वरस-परिपुष्ट मान' पड़त। सौन्दर्य-शृंगार आ वीभत्स रसक जनवादी-बर्गवादी कविता मे एहेन पचल समावेश केनाइ, कोनो परिपक्वे कवि सँ संभव अछि, जखनकि ई कविक पहिल संग्रह थिकनि। सामाजिक मूल्यक प्रति आबद्ध लेखनक कएटा मैथिली काव्य-प्रतिमान मे सँ, एकटा ईहो संग्रह थिक, जकर काव्य-तथ्य, कथ्यक अयना मे, मिथिला-समाजक बिम्ब-प्रतिबिम्ब-उपबिम्ब द्रष्टव्य अछि। उपमा-उपमान सँ सजल पुष्प-गुच्छ त' थीके, सम्पूर्ण संग्रहक मूलभाव कविक हाथ मे एकटा धरगर हथियार जकाँ अछि, जाहि सँ कवि, वस्तुतः अपन स्वभावक अनुकूल 'अनर्गल आ अनसोहाँत क्रियाकलापक विरोध करैत छथि!

•

देसिल बयना, हैदराबाद

नवंबर, 2017

समकालीन मिथिलाक 'अंतरंग' मूल्यांकन

मैथिलीक कथाकार-उपन्यासकार प्रदीप बिहारी द्वारा संपादित 'अंतरंग'-एक (हिन्दी) समकालीन मैथिली-ए साहित्य पर केन्द्रित अछि। लक्ष्य-केन्द्रित एहि पत्रिका मे, जीवकान्तजीक समीक्षात्मक आलेख 'दलित कविताक हस्तक्षेप' (जे कर्णामृत, भारती मंडन आ हस्तक्षेप' मे पूर्व-प्रकाशित अछि) चारिम बेर छपल अछि। संगहि उल्लेख्य कवि तारानन्द वियोगीक आलेख– 'समकालीन मिथिलाक मूल्यांकन' सेहो छपल अछि। दुनू आलेख विचारणीय आ उल्लेख्य अछि, जे मुद्दा-आधारित बहस केँ उत्प्रेरित करैत अछि।

जीवकान्तजी अपन पूर्वाग्रह-प्रेरित लेख केँ बेरम-बेर छपा क' एकटा कृत्रिम दिशा मे सहज ओ प्राकृतिक कविता केँ 'लीड' क' क' ल' जाय चाहैत छथि। अपना स्थापनाक पक्ष मे प्रचूर तर्क देने बिना, ओ अनावश्यक आ अप्रासंगिक उद्धरणक जाल बुनैत छथि। परिणामतः बात किछु खास जमल नहि आ तारानन्द वियोगीक कविक छवि केँ हल्लुक बना क' प्रस्तुत केलक ई आलेख। वस्तुतः वियोगी सम्पूर्ण मिथिला, सभजन-कविक रूप मे, मुख्य आ मानक मैथिलीक माध्यमें (निम्नवर्गीय मैथिली नहि) सम्पूर्ण कविक रूप मे, सभ आ विविध वर्गक कविक रूप मे, नाना-विषय-वस्तुक काव्यमय व्याख्या करैत 'हस्तक्षेप' केलनि अछि। खण्डित मिथिलाक वा दलित-समुदायक अपूर्ण कविक रूप मे नहि। वस्तुतः वियोगीक काव्यक अन्तर्वस्तु 'दलित-भाषा मे दलित-दशा' नहि भ' क', स्तरीय आ पाण्डित्यपूर्ण नव-काव्य थिक। कोनो सम्पूर्ण कवि केँ, जातीय-वर्गीय प्रतिनिधि बना क'-प्रस्तुत केनाइ, जीवकान्तजी केँ शोभा नहि दैत छनि, जे स्वयं 'सीड़क' सन कथाक 'दलित-कथाकार' छथि। वियोगी 'पिछड़ा' जाति सँ छथि, 'दलित-जाति' सँ नहि। ओ सामाजिक-आर्थिक रूपें पिछड़ल छलाह आ शैक्षणिक पिछड़ापन दूर केलनि। ओना सभ काव्य, दलिते-काव्य होइत अछि। मुदा रूढ़ अर्थ मे, ओ एखन धरि 'दलित-काव्य' पर जमि क' काजो ने केलनि अछि। हुनकर 'काव्य-हस्तक्षेप' वस्तुतः साहित्य आ समाजक मुख्य-धारा मे भेल अछि।

तारानन्द वियोगी अपन आलेख मे समकालीन मिथिलाक मूल्यांकन करैत, अपन बेधक-दृष्टि देलनि अछि। ई मंथन त' सार्थक अछि, मुदा, मिथिला त' भारत-नेपाल मे अदहा-अदही विभाजित अछि, तेँ ओ भारतीय मिथिलाक मात्र राजनैतिक परिस्थितिक मूल्यांकन क' सकलाह अछि। किन्तु सम्पूर्ण मिथिलाक एकटा भाषागत आ सांस्कृतिक एकसूत्रता-एकतानता आइयो अछि आ भविष्यो मे रहत। वस्तुतः क्षेत्रीय विशेषताक सन्दर्भ मे पूर्वाग्रह-आधारित सामान्यीकृत अवधारणा राखब क्षेत्र-विशेषक प्रति अन्याये थिक। हमरा त' कमला-बलान आ कोसी दुनू क्षेत्रक मात्र शिक्षित वर्ग मे शास्त्रीयता भेटल अछि आ दुनू क्षेत्रक अशिक्षित वर्ग मे जन-संस्कृति आ सहज जीवन भेटल अछि। प्रसंगवश ईहो कह' चाहब जे समाजक वर्ण-विभेदवला मूल्यांकन व्यवस्था (ऊपर अथवा निचाँ सँ) एकांगी आ खण्डित अछि, सम्पूर्ण नहि। विवेचनाधीन निबन्ध समकालीन मिथिलाक मात्र राजनैतिक परिस्थितिक आ अंशतः सामाजिक स्थितिक चर्चा करैत अछि। सामाजिक समकालीनता, आर्थिक दशा आ समकालीन सांस्कृतिक चेतनाक विवेचना शेष रहि गेल अछि।

सम्पूर्ण मूल्यांकन हेतु वर्ग-संघर्षवादी दृष्टिकोण, जे कि मिथिला आ भारत मे आइयो पूर्ण प्रासंगिक अछि, के निकष के रूप मे अपनायब अत्यावश्यके नै, समयक मांग सेहो थिक। तथाकथित 'फॉरवार्ड' मे सेहो 'आर्थिक दलित' छथि, जिनका 'सामाजिक दलित' क भाय-भैयारी बूझि क' सम्पूर्ण जमीनी समाज शास्त्रक रचना कैल जा सकैए आ अभिजात्य-शास्त्रीयता आ सामन्ती-अवशेष सँ मुक्त भेल जा सकैए। ताहि मे दलितवादक संग गाँधीवादक सहयोग लेब कत्तहु सँ गलत नहि हैत। एहि 'आर्थिक दलित'-गण केँ अपने तथाकथित वर्णक उच्च आ सम्पन्न वर्ग सँ, जे संघर्ष जारी अछि, तकरा अवडेरल नै जा सकैछ। यैह वर्गीय-विभेद आ वर्गीय चेतना सामाजिक आ शैक्षणिक रूपें पिछड़ल जाति मे सेहो छैक। कोनो धनिकलाल मंडल वा कोनो रामचन्द्र पूर्वे केँ केवल सामाजिक सम्मानक लड़ाइ लड़ए पड़ैत छनि, अर्थदैत्य- गरीबी सँ नै। सामाजिक विषमताक कारण सामाजिक सेहो अछि, आ आर्थिक आ वर्गीय सेहो अछि। शासक आ शासित हेबाक तीन आधार अछि-सामाजिक शैक्षणिक आ आर्थिक। एखन धरि भारतीय सामाजिक समस्याक विवेचना मात्र सामाजिक वर्ण-व्यवस्थाक आधार पर कैल जा रहल अछि, जखनकि अर्थ-सत्ताक स्वरूप देखल जाय त' सम्पत्तिक विषम-वितरणक

संग, एकटा पैघ समस्या ईहो अछि, जे उत्पादनक साधनक अधिकतम दोहन पर ककरो ध्यान नै अछि। एकटा सोहारी मे 'कुकुरा लूझि' भ' रहल अछि, मुदा दोसर सोहारी लेल गहूम उपजेबाक प्रयास दिस स' लोक आँखि मुनने अछि।

वस्तुतः सामाजिक आर्थिक आ शैक्षणिक पिछड़ापन, तीनू शत्रु थिक। आ तीनू- शत्रुक संहार पर ककरो ध्यान नै अछि। तथाकथित 'बिहारी मसीहा' क सत्ता केँ भ्रमान्ध लोक आ रचनाकारो प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ गछने जा रहल छथि। जाधरि लोक केँ ब्राह्मण हेबाक गौरव-बोध रहतैक वा चमार हेबाक आरक्षण-वैशाखीक लोभ रहतै, ताधरि 'भोट-बैंक-कुटिल-राजनय' ठठाइत रहत। जातिगत रूपें बाँटि क' (समाज केँ) शासन करबाक परंपरा प्राचीन, मध्य, अङरेज-युग होइत आधुनिक भारत मे सेहो अपन विकृत रंग-ताल देखा रहल अछि। तेँ समाजक वर्त्तमान-सम्बन्धी ऐतिहासिक भ्रम तोड़बाक प्रयास हैब, श्रेयस्कर अछि। पिछड़ल वर्गक 'बहिर्भुक्तिक' प्रयासक? संग-संग 'अन्तर्भुक्तिक' प्रयास सेहो समानान्तर जारी अछि, जकर नोटिस लेल जेबाक चाही। हमरा नै बुझाइए (वा बुझैल अछि कहियो) जे काज कर' चाहैत छथि, तिनका क्यो रोकैत अछि वा रोकि सकैत अछि। अन्ततः योग्यताक जीत सभदिन भेल अछि आ अयोग्य लोक केँ फार्मूला-साहित्यक सृजनक छूट किन्नहुँ ने देल जेबाक चाही। ई छूट साहित्य, समाज आ छूट पौनिहार पिछड़ल जातिक साहित्यकारो लेल कल्याणप्रद नै, घातके टा हैत। सुभाषचन्द्र यादव, तारानन्द वियोगी, विभारानी केँ कहाँ कोनो दिक्कत छनि, मैथिली साहित्य मे? जिनका साहित्यिक स्तर नहि छल, तिनके साहित्य मे आरक्षण चाही, जेना फजलुर रहमान हासमी केँ, जेना लालपरी देवी, राजाराम प्रसाद केँ! दलितत्वक आधार भारतीय परिप्रेक्ष्य मे किछु दूर धरि जातिगतो हो, (जाधरि दलितक प्रतिष्ठित स्थिति नै भ' जाइ छनि) किन्तु हैत ओ एकांगी आ अपूर्ण, जाधरि कि आर्थिक-दलितत्वक आधार ओइ मे पूरकरूपेण शामिल नै भ' जाइछ। निश्चितरूपेण 'जातिगत दलित' केँ आजुक परिस्थिति मे अधिक सम्मान आ विकास-अवसरक अविलम्ब जरूरति छनि, जे युद्ध ओ स्वयं सेहो लड़ताह आ गैर-जातीय प्रगतिशील तत्वक सहयोग सेहो हुलसि क' ग्रहण करताह। 'तथाकथित 'अर्वाचीन बिहारी मसीहा' अथवा राजेन्द्र यादवक शैली मे गारि पढ़ि सामाजिक सौमनस्यता भंग क' क' वा जातिवादी कटुता सृजित क' क'

क्यो प्रगतिशील धारा केँ कमजोरे टा करताह आ दक्षिणपंथी-धारा केँ मजगूते टा बनौताह। नै बिसरबाक थिक जे सामाजिक न्याय, प्राकृतिके न्यायक परिष्कृत रूप थिक आ सामाजिक न्यायक नाम पर भ' रहल कुटिल आ कटु कुटनीति अन्ततः 'सामाजिक दलित' भाइ लोकनिक लेल सेहो घातके टा छनि। इतिहासक वैज्ञानिक व्याख्या त' एखन धरि यैह अछि, जे भारतीय समाज मे सामन्तवाद आ पूँजीवादक तालमेल भ' गेल अछि। ने त' सामन्ती-पूँजीवादी मानसिकताक अवसान भेलए पूर्णरूपेण आ ने समाजवादे पूर्ण प्रस्फुटित भ' सकल अछि। एहि-सभ चरणक घालमेल आ विचारधाराक पारस्परिक-संघर्ष मिथिला आ भारतक समाज केँ संक्रान्तिकालीन स्वरूप बनौने अछि, जे समकालीन राजनीतियो सँ द्रष्टव्य अछि। मार्क्स स्पष्ट कहि गेल छथि जे पूर्वी समाजक (orient) परिवर्त्तनक प्रक्रिया बहुत तेज नै अछि। अइ बातक खण्डनो नै भ' सकल अछि आ ई सत्यो प्रमाणित भ' रहल अछि। वस्तुतः कोनो दीर्घकालीन सामाजिक आ स्थायी-क्रान्ति लेल दू-चारि दशकक समय पैघ अन्तराल नै थिक। हजारो वर्षक जड़िआयल विषम-व्यवस्थाक अवसान मे समय लागि सकैछ। मुदा एत' त' जातिवादी-संघर्ष केँ हवा द' क' वर्ग संघर्षक धार भोथ करवाक षड्यंत्र राजनीति आ साहित्य-दुनू क्षेत्र मे जारी अछि। तखन प्रसन्नता एतबा अछि जे 'थिसिस' आ 'एन्टी थिसिस' मे एखनो संघर्ष जारी अछि आ 'सिंथेसिस' केर आश प्रबल रूपें बनल अछि। समाजवाद द्वारा कैल गेल इतिहासक व्याख्या, समाजक व्याख्या फूसि नै प्रमाणित भेलए। समाजवाद के आधार बना क' कैल गेल भविष्यवाणी रूपायित आ प्रकट नै भेल, से आंशिक सत्य थिक। समाजवादक सय रूप अछि, मार्क्सवादे टा नै। प्रूढ़ों आ हिगल केँ बिसरल ने जा सकैछ। लेनिन आ माओ त' अपना ढंगक छलाहे। हमसभ उत्तर-आधुनिकतावादी आ पूँजीवादी भ्रम नै पोसी, जे समाजवाद वा साम्यवादक पतन भ' गेल। मात्र कम्यूनिस्ट पार्टी आ कार्यकर्त्ताक पतन भेलए। संवर्गक कट्टरता आ भ्रष्टाचार, संगठन आ सरकार केँ पतनशील बनौलक अछि। मुदा विचारधारा ठामक-ठामहिं ताल ठोकि रहल अछि। समाजवाद सन उदार आ कल्याणकारी विचारधाराक कहियो पतन नै भ' सकैछ। ओ मौका पाबि क' पुनः ठाढ़ भ' ताल ठोकत समस्त विश्व मे। उत्तर-आधुनिकतावाद मात्र पुरान बोतल मे नव शराब थिक। पूँजीवाद, उत्तर-आधुनिकतावाद, भूमंडलीकरण आ वैश्वीकरण (वसुधैव

कुटुम्बकम् नै) उपभोक्ता-संस्कृति, इन्टरनेट-विस्फोट अहि सभ मे अन्तर्सम्बन्ध अछि आ से देखार अछि।

ईहो सत्य जे सभ भारतीय राजनैतिक दलक बुनियादी चरित्र एकहि अछि— खाहे ओ वामपंथी हो, दक्षिणपंथी हो वा मध्यमार्गी। शोषण अपन वीभत्स आ सूक्ष्म रूप मे एखनहुँ चकरी मारने अछि समाज मे। तेँ दिग्भ्रमिते लोक वा रचनाकार मार्क्सवादी वा समाजवादी केँ अपन दुश्मन मानत। तेँ लालू यादव अपने मोने टेढ़ त' भोगेन्द्र झा अपने मोने टेढ़। सत्य त' ई थिक जे इतिहास केँ ने त' पाछू घूसकाओल जा सकैछ आ ने अनायास तीव्र वेग सँ समकालीन समयक चरण पार करा क' असहज आ फोंकिला क्रान्ति आनल जा सकैछ। हँ, अपन भ्रम, स्वार्थ आ साहित्यक आवरण मे नुकायल कूटनीति, गुटवाद केँ अवश्य देखार कैल जा सकैछ, अपन फोंकिला-दंभक परिचय देल जा सकैछ।

रचनाकार आ सर्जक केँ सवर्ग आ अवर्ग मे बाँटब सेहो विभेदवादी, अङरेजी-साम्राज्यवादी आ पूँजीवादी मनोवृत्ति थिक। ई सभ अत्यधिक अनर्गल बात थिक। साहित्यकारो जँ सवर्ण-अवर्ण आ सामाजिक कर्मकाण्डक पचड़ा सँ उपर नै उठि सकल, त' एहेन साहित्य आ एहेन साहित्यकार कोन काजक? जे महा-आत्मनिष्ठ छथि, वस्तुनिष्ठताक सौकर्य जिनका नै छनि, ओ युगद्रष्टा, युगस्रष्टा, शाश्वत साहित्य-सर्जक आ संवेदनाक महाधिवक्ता केना हेताह? आ विश्व-मानवताक शिखर पर पहुँचिनाहर एकटा मनुक्ख रचनाकारक लेल नारी-काया-प्रवेश आ दलित-हृदय-प्रवेश मे कोनो टा दिक्कत नै! कोनो-ने कोनो अर्थ, मे दलित आ दमित भेलाक उपरान्तहि कोनो व्यक्ति रचनाकार आ सर्जक बनि पबैछ। सवर्ण अथवा अवर्ण (ऊपर अथवा निचाँ दिस सँ, जन्मना) रहैत, कोनो व्यक्ति साहित्यकार त' की, एकटा नीक लोक आ शत-प्रतिशत मानवो बनल रहवाक दंभ नै पालि सकैछ। मानवीय गरिमाक औचित्य 'सर्वप्रथम' वास्तविक सामाजिक दलित 'केँ छनि, 'करोड़पति सामाजिक दलित' अथवा 'सामन्त दलित' केँ नहि। पिछड़ा' वर्ग केँ पिछड़ा नहि मानि, दलित किए मानल जेबाक चाही? निम्नवर्गक उपरान्त, फेर निम्न-मध्यवर्ग केँ सेहो मानवीय गरिमाक जरूरति छैक। वर्ग-संघर्षवादी आ समाजवादी दृष्टिकोण केँ अप्रासंगिक बूझ'वला बन्धुवर कृपया 'वर्णवादी दृष्टिकोणक' अपूर्णता केँ बूझथि। दलित-लेखन करब आ दलित-जातीय

लेखक बनब आ दंभ पोसब-दुनू दू अलग-अलग बात थिक।

सामाजिक दलितक सम्पूर्ण मानवीय गरिमा आ सुन्दरताक संग चित्रणक नितान्त आवश्यकता अछि, जाहि हेतु जातिगत बन्धन अनावश्यके नै, अनुचितो बुझाइए। मन-बन्ध, निर्मल प्रेम, तरलता आ सन्तत्वक स्थिति, जे कि साहित्यकारक हेतु अपरिहार्य शर्त्त थिक, प्राप्त क', कोनो साहित्यकार आ व्यक्ति दलितक 'वास्तविक हितैषी' बनि सकैछ तथा 'निर्मल-हृदय दलित' हुनका हृदय सँ स्वीकार करताह। ओ (दलितगण) अपना वर्णक लाखपति शोषक केँ भ्रम-निवारणोपरान्त अवश्य नकारताह। दलित अपन कल्याणक ठिकेदारी ने त' उच्चवर्णीय आ उच्चवर्गीय सामन्त केँ देने छथि आ ने तथाकथित निम्नवर्णीय करोड़पति केँ। ईहो आवश्यक नै जे दलित-जातीय सुविधा-सम्पन्न अभिजात लेखको केँ, निर्धन दलितक निर्मल प्रेम भेटबे टा करनि।

मिथिलाक परिवर्त्तन-धारा अथवा संक्रमणकालीन गतिविधि वा सामाजिक चेतना केँ पुष्ट करबाक श्रेय जननायक कर्पूरी ठाकुर केँ छनि, डपोरशंखी तथाकथित 'बिहारी मसीहा' केँ नहि। डॉ. मिश्रक शिष्य अथवा गुरुदेव बनि क', अमुक झा केँ राजपुरोहित बना क', ई 'अमरीकी-डेमागोग' मिथिला केँ शिथिला बनेबाक कोनो टा कसरि नै छोड़लक। राज्य सत्ताधारी दलक अधिकतर सांसद आ विधायकक मिथिला-क्षेत्रीय हेबाक कारण त' एकदम्मे अलग अछि। वस्तुतः से सभ थिक– प्रजातंत्रक दुर्गुण, बिहारी जातिवादी कुत्सित मानसिकता, बाहुबल, धनखेल, लाठी-खेल, मशीनरी-दुरुपयोग, भाँति-भाँतिक भ्रष्टाचार, जिन्न-अवतार, 'फूट डालो, राज करो'क भेदनीति आदि... आदि...। ई सभ कारण जगजाहिर अछि। वास्तविक प्रतिनिधित्व त' एहि व्यवस्था मे दिवा-स्वप्ने अछि। तेँ तात्कालिक राजनीति मात्र केँ आधार बना क' कैल गेल सामाजिक मूल्यांकन अधूरे रहत। तेँ जरूरति एहू बातक अछि जे, उत्तर-आधुनिकतावादी भयावह अवधारणाक संगहि, 'हंस-ब्रान्ड' नारीवाद-दलितवाद (मानवीय गरिमा-विहीन) अथवा साहित्यिक सवर्ण-अवर्णवाद, आदि सँ सेहो परहेज कैल जाय। सृजनधर्मिताक विखण्डन आ जातीयकरण क' क' अनुलोम अथवा प्रतिलोम कोनो दिस सँ, मूल्यांकित करब साहित्य आ समाजक क्षतिए टा करब थिक। जाहि साहित्यकार मे दलित-चेतना, मानवीय मूल्य आ मानवीय गरिमाक वितरण मे, प्राथमिकता निर्धारित करबाक 'उदारता' आ 'बोल्डनेसक' वा 'समझदारीक' अभाव हो, ओहेन

साहित्यकार अपनहुँ उपकार नहि करताह, आ ने समाजेक उपकार क' सकताह। हमरा सभ केँ अपन भावी इतिहासक त' ध्यान रखबाके चाही, सम्पूर्ण मानव-समाजक भावी इतिहासक सेहो परवाह करबाक चाही। अपूर्ण मानदण्डक आधार पर कयल गेल मूल्यांकन अपूर्णे रहत। आरक्षण एकटा औजार थिक, दलितत्व दूर क' मानवीय गरिमा प्रदान करबाक, नहि कि दलितत्वक बहाना शताब्दी धरि बनौने रहबाक। आरक्षण लेल सभ जाति मे दलित बनबाक होड़ मचल अछि, साहित्यो मे आ समाजो मे, जाहि सँ दलितो 'बैसाखी-आधारित' बनल जा रहल छथि। दलितक स्वाभिमान टूटि रहल अछि, त' सामाजिक-सम्मान कोना बढ़त? जे आरक्षण प्राप्त क' पैघ लोक' बनि जाइत अछि, से अपना दूरा पर 'वास्तविक दलित' केँ पैर नहि राखए दैत अछि, अर्थात' दलित-जातीय-ब्राह्मण बनि जाइत अछि आ 'वास्तविक दलित' केँ 'पूर्व-दलिते' सँ सम्मान नहि भेटि पबैत अछि। तेँ भारतक आ समाजक कल्याण समाजवादी+दलितवादी+गाँधीवादी, तीनू अवधारणाक समन्वित एप्रोचे सँ संभव अछि, तीनूक बीचक 'अन्तर्विरोधक-कूटनीति' सँ नहि। तकर ध्यान सभ वर्ग, जाति, समुदाय केँ राखय पड़तैक। अन्यथा, तीनू वादक फराक-फराक रोदन 'गिदड़-कुकुरक गीत' साबित हैत। एहि फार्मूलाक जरूरति एखन एक शताब्दी धरि अवश्य छैक, भारतीय सामाजिक परिवर्त्तन आ सामाजिक चेतनाक अपेक्षित विकास हेतु। तेँ साहित्य केँ सामाजिक चेतना के माध्यम सँ, राजनैतिक चेतनाक प्रखर विकास करब जरूरी छैक, जे राजनीतिक नाङरि बनला सँ अथवा मात्र आरक्षणक झुनझुना वा बैसाखी वितरण केला सँ, 'नौ दिन चलय, अढ़ाइ कोस' वला कहबी चरितार्थ भ' सकत।

•

अंतरंग-2
बेगूसराय
'जानकी'-धनवाद

नकेनवादक प्रतिमान : 'अंतिका'क कूटनीति

कोनो पत्रिका समकालीन समय आ समाज केँ केना आ कतेक प्रभावित क' रहल अछि, तकर मूल्यांकन, संपादकीय नीति, दृष्टिकोण आ नेतक पड़ताल, ताहि लेल जरूरी भ' जाइत अछि। अंतिकाक कतेको अंक निकलि चुकल अछि आ से अंक वा संपादकीय सभ, कए कारणें अपना विरुद्ध निन्दा आ आलोचना आमंत्रित करैत अछि।

कोनो समाज आ तकर साहित्य लेल जतय आत्मावलोकन आ आत्मालोचना आवश्यक अछि, ततहि साहित्य वा समाजक नीर-क्षीर-विवेचनक आधारे पर समर्थन वा घमर्थन हेबाक चाही, नहि कि पूर्वाग्रह-आ-'मैनिया' आधारित। अंतिकाक प्रायः सभ अंक मे निरुद्देश्य आ रणनीतिविहीन, निरर्थक नकेनवाद आ उद्देश्यहीन विध्वंसवाद केँ स्थापित करबाक कूटनीति आ तिकड़म झलकैत अछि। दिल्ली-गाजियाबादक महानगरीय संस्कृति के अयना मे, हिन्दी सँ पैंच लेल गेल मानदण्डक आधार पर, मिथिलाक गाम आ कस्बाक मूल्यांकन करबाक 'दंभपूर्ण कपट कयल जा रहल अछि, 'अंतिका-समूह' द्वारा। महानगरीय मानदंड थोपबाक कुत्सित प्रयासक बानगी-स्वरूप 'अंतिका' क' कोनो एक अंक उठा लेल जाय। हम एतय 'अंतिका-2' उठा लैत छी, विवेचना हेतु। पत्रिकाक कोनो अंक मे प्रचूर 'टिप्पणी आ संपादकीय' निन्दनीय, आत्म-श्लाघा सँ भरपूर आ अवांछित रहैत अछि, मुदा साहित्य आ समाज-हित मे हम 'निन्दनीय' केँ 'आलोच्य' कहि प्रस्थान करैत छी। 'अंतिका' क' बहस आ 'संपादकीय' मे 'कूटनीतिक तिकड़म' क साम्यता अछि। एकैसम सदीक दोसर दशक मे सम्पूर्ण समाज आ साहित्य आत्म-निरीक्षण आ आत्म-मूल्यांकन करय, से आवश्यक अछि। प्राचीनताक अनावश्यक गौरव-बोध केँ 'खारिज' करब जँ एकदिस जरूरी अछि, त' दोसर दिस (आत्मश्लाघाक संगहि) हीनता-बोध स' मुक्त हैब सेहो अत्यावश्यक। अपन सांस्कृतिक-तत्व, जड़ि आ साहित्यिक समृद्धि केँ 'नकारब' नकेनवादक स्थापना करब आ अध्ययनहीनतेक द्योतक थिक। अपन धरोहरि स' परिचय पूर्णरुपेण स्थापित कइये क' ओकरा संग आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे तादात्म्य स्थापित करब आ समीक्षा करब औचित्यपूर्ण

थिक। से नहि केने संपादक पर अध्ययनहीनता आ 'आत्म-मुग्धता' केर उचित आरोप लागत। सैह विशेषता छनि अनलकांतक। उमापति, मनबोध, गोविन्द दास आ एकावली परिणयक रचनाकार कविशेखर बदरीनाथ केँ पढ़ब सेहो ओतबे आवश्यक, जतबा विद्यापति-ज्योतिरीश्वर केँ। शास्त्रीय साहित्यक सम्पूर्ण परिचयक बिना, ओकर आलोचना, स्वीकार वा नकार पर विर्त्त हैब, बिना हथियारक युद्धक्षेत्र मे पहुँचब थिक, आत्महत्ये टा थिक।

हम एहि चिन्ता स' सहमत हैब जे घमायल चेहरा बनैब आ तकरा लेल अयनाक जोगार करब आवश्यक, मुदा ताहि लेल अध्यवसाय छोड़ब अनावश्यक अछि, अपितु नौकरीक लौल छोड़ब (विशेषतः सरकारी) आवश्यक अछि। एहेन नै अछि जे मिथिला मे आन्तरिक सामाजिक तनाव विद्यमान नै अछि। खूबे अछि। तकर कारण आ परिस्थिति सेहो विद्यमान छै। ओइ लेल मिथिलाक लोकक संग सरकार की कम जिम्मेवार अछि? मानैत छी, जे हमरा लोकनिक पुरान आ जड़ संस्कार, इन्द्रिय-लिप्सा', जीह-स्वाद-लिप्सा सेहो उत्तरदायी अछि। ईहो मानब जे फुसियाँहीक दंभ थिक 'शान्तिप्रिय' हेबाक। मुदा सभ लेखक थोड़बे मध्य आ उच्च वर्गीय मानसिकताक शिकार छथि? किछु छथि अवश्य। एना एक्कहि लाड़नि स' सभ मैथिलीक लेखक केँ लाड़ि देब, पूर्वाग्रह-ग्रस्त हैब आ 'अनुचित एप्रोच' थिक। संपादकीय मे लेल गेल चारि नामक अग्रिम कड़ी (वा पहिनहि) मे आब'वला नाम स्व. किरण जीक थिक, जिनकर आन्दोलनी-व्यक्तित्व वेशी जगजियार हेबाक कारणें, हुनकर साहित्य कम पढ़ल गेल अछि, जाहि मे हुनकर कोनो टा दोष नहि। पाठक 'किरण कवितावली' 'कतेक दिनक बाद' आ 'कथा किरणें' पढ़थि आ कहथि जे हुनका 'जकर भाग्य' मे हैत, से अण्डैल पोठी खैत' (यात्रीजी) चाहियनि किंवा 'जे करत 'उद्योग' से अण्डैल पोठी खैत' (किरणजी) चाहियनि वा दुनू चाहियनि? यात्रीजी स्वयं 'चिनगी मंच' दरिभंगा, द्वारा आयोजित समारोह मे किरणजी केँ 'अपन दोसर गुरुदेव' (पहिल स्व. कविवर सीताराम झा) मानने छलाह आ स्वीकार केने छलाह जे— 'जब मैं अपने रास्ते से 'भुतिया' गया था, तो इन्होंने मुझे 'कान पकड़कर' सही रास्ते पर लाया था।' कमला लाइब्रेरीक ओहि समारोह मे सुमनजीक सम्पूर्ण इसकुलक संग सोमदेवजी सेहो उपस्थित छलाह।

हम छट्ठम सातम आ आठमो नाम साहित्यकारगणक ओइ कड़ी मे

प्रभास, राजमोहन घूमकेतु, सोमदेव, धीरेन्द्र आ जीवकान्तक जोड़ब। किसुनजी आ मायो बाबूक जोड़ब। मुदा एहि लेल हमरा अपन आँखिक चश्माक अनावश्यक पावर केँ थोड़ेक घटाब' पड़ि सकैए। कोनो जीवित मैथिल रचनाकारक पोथीक एक हजार प्रति एक वर्ष मे नै बिका सकबा मे रचनाकारक दोष अत्यल्प छनि, समाजक दोष वेशी छैक। रचनाकार त' पेट काटि क' पोथी छपबैत अछि आ 'सर्कुलेशन-मशीनरी'क अभाव मे काहि कटैत अछि। मिथिलाक संगे अनगनित समस्या छैक जाहि सँ हम सभ गोटे परिचित छी। मुदा हिन्दी केँ कोन घून लागि गेलै, जे आब पाँचे सय प्रति नीक-नीक रचनाकारक छपै छै? जखन हिन्दी मे पाठकीयता एना क्षिप्र गतिएँ छूटि रहल छै, जे कि भारतक जमीन्दार-भाषा आ सर्वतोभावेन साधन-सम्पन्न अछि, तखन मैथिलीक के पूछय? पाठकीयताक एहि अकलबेरा मे हम अहाँक चिन्ता मे सम्मिलित रहब, मुदा आत्म निर्वासन स' दूर भ' क'। आइ मिथिला मे बहुत रास लोक छथि, जिनका लेल लेखन 'बुद्धि-विलास' नही अछि। हुनका सँ परिचय क' क' कड़ी जोड़बाक बेगरता छै। कथागोष्ठी स' आलोचना सुनबाक धैर्यो (पहिनेक अपेक्षा) बहुत विकसित भेल अछि। मुदा पोथीक आलोचना, समीक्षा आ गारि मे अन्तर अछि। आलोचक केँ अविवेकी आ दुष्ट-भाव सँ बाँचब आ मिथिलाक भयावह परिस्थितिक ध्यानो राखब आवश्यक, जाहि भयावह परिस्थितिक अन्हार केँ एखनहुँ साहित्ये आ हड्डी-दान करएवला साहित्यकारे दीप जकाँ टिमटिमाक' चीड़ि रहल छथि आ किछु आन्दोलनी अपन पातर डाँड़ मे ढट्ठा बन्हवाक बेर-बेर उपक्रम करैत देखाइत छथि। हम 'रचनाक संग-संग आलोचना'क अस्तित्व केँ स्वीकारब, मुदा अति-नव पीढ़ी केँ गारि आ गोलैसी सँ परहेज करबाक आ मैथिलीक साहित्येतिहासक सम्यक् अध्ययनक परामर्शो देब। बहस मे जेना अनकर विचारक सम्मान करैत, खंडन-मंडन हेबाक चाही, अभिव्यक्ति-स्वातंत्र्य सभ केँ हेबाक चाही, तहिना आलोचना आ समीक्षा मे न्यूनतम-आवश्यक मर्यादाक ध्यानो राखल जेबाक चाही। व्यक्तित्व आ चरित्रक हनन साहित्यक कहियो उद्देश्य नै रहल अछि। नीक साहित्यकारक पोथी केँ नहि त' आलोचकक दुष्टता किछु बिगाड़ि सकैछ आ ने समीक्षकक दयाभावक जरूरति रहै छै। संतुलन एहि दुआरें आवश्यक, जे आलोचकक छवि संतुलित स्थापित होनि। आलोचक, अभिभावक नै होइ छथि साहित्य वा समाजक।

आ हुनकर इंगितिक अनुसार जँ साहित्य-सृजन भेल, त' साहित्य आ समाजक महाकल्याणे' टा हैत। दुनूक सह-अस्तित्व कल्याणकारी अछि आ छोट-पैघक 'काल-निर्णये' टा संभव। 'दण्डपाश' ने त' रचनाकारक हाथ मे अछि आ ने आलोचकेक हाथ मे। ओइ पाठकोक हाथ मे 'दण्ड-पाश' नै अछि, जे पाठकीय साक्षरताक प्रतिशत बढ़ाबक बदला मे, साहित्य केँ जमीन पर आनबाक भ्रम मे 'घटिया-स्तर धरि' पहुँचा देबाक कामना रखैत छथि। साहित्यक यात्राक गति तेज अछि। ओ समाज-सापेक्ष त' अछि, मुदा सभ संवर्गक पाठकक 'लेयर' अलग-अलग रहबाक कारणें, निम्नतम लेयरक सापेक्षो रहत, त' साहित्य बनि क'। जँ कोनो साहित्यकारक यथास्थितिवाद (नव वा पुरान) 'फासिज्म' धरि पहुँचैत छनि त' हुनकर कोनो टा चिन्ता करबाक आवश्यकता नै। ओ बुझू जे काल-ग्रास बनबाक लेल तत्पर छथि। मुदा जँ से हुनकर यथार्थ नै, त' आलोचकक ई स्थापना हुनका आत्महत्याक गर्त्त धरि लइये टा जेतनि, से तार्किक परिणति थिक। अन्ततः 'फोंकिला-क्रान्ति' 'यथास्थितिवादे' जकाँ असहज आ क्षणभंगूर होइछ।

सत्य त' स्वतः साहित्य मे आबिए जाइ छै, कोनो रचनाकार वा आलोचकक रोकने रोकल नै जा सकैछ। तहिना साहित्यक प्रासंगिकता त' वर्गविहीनो समाज मे रहतै, आन कोनो टा समाज मे त' छैके। ई परम आश्चर्यक आ नकारात्मक बात थिक जे मैथिली साहित्यक सय सालक इतिहास मे मिथिलाक जन-संघर्ष सामाजिक संघर्ष आ युगक सही चित्र संपादक केँ कतहु नै भेटै छनि। समस्त देशक साहित्य स' सम्पर्कित लोक जनैए, जे मैथिली भाषा आ साहित्य कतेक समृद्ध अछि। जतेक मुख्य साहित्यकारक नाम गनाओल गेल अछि, सम्पादकीय मे, तिनकहि लेखन ई प्रमाणित करबा लेल काफी अछि। आ तकर बादोक विकास मे सामाजिक तनाव, संघर्ष आ चेतना खूबे अछि। कोनो एकटा मात्र चालू दशकक साहित्य-सृजनक सर्वेक्षण कैल जाय, त' ई सभ तत्व प्रचूर भेटत। न्यूनतम शताधिक कथा-कविताक सूची हम उपस्थापित करब, जँ छापल जा सकय। वर्तमानक सत्य त' ई थिक जे भारतक अधिकतर भाषा मे मैथिलीक रचना आदरपूर्वक स्थान पाबि रहल अछि। एकरहु सूची प्रस्तुत करब आब कठिन नै अछि। हृदय पर हाथ राखि कहल जा सकैछ, जे जतेक भाषाक साहित्यक नाम गनाओल गेल अछि, तकरा सबहक अपन-अपन सौन्दर्य-बोध आ

विकासक प्रतिमान छैक। आ से मैथिलीयों केँ प्रचूरतापूर्वक 'खास अप्पन' छैक। तकरा चिन्हबाक लेल मिथिलाक समाज, संस्कृति, परिवेश, पात्र, मैथिलपना, जमीनी-यथार्थ आ मिथिला केँ 'सम्पूर्णता मे' चीन्ह' पड़तै। आश्चर्यजनक सत्य थिक जे मैथिलपना, आलोचना आ प्रेम दुनूक पात्र एकहि संग थिक आ तकर सूक्ष्म कारण बूझ' पड़त। अपन टेटर देखब बड्ड नीक बात थिक, मुदा तकर प्रत्यक्षीकरणक परिणाम जँ हीनभावना सँ ग्रसित हैब थिक, त' से कल्याणकारी नै। आत्म-निरीक्षणक संगहि आलोचना आ मिथिलाक खोज दुनू आवश्यक। ई खोज कतहु स' गौरव-बोध (अनावश्यक) केर सृष्टि नहि करत। एहि सभ काज लेल साहित्यकारे टा जन्म लेने छथि मैथिली मे। संस्कृतिकर्मी, पत्रकार आ अनुसंधानकर्मी कत' सूतल छथि? अनेरो साहित्यकार केँ गरिअयबाक परंपरा घातक अछि, जखन कि किछु आन्दोलनकर्मी केँ छोड़ि, मिथिलाक आन कोनो संवर्ग सूतले टा अछि।

हमरा बुझाइछ अनलकांत केँ अपन दीर्घ साहित्यिक परंपराक गहींर अध्ययन केलाक उपरान्ते आ एम्हरूका दशक सभक साहित्यक अत्यधिक परिश्रम आ इमानदारीक संग अध्ययन कइये क' मैथिली-साहित्य मे भेल काज केँ स्वीकार अथवा नकार करबाक चाही। एहि शैली मे खारिज करब, आत्महत्या आ हीनभाव-सर्जक हैत, जाहि स' मिथिलाक साहित्य आ समाजक पैघ क्षति संभावित अछि। कोनो पत्रिकाक संपादकीय आलेख पैघ हथियार थिक, लकर सतर्कतापूर्वक प्रयोग हेबाक चाही। 'निहिलिज्म'क नकारात्मकता, शून्यता आ अराजकता घातक होइछ, जँ तकर बादक चरण मे, सृजनक सकारात्मकता नहि हो। आ सृजनक सकारात्मकता आत्म-निर्वासन आ आत्म-नकार मे नै, अपितु आत्म-निरीक्षण, समालोचना आ सम्पूर्ण-स्वीकार मे अछि। जँ देरिदा, मारक्वेज आ फूकोयामाक प्रभाव मे आबि क्यो मिथिलाक इतिहासक अन्तक घोषणा करी, क्यो सभ्यताक अंत (ता. वियोगी)क घोषणा करी आ क्यो 'कविता'क अंतक घोषणा करी, त' ताहि स' नीक हैत, जे हमरा लोकनि अपना अपना भ्रमक अन्तक घोषणा करी। साहित्य आ सामाजिक-जनतंत्र मे ककरो फतवा-फरमान जारी करबाक अधिकार नै होइछ। सभक अभिव्यक्ति-स्वातंत्र्यक सम्मान करैत, लोक-स्वीकृति आ काल-निर्णयक प्रतीक्षा करबे, कोनो साहित्यकारक न्यूनतम मर्यादाक अनुकूल अछि। अपन टेटर ताकब आवश्यक, मुदा अपना-आप केँ नाङट

क' क' देखब' काम्य नै भ' सकैछ, जखनकि सांस्कृतिक परंपरा जनवादी आ धनीक हो। राजमोहन जीक सम्बन्ध मे कैल गेल संपादकीय टिप्पणीक भविष्यवाणी, जे एहेन 'होल- टाइमर' लेखक' मैथिली साहित्य केँ साइत भविष्य मे नै भेटत' अनावश्यक अछि। एहेन भविष्यवाणीक कोन बेगरता, जखनकि लेखक माटि स' जनमैत अछि आ मिथिलाक माटि कत्तहु सँ कम उर्वर नहि अछि? कोनो पत्रिकाक संपादक ज्योतिषशास्त्री त' नहि होइत अछि, साहित्यक? अनावश्यक आ उछालवला वा भट्ठा बैसाबवला विशेषणक उपयोग, 'अंतिका' केँ कोना छजतै?

जीवकान्त जीक साक्षात्कार 'मनोरंजक आ हास्यास्पद' अछि, जे कए बेर भेल अछि। ओ अनेक साक्षात्कार मे विरोधाभासी विचार, द्वैध आ अन्तर्द्वन्द्वक महाजाल मे अपना-आप केँ फंसौलनि अछि, जे मोटा-मोटी हुनकर तार्किके परिणति थिक। साक्षात्कारकर्त्ता, अपन नेतक अनुकूल, हुनका सँ कए टा कमजोरी गछबाब' मे सफल भेलाह अछि। जीवकांत जीक कूटनीतिक यथार्थ, हुनकर निबंध आ साक्षात्कार सभ मे स्पष्ट अछि। गुटबन्दी आ चेला-चटियावाद सेहो सु-स्पष्ट अछि, जेना, एकटा फराक साक्षात्कार मे मैथिलीक नीक कथाकार-उपन्यासकार प्रदीप बिहारी केँ, ओ 'मैथिलीक प्रमुख कवि' मे परिगणित केलनि अछि(अंतरंग)।

अनलकांतक संपादकीय मे कएठाम 'ताकि' शब्द अनेरो 'जाहि सँ' केर स्थान छेकने रहैए वा छेकने अछि। हमरा लोकनि केँ विकल्पहीनतेक स्थिति मे परभाषिक शब्दक शरण मे जेबाक चाही आ ताहू मे पचबा योग्य वा पचल शब्दक ताकूत करबाक चाही। संपादकक भाषा एतेक 'हिन्दीदाँ' आ दयनीय छनि? 'भरि राति भोर' क संजय कुन्दन द्वारा कैल गेल समीक्षा एक भग्गू भ' गेल अछि आ पोथीक संग न्याय नै भ' सकल अछि। शहरी जीवनक प्रामाणिक आ जटिल चित्र-जे हुनका नै भेटलनि, से हुनकर नेत पर आङुर उठबैत अछि। समीक्षा लिखल गेल अछि, पोथी केँ पूर्णरूपेण खारिज करबाक नेत स', से स्पष्ट अछि। हुनकर कएटा बात गंभीर असहमति-योग्य छनि। मैथिल समाजक मध्यवर्ग आ एहि पोथीक कए कथाकार आत्ममुग्ध भ' सकै छथि। फेर कहब, एकहि लाड़नि स' सभ किछु केँ लाड़ि देब 'पूर्वाग्रहग्रस्त भ' क' सरलीकृत वक्तव्ये' प्रसारित करब थिक। कोन समाजक किछु गोटे मे, अपन संस्कृतिक प्रति, एकटा 'छद्म अहं' नै रहैछ

भाइ? एतय प्राचीन काल मे के कहय, पूर्व-मध्यकाल आ मध्यकालो मे संवाद करबाक सुदीर्घ परंपरा रहलैए, जकरा स' कुन्दनजी केँ परिचये नै छनि भरिसक। आशा छल जे परिचय हेतनि। सत्य तँ ई अछि जे जिनका अपन सांस्कृतिक विरासतक परिचय नै रहैत छनि, से छद्म-आधुनिकताक वाना ध' क' अपन संस्कृतिए केँ नकारैत छथि। सांस्कृतिक मूल्यांकन करब एक बात थिक आ अस्तित्व-इन्कार दोसर बात। अपन ज्ञान-दारिद्र्य केँ नुकेबाक बदला मे, हमरा लोकनि केँ गहींर परिचय स्थापित करबाक श्रमशील प्रयत्न करबाक चाही, से वेशी तर्कसंगत थिक। दिल्ली स' मिथिलाक सांस्कृतिक दारिद्र्य देखायब अस्वाभाविक नै। मिथिला-भ्रमण क' क' मैथिली भाषा आ साहित्यक आद्योपान्त आ सांगोपांग अध्ययन क' क', तखन क्यो कलम चलाबथि, त' अपन गंभीर-ज्ञान तिनका उत्थर सपाट-बयानी' स' बचौतनि। नहि बिसरबाक थिक, जे हम सभ गोटे अपन-अपन इतिहासे लिखि रहल छी। हम सभ मैथिल इतिहास आ वर्त्तमानक कालिमा पोछबाक आ ज्योतित करबाक प्रयास करी। अपन कारी व्यक्तिगत इतिहास लिखी आ हीनभाव- कुंठा बोकरी, -ताहि स' परहेज करबाक चाही। अन्यथा, मूल्यांकन त' ठामहिं छूटि जैत, परिवेश अवश्ये प्रदूषित हैत।

मैथिली-साहित्य, समाज आ संस्कृति बहुत उदारतापूर्वक बाह्यतत्व केँ ग्रहण क' रहल अछि आ बहुत दूर धरि करबो केलक अछि। बहुत रास परिवर्त्तनशील तत्व सभ गाम मे सद्यः झलकै छै। सभ रचनाकार गामक प्राचीने चित्र (नॉस्टेल्जिक) नै घिचैत छथि। पोथीक कए कथा मे लेखकीय श्रम उचित स' कम भेल हो, सेहो संभव! बदलैत समाजक प्रतिध्वनि मैथिली-साहित्यक सभ विधा मे खूबे आबि रहल अछि। ताहि पोथी सभधरि कुन्दन जीक पहुँच होनि शीघ्रे, से कामना अछि।

राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क स' कोनो समुदाय अधिक समय धरि कोना कटि सकैए? ताहू मे एहेन वैश्वीकरणक युग मे? गामक भनसा-घर धरि बजार पहुँचि गेल अछि। मैथिल-संस्कृति केँ बाह्य-आक्रमणक खतरो छैक आ प्रगतिशील वाह्य-तत्व केँ ग्रहणो करबाक छैक। आब एहि पातर सीमा-रेखा केँ संजय कुन्दनक पीढ़ी आ खोल मे बन्द आत्ममुग्ध कथाकार दुनू पक्ष केँ बूझ' पड़तनि। मैथिली-कथा मे प्रवासी मजदूरक पीड़ा आयब अवश्यंभावी अछि आ कए रूपें अयबो केलैए कएठाम। बुझाइछ, संजयजी

'कोसी के आर-पार' (सं. रमेश नीलकमल) कथा संग्रह नै पढ़लनि-हें। कथा-संग्रह त' ओ (भरि राति भोर) सेहो बुझाइए-नहिए पढ़लनि अछि। अन्यथा, ओ उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' आ रामदेव झा केँ एहि पोथीक कथाकार मे परिगणित नहि करतथि। पता नै, ओ सभ कतय भेटि गेलखिन, एहि पोथी मे संजयजी केँ? एना अ-गंभीर पाठकीयताक बदौलत, गंभीर समीक्षा लिखब असंभवे जकाँ अछि। बिना पढ़ने समीक्षा लिखबाक प्रतिमान-संजय कुन्दन आ अनलकांते स्थापित क' सकै छथि।

आ अंत मे, अंतिका-2 केँ एहि कारणें धन्यवाद दी जे ओकर नकारात्मक 'एप्रोच' सँ कएटा 'बहस' उठल। मुदा से त' 'अंतिका'क सभ अंक सँ उठल-उठैत अछि वा उठि सकैत अछि। 'नकेनवाद' आ 'निरर्थक विध्वंसवाद'क आधार पर लिखल गेल सस्ता संपादकीय आ टिप्पणी सँ, आर की अपेक्षा कयल जा सकैछ? तेँ दरभंगा आ सहरसाक कएटा लेखक 'अंतिका'क आजीवन बहिष्कार केने छथि, जाधरि अनलकांत संपादक रहताह। विक्षिप्तयुक्त 'अंतिका-ब्रान्ड-संपादकीय' सँ 'प्रति-अंक' 'फोंकिला-क्रान्ति' होइत अछि आ फेर दिल्लीवला क्रान्तिक बुलबुल्ला तुरंते फूटियो जाइत छै, जेना निसाँक रमकी क्षणभंगूर होइत अछि।

•

कृष्ण-'प्रस्थानक' मयूरपंखी आख्यान

कएटा शुभ-लक्षणक संग, मैथिली भाषा-साहित्य मे, हेवनि मे, एकटा ईहो शुभ-लक्षण आयल अछि जे लेखकगणक पॉकेट-वला छद्म-प्रकाशन-संस्थाक संख्या घटल अछि आ वास्तविक प्रकाशन-संस्थाक संख्या बढ़ल अछि। पोथी सभ पर आइ.एस.बी.एन. संख्या धुरझाड़ चढ़' लागल अछि आ नयनाभिराम पोथी सभक पथाड़ लागि गेल अछि। मैथिली मे प्रिंट-मीडियाक साहित्य शीर्ष पर अछि।

दोसर शुभ-लक्षण सेहो संज्ञान लेबा योग्य अछि, आ से ई अछि, जे अजित आजाद (नवारंभ, मधुबनी) आ दिलीप कुमार झा (मैथिली साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति, आदर्शनगर, मधुबनी) सन युवा-कर्मठ-सक्रिय साहित्यकारक ऊर्जा सँ सम्पन्न, दुनू संस्थाक आ आन अनेक सक्रिय साहित्यिक व्यक्तिक अविराम सक्रियता सँ, मधुबनी नगर आ जिला, सक्रियताक चरम पर आबि गेल अछि, जकरा पूर्वहिं सँ ऋषि बशिष्ठ आ प्रख्यात लेखक उदय चन्द्र झा 'विनोद'क (रहिका) आशीर्वाद प्राप्त छै।

विभिन्न सफल आयोजनक यशभागी सैह संस्था, मैथिली साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति, मधुबनीक सौजन्य सँ, प्रो. उमाकान्त सन व्यंग्य-लेखकक, अपना भारतीय मिथक-साहित्यक पुनर्लेखन-धाराक सशक्त उपन्यास 'प्रस्थान' प्रकाशित भेल अछि, जे प्रो. उमाकान्तक छनि। एखन धरिक व्यंग्य-लेखन-धाराक लीक सँ अलग हँटि क', लेखकक नव-धारा आ नव-प्रस्थान-बिन्दु प्रमाणित भेल अछि।

हेवनि मे, मैथिली मे, उपन्यास-लेखन मे आयल स्वागतेय गतिक अनुकूल, कृष्ण-महाप्रयाण-कथा केँ, उपन्यास मे समेटि क' गतानल-विश्लेषण प्रस्तुत करबाक यशभागी लेखक आ प्रकाशक भेलाह अछि, से मान' पड़त।

मैथिली मे धार्मिक-साहित्य-आधारित-काव्य-लेखनक संग, आधुनिक कथा-लेखन सेहो, पैघ लेखक जीवकान्तजी, 'बबाजीक बेटी' (प्रिया) जकर कथा महाभारत-आधारित छल, नव दृष्टिकोण सँ, पुनर्लेखन केने छलाह। हिन्दी मे तेहेन तरहक प्रचूर लेखन नरेन्द्र कोहली, डॉ. राम कुमार 'भ्रमर',

द्रोणवीर कोहली आदि केने छथि। एमहर श्याम दरिहरेक 'घुरि आउ मान्या' सँ, जे उपन्यास-धारा नव प्रस्थान-बिन्दु तय केलक, ताहि क्रम केँ, विश्लेषणाधीन उपन्यास 'प्रस्थान' मजगूत बनबैत अछि। यद्यपि भारतीय मिथक-साहित्य-आधारित, मैथिलीक पुनर्लेखन-साहित्य, नवतावादी-आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे लिखाइतो, 'मैथिली-समाजक प्रगतिशील मूल्यकेँ' 'फड़िआ क'' स्थापित क' नहि पाओल अछि। तथापि 'प्रस्थान' क लेखकक 'तारतम्य' (लिखब, तँ पढ़ता के, आ किएक?) केँ तोड़लक अछि, ई कृति आ पुनर्लेखन-परंपरा!

उपन्यासक कथानक महाभारतक मौसल-पर्व (कृष्ण-बलरामक महाप्रस्थान) आ महाप्रस्थानिक पर्व (पाण्डव-प्रस्थान-आख्यान) केँ समेटि क', प्रस्थान करैत अछि। दुनू पर्वक कथानक केँ औपन्यासिक शिल्प मे बूनब, तकर तर्कसंगत विश्लेषण, स्थापित ऐतिहासिकताक अनुकूल करब, एकटा जटिल पुनर्लेखन छल। यद्यपि लेखक एहि सँ पूर्वहुँ, 'उत्तर-चरित' आधारित नाटक 'सीता' आ पौराणिक कथा-आधारित 'बाबाजीक वियाह (2012) लिखने छलाह, मुदा 'प्रस्थान' तँ भूमिका-लेखक उदय चन्द्र झा 'विनोदक' शब्द मे 'उन्मादी समाज हेतु संजीवनी' थिक।

'द्वारका' आ प्राचीनकालीन 'दारूक-वन' एखनहुँ एक्कहि ठाम अछि, जे प्रभास-क्षेत्रक नजदीके अछि। तकर उच्चारण मिथिला मे 'द्वारिका' रूप मे होयब, शब्दक स्थानीयकरण-मात्र थिक। 'प्रस्थान' मे यदुवंशक विनाश-कथा सेहो वर्णित अछि, मुदा 'विनाश काले विपरीत बुद्धि' जकाँ सम्पूर्ण यदुवंश, मदिराधीन आ गाँधारी-श्राप-अधीन भ', विनाश-काल मे अपन 'जड़िये' बिसरि गेल।

पाश्चात्य विद्वान रुसो कहलनि जे मनुक्ख मे आसुरी आ देवत्व दुनू तरहक प्रवृत्ति, प्राकृतिक रुपें रहैए। जेहेन वातावरण भेटै छै, तेहेन विकास होइ छै। जंगल मे रहत, तँ 'मोगली' बनत। समाज मे रहत तँ 'मनुक्ख' बनत। धूमकेतु अपन लेखन मे 'मनुक्खक देवता' आ 'देवताक मनुक्ख'क बात आ खोज करैत चलि गेलाह। वस्तुतः मनुक्खक शरीर नहि, आचरण प्रधान होइत अछि आ हेबाक चाही। कंस आ दुर्योधन वा जरासंधक शरीर मानवीय छल, प्रवृत्ति आसुरी छल। असुर-कुलक होइतहुँ, राजा बलि आ प्रह्लाद प्रातःस्मरणीय छथि आ देवराज इन्द्रक क्रियाकलाप देवत्व-मर्यादा-प्रतिकूल

होइत रहल। तें देवत्वक एकभग्गू आदर्श-जाल सँ वेसी महत्वपूर्ण मनुक्ख तक सही दिशा मे विकास थिक, जकर मूलाधार संतुलन थिक। सकारात्मक मानवीय प्रवृत्ति, आसुरी आ दैवी-दुनू प्रवृत्ति सँ बेसी महत्वपूर्ण अछि, मानव-समाज लेल, जकरा बुद्ध 'सम्यक् व्यवहार' कहलनि अछि। तेँ मनुक्खक देवत्व आ असुरत्वक खोज सँ बेसी जरूरी 'मानुषी-प्रवृत्ति' केँ व्याख्यायित आ विश्लेषित करब थिक।

'प्रस्थान' मे जीवनक संध्या-काल मे कृष्ण-चरितक वा अर्जुन-चरितक 'मानवीकरण' प्रस्तुत भेल अछि, जखन सभ महायोद्धाक 'चमत्कार-सामर्थ्य' समाप्त भेल आ सामाजिक भावना सभ केँ, 'शान्ति-पर्वक शान्ति-काल' मे लेखक प्रस्तुत केलनि अछि। वर्णित अवधिक कृष्णक हाथ मे ने बाँसुरी छनि, ने सुदर्शन-चक्र; अर्जुनक गाण्डीव मौन आ शक्तिहीन छनि; अश्वत्थामाक माथ मणिविहीन आ वीभत्स, घाव-रक्त सँ भरल छनि; बलरामक हाथ मे हर-हरखारा नहि, मदिरा-पात्र छनि। एहना सन स्थिति मे, सभ पात्रक 'दैवीकरण' समाप्त छनि आ 'मानवीकरण' भ' गेल छनि। सभ पात्र करूणा, दुःख, संताप, प्रायश्चित्त लेल छटपटाइत, अपन-अपन 'प्रस्थान' लेल पुष्ठभूमि आ 'मूड' बनबैत, नियत आगामी कर्त्तव्य (महा-प्रयाण) लेल तत्पर, जीवन-जाल समेटैत, काल-निर्णय केँ स्वीकार करैत, व्यथा-वेदना अपना-अपना अंतस् मे भोगैत, स्तब्ध, हकोप्रत्याश, भारी समय केँ कहुना कटैत, अपना स्मृति सँ जान छोड़ेबाक कोशिश करैत, जिजीविषा सँ दूर भगैत, ' हा कृष्ण, हा कृष्ण' करैत, आत्माक आर्त्तनाद मे जिबैत छथि। 'वही धनुषा वही पारथ, हरि बिनु को पुरिहें पुरूषारथ?'— अही गीतक धुन उदासी जकाँ नहि, समदाउन जकाँ उद्धव, द्रौपदी, अर्जुन, दारूक, यमुना, गोकुल— सभ गाबि रहल अछि— 'प्रस्थान' मे। उल्लास मे, मात्र बरसानेवाली राधा, कृष्णक विक्षिप्त-प्रेम मे डूबल, रायान गोपक पत्नी बनलि, गोकुलक एकटा विधवा छथि! समस्त उपन्यास मे एकमात्र उल्लसित, वस्तुतः समर्पित कृष्ण-प्रेम मे विक्षिप्त! प्रेम, करूणा, विरह-वेदना, विरक्ति, चरम भक्ति सँ ल' क' दुःख-संताप धरिक भावना-संवेगक एहेन मनोरम चित्रण आ मेंही विश्लेषण उपन्यास केँ सार्थक बनबैत अछि।

कृष्णक प्रस्थान, नन्दग्राम-गोकुल, वृन्दावन-मथुरा सँ, हस्तिनापुर आ अंततः द्वारिकापुरी सँ भेल; प्रभास-क्षेत्र सँ स्व-धाम-गमन भेल। मुदा जें कि

उपन्यासक स्रोत मात्र 'महाभारत' थिक (शुक-सागर/श्रीमद्भागवत महापुराण नहि) तेँ कृष्ण-बलरामक भौतिक देहक अन्त्येष्टि अर्जुन द्वारा चित्रित भेल अछि, जखनकि श्रीमद्भागवत महा-पुराणक एकादश-स्कन्धक एकतीसम अध्याय भगवान कृष्णक, भगवान रामे जकाँ स-शरीर स्व-धाम गमनक वर्णन करैत अछि, यद्यपि बहन्ना दुनू ग्रंथ मे जरा-व्याधाक तीरे अछि, जे हिरण बूझि भूलवश चलाओल गेल छल। दुनू महाग्रंथ मे जरा केँ एकलव्य नहि मानल गेल अछि, आ ने तकर चर्चे अछि, जेना कि विनोदजी कहैत छथि। शुक-सागरक जरा केँ बरदान द' श्रीकृष्ण अपना सँ पूर्वहिं स्वर्गारोहण करबा दैत छथिन, शापमुक्त क', जखनकि 'प्रस्थान' क जरा (व्याधा) अर्जुन-दारूक केँ संदेश कहबाक लेल आ अपन अपराधक संताप मे नोर बहेवाक लेल, कृष्णक भौतिक शरीर केँ ओगरबाही करैए।

स्थूल-रुपें उपन्यासक प्रतिपाद्य मुख्य नायक कृष्णक प्रस्थान बुझाइए, मुदा प्रस्थान तँ कृष्णक पहिने बलराम आ बाद मे वसुदेव-देवकी, कुन्ती, विदुर, गांधारी-धृतराष्ट्र, दारूक, उद्धव, द्रौपदी, अर्जुन, सभ पाण्डव, सम्पूर्ण यदुवंशी आ कृष्णक सभ उत्तराधिकारी, ढलैत द्वापरक पिराउँछ सूर्य :- सभक प्रस्थान, भयमुक्त, मुदा, संताप-युक्त होइत अछि। संताप आ करूणा केँ प्रतिपाद्य निमित्त चूनब लेखकक साहस थिक। अश्वत्थामाक प्रस्थान संभव नहि छल, तेँ ओ अभिशापक संताप धरतीए पर भौगैत छथि, तीन हजार वर्षक गिनती करैत। राधाक प्रस्थानक कोनो उल्लेखे नहि अछि कतहु, तँ लेखक की करताह? महाभारत मे बाँचल पात्र सभक दारूण-व्यथाक एहेन जीवन्त वर्णन आ तकरा माध्यमें शाश्वत सत्य सभक उद्घाटन मे कोनो कोताही नहि भेल अछि। अर्जुन-उद्धव-प्रसंग, उद्धव-अश्वत्थामा-प्रसंग, देवकी आ द्रौपदीक विलाप, उद्धव-राधा संवाद, अद्भुत चित्रित भेल अछि। हृदयक संवेदना छूब'बला गहींर-दर्शनक आर्त्तनाद। तहिना प्रकृतिक-चित्रण सँ उपन्यास उब-डुब करैए, जे उपन्यासक सोलह श्रृंगार, लेखकक भाषा-सामर्थ्य संग मिलि क' केलक अछि। छोट-छोट प्रसंग, उप-कथा सभ केँ, लड़ी मे गाँथबा मे महारत प्रदर्शित केलनि अछि। संतापमय शान्ति-कालक पात्र सभक हृदय मे लड़ल जाइत आंतरिक कुरूक्षेत्रक आ अन्तर्द्वन्द्वक विश्लेषण आ उपस्थापनक तरीका लेल उपन्यास चिर-स्मरणीय रहत।

तखन शिशुपाल-वध-प्रसंग, जरासंध-प्रसंग, महाभारतक पूर्वक घटना

छल, जे महाप्रास्थानिक आ मोसुल-पर्वक कथानक मे अनेरो स्थान पओलक। मिथकीय कथानकक पहिले अध्याय मे 'दारूबाजी आ शराबबन्दी' शब्द अपच भ' गेल, मदिरा-शब्द अथवा मद्य, उपयुक्त होइत। 'विदा' केँ 'विदाह' आ 'वसुदेव' (देवकी-पति) केँ सर्वत्र 'वासुदेव' (कृष्ण-पिता) कहि देल गेल अछि, जे उचित नहि भेल। द्वारिका मे रूक्मिणी-सत्यभामाक चर्चा तँ भेल, मुदा तेसर-चारिम पत्नी जाम्बवती आ ललिताक चर्चा धरि नहि भेल। कुर्कुट अभीर सँ पराजित भेलाक बाद रूक्मिणी-सत्यभामा हस्तिनापुर पहुँचली कि योगाग्नि केँ शरीर समर्पित केलनि, से मौन अछि 'प्रस्थान', जखनकि रूक्मिणी महालक्ष्मी-स्वरूपा छलीह।

महाभारत-कथा आब अविश्वसनीय नहि रहल, कारण, डॉ.एस.आर. राव, उत्खनन-विशेषज्ञक टीम, अरब सागरक मध्य ओखा (पाकिस्तान) जा क' 'भेंट-द्वारिका' नामक कृष्णक-राजभवन (आवास) क खण्डहर केँ पता लगा उखाड़ि क', कार्बन– 14 डेटिंग-प्रणाली सँ महाभारतकालीन साबित क' चुकल छथि। तेँ कथाक विश्वसनीयता असंदिग्ध अछि। मुदा महाकाव्य-युग (छठम सदी सँ चारिम सदी ई.पू.) क अंत मे (द्वापरक अवसान आ कलियुगक आरंभ-काल मे) उद्धव केँ बद्रीनारायण-धाम मे पारसमणियुक्त कृष्ण-स्वरूप भगवान बद्री नारायणक दर्शन, कोना भ' सकैत छनि, जखनकि तपलीन नर (अर्जुन) आ नारायण (कृष्ण) केर मूर्तिये नहि छनि ओतय? आ आठम सदी ई. मे आबि क' (एक सहस्राब्दी लगभग बाद) आदि-शंकराचार्य अलकनन्दा सँ, वर्णित भगवान बद्री-नारायणक पारसमणियुक्त कृष्ण-स्वरूप-मूर्ति, कुबेर आ नारदक मूर्तिक संग, स्थापित क', केदारनाथ मे जा क' समाधि लेलनि?

मुदा, अभाव-अभियोग तँ रहिते छै आ स्तरीये साहित्य मे मत-भिन्नताक गुंजाइशो रहै छै। स्तरहीन साहित्यक तँ संज्ञानो लेब कठिन। 'प्रस्थान' तँ संताप भोगैत पात्र, समय, देस, मथुरा-गोकुल-हस्तिनापुर, द्वारिका, यमुना, प्रभास-क्षेत्र, शोकमग्न समुद्र आ यमुना, यमुना मे दहाइत शोकमग्न मयूरपंख, कछेर मे कालिन्दी-वृक्ष पर लटकल मोर पंख आ तकर रंग-रोगनवला चित्रण लेल, पढ़ल जायत आ स्मरण राखल जायत। तहिना मिथिला चित्रकलाक आवरण-चित्र (कृष्णक) लेल डॉ. रानी झा केँ स्मरण कयल जायत।

•

'जिजीविषा' सँ भेटैत नव-जीवन

आत्म-संस्मरण आ आत्म-कथाक मध्य एकटा अत्यंत पातर सीमा-रेखा भेल करैत अछि। ताहू मे, जँ आत्म-संस्मरण, एकटा विशेष कालखण्डक भेल वा कोनो घटना-विशेषक भेल वा कोनो रोग-ग्रस्तता आ ताहि सँ मुक्तिक सफलताक भेल, तँ तेहेन जीवन-संघर्ष मे 'जिजीविषाक शिखर-भूमिका' अवश्यंभावी आ स्वयं-सिद्ध भ' जाइत अछि। तेहने जीवन-संघर्षक विरल आत्म-वृत्तांत लिखलनि अछि 'शिखर पर जिजीविषा' कुमार मनीष अरविन्द, मैथिलीक सुपरिचित कवि-कथाकार।

कर्क-रोग (कैंसर) सँ संघर्ष क' नव-जीवन मे आपस हेवाक प्रख्यात क्रिकेटर युवराज सिंहक आख्यान तँ लोक हालहिं पढ़ने छल, मुदा मैथिली मे ताहि अभावक पूर्त्ति मनीष अरविन्द अपन बलशाली जिजीविषाक बदौलत क' सकलाह। पहिने कैंसर सँ सफलतापूर्वक संघर्ष करब आ तखन फेर तकर आख्यान पोथी-रूप मे लिखि, अपन पाइ लगाक' प्रकाशित करब, मैथिलीक दुस्साहसी साहित्यकारे सँ संभव अछि। कैंसर सँ बाँचि नव-जीवन मे आपस होयब जतेक महत्वपूर्ण हुनका, हुनकर परिवार-समाज लेल अछि, ततबे महत्वपूर्ण मिथिला-समाज, मैथिली-भाषा आ साहित्य लेल सेहो अछि। एहि महत्वपूर्ण आत्म-संस्मरणक संग, ओ कएटा महत्वपूर्ण कृति मैथिली केँ आब द' सकताह।

मनीष अरविन्दक कैंसर सँ संघर्षक आख्यान मे एतेक रोचकत अछि जे 183 पृष्ठक पोथी, पाठक सुरड़ि क' पढ़ि जा सकैत अछि। पोथिक अन्त मे, कैंसर-रोगक गहींर परिचय आ कैंसर हेवाक विभिन्न प्रकारक कारणक विवेचन कयल गेल अछि, जे पोथीक उपादेयता, मिथिलावासी आ प्रवासी मैथिलीक पाठक लेल बढ़ा दैत अछि।

कैंसर एकटा महामारीक स्वरूप, एड्स जकाँ ग्रहण क' लेलक अछि, जकर प्रमुख कारण सभ अछि– सभ प्रकारक प्रदूषण, खाद्य पदार्थक मिलावट, तनाव आ 'तमाकुल-धूम्रपान'- नशा-आदि...। तकर इलाज आ अनुसंधान समानान्तर जारी अछि। मात्र आर्थिक रूपें आत्म-निर्भर, जिजीविषा

सँ परिपूर्ण, पहिल-दोसर चरण मे पता लगौनिहार, भाग्यशाली व्यक्तिए केँ पुनर्जीवन भेटि पबैत अछि।

लेखक एकरा आत्म-कथा नहि मानैत छथि, कैंसर कें ल' क' वृहत्-चेतना-सृजनक उद्देश्य सँ लीखल, आत्म-संघर्ष- आख्यान मानैत छथि, से उचिते। कैंसर-सम्बन्धी, समाज मे व्याप्त अनेकानेक भ्रान्तिक खण्डन करैत पोथी समाजक अन्धविश्वासी-तरीका आ बेमारीक सूचना केँ झांपन देवाक अनुचित प्रवृत्तिकेँ देखार सेहो करैत अछि। लेखक द्वारा समाजक रूढ़ि, अन्धविश्वास, झांपन-प्रवृत्ति केँ तोड़ब एकदम अपेक्षित अछि। एकटा सार्थक-जीवनक सुरक्षा मे भेटल सफलता, लेखकक परिवार-पत्नी-अनुज-बच्चा-माता-पिता-ससुरक उपलब्धि थिक, जे मैथिली संसार लेल अत्यंत महत्वपूर्ण अछि।

लेखक कैंसर सँ पूर्वक, दू बेमारीक भिड़ंत सभक वर्णन, पोथी में, कैंसरक पता चलवाक बाद, केलनि अछि जखन कि ओ बेमारी सभ हुनका कैंसर सँ पूर्वहिं भेल छलनि तथा तकर सफल इलाज सेहो भेल छलनि। गठियाक आयुर्वेदिक-इलाज आ पेटे-सम्बन्धी-क्षय-रोगक एलोपैथिक 'थ्री-ड्रग-थेरेपी' सूटो केने छलनि। से सभ कैंसरक पूर्व-पीठिका छल होयत। भ' सकैछ, महायोगिराज गुग्गुल आ थ्री-ड्रगक कठोर एन्टीबायोटिक्स केर 'आधिक्य' बड़ी-आँतक कोशिका-ऊतक केँ 'विद्रोही' बना 'आँतक सड़न' (कोलोन-कैंसर) आरंभ करा देने हो! यद्यपि तीनू बेमारीक चरण सभ मे योगासन-व्यायाम-बैडमिंटन-खेल-अनुशासित डाइटिंग केर बेरम-बेर विशद वर्णन भेल अछि आ तकर सभ वैज्ञानिकता आ औचित्य, रोग-मुक्ति मे प्रमाणित भेल अछि। तकर पाठ, पाठकक स्वास्थ्य-चेतना मे अभिवृद्धि करैत अछि।

कैंसर मे जाँचक शृंखला, यंत्रणाक शृंखला होइत अछि। ऑपरेशन सँ वेशी यंत्रणा 'कैंसरक भय''मृत्यु-भय' मे होइत अछि।

किमोथेरेपीक कल्पनो सँ सिहरन उत्पन्न होइत अछि। चिकित्सा मे व्यवधान आ निर्णय-अनिर्णयवला चरण अयला पर धैर्य आ जिजीविषाक परीक्षा तँ होइते छै, परिवारक प्रत्येक सदस्यक वास्तविक अपनापन आ समाज वा साहित्यक मित्र-मंडलीक वा विभागीय सहकर्मीक सेहो अग्नि-परीक्षा स्वतः भ' जाइत छै। साहित्यिक-मित्रक (राँचीक) संवेदनहीन-आचरण हो वा विभागीय अधिकारी द्वारा पूछल गेल स्पष्टीकरण, ई सभ मैथिल-समाज आ सरकारी नौकरीक दुर्भाग्यपूर्ण-विडंबना थिक।

तखन यंत्रणाक अंतहीन क्षणहुँ मे, साहित्य आ कविता (भने सोशले मीडिया पर) कोना मनुष्य केँ संबल प्रदान करैत अछि, तकर दिग्दर्शन पोथीक अनेक कविता मे होइत अछि। कोनो भारतीय रोगीक, कैंसर-संघर्ष मे, 'महामृत्युञ्जय अनुष्ठान' करबाबय ओकर परिवार, से तँ भारीतीय परंपरा थीके, कैंसर-रोगीक 'नियतिवादी' होयब, सेहो कोनो आश्चर्यक बात नहिं। 'माँछ-सहित-शाकाहारी' होयब तँ एकदम्मे आश्चर्यक बात नहि, कारण, तकर पृष्ठभूमि-निर्माण, 'खट्टर काका' कइये देने छथि। पोथीक पात्र सभ, अर्थात् रोगी-लेखक आ परिवारक सदस्य सभक मोन मे उठैत भावना-संवेग-संवेदना-यंत्रणा- भयावह-कल्पनाक आवेग आ विहाड़िक जीवंत वर्णन पाठक केँ बान्हि क' राख' मे सक्षम अछि। मनीष अरविन्दक 'जीवन-संघर्ष'क आख्यान, विरल, स्वागतेय, स्वास्थ्य-चेतना-सृजन आ कैंसर-चेतना-प्रसार मे सक्षम आ समाजोपयोगी अछि। वर्त्तमान नव-जीवन केँ लेखक, हिन्दी- मोह सँ मुक्त भ' पूर्णतः मैथिली-भाषा-साहित्य-समाज केँ समर्पित करताह, ताहि अपेक्षाक संग, लेखक केँ पुनर्जीवन देवाक लेल, प्रकृति-ईश्वर आ लेखकक परिवार केँ, हार्दिक धन्यवाद सम्प्रेषित कयले जेवाक चाही।

•

मिथिला दर्शन
कोलकाता
2017 ई.

'संक्रमण'-संघीयता-निःसृत काव्य-चेतना

नेपाली मिथिलाक नव पीढ़ी मे मुख्य-स्थानीय, रमेश रंजनक रचनाकार, कथाक संग, बीसम सदीक अन्तिम दशक मे, मैथिली-साहित्यक क्षेत्र मे पदार्पण केने छलाह। कथा-संग्रह तँ प्रकाशनाधीन अछि, मुदा, उपन्यास (सङोर), नाट्य-कृति (मुर्दा आ डोमकछ) एवं काव्य-कृति (रक्त-वर्षा) तथा 'संक्रमण' क संग ओ आगू बढ़ैत गेलाह। आइ ओ नेपाली मैथिली-काव्यक विकास मे अत्यंत महत्वपूर्ण पायदान पर छथि। यद्यपि ओ काव्य-लेखन केँ अपन प्रारंभिक रचना गछैत छथि, मुदा तकरो संग्रह (रक्त-वर्षा) नाटक-उपन्यासक उपरान्ते छपैत अछि। मुदा सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य थिक जे ओ बहु-विधावादी छथि आ एकटा समर्पित नाट्य-कर्मी, संस्कृति-कर्मी सेहो छथि।

रंजनजीक जीवन मे संघर्षे-संघर्ष रहल अछि आ ओ नेपाली मिथिला-समाजक, जाहि काल-खण्ड मे अपन सृजन-धर्मिता प्रकाशित करैत छथि, तकर प्रभाव कोनो रचनाकारक वैचारिकता आ सोच पर पड़नाइ अवश्यंभावी छल। से ओ अपन वामपंथी-जनवादी सोच मे सु-स्पष्ट आ प्रगतिशील भ' क' काव्य-रचना मे उतरलाह अछि। ओ नेपाली समाजक 'रक्तवर्षा' आ 'संक्रमण'-कालीन परिस्थिति मे 'तटस्थता आ निरपेक्षता' केँ उचिते 'जड़त्व आ बूड़ित्व' मानैत छथि। हुनकर सम्पूर्ण लेखन (नाटक, उपन्यास, कथा आ कविता) मे जन-पक्षधरता आ संस्कृति-कर्म, रंग-कर्म, मे जनाकांक्षाक प्रतिनिधित्व, हुनका दुनू देसक मिथिलाक समकालीनता सँ जोड़ैत अछि।

रंजनजीक प्रतिबद्धता नेपाली आ मिथिला-समाजक संघर्ष-चेतना आ प्रगतिशील मूल्यक संग छनि, तेँ हुनकर सोचक जनोन्मुखी हेबा मे कोनो हिचक नहि भेल आ ताहि पर कोनो प्रश्नचेन्ह नहि लागल अछि। ओ अपना कालखण्डक नेपाली मिथिलाक युगसत्य केँ, निके-नाँ चिन्हलनि आ तकरा अपन कवि-कर्म, लेखन-कर्म, संग-कर्मक आधार बना क' नेपाली-जन-क्रान्तिक 'संक्रमण' कालीन चरण केर बेबाकी सँ व्याख्या-विश्लेषण,'जनवादी काव्य-भाखा' मे प्रस्तुत कयलनि अछि। राजसत्ता आ सत्तावादी मौसमी-बे-मौसमी सरकार

द्वारा उपेक्षित जन-समुदाय, जकरा ओ 'सीमान्त-कृत जनता' कहैत छथि, तकर दुःख-दर्द प्रस्तुत करबाक लेल, क्रान्तिक एकटा प्रमुख चरण (संक्रमण-काल) केँ बहन्ना-स्वरूप चुनैत छथि, जे एकटा मुखर कविक दुःस्साहसपूर्ण निर्णय थिक। मुदा तकर 'रिस्क' उठाब' मे रंजन जीकेँ कोनो ततमत्ती नहि हएब, ध्यातव्य थिक।

कोनो देस वा भू-खण्डक सामाजिक-सांस्कृतिक क्रान्ति हो अथवा राजनैतिक, संक्रमण-कालक चरणक आगमन अवश्यंभावी अछि। से विश्व-जनीन तथ्य थिक, जे नेपालीयो समाज पर लागू अछि। स्वभावतः राजतंत्र-उकन्नन के उपरान्त भेल मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी-आन्दोलन आ सत्ता-परिवर्त्तन मे 'संक्रमण-काल' आयल आ दीर्घावधि धरि रहि गेल। स्थूल रूपें, नेपाली गणतंत्र लेल संविधान 'फाइनल' नहि हएब आ अंतरिम रहि जायब बा 'मधेसी-तराइ-जनताक आकांक्षानुकूल, प्रजातांत्रिक संस्था सभक स्थापना आ विकास नहि भ' पायब केँ, संक्रमण-चरण, कहल आ मानल गेल अछि। मुदा नेपालक बाहर, अइ चरणक ततबे अर्थ नहि अछि। मुदा रंजनजीकेँ नेपाली स्थान-काल-पात्रक यथार्थ मे, स्वभावतः ततबे सँ मतलब छनि। ओ जनताक मित्र आ शत्रु, यथास्थितिवादी, प्रतिगामी तत्व, प्रगतिशील तत्व, पैकार, छद्म, भ्रम, दमन, पुनरुत्थान, प्रति-क्रान्ति, अभिजातवर्गीय तत्व, सभ केँ आ सभकिछु केँ चिन्हिते नहि छलाह, परिवर्त्तन-आन्दोलन मे सक्रिय भागो लेने छलाह। तेँ, ने ओ आ हुनकर व्यक्ति चुप रहल, आ ने हुनकर कविता चुप रहि सकैत छल। हुनकर नाटको बाजल, कवितो बाजल।

एखन धरि राजनैतिक चेतनाक कविता, नेपाली आ भारतीय दुनू मिथिला-खण्डक मैथिली मे छिटफुटे लिखायल छल। जमि क' लिखल, राजनैतिक चेतनाक कविताक समग्र आ सुच्चा संग्रह, हमरा जनतबें, नहि आयल अछि, कोनो एक कविक। मैथिली साहित्यक ताहि अभावक प्रतिपूर्त्ति, रंजनजीक ई कविता-संग्रह 'संक्रमण' करैत अछि। 'संक्रमण'क विविध तत्व आ उप-चरण सभक व्याख्या-विश्लेषण केर काव्यमय-अभिव्यक्ति प्रस्तुत करब एकटा एहेन विशिष्ट चुनौती छल, जकरा स्वीकार करबाक साधंस, एहि संग्रह केँ 'बेछप' आ विशिष्ट बना देलक अछि।

डी.एन.ए. रिपोर्ट, द्रोह-फल, संक्रमण, प्रत्याक्रमण, नेपालक राजनीति, युवा सभासद, मधेशवादी दल, अतिक्रमण, संघीयता, समझौता, गणतंत्र,

सड़कक लोक, आतंक-बोध, यथास्थिति, सिमान, सन्धि, फ्रन्टलाइन, दमन, हुराड़ आ देश, संविधान सभा, आक्रोश, सत्ता, सोच, पैकार, नेतृत्व, भ्रम, हत्या, परिवर्तन, सत्ताक योग्य, चुनावी सरकार, क्रान्ति ओ सत्ता, प्रति-क्रान्ति, समीकरण, क्रान्तिकारी, चुनावी खेल, लोकतंत्र, क्रान्ति, आगि, बारुद, अन्हारक विरुद्ध, आदि काव्य-शीर्षक ई कहबा मे सक्षम अछि, जे संक्रान्ति-कालक एहनो-एहनो विशिष्ट तत्व सभक साहित्यिक संज्ञान ल' क' काव्य-वस्तु बना, कविता लिखल जा सकैत अछि, जे नेपाली आ भारतीय मिथिला, दुनू क्षेत्रक मैथिली मे अनुपमेय अछि।

सोना पर सोहग्गा ई, जे कविक भय-आशंकाक प्रतिकूल, कोनो टा कविता अ-संप्रेषणीय नहि अछि। नव-कविताक 'फ्रेम' मे लिखल-गढ़ल ई कविता सभ, राजनैतिक-सामाजिक-साहित्यिक प्रकृति आ स्वरूप ल' क' (भाषिक स्तर पर) चलैत अछि। सेहो खाँटी नेपाली मैथिली मे, जकरा नेपाली तराइ-क्षेत्रक 'जमीनी जनवादी मैथिली' कहि सकैत छी। कविताक शिल्प आ अभिव्यक्ति मे, जँ 'शिष्ट भाषाक' समावेश कयल जाइत, तँ कविता सभ अ-संप्रेषणीय भ' जाइत।

वस्तुतः मार्क्सवादी सौन्दर्य-शास्त्र, अभिजात्य-वर्गीय 'शिष्ट भाषा' आ 'कला-विहीन काव्य' दुनू केँ समर्थन नहि करैत अछि। प्रश्नगत काव्य-संग्रह मे, माटि पर छिड़िआयल खाँटी जनवादी मैथिली-शब्द सभक भड़खड़ि प्रयोग क' 'व्यंग्यात्मक पुट आ अन्डरटोन'क ताग मे काव्य-पुष्प केँ गाँथल गेल अछि। हँ, अभिजात-मानसिकतावला पुरातन-पंथी 'अशिष्ट भाषाक प्रयोगक' आरोप लगा सकैत छथि। मुदा तकर परवाह करबाक युग तहिये चलि गेल, जहिया, साहित्य सँ, सत्यम्, शिवम्, मे सँ 'सुन्दरम' शब्द छँटि गेल। आब 'सुन्दरम' प्राचीन शिल्पक काव्य (रजनी-सजनी-काव्य) मे अपन दिन गनि रहल अछि।

कलात्मक काव्य एहि कारणें मानल जायत, जे राजनैतिक चेतनाक संवाहक होइतो, पाठकक हृदय मे काव्यात्मक आनन्दक सर्जन करैत अछि।

विचार-प्रधान काव्य पहिनहुँ लिखाइत रहल अछि। रंजनजीक भाव-प्रधान-काव्य 'संक्रमण' मे नहिए रहि सकैत छल। फड़िच्छ आ परिपक्व विचारधारावला कविक राजनैतिक चेतना-सम्पृक्त कविता, वैचारिकता-युक्त आ विचार-प्रधान होइत, से स्वाभाविके छल। आ सैह भेल अछि। एहि काव्य-संग्रह मे, से भेनाइए छल।

मैथिली मे किछुए गनल-चुनल कवि भेलाह अछि, जे पारंपरिक काव्य-बन्ध केँ, साहसपूर्वक सीमाक अतिक्रमण क' शिल्प आ अन्तर्कथ्य, दुनू स्तर पर तोड़फोड़ केलनि अछि। ताहि सूची मे एकटा नाम रंजनोजीक जुड़ि गेल अछि। अन्तर्कथ्यक स्तर पर तँ क्रान्तिए आनि देलनि अछि, रंजन जी। हँ, शिल्प स्तर पर 'नव-कविता-शिल्प' मे कोनो विशेष प्रयोगधर्मिता नहि देखा सकलाह, जे आजुक तिथि मे अपेक्षित छल। शिल्प मे 'सर्वहारा वर्गक भाखाक सौन्दर्य-बोधक' अभाव नहि रहितो, 'काव्य-भाषा अभिधात्मक होइतो' गद्यात्मक नहि भ' सकल वा गद्य-काव्य नहि बनि सकल, जे राजनैतिक चेतनाक अन्तर्कथ्य केँ बहुते 'सूट' करितय। मुदा, ताहि सँ काव्यक सोन्हगर सुगंधि आ काव्य मे गुंफित आम-जनक स्वाद-चेतनाक, कोनो कमी नहि भेल अछि। सामान्यतः राजनैतिक चेतना-युक्त कविता 'रंगहीन-गंधहीन-स्वादहीन' होअय लगैत अछि, जखनकि 'संक्रमण' स्वाद-सुगन्ध-युक्त अछि। सामयिक विषय, खबरि आ राजनैतिक घटना-क्रम, गद्य, निबंध आ कथा-उपन्यास केँ 'सूट' करैत अछि, ताहि अवधारणा केँ, ई संग्रह पूर्णतः खण्डन करैत अछि।

काव्यक भंगिमा आ तेवर बहुत किछु 'प्रयुक्त भाषाक स्वरूप' पर निर्भर करैत अछि। आ भंगिभा- तेवर सँ, काव्यक प्रहार-सामर्थ्य वा मारक-क्षमताक प्रतिशत देखार होइत अछि। 'संक्रमण'क कविता सभ वैचारिकतायुक्त हेबाक कारणें, पाठकक मनो-मस्तिष्क केँ झंकृत करैत अछि।

दू-तीन टा कविता, जे भाव-तरंग उठेबा मे सक्षम अछि, सेहो विचार-विहीन नहि अछि, विचार-पुष्ट अछि, सामाजिक प्रगतिशील मूल्यक प्रति प्रतिबद्धता देखाबैत अछि।

कवि रंजनजी नेपाली जन-क्रान्तिक संक्रमण-कालीन विचलन सभ केँ एकदिस धिक्कारैत छथि, तँ दोसर दिस संघीयता आ जनतांत्रिक संस्था सभक जनवादीकरणक सपनो देखैत छथि। पतनशील आ प्रतिगामी तत्व सभ केँ देखार करब, दलाल-वर्ग आ राजनैतिक अवसरवादी सभ केँ मारक प्रहार सँ त्रस्त करब, संग्रहक उद्देश्य आ प्रतिपाद्य अछि। संक्रमण नेपालक राजनीतिक यथार्थ थिक, तेँ संघीयताक स्थापना आ स्वरूप-निर्धारण नेपाली-समाजक आकांक्षा, सपना आ चिन्ता थिक, जे भ' नहि पाबि रहल अछि। ताहि ज्वलंत चिन्ताक व्याख्या आजुक नेपाली मैथिली कविता, भाया रमेश रंजन-करैत अछि।

विश्वक जतेक देस मे एखनधरि सांस्कृतिक-सामाजिक-राजनैतिक क्रान्ति भेल अछि(सोवियत संघ, क्यूबा, ब्राजिल, पौलैण्ड, चीन, नेपाल) सर्वत्र संक्रमण-काल आयल अछि। औद्योगिक-क्रान्ति आ फ्रांसीसी-क्रान्ति मे सेहो आयल छल। मुदा कोनो देसक स्थान, काल-पात्रक अनुसार, संक्रमण-कालक स्वरूप मे अन्तर भ' सकैछ। भारतो मे संक्रमण-काल जारी अछि, मुदा, आर्थिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक स्वरूप मे। तेँ ई 'संक्रमण-काव्य' कोनो देसक संक्रमण-कालक काव्य भ' सकैए। सैह थिक, साहित्यक आ कविताक शाश्वतता वा सार्वजनीनता।

'संक्रमण' अपना-आप मे सवालो थिक आ जवाबो थिक। ओ द्रोह सँ अर्जित दर्शन, सपना आ संघर्ष केँ तँ सोखिते अछि, संक्रमण-संतान, अर्थात नव पीढ़ी कच्छड़ काटि रहल अछि। जन-आक्रोशक उपेक्षा क' नेपाली-राजनैतिक, समझौतावादी भ' जाइत अछि। जनाकांक्षाक बोझ चालीक पीठ पर घिसियाउर काट' लगैत अछि। संतोषक बात थिक, जे कवि रंजनजी जिनगीक आन्तरिक रूप देखैत छथि आ संक्रमणक कृत्रिमताक संग विद्रोहक छद्म-रूप सेहो जनैत छथि। कवि 'चीत्कारक' रूपांतरण 'गर्जना' मे करैत छथि, 'गणतंत्रक गर्भनालक व्युत्पत्तिक व्याख्या करैत छथि; 'सड़क-छाप' लोकक संघर्ष-गाथा लिखैत छथि आ 'शान्तिक खोज मे बुद्धक पथरायल आँखिक' संज्ञान सेहो लैत छथि।

जखन 'आक्रोश' गभिना जाइ छै, तँ 'तार सँ पैघ पुदीना' बुझाय लगै छै। दमनकर्त्ता मे आकांक्षा बनि जाइ छै, 'फ्रंट-लाइन' मे रहबाक। जखन 'मरी' केँ घेरने 'हुराड़', देस केँ खेबा पर विर्त्त रहैत अछि, प्रतिनिधिक माथ मे 'नपुंसक रसायनक' सृजन होब' लगैए आ अराजक एवं तात्कालिक 'समीकरण' सभ बन' लगैत अछि। 'पैकार' सभ 'बड़द केँ गाय आ गाय केँ बड़द बनाक' बेचबाक लेल 'लिंग-परिवर्तन करबाब' मे लागल रहैत अछि। एहना स्थिति मे, 'नेतृत्व' नेत्रहीन जनमत' सिरजैत रहैत अछि आ नियोजित हत्याक बैताल-नृत्य प्रयोजित करैत रहैत अछि। फेर तत्कालिक 'चुनावी सरकारक' शृंखला बनि जाइत अछि आ 'सत्ता', 'सरकार; 'प्रतिक्रान्ति; 'समीकरण 'जन-क्रान्ति; तरह-तरह के राजनैतिक शब्दावलीक अनघोल समाज मे मचल रहैत अछि। 'लोकतंत्र' स्थापनाक प्रसव-पीड़ा 'नकली-पीड़ा' आ 'भ्रम' प्रमाणित होइत अछि। भविष्यक क्षितिजक खोज मे लागल

टकटकी, निष्पत्ति-विहीन प्रतीक्षा भ' जाइत अछि। संविधान-सभाक व्यय-बोझ आ संघीयताक सपनाक बोल तर मे दबल तराइ-समाज, संक्रमण-कालक कछमछाहट बनि क' रहि जाइत अछि। संक्रमण-काल मे 'जंगल-चरित्र' सेहो रहैत अछि आ संघीयताक चेतना सेहो संघर्षशील रहैत अछि। जन-समुदाय संघीयताक चेतना आ उत्साहक संग अग्रिम चरण मे प्रवेश करबाक लेल लालायित रहैत अछि वा नेपाल मे से तेना अछि। कमाल के तथ्य ई अछि जे 'संक्रमण' जेहेन सटीक आ 'सभ आसंगक काव्यमय विश्लेषण' जेना रंजनजी कविता मे केलनि अछि, से तेहेन राजनीति, पत्रकारिता वा साहित्यक अन्य विधा मे भरिसक्के भेल अछि।

•

थल-पिच्छड़ अङना मे कथाक 'पथार'

साहित्यक जगत आ बौद्धिक जगत मे ई प्रश्न बरमहल हवा मे टाङल भेटैत अछि, जे भारतीय मिथिला, नेपाली मिथिला सँ कतेक आ कोन अर्थ मे भिन्न अछि? वा एना कही जे भारतीय मैथिली-समाजक आ नेपाली मैथिली समाज (तराइ-मिथिला) मे आर्थिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक रूपें कतेक समरूपता अथवा अन्तर अछि आ से कोन-कोन तत्वक अन्तर थिक? अइ पार, ओइ पारक अनुसन्धानात्मक आ तुलनात्मक विशद अध्ययनक अभाव मे लोक साहित्ये दिस अपेक्षाक नजरिएं ताकत। अइ प्रश्नक जवाब देबा मे आन कोनो विधाक अपेक्षा, नेपाल मे लिखल मैथिली कथा वेशी सक्षम अछि। तकर मुख्य कारण अछि, नेपाली मैथिली कथा मे चित्रित समाज, अर्थव्यवस्था आ संस्कृति-तत्व सभ। नेपाली मैथिली कथा मे वर्गीय चेतना आ वर्ग-संघर्ष ओहिना उजागर भेल अछि, जेना भारतीय मैथिली कथा मे। तकर मुख्य कारणो सुस्पष्ट अछि जे भारतीय मिथिला आ नेपाली मिथिलाक निम्नवर्ग सामाजिक आ आर्थिक रूपें एक्के रंग पिछड़ल अछि आ सांस्कृतिक सन्दर्भ मे एक्के रंग धनीक अछि। सैह समानता नेपाली मधेसी निम्न-मध्य-वित्त सवर्ण वर्ग आ भारतीय निम्न-मध्य-वित्त सवर्ण वर्गक बीच अछि। एहि सभ समाजशास्त्रीय आ आर्थिक तथ्यक साक्षी डॉ. धीरेन्द्र, राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर', राजेन्द्र विमल, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, रमेश रंजन, सुरेन्द्र लाभ, पाथेय आ आन कएटा समकालीन कथाकार सभक कथा मे चित्रित समाज, परिवार, पात्र, परिवेश, आर्थिक दुःख-दैन्य आ विडंबना इत्यादि अछि।

मुदा उपर्युक्त सभ कथाकारक कथा सँ भिन्न अछि परमेश्वर कापड़िक कथा-संसार, जे भाषा केँ संस्कृतिक संवाहक हेवाक तथ्य केँ ध्यान मे रखैत अपन कथा-संसार रचलनि अछि आ तेहन कथा सबहक 'पथार' लगा आ सजा देलनि अछि। नेपालक आने कथाकारक कथा जकाँ हिनको कथा मे समाजिक आ आर्थिक-तंत्रक आसंग सभ प्रचूरता सँ आयल अछि, सेहो अविश्वसनीय विश्वसनीयताक संग। मुदा सांस्कृतिक आसंग सभ जे प्रचूरता आ धनिकपनाक संग आयल अछि, से कोनो (नेपालक) मैथिली कथाकार लेल ईर्ष्य भ' सकैत अछि। लोक-कथा, धार्मिक कथा, मिथक-कथा

केँ आधार बनाक' सहज, देशज, लोकभाषा मे, व्यंग्य-कथा लिखब अपना-आप मे विरल-साहस केँ प्रदिर्शित आ प्रमाणित करैत अछि।

'पथार' कथा-संग्रह केँ कथाकार दू कोला मे बाँटिलनि अछि। 'अरगौती' मे अपना हिसाबें 'शुद्ध रूपें आधुनिक कथा' (कुल एगारह टा) प्रस्तुति केलनि अछि। हिनकर सभ कथा मे व्यंग्यक 'अन्डरटोन' रहिते अछि, कारण हिनकर मूल कथा-भाषा व्यंग्यात्मके अछि।

संग्रहक दोसर प्रभाग मे (थल-पिच्छड़) कुल बारह टा कथा केँ राखल गेल अछि, जकरा 'व्यंग्य-कथा' कहलनि अछि कथाकार आ तकरा प्रकारान्तर सँ गल्प, गप्प, विशुद्ध कल्पना सेहो कहलनि अछि। अर्थ ईहो ध्वनित भ' सकैछ जे व्यंग्य-कथा ई आधुनिक कथा नहि मानैत छथि, जखनकि आधुनिक कथा व्यंग्यात्मक भ' सकैछ आ व्यंग्योकथा आधुनिक भ' सकैछ, से तथ्य थिक। तेँ पोथीक कोला बँटवारा अनावश्यक छल। 'पथार' पोथीक शीर्षक थिक, कोनो कथाक नहि।

'पथार'क व्यंग्य-कथा सभ वर्गीय-चेतना-युक्त, प्रगतिशील मूल्यक ओकालति करैत आ पुरातन वैचारिकता-विरोधी अछि। पात्र-चयन जनवादी आ परिवेश-चित्रण समकालीनतायुक्त अछि। व्यंग्य-कथा सभ मे व्यंग्यक प्रतिशत 99% अछि आ स्वाद नव-नव अछि। व्यंग्यक धार मारूख अछि आ चरित्र लौकिक अछि, शास्त्रीय न्यूनतम। पहिल खण्डक 'आधुनिक कथा' सभक तकनीक आ कला-पक्ष ने तँ प्रयोगधर्मी भेल अछि आ ने ततेक प्रभावशाली, जतेक प्रभावशली आ प्रयोगधर्मी 'थल-पिच्छड़' के व्यंग्य-कथा सभ भेल अछि।

'पथार' मे भाषिक प्रयोग आ शब्द-संचय अद्‌भुत बनि पड़ल अछि, जे कथाकार केँ दुस्साहसी साबित कैलक अछि। 'निम्नवर्गीय पचपनियाँ मैथिली'क प्रयोग कथाकार, डॉ. रामावतार यादववला वर्त्तनी मे केलनि अछि, जे गाढ़ो सँ वेसी प्रगाढ़ अछि। ई प्रयोग एकदिस हिनकर माटि-पानि सँ सम्पृक्त कथाकारक छवि स्थापित करैत अछि तँ दोसर दिस कथाक पाठकीयताक प्रवाहो केँ घटा देलक अछि। अपन 'आमुख' (खुटकी खरखाही बात) मे कथाकार मुख्यधाराक मैथिलीक उपयोग केलनि अछि, जकर वर्त्तनी पं. गोविन्दझावला थिक वा 'मिथिला मिहिर' वला (पारंपरिक) कहल जाय। तेँ प्रथम खण्डक 'आधुनिक कथा'क भाषा केँ समान्य व्यंग्यात्मक रहए देलनि अछि आ व्यंग्य-कथा सभक भाषा केँ एतेक 'थल-पिच्छड़' बना देलनि अछि जे पाठक केँ 'हठयोग' करवाक बेगरता

(कविता जकाँ) गद्यो मे भ' रहल छै। 'थल-पिच्छड़' प्रभाग अपना-आप मे एकटा तेसरे तरहक 'शब्द-कोष' थिक, जकरा कथा मे गाँथि क' प्रस्तुत कयल गेल अछि। ई शब्दकोष' डॉ. रामवतार यादव आ पं. गोविन्द झाक 'कल्याणी कोष' दुनू सँ भिन्न अछि। ई 'शब्दकोष' अद्भुत अछि आ एकदिस मैथिली केँ 'धनीक'बनौलक अछि आ दोसर दिस हिनका कथा केँ कमजोर केलक अछि। नेपालक राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानक मैथिली-शब्दकोषो मे हिनका शब्द-कोषक बहुत रास शब्द भेटब कठिन। मैथिली-भाषा केँ हिनक 'शब्द-संचय-सेवा' परिपुष्ट केलक अछि आ मैथिली-साहित्य (कथा) केँ 'बोझिल आ भारी' (Loud) बना देलक अछि।

कुल तेइसो कथा (दुनू खण्ड) मे कएटा कथा काँच रहि गेल अछि, कएटा कथावस्तु (Plot) मात्र बनि क' रहि गेल अछि आ कएटा कथा मे एक्के 'प्लॉट' के दोहराव (Repeatation) आबि गेल अछि। जेना 'री-प्ले' 'भसिआयल भसलब' आ 'कथा,शील-हरण के' तीनू सीता-हरणक घटना-प्लॉट आधारित अछि जाहि मे महाकवि लाल दास आ वाल्मीकि टाइप विचार(राम द्वारा कयल गेल अन्याय) क उपस्थापन आ दोहराव भेल अछि। ई व्याख्या सार्थक अछि, मुदा नव नहि। 'री-प्ले' तँ काँचे-प्लॉट बनि क' रहि गेल। तखन शेष दुनू कथाक उपस्थापन नीक भेल अछि।

तहिना 'कोखिया लहरिया' नामक कथा महाभारत-मिथक आधारित कुन्ती-द्रोपदी-पृथ्वी-संवाद, काँचे-काँच आ 'री-प्ले' मात्र बनि क' रहि गेल। तहिना 'जंगल सँ मंगल' मे 'अरिया नङहान' कथाक प्लॉटक दोहराव भेल अछि जे पंचतंत्रक दन्तकथा आधारित, जानवर सभक अन्दोलनक सफलताक सपाटबयानी अछि,। जखनकि 'अरिया नङहान' क व्यंग्य उत्कृष्ट कोटिक अछि। 'मुइला मुँह मे दुधा-भाता' कथा नहि बनि सकल, बीजे-मात्र रहि गेल। 'धमगज्जर' मे भोजक कर्मकाण्ड पर व्यंग्य तँ अछि, मुदा कथा-कलाक उत्कर्ष नहिं भेल। 'कथा आ जीवन' मात्र कथाकारक टिप्पणी आ लघु-निबंध-टाइप भ' क' रहि गेल।'अपन-अपन माय' (नेपाल-माता) समाधानमूलक कल्पना-आधारित विबेचना भ' गेल। 'लालकाकी' नीक पात्र गढ़ल गेल छल, मुदा कने आदर्शवाद भारी भ' गेल आ कथा मे नहि बदलि सकलाह। 'सब धन बाइस पसेरी' आ 'भैंसी मारलक लथाड़' दुनू कथाक प्लॉट एक्के रंग अछि। डॉ. राम बरण यादव, तत्कालीन राष्ट्रपति केँ अभिधा मे प्लॉट बना क' नीक व्यंग्यक उपस्थापन भेल अछि। मुदा 'भैंसी मारलक लथाड़' कथा-कर्मक हिसाबें पाकि नहि सकल। 'रन्हन घर खन्हन' (रमेश रंजन, साहित्यकारक घर

मे नोतक खेरहा) मे व्यंग्यक नीक चादरि बुनलनि, मुदा कथ्य अस्पष्ट आ उद्देश्यहीन रहल। 'एक्कर ओक्कर, तोहर किरिए' तँ कथा रहबे नहि कयल 'सर्वोगतः कविता बनि गेल। नेपालक साहित्यिक वातावरण पर कयल गेल व्यंगय छिड़िआयल रहल, बान्हल नहि। कएटा प्लॉट कथाक निष्पत्ति आ निष्कर्ष धरि नहि पहुँचल आ संग्रह लेल चयन करैत काल कथाकार 'ढ़िलढ़िल' भ' गेलाह, जखनकि प्लॉट निरर्थक एकोटा नहि छल, मुदा दोहरावग्रस्त होइत रहल। मुदा तकर विपरीत, दोसरे खण्डक कथा—'धीप रे, सट्टा के पट्टा, सिंहासन पर आसन, धीपल आगि-बाउल, छठियारी-पूजन मे अटपटी, धर्मक घोल-धमर्थन, लेढ़हन्ना आयोग, संविधान-सभा के हुट्टा-पौना आदि सम्पूर्ण फुलायल फूल, साधल-सटीक व्यंग्य, लोककथा आ जन-श्रुति-आधारित, नेपाली साम्प्रतिक राजनीतिक स्थिति केँ देखार करैत, साहित्यिक परिवेश मे पद-लिप्सा केँ देखार करैत, मिथक-आधारित कथा मे मृतात्मा सभद्वारा सुकर्म-कुकर्मक तर्कवादी विश्लेषण नवीन विचारधाराक अनुकूल करैत, चमचागिरी- संस्कृति पर व्यंग्य-चोट करैत, आयोग-गठन द्वारा समस्या केँ टालवाक प्रवृत्ति पर चोट करैत, नाच-गानक-सट्टा-मानसिकता पर सार्थक चोट करैत नाम-संक्षिप्तीकरणक चलनसरि पर सफल व्यंग्य करैत, बच्चाक नामकरण-समारोह मे नव-पुरान विचारधाराक बीचक संघर्षक चित्रण करैत, समकालीन नेपाली समाज, राजनीति, साहित्य, नाट्य-क्षेत्र आ सभ प्रकारक समकालीनता केँ व्यंग्य-कथाक माध्य मे ऐतिहासिक विश्लेषण कयलनि अछि। वयंग्य-कथा सभक कथ्य अत्यंत धारदार आ समकालीन रहल। पूर्णतः 'अप-टू-डेट' (अद्यतन)। कथ्यक 'प्लॉट' क अभाव नहि छनि कथाकार मे।

आ शिल्प मे तँ चमत्कार उत्पन्न क' देलनि अछि। आरंभिक खण्डक कथा सभक शिल्प सामान्ये रहल, मुदा दोसर खण्डक कथा सभक शिल्प विम्बात्मक रहल, जे व्यंग्यकथा सभक मांग छल। निश्चित रूपें, व्यंग्य-कथाक क्षेत्र मे परमेश्वर कापड़ी, प्रो. हरिमोहनक झाक उपरान्त, एकटा विशिष्ट 'मोड़-बिन्दु' प्रमाणित भेलाह अछि। मुदा 'पथार' एकटा सार्थक व्यंग्य-यात्राक आरंभ थिक, जकर संभावनाक बाट दूर धरि जा सकैत अछि।

•

घर बाहर, पटना

2017

चेतना आ संवेदना सँ डमरस कथा

'गाम सँ जाइत रेलगाड़ी' ऋषि बशिष्ठक महत्वपूर्ण दोसर कथा-संग्रह छनि, जाहि मे सोलह टा कथा संकलित भेल अछि। एहि सँ पूर्व हुनकर तीन टा बाल-उपन्यास आ एकटा बाल-कथा-संग्रह सेहो प्रकाशित भ' चुकल अछि। बाल-साहित्यो मे ओ कविता आ गीत सँ फराक, कथा-उपन्यास लिखब बेसी महत्वपूर्ण मानैत छथि आ परिपक्वो पाठक लेल कथा लिखि क' गद्ये विधा मे अपन प्राथमिकता देखाबैत छथि। गाम मे जीवन गुदस्त करैत लेखक, ग्रामीण परिवेशक वा शहर मे निवासैत ग्रामीण लोकक जीवनक सुरम्य चित्रण क' रहल छथि। से 'गाम सँ जाइत रेलगाड़ी' सँ सेहो साबित अछि।

गामक सन्दर्भ मे ऋषि बशिष्ठक अवधारणा बीसम सदीवला नहि अछि, आ ने से हेबाके चाही। एकैसम सदीक परिवर्त्तन सभ, गाम मे उपस्थिति दर्ज करैत जा रहल अछि, तकर संज्ञान आजुक कथाकार केँ लेबाके छैक। गाम सँ पुरान जड़-तत्व सभ हँटल नहि अछि पूर्णतः आ नव प्रगतिशील तत्व सभ स्थापना नहि लेलक अछि। मुदा नव अँखुआ आ अंकुरा सभ अंकुरि रहल अछि आ अपन अस्तित्व लेल दुनू विचारधारा संघर्षशील अछि। एकहि संग सकारात्मक आ नकारात्मक परिवर्त्तन (दुनू प्रकारक) जारी अछि, जखनकि प्राचीन जड़ता, मिथिला-समाजक जानो नहि छोड़ि रहल अछि। एहना सन संक्रमणकालीन परिस्थिति आ संक्रान्तिकालीन समय मे, जखन कोनो नव, युवा, चेतना-सम्पन्न कथाकार, सामाजिक समस्या सभक, संवेदना सँ ओत-प्रोत विश्लेषण करैत, कथा-सृजन करए, त' ओकर संज्ञान लेब साहित्य आ समाजक दायित्व भ' जाइत छै।

ऋषि बशिष्ठ आधुनिक कथाकार जकाँ, समकालीन विषय आ जटिल परिस्थिति सभ केँ कथावस्तु बना क' अपन सोलहो कथा मे उठौलनि अछि। हिनकर सोद्देश्य आ समाजोपयोगी कथा सभ मे, कथ्ये-प्रधान अछि, जे संतोषक विषय थिक। कथा सभ गामक 'खाँटी भाखा' मे लिखल अछि आ कथा सभक परिवेश-चित्रण वस्तुतः जीवन्त भेल अछि, जेना कि भूमिका-लेखक अजित आजाद कहलनि अछि। छुबैत संवेदनाक, चेतना-सम्पन्न

युवा कथाकार, अपन कथा सभ मे प्रकारान्तर सँ प्रमाणित करैत छथि, जे साहित्य, समाजक आलोचना थिक, आब दर्पण-मात्र नहि रहल। मुदा कथा सभ मे शिल्पक विविधता नहि अछि। 'आमुख' मे अजित आजाद प्रसन्न होइत छथि जे कथा सभ नाटकीयता सँ 'मुक्त' अछि, जखनकि हिनकर कथा सभ मे वस्तुतः नाटकीयता आ चमत्कारक एकदम्मे 'अभाव' अछि। नाट्य-शास्त्र मे एम.ए. कथाकार, शिल्पक स्तर पर आर प्रयोगशील होथि। मुदा तेँ कथ्य-प्रधान कथा-संग्रह देलनि अछि भरिसक। तेँ वास्तविक पड़तालक विषय ई थिक, जे कथ्य कतेक धरगर अछि? कथ्यक स्वरूप जड़ अछि वा प्रगतिशील? कथ्य आ कथा सभ समकालीन मिथिला समाज केँ, कतेक प्रतिनिधित्व वा प्रतिबिम्बित करैत अछि? कथा आ कथाकारक दिशा की अछि?

संग्रहक कथा-सर्वेक्षण कहैत अछि, जे 'अयलौं चरण तोहार' 'आखिरी मोड़ पर' आ 'एक बीत जग्गह' नामक तीनू कथा, मिथिला-समाजक वृद्ध-संवर्गक अभगदशा, दुर्दान्त उपेक्षाक कथ्य-आधारित अछि, जे अपने लोक (बेटा, पुतोहु, भाय) द्वारा, व्यक्तिगत सुख-भोगक उपरौंझ मे वा फोकिला इज्जति-चिन्ता, भी.आइ.पी.रोगक कारणें, कयल जा रहल अछि। आ परिवारक खलनायक-खलनायिकाक आँखि, कतहु बाहरी अतिथि (डाइरेक्टर) आ कतहु आगत पीढ़ीक पौत्र (आखिरी मोड़ पर) खोलैत अछि। कारूणिक कथा-चित्रण, संघनित संवेदना उत्पन्न करैत अछि। तहिना सरकारी स्वास्थ्य-तंत्र (खजन चिड़ैया उड़ि गेल) आ निजी क्लीनिकक समानान्तर व्यवस्थाक समानान्तर अव्यवस्था (बस्स! एकरा बाद) मे जाबत् सोखा के भाउ होइत अछि, तावत कारिणीए समाप्त भ' जाइत अछि आ तकर 'ससपेंसिव-चित्रण' पाठकक हृदय मे टीस उत्पन्न करैत अछि, मुदा मैथिलीक कएटा 'विशुद्ध पाठक' केँ पढ़वाक सौकर्य होइत छनि? लिखैत रहथु लेखकगण!

सरकारी योजना पर यक्षप्रश्न ठाढ़ करैत कथा, 'के भैया लओता सुरसरि धार?' विद्यालयक खिच्चड़ि-जहर सँ नवका बाल-शमशान बना दैत अछि? समस्याक समकालीनता आ भयावहता सर्वज्ञात अछि। तहिना 'पाँच पत्र' अपना लोकक एमेले बनलाक बाद 'गगन-बिहारी' आन लोक बनबाक आ कृषि-भंजन करबाक व्यंग्य कथा थिक, जकर शीर्षक आरो किछु भ' सकैत छल, एहि शीर्षकक ऐतिहासिकता देखैत। सरकारी योजनाक दुर्दशाक

संग, छद्म-पत्रकारिता, अवसरवादी आ स्वार्थी रिपोर्ताज केँ देखार करैत कथा 'कमला-बलानक पेट मे बसल एकटा गाम' अपन चित्रण-शैली आ व्यंग्यक-धारक मामिला मे असगर वजाहत (भी.आइ.पी.) मोन पाड़ि देलक। ऋषि बशिष्ठ देश-दशा-वर्णन मे कमाल छथि।

'गाम सँ जाइत रेलगाड़ी' मे 'भैय्या एक्सप्रेस' केँ मिथिलांचलक पलायन-दर्द/पितृहीनताक दर्द आब तेसर पीढ़ीक माथ आ आँखि (झोंटैला-बच्चा) मे उतरि आयल अछि, जे पीराफोंफी आ फुकना-फुलौना बेचि क' पेट त' भरैए, मुदा पिताक छायाक कमी मे अनजानो मोसाफिर केँ पिता बूझि पैर पकड़ि, भोकारि पाड़ि क' कान' लगैए।

परिवार-प्रधानक कमजोर होइत पारिवारिक हैसियत आ पालतू पशुक प्रति उपेक्षा-भावक कथा थिक– 'हारल जुआरी जकाँ'। खाँटी मैथिल पतनशील मनोवृत्ति कें 'ईहो मनोरथ पूर भेल' कथा देखार करैत अछि, जाहि मे दहेजवाला मोटर साइकिल (सुपुत्रक विवाह मे कन्यागत सँ लेल गेल) पर वरक पिता सिखवाक क्रम मे हाथ-पयर, तोड़ाबैत छथि, तकर मेंही व्यंग्यक संग, मनोरंजक ढंगे उपस्थापन भेल अछि। 'फूल-फूल अप्रील' सेहो मिथिलावासीक भोजखौक प्रवृत्ति केँ देखार करैत अछि, जाहि मे पीड़ित घरवाड़ीए दोषी छथि। एहू कथाक' 'ट्रीटमेंट' मनोरंजक आ सन्देश सार्थक अछि। 'गवाह' मे महींसक गवाही केँ आधार बनाक' 'पंच-परमेश्वर'क खलनायकी केँ देखार कयल गेल अछि, जे मिथिला मे गामे-गामे भरल अछि। 'वृक्ष के गवाही' एतेक करूणा-प्लावित कथा नहि छल, जतेक महींसक गवाही।

'विस्फोट' मे नक्सलवादक सार्थक विरोध, सामाजिक प्रतिबद्धताक व्याजें कयल गेल अछि, कारण, ओ अपन आदर्श-पथ सँ भटकि चुकल अछि। 'सुभा' कथा मे संवेदनाक चरम उत्कर्ष अछि, जखन मुसलमान हेबाक कारणें, फूल हसन पर मन्दिर मे चोरिक इल्जाम लगैत अछि, तैओ एकटा बचिया (नारायणी)क प्रति ओकर निश्छल स्नेह, दरकल हृदय मे उमड़ि अबै छै। कथाक समक्ष 'माइ नेम इज खान' (फिल्म) छुछुन्न पड़ि जाइत अछि। दलित-चेतना आ दलित-स्वाभिमानक कथा 'अंगैठी-मोड़' लिखि क' त' ऋषि बशिष्ठ साबित क' देलनि जे दलित-साहित्य-लेखन पर, जन्मना-दलितक कोनो आरक्षण नहि भ' सकैत अछि। प्रो. हरिमोहन झा ब्राह्मणे-समाज पर

लिखथि आ महिलाक दर्द महिले टा बूझत, दलितक दर्द, जातिवादी दलित लेखके टा बूझत, ताहि सभ मिथ्या भ्रम केँ 'अंगैठी-मोड़' नामक कथा छिन्न-भिन्न क' दैत अछि, जेना किरणजीक वा यात्रीजीक वा जीवकान्त जीक दलित-लेखन कहियो केने रहय!

एक-सँ-एक 'अप-टु-डेट' (अद्यतन) विषय-वस्तु पर लिखल कथा-संग्रह स्वागतेय अछि। मुदा साहित्य सँ निस्पृह समाज, पोथी कीनि क' पढ़त, से संस्कार कहाँ विकसित भेल अछि एखनहुँ? नयनाभिराम पोथी, सभ आस्वादक कथा, खाँटी 'तृणमूलीय भाखा सँ सराबोर कथा-संग्रह, ऋषि बशिष्ठ सँ आर अपेक्षा बढ़ा दैत अछि।

•

मिथिला दर्शन, कोलकाता
जनवरी-फरवरी, 2018

गाम-विमर्श भाया चन्दन कुमार झा

बीसम शताब्दीक मैथिली काव्य-पीढ़ी सभ अनेरो बहुत चिन्ता करैत छल, भविष्णु काव्य-पीढ़ी आ मैथिली कविताक भविष्यक एकैसम सदीक डेढ़ दशक मे जे काव्य-पीढ़ी आयल अछि, तकर दृष्टि-सम्पन्नता आश्वस्ति-दायक अछि। नव्यतावादी नवागत पीढ़ी मे, जे कवि सभ संज्ञान लेबा योग्य छथि ताहिमे काव्य-गंभीर चन्दन कुमार झा सेहो छथि।

मैथिलीक अनेक कविक प्रारंभिक कविता सभ, सामान्यतः पहिने 'तुकान्त' शैलीक भेल अछि आ तकर तार्किक परिणति, पश्चात् नव-कविता मे भेल अछि। सैह चन्दनोजीक मामिला मे भेल अछि। 'अगड़म-बगड़म' (2014) केँ हुनकर पहिल काव्य-संग्रह बनबाक छलैक, कारण, ओ कविता सभ 2013 ई. मे प्रकाशित 'धरती सँ अकास धरि' के कविता सभ सँ पूर्वहिं लिखल गेल छल। मुदा सर्वप्रथम प्रकाशित हिनकर गजल-संग्रह (मोनक बात) सेहो ताही तथ्य केँ सम्पुष्ट करैत अछि। 'अगड़म-बगड़म' केर अधिकतर तुकांत प्रारंभिक कविता सभ, जे मंचोपयोगी श्रोता-प्रियता आ लोकप्रियताक दृष्टिकोण सँ लिखल गेल छल, अपन शिल्प मे जड़ आ काँच छल, अन्तर्कथ्य मे नहि। अन्तर्कथ्य मे नवीन रहितो, अपन 'जीर्ण-शीर्ण प्राचीन शिल्य' मे फंसि गेल छल, जे प्रायः भेले करैत अछि। शिल्पेक कारणेँ, कवि 'अगड़म-बगड़म' नाम राखि, अपन पोथी केँ 'उपेक्षित संतान' जकाँ 'हल्लुक छवि' प्रक्षेपित केलनि अछि, जखनकि ग्रामीण जीवनक दृश्यांकन आ काव्य-तत्व कमजोर नहि छल।

गजल, रुबाइ आ कता-लेखन मे सिद्धहस्तता देखौलाक बाद, 2015 ई. मे हिनकर 'बिहुँसि रहल अछि अमलतास' मैथिली तुकांत बाल-काव्यक चिक्कन-चुनमुन संग्रह अबैत अछि, जकर भाषा 'आभिजात्यवर्गीय मैथिल परिवारक बाल-बच्चाक आ वर्त्तनी मुख्य-मैथिलीक रहितो, प्रतिपाद्य अछि, वैह गाम भाया बाल-कविता। गामक 'बाल्य-परिवेश' केन्द्रीय तत्व अछि। मनोरम, लयात्मक बाल-काव्य मे कथ्य, मैथिली-बाल्य-कविताक विकास-क्रम के हिसाबें, पारंपरिक रहितो, कविक सृजनात्मक साधंस प्रशंसनीय

अछि।

चन्दन कुमार झाक शिल्पक प्रयोगधर्मिता आ वैविध्य संज्ञान लेबा योग्य अछि। हुनकर 2015 ई. मे छपल मैथिली हाइकु आ सेनुर्य-संग्रह 'सम्भावना' मैथिलीक नव-विधा केँ त' पुष्ट करिते अछि, कविक साहसिक आ सकारात्मक प्रयोगधर्मिता, आ काव्य-अभिव्यक्तिक विपुल सम्भावनाक उद्घोष करैत अछि। विरोधाभासी परिस्थिति सभ केँ, खाँटी तृणमूलीय, विडंबना सिरजैत भाखा मे संगठित-संयोजित क' हाइकुक संग, कवि अपना केँ स्वयं सेहो 'जापानी तिनपतिया' मे स्थापित क' लेलनि अछि। मुदा ओतहि 'सेनुर्य' मिथक-आधारित 'मात्र वर्णनात्मक' भ' जेबाक कारणें, 'हाइकु' जकाँ सफलता अर्जित नहि क' सकल अछि। ई विधा सभ 'लघुकथा' ('शार्ट-स्टोरी' नहि) जकाँ बढ़ियाँ 'चुट्टी-कटैत' 'सिंगी बिन्हैत' संवेदना उत्पन्न करैत अछि। मुदा 'नव-कविता जकाँ, दीर्घकालीन बात बनैत आ जमैत' नहि अछि। मुदा से चन्दनजीक सीमा नहि थिक, 'विधाक अपन विशेषता' (सीमा नहि) थिक। व्यस्त आ 'हाइ-टेक' पाठकक 'हाइ-टेक' काव्य थिक ई सभ, जकर 'क्षणिका' जकाँ स्वागते-स्वागत! गजले जकाँ, उदारमना आ प्रगतिशील (शिल्प आ कथ्य-दुनू स्तर पर) भ' क' स्वागत! नाक घोंकचा क' नहि (पवित्रता-वादी सभ जकाँ) वा 'जड़-शिल्पवादी' सभ जकाँ नहि। हाइकु मे जापानी शिल्प अछैतहुँ, कथ्य नव-कवितेवला अछि, गहींर व्यंग्य-अन्डरटोन'क संग। आ केन्द्रीय तत्व वैह, मिथिलाक गाम!

'धरती सँ अकास धरि' वस्तुतः चन्दन कुमार झाक पहिल नव-कविता-संग्रह थिक, जे कथ्य आ शिल्प दुनू स्तर पर नव तेवर प्रदर्शित करैत, प्रस्तुत भेल अछि आ काव्यक रूप-वैविध्यक संग, कथ्य-विस्तारक छटा देखौलक अछि। से एहि कविक तर्कसंगत क्रमिक विकास थिक। सत्तरि टा छोट-पैघ कविता , जाहि मे किछु गीतो केँ काव्य-टुकड़ी बना सन्हिया देने छथि, अपन तेवर लेल आकर्षित करैत अछि। अजित आजाद हिनका 'चिन्ता-चिन्तन आ प्रतिरोधक' कवि मानैत छथि, त' वरिष्ठ लेखक राम लोचन ठाकुर हिनकर काव्य केँ 'स्थानीयता मे विश्व-जनीनताक बानगी' मानैत छी। कवि स्वयं अपन काव्य केँ 'परिस्थितिक प्रतिवादक प्रयास' आ 'मैथिलीक काव्य-सिन्धु' मे हिलकोर उठाब'वला ढ़ेप' मानैत छथि।

ग्रामीण पृष्ठभूमिक अधकितर कविता स्थापित करैछ जे कविक

शरीर जीविका लेल कोलकाता मे रहैत अछि, आ मोन-हृदय-आत्मा, समाज आ साहित्य हित मे, गाम मे! 'मरीन ड्राइभ' आ मुगल गार्डेनक ट्यूलिप' पर कविता लिखितो, मिथिलाक गाम केँ मैथिली काव्य-सिन्धुक एक प्रतिपाद्य इकाई मानि, कवि ठीके एकटा ढेप जुमा क' (ढेलवंश सँ) फेकलनि अछि। ओना यक्ष-प्रश्न, ओत्तहि-केँ-ओत्तहि टाङल अछि, जे लोक पोथी कीनि क', गामक कविता, गाम मे पढ़त, तखन त' ढेप सँ हिलकोर उठत? पढ़त त' अधिकतर शहरक लोक वा 'शहर मे रहैत गामक साहित्य-सेवी?' तखन गाम मे कोना हिलकोर उठत? ओना से काज प्रथमहि चंदनजी केलनि अछि, सेहो बात नहि। मिथिलाक गाम, मैथिली कविताक नाम पर, कए पीढ़ी होम भ' गेल, गाम पर सेहो कोनो सकारात्मक प्रभाव नहि पड़ल। चन्दन कुमार झा अपन काव्य-वर्षा सँ 'धरती सँ अकास धरिक' आयाम सभ केँ एकार्णवा क' दैत छथि। 'अपना-अपनी' मे सपना आ सकारात्मकताक अवधारणा, मेंही व्यंग्यक संग प्रकट होइत अछि, त' 'मैञाक' वात्सल्य-रस केँ खटाइ द' क' नव पीढ़ी फाड़ि दैत अछि। मैथिली आन्दोलनक 'विदूषक' जे 'लौल' पोसने अछि, तकरा 'अकान' बनि क' झेलनाइ, 'लोकतंत्रक परिधि मे' नपुंसकता नहि, त' 'ई की थिकैक?'

'अबला सत्य' सन नीक 'मीनी-काव्य' 'सुखद भविष्यक आस' केँ दारूण बना दैत अछि, 'मरुस्थल' बनल मिथिलाक 'जरैत दीप' क निंघटैत तेल जकाँ। 'भोरका कथा' शिल्प-कथ्यक मणिकांचन-संयोग बंचैत अछि, त' समय' बंद कलमक आर्तनाद बनि बजैत अछि, 'आब नहि', 'एना नहि करू'। फकसियारीक बीच 'नव-वर्षक स्वागत' होइत अछि, त' मलकोका सँ अमृत-रस बरिसए मे कोनो आश्चर्य नहि। एक दिस 'अनुत्तरित प्रश्न' मारूख अछि तँ दोसर दिस मैथिली अभियानीक मैथिली केँ बेचबाक 'कार्यक्रम' सेहो। 'क्षणिक' काव्य सभ सटीक उतरल अछि, त' 'ककर दोष' निबंधात्मक आ 'जीवन यात्रा' सपाट वर्णन, जेना फजलुर रहमान हासमीक कविता 'हे भाइ'! कएटा कविता मे विनोदजीक काव्य-शिल्प हुलकी मारैत अछि, 'हिस्सक' मे बयान-मात्र अछि त' वामपंथ सँ मोह-भंगक काव्य-कथा 'आशा' सिरजैत अछि। 'कृत्रिमताक' 'भय' सँ 'आत्मा-विलाप' करैत अछि, त' हम सभ कविता 'कहि दैत छी'। 'गाम बदलि गेलैए', तेँ संस्कृति-परंपराक विलुप्त हेवाक चिन्ता सँ गामक नकारात्मक परिवर्त्तन सभक संज्ञान लैत

छथि चंदन आ समस्त नकारात्मकता केँ बहा देबाक लेल 'धरती सँ अकास धरि' एकार्णवा क' दैत छथि!

तखन आब प्रश्न उठैत अछि जे, कि हुनकर कविता कोदारि ल' क' गामक सिमान दुरुस्त करैत अछि? वा ओ गामक सिमान पर ठाढ़ भ' क' गामक विहंगावलोकन करैत छथि? किंवा गामक 'स्थानीयता सँ विश्वजनीयता' दिस अग्रसर भ' रहल छथि? कमल मोहन चुन्नू, अजित आजाद, राम लोचन ठाकुर उपर्युक्त प्रश्न सभ पर अपन-अपन विमर्श प्रस्तुत कयलनि अछि। टटका नवोदित पर आबे विमर्श भ' रहल अछि, से शुभे-हे-शुभे! बीसम सदी मे से कहाँ क' पबैत छलाह, आलोचकगण? 'जड़िए' फड़िछाब' मे हुनका सभक जीवन गुदस्त भ' गेल!

मुदा वस्तुतः गाम अछि कत' ठाढ़, सेहो त' विमर्शक विषय थिक? की गाम मे सभटा परिवर्त्तन नकारात्मके भेल अछि? सकारात्मक परिवर्त्तन की एकदम्मे नहि भेल अछि? जँ भेल अछि, सकारात्मक परिवर्त्तन सभ, त' तकर संज्ञान के लेत? वा के ल' रहल अछि? चन्दन कुमार झा कतेक संज्ञान लेलनि अछि? गाम हुनकर सभ काव्य-संग्रह मे केन्द्रित आ घनीभूत भ' क' आयल अछि। मुदा कोन रूप मे? भू-मंडलीकृत गाम? इन्टरनेटी गाम? कम्प्यूटराइज्ड गाम? पौती आ पड़वाक खोप मे बन्द गाम? पारदर्शी आ खूजल गाम? आधुनिक वा उत्तर-आधुनिक गाम? कोन तरहक गाम, हुनकर रेटीना पर अंकित अछि? खाँटी त' अछि सय प्रतिशत हुनकर 'मैथिली-गाम'! तखन त' आब 'गामक सिमान पर' ठाढ़ भ' क' अथवा गामक करेज मे पैसिक' गाम केँ वा 'चन्दनजीक गाम' केँ 'देखल' जाय आ पड़ताल कयल जाय?

भरिसक्के कोनो कवि हेताह, मैथिली मे, जे ग्रामीण पृष्ठभूमिक कविता नहि लिखने होथि। गाम त' मिथिलाक 'मौलिक इकाई' थिक। हरेकृष्ण झा होथि, कि विवेकानन्द ठाकुर, अजित आजाद, होथि कि चन्दन कुमार झा, देखताह त' गाम केँ अपने आँखि सँ। से आँखि कोन थिक, ककरा कविता मे? शहरी आँखिए देखैत छथि गाम केँ, वा ग्रामीण आँखिए? प्राचीन दृष्टिएँ देखैत छथि कि आधुनिक दृष्टिएँ? ककर गाम कोन कविक हिसाबें अप-टू-डेट' अछि आ कोन अर्थ मे से अछि? चन्दनजीक 'ग्राम्य-काव्य' मे कतेक प्रतिशत समकालीनता अछि? बिना समकालीनता के विश्व-जनीनता कोना आओत काव्य मे? स्थानीयता, समकालीनता,

विश्व-जनीनता आ अनुभूतिक शाश्वतताक लड़ी सभक संतुलित गुंफन, चन्दनजीक काव्य-माला मे भेल अछि की? हँ, त' कतेक?

वस्तुतः चन्दन झाक कविता जीवन्त आ करूणाप्लावित अछि। 'अगड़म-बगड़म', गजल-शेर-कताक संग्रह (मोनक बात) मे, जतय 'लोकप्रियता पक्ष' आ लयात्मक शिल्प मे अभिव्यक्तिक दबाव बलवन्त छल, त' 'धरती सँ अकास धरि', आ 'गामक सिमान पर' मे 'लोक पक्ष' निखरि क' आयल अछि। से कोनो कविक स्वाभाविक विकास-क्रम थिक। जेना-जेना कोनो कविक कविता परिपक्व होइत छै, कथ्य-शिल्पक आयाम आ सोपान मे वैविध्य आबैत जाइत छै। से असंदिग्ध रूपें चन्दन बहु-आयामी काव्य-लेखन केलनि अछि आ विविध शिल्प-शैलीक दिग्दर्शन मैथिली-काव्य-लोक केँ करौलनि अछि।

कमल मोहन चुन्नू ठीके कहैत छथि, जे चन्दन मे विषय-विविधता आ अभिव्यक्तिक सहजता छनि। ई सभ कोनो कविक थाती थिक। तथ्य ईहो थिक, जे 'वाद'क कल्पित झंझट सँ कविक मोन अकछा गेला पर 'परम्परावादिता-यथास्थितिवादिता' दिस रूझान बढ़' लगैत छै, जे संघर्षशीलता केँ प्रभावित करैत अछि। मुदा जीवन-संघर्ष केँ स्वर दैत चन्दनक कविता मे, गामक प्रति ममत्व भेटैत अछि, सेहो 'सहज अभिव्यक्ति' शैलीमे। तखन शुभकामना जे, जीवकान्तजी केँ समर्पित काव्य-संग्रह (वा एकटा कविता सेहो) हुनके सन 'वैचारिक खिच्चड़ि वा विरोधाभासी निबंधक बयान वा 'प्रकृतिवाद' कहियो हावी नहि होअय। वस्तुतः जीवन-संघर्ष केँ प्रश्रय देनिहार कवि चन्दन, से खतरा उठाब' लेल तैयारो नहि हेताह। आजुक कवि 'वाद-विवाद-संवाद' सँ परहेज करत, त' 'जीवनक स्वाद'क चक्कर मे उपयोगितावाद-उपभोक्तावाद-तटस्थतावाद मे फंसवाक आशंका प्रबल भ' जाइत अछि। तेँ 'वाद'क 'चयन' जरूरी अछि, 'अँखिमुन्ना-परहेज आ सायास कन्छी कटनाइ' नहि। चन्दन पैघ पारी खेलाइवला आ चौका-छक्का मारएवला छथि। शिल्प आ कथ्य, दुनू मे धनीक। पैघो लेखकक वैचारिकता पर ओकर कोनो छोटकी टा रचना 'विरोधाभासी प्रश्नचेन्ह' लगा दैत छै, त' कार्ल मार्क्स केँ अपन प्रिय लेखक बालजाक (फ्रेंच) के कहए पड़ैत छै, जे 'अहाँ अपन फल्लां रचना मे फंसि गेल छी।' तेहेन कोनो 'भविष्णु तथ्यात्मक आलोचना' क गुंजाइश सँ, चन्दन एहेन सामर्थ्यवान कवि केँ, सतर्क रहबाक चाही।

वास्तव मे, शब्द ब्रह्म होइत अछि आ ताहि मे अर्थक गुंफन केनिहार

कवि' 'परब्रह्म' होइत अछि, जे 'मुनिगा' (सम्राट आ साम्राज्य) क निष्प्राण देह केँ कोनो चभच्चा मे फेकबा दैत अछि त' कोनो सुल्तान सँ कोनो पराजित राजा केँ मिथिलाक राज आपस करबा दैत अछि (काव्य-पद-वर्णना सँ, विद्यापति)। कवि 'प्रश्न आ प्रति-प्रश्न' पुछैत अछि, अभिजात-वर्गक 'स्वाद-परिवर्त्तन' (फोकिला गाम-प्रेम आ कृत्रिम मातृभाषा-प्रेम) के प्रति 'आशंका' व्यक्त करैत अछि। कवि मनुक्खताक पक्ष मे रहैत अछि (देखियौ) पाशविकता आ देवत्वक ढोंगक पक्ष मे नहि। चन्दन प्रतिरोध-प्रतिवाद आ संघर्षशीलता केँ अपन घनेरो कविता मे गौरवान्वित केलनि अछि। ओ ठकहारा नेता ('डंडीमारा' 'मड़राइत मेघ' 'सुनू' 'प्रतिकार') केँ खूब नीक जकाँ चिन्हैत छथि आ तकर बहुरंगी चित्र अंकित क' देखार करैत छथि। जीवनेच्छाक 'आस' क अस्तित्वक 'औचित्य' मृत्यु-सत्यक बावजूदो बनल रहैत अछि आ विडंवना देखू जे मिथिला-समाजक युवा-शक्तिक 'बको ध्यानम' ताशक संग परनाक नोत पर लागल रहैत अछि। मित्र-शत्रुक परिचय राखए वला कवि, कएटा कविता मे मिथिलाक ग्रामीण समाजक अभग-दशाक चित्रण काव्यक चमत्कारी छटाक संग केलनि अछि।

'पंच-परमेश्वरक' खलनायकी प्रपंचक मादे वा 'दकचल इतिहास' क मादे, एकैसम सदी मे ढेकी बनेबाक 'लाचारी'-प्रतीक्षा हो वा ब्रह्मोत्तर खेतक नियति मे लिखल (सरकार द्वारा) रौदी-दाही (बाढ़िक पछाति) कालक प्रवाह पर जनमैत आ मरैत सपना (अक्खज) हो वा इतिहासक पन्ना सँ 'मेटाइत गामक पता' हो, मिथिला-समाजक राजनैतिक दुर्दशाक बात (सुनू, प्रतिकार, परिणति, हमर गाम) हो वा गामक 'निर्भया' केँ गामक चौबटिया पर' देखार होइत राखीक मोल हो, गाम-दशाक वर्णन भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक 'हा-हा! भारत-दुर्दशा न देखी जाई' जकाँ हाहाकारी भेल अछि। 'ओकर भोर' क 'सपना', 'गुड्डी उड़ाइ' क 'अन्तर' मेटाब' लेल जुलहाल छै, त' 'दूरी' मेटाब' लेल ओकर 'धैर्यक बान्ह' टूटल जा रहल छै। 'इजोतक रंग बेदरंग भेल जा रहल छै, जीवन जीबाक। खट-मधुर सुआद केँ सुआदैत वरीय नागरिक, अपन जीवनक अर्थ दोसर पीढ़ीक उपेक्षा-नीतिक कारणें, तेसर पीढ़ी (पोतीक स्नेह) मे खोजैत अछि। चन्दनजीक 'गाम' 'मरू-प्रदेश' बनि गेल अछि, जतय दू बुन्न पानि लेल पुरइनिक पात तरसैत अछि आ मलकोका फूलक मुसुकी पानिक बुन्न केँ सोहावित्त नहि छैक। 'अधकट्टी चान' गामक

लेल लेमनचूस-आकांक्षा बनल अछि आ 'बाबाक बेंत' जे कलामी परंपराक प्रतिबिम्ब छल, आब चुल्हा मे जड़ि रहल अछि। वर्ग-विभेदक विडंबनापूर्ण परिस्थिति (धनि सन) आ महत्वाकांक्षाक प्रचण्ड प्रवाह मे 'मोसिक धाह' सेराइयो गेला पर कवि केँ 'भरोस' छनि जे प्रदूषणक 'अस्तित्व' प्रारब्ध आ प्रलय-प्रतीक्षा' बनि क' रहि जाइत अछि। पुरुष-समाजक 'पुरुष-मानसिकता' जाधरि बदलि नहि जाइत अछि, ताधरि 'सु-पुरुष' केँ अपराध-बोध' होइतहि रहतैक आ ओ 'अथबल' बनल, पुआर मे मुँह गोरिऔने करैत रहत पाउज, चुबैत रहतै गाउज! 'आगि-पानि-लोह-पाथर' आ 'बरहमासा' बहुरंगी-जीवनक मनोरम चित्र प्रस्तुत केलक अछि, त' कवि अपन कलमक नोंक सँ राजनैतिक किला केँ खखोरि क', सपना बटोरि, चेतना सिरजैत छथि।

चन्दनजीक गाम 'शहरी मैथिलक स्मृति मे बसल' गाम नहि थिक। गामक 'यथार्थ आ विकृत चेहरा' इमानदारी सँ आयल अछि। सपना नेह आ संघर्ष, गामक मानस मे कम, कविक मानस मे बेसी अछि। गाम मे चेतना आ समकालीनता कम अछि, भोग-आकांक्षा आ आधुनिकताक कृत्रिमता बेसी अछि। गाम सांस्कृतिक आ सामाजिक संक्रमण-चरम मे अछि, तकर अभिव्यक्ति सेहो मैथिली कविता आ चन्दनजीक कविता मे हएब शेष अछि। मात्र राजनैतिक चेतना, समकालीनता नहि थिक। 'कम्प्यूटराइज्ड-इन्टरनेटी-गाम' भूमंडलीकृत भ' क' 'अन्तर्राष्ट्रीय इकाई' बन' दिस बढ़ि रहल अछि, मुदा 'बसुधैव-कुटुम्बकम, आधारभूत-ढाँचा आ निजता के बिना। मौलिक मूल्य के कीमत पर। मानवीयता आ बंधुत्व के कीमत पर! गाम-विमर्श वस्तुतः चिन्ताक विषय थिक। भाया-चन्दन कुमार झाक कविता, एकबेर फेर, गाम, विमर्शक केन्द्र मे आयल अछि। से मनोरम काव्य-भाषा मे विविध प्रयोगाधारित शिल्प मे मनोरम बिम्ब-विधान मे प्रस्फुटित 'मलकोका-काव्य'। मुदा अधिकतर कविता, क्षणिका आ लघु-कविता-स्वरूप मे आयल अछि। दीर्घ-कविताक एखन प्रतीक्षा अछि। मुदा लघु-आकारीय कविताक, 'मारक क्षमता' 'गंभीर' अछि। प्रखर चेतना मे मुखर काव्य-अभिव्यक्ति केँ जोड़ि देल जाय, त' चन्दन कुमार झा बनैत अछि। मैथिलीक शब्द-सम्पदा मे धनीक, कविक दायित्व बढ़ि जाइत अछि।

•

श्रीमिथिला

अक्टूबर-दिसंबर

2017.

प्रेम-कविताक इन्द्रधनु टंकार

मैथिली काव्य-साहित्य मे नारी-शक्तिक, स्वर-विकास होइत-होइत, एकैसम शताब्दीक तेसर दशक आबि गेल। बीसम सँ 21म सदी धरिम मे, डॉ. इलारानी सिंह, डॉ. नीरजा रेणु, सुशीला झा, सुस्मिता पाठक, ज्योत्सना चन्द्रम्, नूतन चन्द्र झा, वन्दना झा, रोमिशा वत्स, स्वाती शाकम्भरी, कामिनी, निक्की प्रियदर्शिनी, विजेता चौधरी, डॉ. शेफालिका वर्मा, नन्दिनी पाठक, माला झा, आदि मे कएटा कवयित्री उपस्थिति दर्ज क' 'सुषुप्त' भ' गेलीह, जखनकि सुस्मिता पाठक, ज्योत्सना चन्द्रम्, कामिनी, निक्की प्रियदर्शिनी, सुशीला झा 'स्वर' केँ बुलन्द क' देलनि। ताहू मे ज्योत्सना चन्द्रम्, सुस्मिता पाठक आ कामिनी, मैथिली-नारी-काव्य केँ, जेहेन निस्सन आधार देलनि, तेहने आधार-भूमि ल' क', नवोदित कवयित्री शारदा झा, अपन पहिल मैथिली कविता-संग्रह, 'प्रेम-कविताक बाद' ल' क', सनगर उपस्थिति दर्ज केलनि अछि, जकर मीठ- प्रतिध्वनि, दीर्घकाल धरि, पाठकक कर्ण-ढ़ोल केँ तरंगित आ हृदय केँ संवेदित करैत रहत। मैथिली-नारी-काव्य-सृजन मे, पुरूष-कवि-गणक सेहो योगदान रहल। तथापि, मात्रात्मक एवं संख्यात्मक हिसाबें, पोथीक संख्या छुछुन्न आ दयनीय होइतो, कवयित्रीगण द्वारा सृजित काव्यक गुणवत्ता कतहुँ सँ झूस नहि, अपितु उच्च मानकक अनुकूल रहल अछि। जत' कविगणक नारी-काव्य, एखन धरि नारी-जीवनक दर्द पर केन्द्रित रहल अछि, कवयित्री-गण द्वारा सृजित काव्य, नारीक अन्तर्मनक गँहिराइ के संग, प्रेम-स्नेह-वात्सल्य, स्त्री-पुरूष-सम्बन्ध, पारिवारिक विडंबना, सामाजिक अभगदशा, सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण, पुरूष-वर्चस्वक प्रतिरोध, पुरूषवादी प्राचीन तंत्र आ तकर मानसिकताक विरोध, आक्रोश-अभिव्यक्ति, प्रेमहुँ सँ बेसी सम्मानक आकांक्षा आ तकरा प्रथम प्राथमिकता देब, कतओक अ-पारंपरिक कथ्य आ विषय-वस्तु धार पओलक अछि, धारा पओलक अछि। कविगण-सृजित नारी-काव्य मे दर्द आ सहानुभूतिक कोनो कमी नहि अछि, मुदा कवयित्रीगणक नारी-काव्य मे स्वाभिमान, सम्मानक आकांक्षा आ नारी-जीवनक जतेक संघर्ष आयल अछि, से मैथिली-नारी-काव्यक आ मिथिलाक नारी-समाजक, दिशा-निर्देश क' दैत अछि।

ताहि निस्सन पृष्ठभूमि पर, जखन 'प्रेम कविताक बाद' पोथीक माध्यमे, शारदा झा, पहिले-पहिल मैथिली-काव्य-द्वार पर, अपन अंग्रेजी- एम. ए. आ दर्शन-शास्त्र- एम.ए.क ज्ञानक सार्थक-काव्योपयोग करैत, थाप दैत छथि तँ बुझाइछ जेना ओ नारी-अस्तित्व, प्रेम, परिवार-संस्था, सामाजिक सरोकार, स्मृति आ दर्शन, विषाद-संवेदना आ हृदय, संस्कृति आ सभ्यता, इतिहास आ सामाजिक-प्रदूषण, आदि-आदि विविध विषय केँ नव-सदीक चुनौतीक अनुकूल, सामाजिक-दार्शनिक-साहित्यिक-व्याख्या, सम्मोहन-काव्यक रूप मे प्रस्तुत करैत छथि।

वस्तुतः विवेच्य सम्पूर्ण संग्रह, अन्तर्मनक काव्य-यात्रा थिक, जे अन्तर्मन आ हृदयक परत-दर-परत, अपेक्षित 'साहित्यिक वैज्ञानिकता' के संग, उद्घाटित करैत अछि। प्रायः सभ कविता संवेदनाक चासनी मे बोरले टा नहि अछि, ओहि मे विषयानुकूल विज्ञान-तत्व, संस्कृति-तत्व आ सरोकार-तत्वक खोआ फूटि भरि क', पिरूकियाक-मेहिक्का-मोढ़ि, मोढ़ि क', तखन लवंगलता तैयार क' पाठक केँ परसल गेल अछि। पारायण सँ बेसी रसास्वादनक लेल! तेँ हिनकर कमजोरो कविता सभ, रस-विहीन नहि अछि एकोटा। काव्य मे रस-निष्पति, हिनकर मजगूत पक्ष अछि। यद्यपि काव्य मे नवे टा रस केँ ई मानलनि अछि, जखनकि 'रीति-काल आ भक्ति-कालक कविगण मनबोध (मैथिलीः कृष्णजन्म) सूर (ब्रजभाषा) तुलसी (अवधी) 'वात्सलय-रस' केँ दसम्-रस-स्वरूप' पूर्वहि स्थापित क' चुकल छथि, जे काव्य-शास्त्रक पैघ घटना छल आ जकरा मम्मट आ पंडितराज जगन्नाथक रस शास्त्रक 'क्रमिक आ तार्किक विकास' मानल गेल छल। सेहो 'शास्त्रीय-भाषा (संस्कृत) सँ लोकभाषा (उपरि-उल्लिखित तीनू) मे। आ से वात्सल्य-रस, पोथीक 'समर्पण' आ कवयित्रीक कवितो मे आयल अछि। तकरा भविष्य मे कवयित्री द्वारा स्वीकारब अपेक्षिते अछि। जेनाकि अपेक्षिते अछि, प्रेम-विषयक अनेक कविता; यथा ; प्रेमक संज्ञान, उपराग, प्रेमक परिभाषा, प्रेम-कविताक बाद, प्रेम-पत्र, प्रेमक भेंट, खिस्सा, दिवा-स्वप्न, आबू पर्वतक प्रतीक्षा, भित्ति-चित्र आदि, पोथी मे संग्रहित अछि। से सभ पाठकक अपेक्षा पूर केलक अछि। एहि सभ कविता मे कवयित्री, राग आ संवेगक ऊन (सतरंगी, बैनीआहपिनाला) सँ, प्रेमक स्वेटर बुनि क', मैथिली-साहित्य आ समाज केँ 'नव-डिजाइनक' स्वेटर सँ, परिचय करौलनि अछि। प्रेम-चित्रण मे माहिर

कवयित्री, मिथिला-चित्रकला सन मनोहारी काव्य-चित्रक परिकल्पना मे, प्राकृतिक उपादान सभक संयोग करैत, प्रेमक सतरंगी इन्द्र-धनुष, किशोर-वय-छात्रा जकाँ भावनाक चरमोत्कर्ष मे, बनबैत छथि। सेहो कविता मे। कारण, कुच्ची सँ इन्द्रधनुषक मिथिला-चित्र-कारी बनायब, अपेक्षाकृत आसान अछि।

'आबू (माउन्ट) पर्वतक प्रतीक्षा' करैत जखन 'प्रेमक संज्ञान', लेल जाइत अछि, तँ देह बाँसुरी जकाँ बाजि उठैत अछि आ अस्तित्व कविता बनि जाइत अछि, अन्हार अकासक अंगना पर, उज्जर पिठार सँ पारल अरिपन आ ताहि पर चमकैत सेनुरक ठोप जकाँ प्रेमिल-हृदय', पाश्चात्य-साहित्यक 'सिमिली'क मधुर-स्मृति दैत अछि। तहिना, जखन आबू पर्वत केँ निशा-निमंत्रण भेटैत अछि तँ 'प्रेमक परिभाषा' मे प्रेम आ जीवनक उदात्त-व्याख्या, समर्पणक रूप मे फड़िच्छ भ' जाइत अछि, जीवन केँ संबल प्रदान करैत जेना बोधगयाक बोधिवृक्षक खोह मे भोरक प्रतीक्षा करैत परबा-दम्पति आ ज्ञानचक्षुक प्रतीक्षा करैत, तथागत!

'प्रेम-कविताक बाद' जे पोथीक शीर्षक-काव्य अछि, प्रेम-कविता पढ़लाक बाद, प्रेम-कविता मे प्रेम तकनाइ ओहिना कठिन अछि, जेना प्रेम केलाक बाद, प्रेमक कोनो अवशेष नहि रहि जाइछ। कारण, प्रेम देह-धर्म नहि, सूक्ष्म मनोभाव थिक! प्रेम-वर्णनक चरण सभ मे, प्रेमक जाल केँ समयक मुसरी जकाँ छिन्न-भिन्न करब वा गँहीर अन्धकूप मे जौर सँ छूटल डोल जकाँ छपाक-स्वरक हताशा होइतो, प्रेम-काव्य-पोथीक एकटा आर पन्ना उनटेबाक जुगुप्सा, उपमान सँ सजल सहज मानवीय अनथक आकांक्षा थिक, जकर जरूरति आजुक देह-धर्मी-समाज केँ आर बेसी छैक! 'प्रेम-पत्र' अनहार-कोठली सँ निकलबा लेल आफन तोड़ने अछि तँ पाठक केँ उद्वेग लगबे करत। जीवन मे प्रेमक संगम होइ छै, तँ हिन्दीक एकटा आधुनिक कवि जकाँ, क्यो मक्का बँचाबैत अछि, तँ क्यो मदीना! क्यो चानी बँचाबैत अछि तँ क्यो सोना! आ क्यो अपन प्रेम-पत्र बँचेवाक लेल अपस्याँत रहैत अछि! आ प्रेम-कविता लिखि क' छपबा, समाज मे प्रेमक सनेश बिलहैत अछि, बेन परसैत अछि, संवेदनाक दूभि-धान सँ प्रेमक चुमाओन करैत अछि। यद्यपि 'प्रेमक भेंट' कखनो, भहरंग आँचर, ओझरायल गुड्डीक ताग, आँखिक काजर सँ टघरैत अवसाद, अन्तस्तल पर जनमल कूशक काँट-स्वरूप सेहो

उपहार होइत छै, तथापि, प्रेमक विशद, गँहीर आ सटीक व्याख्या तँ प्रेम-काव्य मे हेबे करतै। पति-पत्नी-संवाद, हास-परिहास मे, जखन 'उपराग' कविता बनि अबैत अछि तँ 'महमह करैत कटहरक कोआ, कि तिलकोरक लत्तीक प्रेम मे गछारल चार, राहड़िक उसना कि आलू-कुम्हरौड़ी, जमीरी नेबो सन प्रीतिक सुआद, सोझे मिथिलाक नामी संस्कृति-तत्व आ व्यंजन सभक संगम क' दैत अछि। प्रेमसिक्त-उपरागक संग! नव कनियाँ-वरक चोरा-नुक्की -खेलक प्रेम-सुवास मे, संस्कृति-तत्वक सुवासक संगम सँ उत्पन्न प्रेमक महमही, कटहरक कोआ जकाँ वा हृदय मे मखानक फोका जकाँ चानी छिटकेबे करैत छै! मुदा बर्फ जकाँ गलैत प्रेमक, वियोग-श्रृंगारक बहु-आयामी 'खिस्सा' मे 'कारी सिलेट पर लिखल प्रियवरक नाम, जेना रातुक अकास पर टाङल दुतियाक चान' वस्तुतः अन्हारक ओढ़नी मे नुकायल लाज, मिझाइत टेमी केँ सोहरबैत रहैत अछि। खिस्सा बनि जाइत अछि प्रेम-काव्य रचैत कलम सँ गंगोत्री जकाँ बहैत सियाही, जे रातुक रानीक आँचर प्रेम सँ भिजा दैत अछि। 'दिवा-स्वप्न' मे प्रेमक उपादान सभक स्मृति, रेशमी-ताग मे गाँथल मोती जकाँ अबैत अछि, तँ 'भित्ति-चित्र' मे प्रेम-स्मृतिक गँहीर अवसाद, विहुँसैत चूड़ीक काल-पीड़ित वेदना-विषाद, अतीत आ जिनगी सँ प्रेमक उपादान सभ केँ जोड़ि-जोड़ि क', नॉस्टेल्जिक-स्मृति सभक काव्योपयोग करैत, 'अनुराग-रांगल इन्द्रधुष' सिरजित केलनि अछि, शारदा झा!

मुदा ओ प्रेम केँ आधुनिक सन्दर्भ मे देखैत, खाली प्रेमकविते टा के प्रतिमान नहि ठाढ़ केलनिहे, अपितु आनो विषय-वस्तुक हुनकर कविता सभ, गंभीरतापूर्वक संज्ञान लेबा लेल बाध्य करैत अछि। 'हे पिता' अपन जनक केँ, दायित्व बुझवाक दायित्वपूर्ण स्मार-पत्र दैत अछि, से प्रगतिशीलते थिक। मुदा से अभिधात्मक बेसी भ' गेल अछि।

'दूभि', कविताक प्रतीक थिक, जे संवेदनाक आंगन मे शब्दक अरिपन बनि अथवा निपलाहा गोबर मे उगैत दूभि जकाँ, संघर्ष, कविता बनि, कविक हृदय चीरि जन्म लैत अछि। जीवन-मूल्यक पूजा मे, संघर्ष-काव्यक यैह दूभि चढ़ा ओल जाइत अछि। अइ रमणीक कविता मे हृदयक संवेदनात्मक स्वरूपक नीक उद्घाटन भेल अदि। 'साँझ'क मनोरम शब्द-चित्र मे, असोथकित चान, दिनकर केँ गर्भ मे धारण क', इजोत आ जीवनक उल्लास परसैत अछि। 'स्त्री आ स्वप्न'क अमरलत्ती जकाँ, अनन्त अस्तित्व,

मानवता केँ टाटक भुरकी सँ पइसि क', जीवनक सोंगर प्रदान करैत अछि। जिनगी केँ स्त्रीक सहयोगक, एहने मेंही मिथिलामय उपमान देनाइ कमाल अछि। सपना, पैघ जिजीविषा होइत अछि।

'पृथ्वीक प्रण' प्रदूषणक व्याजें, नारीक दशा केँ प्रतीक देलक अछि, तँ नव-जीवनक भ' रहल आरंभ मे, चार पर लटकल कदीमा आ वारीक कोन्टा पर फुलैल अड़हूल, सोहरक संग-शुभे-शुभे गबैत अछि। स्त्रीक अस्तित्व 'परिचय' मे उत्साहवला वक्तव्य सभ सीता केँ महात्यागी तँ बनबैत अछि, मुदा कमजोर-काव्यक संग! 'नापी' मे स्त्रीक मोन, निधोख बगरा बनि, अपना लेल, अपन जमीन नापैत अछि। कविताक भाव आ गुम्फन दुनू कमाल अछि। स्त्रीक अप्पन आंतरिक दुनियाँ, ओकर जीवन आ आत्माक आंतरिक गहनता, प्रकृतिक सौन्दर्य-श्रृंगारक संग, गँहीर भावे प्रकट भेल अछि। अर्नेस्ट हेमिंग्वे आ ज्याँ पॉल सार्त्र के अस्तित्व-वाद, आजुक नारीक अस्तित्वक प्रसंग मे, शारदा झाक कविता सभ, मोन पाड़ैत अछि! एहेन मे, स्त्री द्वारा अपन आ प्रकृतिक 'स्व-अनु-भूति' मे, दार्शनिकता-वैज्ञानिकता-मिथिलाक संस्कृति-तत्व सभक काव्य मे समावेशी-योग्यता, प्राकृतिक आयाम सभ काव्य-गुंफनक योग्यता, नारी आ प्रकृतिक अस्तित्वक औचित्य सु-स्थापित क' दैत अछि। आ नारी अपन शोषणक विरूद्ध 'विरोधक स्वर' उठाबैत सूर्य केँ डेरेवाक चेतौनी देत अछि, जे 'मूक प्रतिरोध' वला चरण मे सामयिक अछि। जीवनक 'जिजीविषा' अपन संघर्षक संकल्प मे 'प्रेमक अपराजिता बीछैत अछि आ अपन संतति केँ रोपैत अछि, रचनात्मकताक संरक्षण करैत अछि'। 'हेरायल भोर' निर्भयाक दर्द-काव्य, सामाजिक सरोकार देखबितो नारी-अस्तित्व पर खतरा संकेतित करैत अछि। 'नागफणी' (मैथिली मे, नागफेनी) सेहो प्रकारान्तर सँ, नारी-जीवनक-संघर्ष आ अस्तित्वक सार्थकता के बात करैत अछि। 'प्रकृतिक चमत्कार' सेहो 'नागफेनी'क माध्यमे प्रकृति आ ईश्वरक अस्तित्वक काव्यमय-संधान थिक। ज्ञान सिंधुक कछार पर छिड़िआयल डोका जकाँ द्वैत-सिद्धान्त, विरोधाभास, सजगता कविता'क अस्तित्व-प्रणेता बनैत अछि, तँ 'चिनबार' निपैत बाल-विध ावाक हृदय-विदारक आर्त्तनाद, अपन 'मोन' केँ चिनबारे पर राखि देने अछि। कारण, ओकर हृदयक टाट मे अंसख्य भूर छै। कोनो बच्चाक 'जन्म' ठीके मायक लेल सृजन-संसार, सद्यःरचित कविते होइत अछि। माय आ

बच्चाक भाग्यक अस्तित्व मे, गरीबीक अस्तित्वक कारणे, फुक्का आ मुरही बेचबा क' 'भाग्यक अंतर' करबा दैत अछि। 'धीपल पारा' (मरकरी) समाजक अ-सामाजिक-तत्व संवेदना केँ बहीर क', सामूहिक बलात्कारी बना 'निर्भया'क अस्तित्व पर निरंतर चोट क' रहल अछि। कारण, ढ़ीठ भेनाइ आधुनिकताक लक्षण भ' गेल अछि। पाशविकता, सभ्य-समाज केँ लजा रहल अछि। समाजक 'व्यथा' आर दिनों-दिन गँहीर भेल जा रहल अछि। 'स्त्री-विमर्श' पुरूषवादी मानसिकतावला विमर्श पर, जायज प्रश्नचेन्ह ठाढ़ करैत नारीक मनुक्खताक ओकालति, उचिते करैत अछि! से अपेक्षा सँ बेसी परिपक्वता-वैचारिकताक संग, 'तूर जकाँ धुनाइत अस्तित्व' वला काव्य-अभिव्यक्तिक संग!

स्त्री अपन अस्तित्व केँ बिना कोनो अपराध बोध के मात्र एकटा नारीक रूप मे, जखन प्रस्तुत करैत अछि, आन सभ प्रकारक अद-पद सँ मुक्त भ', तँ ओ अपन असगरो अस्तित्व मे पूर्ण होइत अछि। ई अ-पारंपरिक प्रगतिशीलता नारीक कोमल ठोर केँ धरगर हाँसू बना क', प्रेमक कोमल गीत केँ, काटि क' खसा देब' चाहैत अछि। विद्रोह-चेतना केँ, प्रेमक त्याग क' देबाक चाही, से विमर्शक विषय भ' सकैछ। मुदा ताहि सँ पीयर अकास मे नील चन्द्रमाक पिपनी सँ बहैत नोनछराइन पानिक 'सिमिली-मेटाफर'वला काव्याभिव्यक्ति कमजोर नहि होइछ। एतहि सँ नारीक 'अन्तर्मनक यात्रा' अर्थात् महत्वाकांक्षाक कए चरण, काव्यात्मकता पबैत अछि। अकास छुबैत पहाड़ यात्री केँ बजाबैंत अछि, जाहि मे लोकोन्मुखी-दंतकथाक रहस्य, अन्तर्मनक काव्य-यात्रा पूर्ण करैत अछि। ओना तँ ई सम्पूर्ण संग्रहे अन्तर्मनक काव्य-यात्रा थिक। कतहु प्रेमवादी, तँ कतहु अस्तित्ववादी। प्रेमोक परिभाषा बदलि, नारी-पुरूषक सीमा तोड़ि, समाज, विश्व, प्रकृति आ कविता सँ प्रेम करैत। नारी-अस्तित्वक संग मानवता, संस्कृति आ प्रकृतिक अस्तित्व केँ सेहो गछैत। दुनू स्थिति मे, पारंपरिक-परिभाषा केँ तोड़ि नवीन-व्याख्या स्थापित करैत छथि शारदा झा!

'कविता बचा लेतै संसार' मे प्रदूषण आ विकृतिक विरूद्ध संकल्प लैत अदम्य आस्था व्यक्त भेल अछि। वस्तुतः एखनो कविता, हृदयक संवेदना आ मस्तिष्कक वैचारिकता केँ बचा क' वा उद्दीपित क' क', संसार आ मानवता केँ उजास द' रहल अछि। अइ कविताक वर्णन सेहो मनोहारी

अछि। 'ऋण-मुक्ति' श्रृंखलाक दुनू कविता एकटा तेसरे धाराक अछि। विज्ञानक उपादान, जल-चक्र, बर्खा-चक्रआ ऐतिहासिक चेतनाक काव्य-सृजन लेल, 'सकारात्मक-शोषण' कयल गेल अछि, जाहि मे शाश्वत वैज्ञानिक सत्यक आ सभ्यता बँचेबाक जुगुप्साक, काव्यमय प्रस्फुटन भेल अछि। संस्कृति-चक्रक निरंतरता पर काव्य-सृजन, दार्शनिक-मूड मे करैत, नील-नदी-घाटी सँ गंगा-कोसी-नदी-घाटी धरि सर्जनाक व्याप्ति देखबैत, 'अपन अस्तित्वक मादे, गुनैत ईश्वरक अस्तित्व, सभ्यताक सभ यक्ष-प्रश्नक उत्तर सँ इतर, मनुक्ख बनबैत अपन रस्ता, 'रातुक विदा-गीत' मे शहनाइक विलम्बित तान केँ मिज्झड़ करैत, कवयित्री निसबद्द-करूणाक सृजन करैत छथि।

तखन कह' पड़त ईहो, जे एतेक सभ किछुक अछैत, चयन आ छँटनी मे निर्ममताक अभावक कारणे, 'याचना' मधुपजीक भक्ति-गीत बनि क' रहि गेल, जे आजुक सक्षम कवयित्री शारदा झा सँ अपेक्षित नहि अछि, यद्यपि 'सुरूजक पाग' मे मधुपजीक 'धसल अठन्नी'क स्मृतिक नीक उपयोगो भेल अछि।

'मिलन'क 'पारंपरिक वर्णन' महादेवी वर्मा आ शेफालिका वर्मा केँ मोन पाड़ैत अछि तँ 'शरणार्थी' कश्मीरी-पंडित केँ मोन पाड़ैत अछि। 'चलू, कनि बदलि क' देखी' एकेडमिक आ बाल-कविता-टाइप भ' गेल अछि, जाहि मे 'युग-निर्माण-योजना', मथुराक, नाराक उपयोग भेल अछि। 'जनु कानू हे माय' मे आशावादिताक अछैत, सपाट बयानीक वर्चस्व भ' गेल अछि, तँ 'प्रश्नचिन्ह' सेहो बेसी अभिधात्मक भ' गेल अछि। काव्य-गुम्फन मे अभिधा-लक्षणा-व्यंजनाक उपयोग आ समन्वय करैत काल संतुलन आ तीनू तत्वक प्रतिशत के ध्यान राख' पड़ैछ, जे 'प्रतीक्षा' मे नहि भ' सकल। 'अर्थ' मे शब्द-मौन-ऊँकारक नाद-स्पंदनक तरंग, दार्शनिक-अध्यात्मिक स्पर्श देलक अछि, तँ 'आभासी यथार्थ' बनाम 'वास्तविक यथार्थ' मे अत्यंत गँहीर दर्शनिकताक संग, बुद्धिजीवीक दलदल दिस विचलन पर समधानल प्रहार भेल अदि। 'असाध्य रोग' निष्क्रियता आ आत्मलीनता पर चोट करैत, ज्वलंत सामाजिक सरोकार देखबैत अछि, तँ राजकमलक शरीर, प्राण, आत्माक 'मुक्ति-प्रसंगक मादे', मुक्ति-प्रक्रियाक जीवंत चित्रण करैत, कवयित्री अद्‌भुत आ अकल्पनीय काव्य-परिदृश्य अंकित केलनि अछि। प्रेमक 'साक्षी' स्वरूप सतरंगी-काव्य-साक्ष्य, संवेदना केँ झंकृत करैत अछि।

यद्यपि कवयित्री केँ जीवन-संघर्ष, वैचारिक प्रगतिवाद, समाजिक सरोकारक पूर्ण चेतना आ परिपक्व अवधारणा छनि, तथापि, हुनका रॉबर्ट फ्रॉस्ट केर 19म सदीक अंतक 'स्पॉन्टेनियस-फ्लौ' वला पुरान स्थापना मे, हृदय-संवेदनाक काव्य-अभिव्यक्ति मे, मस्तिष्कक वैचारिकता-प्रतिशत 21म सदीक माँग अनुकूल, बढ़ाक' संगम कर' पड़तनि। आ इलियट-एजरा पाउन्डक काव्य-चिंतन पर ग'र कर' पड़तनि। आजुक सन्दर्भ मे अज्ञेय, निर्मल वर्मा (गद्य) आ अशोक वाजपेयीक रहस्यमय-काव्य-सौन्दर्य-बोधक लक्ष्मण-रेखा सँ निकलि, घूमिल-मुक्तिबोध-शमशेर सिंह-नागार्जुन-त्रिलोचन-कुँवर नारायण-श्रीकांत वर्मा आदिक वैचारिक-दुनियाँ आ सामाजिक संलग्नताक संज्ञान लेब, आजुक समयक माँग थिक। जँ कविताक 'ठाम' मे तात्विक-स्वरूपक चिंतन जरूरी, तँ विभ्रान्ति-प्रशान्तिक अवस्था मे 'सृजनशील उद्दीपनक संयोग' बिना 'ठाम' धरिक यात्रा कोना संभव अछि? तेँ महत्वपूर्ण कवि हरेकृष्ण झाक 'गहन चिंतन सँ अवसादमय विश्रान्तिवला ठाम' शारदा झाक लेल 'सटीक' नहि भ' सकैछ।

अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता, जखन गाड़ि-वला स्तर मे पहुँचि जाय, तँ सहजहि प्रश्न उठाओल जेवाक चाही। अभिव्यक्तिक स्वतंत्रताक नाम पर, भ' रहल राजनीतिक खेलौड़, समाज आ साहित्य लेल, कल्याणकारी नहि अछि। तहिना पछिला तीन दशक साक्षी अछि, जे नारी-शक्तिक शिक्षा-कायाकल्प मे, पिता-पतिक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रहल अछि। तेँ नारी-सशक्तिकरण मे, पुरूषक सहयोग-समाप्तिक एखन चरण नहि आयल अछि। आबि जाय तँ, कोनो तेहन बेजायो नहि।

ओना काव्य-यात्राक आरंभ मे, अपन वक्तव्य कम कवयित्री प्रकाशित केलनि अछि। अइ संग्रह मे, काव्य मे अन्तर्निहित कवयित्रीक वक्तव्य, भूमिका मे व्यक्त वक्तव्य सँ बेसी प्रभावशाली, मार्मिक आ हृदयग्राही भेल अछि। 'बोल्ड' आ प्रगतिशील सेहो बेसीए। संग्रह मे प्रेमक विविध पक्षक बहुरंगी काव्य-व्याख्या, जहिना इन्द्रधनुषसन मनोहारी अछि, तहिना इन्द्रधनुषक चेतौनीवाला टंकार, नारी-अस्तित्ववाद केँ सु-स्थापित करवाक आकांक्षा थिक, जे अनुपम काव्य-शैली मे व्यक्त भेल अछि। कवयित्री मिथिलाक संस्कृति-तत्व आ मैथिली-लोकभाषा मे धनीक छथि। शब्द-सम्पदा अक्षय अछि हिनकर, तथापि चारिटा हिन्दी शब्दक उकडू-उपयोग

(ढ़िबरी, नागफनी, लीलब, कुम्हलायल, जकर विकल्प - डिबिया, नागफेनी, गीड़नाइ, मौलायल मैथिली मे उपलब्ध अछि) केर अपयश 'हिन्दी एम.ए.' केँ देल जा सकैछ। कारण, कवयित्री, हैदराबाद-प्रवासक बावजूद, गाम-घर सँ गँहीर जुड़ल छथि। से कविता सभ टन-टन बजैत अछि। कवयित्रीक लक्ष्य आ आगूक बात सु-स्पष्ट छनि। खाली 'संवेदनाक स्वर' मे हृदयक संग, मस्तिष्कक वैचारिकताक 'कनिये आर' योग द' क' लक्ष्यक संधान सुनिश्चित कयल जा सकैछ। कारण, युग तँ 'ब्रेन स्टॉर्मिंग' के भैए गेल छै आ नव-नव चुनौतिक संग लड़वाक लेल, संवेदना केँ, आर प्रखर वैचारिकताक संयोग-सहयोग अपेक्षिते अछि। अपन 'काव्य-सौष्ठव आ प्रसाद-गुण' लेल, ई संग्रह, चिर-स्मरणीय आ कालजयी प्रमाणित हैत आ शारदा झा केँ, मैथिली-काव्य-क्षितिज मे, देदीप्यमान बनओने रहत। हुनकर काव्य-संभावना, अनन्त आ अत्यंत प्रभावशाली अछि।

•

चित्र-काव्यक तानी मे, व्यंग्यक भरनी

मनोज शाण्डिल्यक 'सुरुजक छाहरि मे' हुनकर पहिल मैथिली कृति आ कविता-पोथी थिक, जे ओहि नव्यतम पीढीक संज्ञान लेब' लेल बाध्य करैत अछि, जे एकैसम सदी मे, अपन धरगर सूर्ज-काव्यक धाह दैत, मैथिली काव्य-क्षितिज पर, उद्दीयमान भेल अछि। अर्थशास्त्र आ विपणन-प्रबंधन के अध्येता आ बैक-वणिक, जँ काव्य-साहित्य लेल अभिप्रेरित होथि, तँ मातृभाषा-प्रेम, साहित्यक बीज, सामाजिक-संलग्नता, मातृ-भूमि-स्नेह आ साहित्यक-पारिवारिक पृष्ठभूमिक संग कविक सामाजीकरण मे मानवीय-मूल्यक भूमिका केँ सेहो यश देब' पड़त। अपना 'जड़ि'क प्रति आस्थावान कविक, साहित्य पाठ मे अभिरूचि, व्यापक साहित्यिक संलग्नता आ सामाजिक मूल्यक ज्ञान सेहो छनि। काव्यक प्रति अपन अवधारणा व्यक्त करैत, ओकरा जीवनक लेल सकारात्मक, तनाव-मुक्ति आ प्रसन्नताक औजार, जीबैत रहवाक आव लम्ब, मानलनि अछि मनोज शाण्डिल्य से पोथीक आलोक मे, उचिते मानल जा सकैछ।

अनेक कविक प्रथम काव्य-संग्रहक संग ई घटना होइत रहल अछि, जे रचनाक चयन करैत काल रचनाकार अपन विधाक प्रति सुदृढ़ नहि रहि पबैत छथि आ कए विधाक रचना एक पोथी मे संग्रहित भ' जाइत अछि। मनोज शण्डिल्य एकटा नीक गीतकार छथि, तेँ अपन चारि टा गीत (उलहन आन्दोलन, रंग-बिरंग, रहय दिऔ) पोथी मे संग्रहित क' देलनि अछि। चारू गीत अपन, धरगर कथ्य आ विषयक नवीनताक कारणें नवगीते मानल जायत। गीत सभ मे छन्द-प्रवाह आ अर्थ-प्रवाह दुनू अछि। मुदा एकर सभक स्थान फराक गीत-संग्रह मे, भविष्य मे होइत, तँ बेसी तर्क संगत होइत। गीत हेवाक कारणें, एत' विशद् रूपेँ विवेच्य नहि अछि। तहिना मनोज जी एकटा नीक गजलकार सेहो छथि। तकर प्रमाण तीन गोट गजल अछि, जकरा काव्य-टुकड़ी मे तोड़ि-तोड़ि, (यथा, संत्रास, सान्त्वना, कारोबार) 'कविता-संग्रह' मे छापल गेल अछि। तीनू गजलक कथ्य-शिल्प अदभुत अछि। एतेक सुन्दर गजल सभ केँ एहि काव्य-पोथी मे मिझरा क' गजलक संग अन्याय भेल अछि, जखन कि गजल सभ गंभीर विवेचनाक मांग करैत

अछि। से एतय संभव नहि अछि। हँ, तखन एतबा अवश्य कहल जा सकैछ, जे मनोज शाण्डिल्य अपन कविते सभ जकाँ, गजल आ गीत मे सेहो सक्षम आ प्रगतिशील विचारक छथि। कवितेवला तेवर अहू दुनू विधाक रचना मे छनि। ओ, सभ विधा मे, वैचारिकताक स्तर पर, एक रंग छथि।

शेष अड़सठि कविता (गीत-गजल छोड़ि) मे सँ पाँच टा कविता (गोहारि, नफा, वास्तविकता, माँ मैथिली, विरह) औसत दर्जाक ठीक-ठाक कविता बुझाइत अछि, जाहि मे स्थिति-परिस्थिति पर टिप्पणी आ वक्तव्य तँ तर्कसंगत अछि। मुदा हिनकर कविताक मौलिक गुण-धर्म सँ वंचित भ' गेल अछि। कवित्त-विहीन भ' गेल अछि।

अवशेष तिरसठि टा कविता, मनोज शाण्डिल्यक कवित्तक मौलिक गुण-धर्म सँ सराबोर अछि। एहि सभ कविताक विषय-कथ्य खाहे किछुओ हो, हिनक काव्य-वैशिष्ट्य थिक, अन्योक्ति-वक्रोक्ति मे प्रस्तुत करैत, व्यंग्यक काव्यमय-प्रहार काव्यक तानी मे, व्यंग्यक एहेन भरनी दैत, ई 'झीनी-झीनी, बीनी चदड़िया' तक जाइत छथि, जे हिनकर कवित्त-भविष्य केँ दूरगामी बना दैत अछि। हिनका मे विषयक विविधता अछि, जे काव्य-दोहराव के खतरा सँ हिनका मुक्त करैत अछि। काव्य-विषयक समकालीनता हिनका काव्य केँ अद्यतन बनाबैत अछि। नारी-शोषण-विषयक काव्य हो अथवा प्रेम-काव्य, अथवा धर्मक्षेत्रक विकृति परक काव्य, अथवा मालिक-मजूर-सम्बन्ध पर वर्ग संघर्षक जनवादी चेतना-विषयक काव्य, ई सदैव इमानदारी सँ पीड़ित पात्रक पक्ष लैत आ शोषकक शोषण प्रवृत्ति पर व्यंग्य-प्रहार करैत देखाइत छथि। से आजुक कवि आ कवि कर्म लेल पहिल शर्त्त थिक, आ तकरा ई पूरा करैत छथि। मनोज जीक कविता मे व्यंग्यक धारा, अपन आन्तरिक गुंफन मे एतेक संश्लिष्ट अछि, जे ओकरा काव्य-टिप्पणी, वक्तव्य अथवा काव्य-ढ़ाँचा सँ फराक कयले नहि जा सकैछ। आ से करितहिं कविता अन्तरात्मा-विहीन प्राण-विहीन भ' जायत। व्यंग्य-कविताक ई 'हुनरमन्द' छथि आ तकर 'अन्डरटोन' वा 'अन्तर्धारा' हिनकर काव्य केँ लयात्मकता मे हरदम विद्यमान रहैत अछि। नव-कविता मे, अर्थ-प्रवाह, शब्द-प्रवाह, ध्वनि-प्रवाह, अर्थक लयात्मकता, शैल्पिक-वैविध्य, शिल्प-चातुर्य, शैल्यिक सुधड़ता, इत्यादि, सभ किछु हिनकर एहि संग्रह मे आयल अछि। व्यंग्य-जकाँ, ई 'साधल शिल्पक हुनरबाज' छथि। घनगर व्यंग्य-काव्य मे, सार्थक लयात्मकता

बुनैत, अपन छोट-छोट एकपेजी कविता (जीवकान्त जीक साइजवला) केँ स्वयमेव सन्देशपरक बना दैत छथि। जेना जन-पर्व 'फगुआ' क बन्धनहीन उद्दात्तता मे, संयोग-वियोगक करूण-रस बोरि, कविजीक भङतराह बड़बड़ैनी पर व्यंग्य साधैत, रंगक बहुरंगी काव्य-चित्र बनबैत छथि। रंग, जे गरीब बच्चाक छिपली सँ उड़ि क' नेता-हाकिम के जेबी मे चलि जाइत अछि, से 'विकृत फगुआ' आजुक कटु यथार्थ भ' गेल अछि। से कटु यथार्थ, साहित्यक नामधारी 'गिद्ध क' 'मौन लेखनी, स्तब्ध कागत आ कोंकिआइत शब्द' पर सेहो लागू होइत अछि। तेँ कवि ओहेन 'गिद्दक' 'शब्दजाल' मे ओझरेबा सँ साफे मना करैत छथि, कारण, गिद्द नहि, 'गिद्द-दृष्टि' बेसी खतरनाक होइत अछि! एहना स्थिति मे खलनायकी-परिस्थिति केँ, स्वप्न मे नहि एवाक 'सप्पत' जरूरी भेल करैत अछि।

कन्या-भ्रूण हत्या करौनिहार पिताक 'गंगा-स्नान', सामाजिक विडंबना पर साधल प्रश्नचेन्ह लगबैत अछि। मसोमातक जीवनक आकांक्षा, जिजीविषा 'सींथि' कविता मे 'तरल माँछक सुआद आ ललाट मध्य पूर्ण चन्द्र (बिन्दी)' क रूप मे अभिव्यक्त भ', करूणा सिरजैत अछि तँ, बलिप्रदानक 'छटपटाहटि' संवेदना-सिक्त भ' अबैत अछि। अनाथालयक बच्चा लेल 'रंगोत्सव' रंगहीन भ' अबैत अछि, जाहि मे व्यंग्य आ करूणा दुनू उभरि क' आयल अछि। 'भिखमंगा' बुढ़बाक गुदड़ीक विविध प्रारूप, कलात्मकता मे करूणा मिझड़ा क' आयल अछि, तँ 'भोजक' बहन्ने बुधनीक शोषणक करूण-गाथा, व्यंग्यक पुट लेने आयल अछि। करूण आ व्यंग्यक तेहने अनुपम समावेश, 'हास-परिहास' मे भेल अछि। राखी बन्हने 'भाय सभ' द्वारा 'निर्भया' पर 'ठनका' खसबैत 'गधकिच्चनि-मानसिकता' पर व्यंग्य-प्रहार करैत समाजक पतनक सीमाक अनन्तता देखार करैत छथि।

'सर्जक' कविता मे जीवनक विरोधाभास सभक काव्योपयोग करैत, सृजनकर्त्ताक अभगदशाक सहीक वर्णन भेल अछि मुदा, सामाजिक विडंबना पर व्यंग्य ठोकैत! 'अवसान' छोट, मुदा मारुख कविता थिक, जे 'गागर मे सागर' समेवाक प्रतिमान ठाढ़ करैत, बूढ़ी-माताक काया-परिवर्त्तन (मृत्य)क गहींर दर्द व्यक्त करैत अछि। तहिना 'सदगति' सम्पूर्ण जीवनक करूण कथा केँ द्योतित करैत, 'इतिहास सँ गछारल, सुबकैत (हिचुकैत) खण्डहरक' नेहोरा चित्रित केलक अछि। 'मोचरल कोखिक उपजा' जे 'कन्या-भ्रूण-हत्या'

पर लिखल गेल अछि, मे, व्यंग्य आ करूणा, वीभत्स-रस धरिक यात्रा तय क' लैत अछि। वैधव्य आब समाज पर 'भार' नहि अछि, मुदा ओकर रंगहीन आवरण, करेज केँ दलमलित तँ करिते अछि!

'हाइकू' (जापानी-काव्य) केर शिल्प मे, काव्य-सृजन-प्रक्रियाक चित्रण 'कविता' नामक कविता मे भेल अछि, सादगी तकर विशेषता थिक। 'अधोवास' अइ दुनियाँक 'नर्कमय-जीवनक भयावह यथार्थ' केँ उठाबैत अछि, तँ, दोसर दिस 'इतिहास' मात्र अतीत आ स्मृति बनि क' रहि जाइत अछि, जे करूणा तँ प्रक्षेपित करैत अछि, मुदा 'कच्चा माल' केँ आर पकठोस-काव्य बनवाक रहैक! 'जन्मभूमि' जड़िक स्मृति सँ बेचैन करैत अछि आ 'भूख पेट सँ नहि, करेज सँ उठैत अछि'। 'बिश्वासघात' सँ 'ब्रहमाण्डक अस्तित्व' पर उचिते प्रश्नचेन्ह लागि रहल अछि। मोनक 'गाछक' हरियरीक स्थान-विपर्यय-कल्पना 'शहरक हरियरीक' मे कयल गेल अछि, जे एखनहुँ खण्डिते यथार्थ अछि।

मनोज शाण्डिल्य शब्द गनि-गनि क', अत्यधिक मित व्ययिताक संग, साधल आ गतानल पाँती लिखैत छथि। शब्द वैविध्य आ शब्द -बाहुल्य सँ सायास परहेज करैत, एकटा विशेष प्रकारक संक्षिप्तावला शिल्पेक प्रयोग ई कविता मे करैत छथि। जेना कलम पर होइत प्रत्याघात (फ्रांसीसी पत्रिकाक कार्यालय पर, आतंकी हमला) आ तकर प्रतिकार मे उठैत झंझावात (बिरड़ो)केँ काव्य-वस्तु बना प्रस्तुत केलनि अछि।

'सितलहरी' सन विकट सामाजिक परिस्थिति, जाहि मे संसारक हृदय बर्फक रंगहीन पहाड़ सन भ' गेल अछि, ताहू मे एकटा आशावादिता जिबैत अछि। मालिक बनाम मजदूरक कएटा शोषण-विरोधी कविता, परिस्थिति पर व्यंग्य करैत संग्रह मे शामिल अछि, जाहि मे मजदूरक संग सहानुभूति, मजदूरक सम्बोधन-शिल्प मे, वर्ग-संघर्षक मेंही स्वरूप प्रस्तुत करैत आयल अछि (यथा, मूल्यांकन, सपना)। गरमा-गरम आ प्रदूषित परिवेश सँ अकच्छ मोन, लुप्तप्राय हँसी-आनन्द हेरवाक लेल एकान्त तकैत अछि (नीक लगैए) ई सभ धारा हिनका काव्य केँ जनवादीकरण करैत अछि।

संगहि, नारी पर होइत तेजाबी-आक्रमण (अग्नि-स्नान) नारीवादी-प्रतिकार ('विषकन्या'-विषधर-संवाद) दहेज-पीड़ित-प्रेम आ अ-विवाहक प्यास-व्यथा (सुनामी), प्रेमक 'पीड़ा' टीसैत गीति-काव्य, पुरुष-अन्ध-प्रवृत्ति

पर व्यंग्य-वर्जना आरोपित करैत (सद्यःस्नाता) नारीक मोन मे पैसि नारीक मनोविज्ञान पढ़वाक, निर्लिप्त आ वस्तुनिष्ठ प्रयास भेल अछि, जे नारीवादी-चेतनाकेँ परिपुष्ट करैत अछि।

स्वाभिमान आ मनुष्यताक अन्तर्सम्बन्ध केँ परिभाषित करैत 'चक्का' के उपरान्त 'प्रतिबिम्ब' जीवनक रहस्यवाद ल' क' अबैत अछि, तँ 'शुभकामना' 'मङनीयाँ-लावा-दुआ-परंपरा' पर सटीक व्यंग्य-प्रहार करैत अछि। खोंटल आ खोखरल हृदयक भग्नावशेष, दाओ लगेवाक 'खेल'क प्रति, द्रौपदी-आख्यानवला विभत्सता प्रस्तुत करैछ, तँ 'सुता-संकल्प' बिना काटरक विवाह करवाक नारी-संकल्प-प्रेरित काव्य अछि। बाबी-पोतीक 'दुलार'वला अन्योन्याश्रय - सम्बन्ध, 'करू नव शृंगार' मे आबि क' 'लाजक स्वरूप' पर विमर्श ठाढ़ करैत अछि।

राजनैतिक परिस्थितिक विद्रूपता पर, सत्ता-राजनीतिक 'पासा' ककरो खेल आ ककरो भीखमङनी पर प्रहार करैत, काव्य-प्रवाह साबित करैत अछि, तँ 'बिसबिस्सी' केर स्मृति आधुनिक पीढीक कल्याणकारी मानसिकता केँप्रतिबिम्बित करैत 'अलकतरा' टाइप अन्हारक, घास आ नोर सँ प्रतिकारक' कल्पना करैत अछि। छन्दबद्धताक मोह देखबितो 'जनादेश' राजनीति पर व्यंग्य-प्रहार, प्रवहमान-काव्य-शैली मे करैत अछि। 'पुनरावलोकन' द्वारा नव-पीढ़ीक समर्थन भेल अछि, तँ वानरक 'उत्पात' केर चिन्ता छोड़ि, मौसमक सङोर करवाक आ 'सुरूजक छाहरि मे' दिशाहारा-वर्गक जीवन-संघर्ष केँ स्वर प्रदान करवाक, 'धाम' चुआ क' प्रतिरोध आ परिवर्त्तन संज्ञान लेवाक सनेश बिलहैत अछि। उन्नैस सय सैंतालिस आ ए. के. सैंतालिसक मध्यवर्त्ती 'युगक' राजनैतिक विडंबनाक 'असरि' जातिवादी-अस्पृश्यता पर व्यंग्य करैछ, तँ टङघिच्चा -घिच्ची वला कर्क-मानसिकतावला मिथिलाक खेलक 'परिपाटी' केँ कर्मयोग'-श्रमयोगक जनवाद द्वारा 'शह आ मात' देवाक कोशिस भेल अछि।

देवघरिया बाबाक मन्दिरक 'गर्भ-गृह' मे भक्तजनक मल्ल युद्ध सँ असहाय भोलानाथक,सायँ-शृंगार मे घृत-स्नान सँ चमचमाइत शिवलिंगहु मे, जीवनक शाश्वत 'दर्शन' कवि केँ नहि भेटैत छनि, जे ट्रक-टेम्पूक पाछाँ मे लिखल अथवा रद्दी बेचनिहारक आँगाँ मे हिचकैत (सुबकैत नहि) सहजहि भेटि जाइत छनि। आ प्रेमकविता 'छाउर' तँ नर-नारीक प्रेम कथा मे उठल सुनामी सँ, हृदय दग्ध क' दैत अछि, मुदा तैओ 'छाउर' हेवाक सौभाग्य नहि द' पबैत

अछि। ई सभ समस्त आधुनिकता आ समकालीनता, प्रेम सन अनमोल रतन-धनक क्षरण आ नारी-नरक अस्तित्वक घिच्चा-तिर्री केँ अनुचित कहैत, प्रेममय आ शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के पक्ष मे उचिते जाइत अछि!

एतावता, ई पोथी, अपन बहुरंगी काव्य-चित्रक संग, सबल व्यंग्य-धारा, अद्यतन आ समकालीन कथ्य सभक मनोरम काव्य-संयोजन, नारी सशक्तिकरण आ जनसामान्यक संघर्षशीलता केँ प्रगतिशील स्वर दैत, कवि मनोज शाण्डिल्यक प्रगतिवादी छवि स्थापित क' हुनकर काव्य संभाव्यता आ चुनौती बढ़ा दैत अछि। पोथी प्राचीनतावादी, जीर्ण-शीर्ण सामाजिक-साहित्यिक मूल्यक विपक्ष मे अछि!

•

प्रतिबद्ध-संवेदनाक दर्द-काव्य

प्रणव नार्मदेयक 'विसर्ग होइत स्वर' मैथिली कविताक झील मे दर्द-काव्यक जल-तरंग उठा देलनि अछि। जेना राजकमल चौधरी अपन मैथिली-कविता मे, व्यक्तिक अन्तस् मे ढुकि क' ओकर पीड़ा आ यातना-भोग केँ जाहि सघनताक संग अभिव्यक्ति देलनि, ताही चरम सघनताक संग बाबा यात्री समूह-सामूहिकता आ समज-सामाजिकताक सामूहिक पीड़ा आ यातनाभोग केँ संवेदनात्मक अभिव्यक्ति देलनि। तकर बादक पीढ़ी सभ, राजनैतिक चेतना सँ ल' क', सामाजिक-आर्थिक आ सांस्कृतिक चेतनाक विविध आयामक संस्पर्श द' क' मैथिली कविता केँ एक-सँ-एक प्रगतिक सीढ़ी चढ़ा देलक। मुदा एकैसम सदीक नवागत पीढ़ी, अपन प्रारंभिक लेखन मे प्रायः व्यक्तिक पीड़ा-भोग केँ, परिवारक सभ सदस्यक सामूहिक पीड़ा-भोग सँ जोड़ि क', अपन काव्य-प्रारुप प्रस्तुत केलक अछि आ बाद मे सम्पूर्ण समाजक सामूहिक पीड़ा-भोग केँ काव्य-अभिव्यक्ति दैत अछि। नवागत अधुनातन पीढ़ी, जाहि मे अजित कुमार आजाद, कामिनी, विनय भूषण, चन्दन कुमार झा, नूतन चन्द्र झा, रघुनाथ मुखिया, नन्दिनी पाठक, वन्दना झा, निक्की प्रियदर्शिनी, विनीत उत्पल, रमेश रंजन, रौशन जनकपुरी, धर्मेन्द्र विह्वल, निर्भय, रमण कुमार सिंह, नारायण झा, मनोज शाण्डिल्य, शारदा झा, विनय कुमार झा, दिलिप कुमार झा, अक्षय आनन्द सन्नी मैथिल प्रशान्त आदि मुख्य रूपेँ ध्यातव्य छथि, अपन कथ्य-लोक मे नव-जागरण आ नव-चेतना सँ सम्पृक्त भ' क' आयल अछि। कथ्य केँ प्रधानता आ प्राथमिकता देब'मे एहि पीढ़ीक अवधारणा सुस्पष्ट आ भ्रम-मुक्त छैक, यद्यपि शैल्पिक विविधताक अछैतो, पूर्व-पीढ़ीक काव्य-शिल्प सँ अपन काव्य-शिल्प केँ बेरा नहि सकल अछि। मुदा से कोनो नवागत-कविक परिपक्व चरण मे अपेक्षित भ' सकैछ। नवागत अद्यतन पीढ़ीक कथ्यक विविध आयाम, एतेक व्यापक अछि, जे ओ व्यक्तिक अंतस केँ टूटन सँ ल' क' परिवारक तंतु-तंतु मे होइत विखंडन आ समाजक रेशा-रेशा मे होइत विखंडन केँ संज्ञान लैत अछि। ततबे नहि, ओकर कथ्य-व्याप्ति सामाजिक

आ राजनैतिक चेतना सँ ल' क' सांस्कृतिकताक संस्पर्श करैत, स्थानीयता सँ ल' क' विश्वजनीनता धरिक निर्बाध यात्रा करैत अछि आ मानवीय संवेदना सँ संश्लिष्ट भ' सार्वजनीन यातना-पीड़ा-भोगक बहु-आयामी अभिव्यक्ति दैत, अपन कालखण्डक जीवन-जगत् केँ व्याख्या करैत अछि। एकैसम सदी मे अपन निस्सन उपस्थिति दर्ज करबैत, एही नवागंतुक पीढ़ीक पृष्ठभूमि पर अजित कुमार आजाद आ दिलिप कुमार झा द्वारा मधुबनी मे निर्मित नव-साहित्यिक परिवेश मे चेतना-सम्पन्न आ सम्भावनाक प्रतीक बनि, कवि प्रणव नार्मदेय उपस्थित होइत छथि। प्रणव नार्मदेय अपन समकालीन आ अग्रज-पीढ़ीक उपर्युक्त व्याख्या मे अन्तर्निहित सभ विशिष्टता सँ युक्त आ अग्रज-पीढ़ीक प्रगतिशील रणनीति सँ लैस भ' क' अपन काव्य-लोक निर्मित करैत, अप्पन काव्य-युद्ध मे प्रवृत्त भेलाह अछि। हिनकर विविध प्रारुपक कविता सभ मे, अपन समकालीन समानधर्मा सभ जकाँ, जतय राजनैतिक आ सामाजिक चेतनाक बुनाइ भेल अछि, ततहि लोकजीवनक संस्कृति-तत्व सेहो आयल अछि। उठैत स्वर, कोना वर्णमालाक व्यंजन बनय चाहैत अछि, मुदा क्षीण सँ क्षीणतर होइत, विसर्ग बनबा लेल अभिशप्त भ' जाइत अछि, ताहि सभ परिस्थितिक अनेक कविता, व्याख्या उपस्थापित करैत अछि। टूटैत व्यक्ति आ परिवारक हीयाफाट-दर्द, मानवीय प्रतिबद्धताक संवेदना सँ सराबोर भ' काव्य-रूप मे करुण-क्रन्दन करैत प्रस्तुत भेल अछि। काव्य-दर्दक चीत्कारक अनुगूंज अन्तस् मे करेजा फाड़ैत अछि आ बाह्य-संसार मे प्रतिध्वनिक शृंखला उत्पन्न क' परिवेश तरंगित करैत अछि।

'आह्वान' ओजस्वी जीवन-दर्शन आ रणनीति प्रस्तुत करैत अछि त' ईश्वर सँ भेल 'प्रश्न'मे धूमकेतुजी जकाँ 'मनुक्खक देवत्व बनाम आसुरी प्रवृत्तिक' व्याख्या प्रस्तुत भेल अछि। गामक स्नेहक अक्षय-स्रोत लोकदेवताक 'अभिनन्दन' कयल गेल अछि, त' सृजनक 'कामना' सेहो व्यक्त भेल अछि। मानवीय अपराजित जिजीविषा 'माटि सँ उखड़ल' थेथरक फूल बनि आयल अछि, त' पुरान आ नव-पीढ़ीक भाग्यवाद बनाम कर्मवाद केँ काल-शिलालेख 'देखैत रहलै'क अछि। सुकरातीक अन्हरिया रातिया मे एकटा 'टेमी आसक' नेह किरिन बनि प्रकाशित करैत अछि, त' व्यवस्थाक भटरूप आ भटरूपक व्यवस्था केँ कहबै त' 'की कहबै'? 'प्रश्न पुछबाक अपराध' त' आइ-काल्हि, तर्क आ विज्ञान-काव्य बनैत-बनैत, व्यंग्य-काव्य बनि क' रहि गेल अछि, त'

पारिवारिक नेहक 'सपना देखैत आँखि' 'संक्रमित सम्बन्धक' नहसूर सँ मुक्ति चाहैत अछि। शरीर सँ ल' क' मोनक 'घाव' धरि, परिवारक 'पेस-पीस-स्पेस'केँ प्रभावित करैत अछि, त' 'स्वागत नव-वर्ष'मे समय मात्र जोतल चासक रूप मे दर्शन दैत अछि। अस्तित्व-वर्चस्व-संघर्षक बीच 'शोणितक मोसि'मे नेह-अरिपन-आकांक्षा प्रकट भेल अछि, त' 'जवाबदेही' मिथिलाक जन-सामान्यीकरणक स्वप्न उद्घाटित केलक अछि। 'बाबूजी' सन्तान केँ मनुक्ख बनबैत अबैत छथि त' 'प्रेम छह तोँ', 'चुमाओन', 'विसर्ग होइत स्वर', 'सातम द्वार' नेह-छोह-माश्चर्ज-संवेदनाक चरम-स्वरूप उद्घाटित करैत अछि। 'मजूर दिवस' आ 'आग्रह' जीवनक विद्रूपता आ व्यवस्थाक खलनायकी स्वरूपक रेशा-रेशा बेकछाबैत अछि। 'काछु-खढ़िया-कथा' आ 'बाबाक खिस्साक बहन्ने'मे मोहविरा सभक नव-व्याख्या प्रस्तुत करैत, खलनायकक नव रूप चित्रित भेल अछि, त' अपारंपरिक जीवन-संघर्ष कएटा कविताक मुख्य स्वर बनल अछि। प्रणवजीक व्यापक कथ्यरूप, पाठक केँ कविक विस्तृत मानसलोक आ व्यापक अनुभव-संसार सँ परिचित कराबैत अछि।

कविता वस्तुतः अपन प्रारुप मे कविता नहि होइत अछि। कविताक प्रारुप मे लिखल सभ कविता, कविता नहि थिक। कविता वएह काव्यात्मक कहाओत, जाहि मे भाव-विचारक संतुलित गुम्फन अपन अर्थ-गाम्भीर्य सँ पाठकक संवेदना केँ छूअत वा उत्तेजित करत। कविताक 'शब्द-जाल-स्वरूप'सँ, सहजता विलुप्त भ' जाइत छै, तँ पाठकक हृदय-मस्तिष्क धरि 'सम्प्रेषित' नहि भ' पबैत छै। ताहू दृष्टिकोणें प्रणव नार्मदेय केँ कविता मे सहजताक अभाव नहि अछि आ काव्यात्मक अभिव्यक्ति शत-प्रतिशत सम्प्रेष्य अछि। हिनकर कविता पर कहियो दुरूहताक आरोप लगबाक सम्भावना शून्य अछि।

आधुनिक जीवन मे, व्यक्ति आ परिवार मे, सभ तरहक सम्बन्ध मे, स्वार्थक वर्चस्व आ स्नेह-सौजन्यक अकाल सँ टूटन आबि रहल अछि, जकरा भोगक लेल सभ मनुक्ख अपना-अपना घेरा मे अभिशप्त अछि। तकर नकारात्मक प्रभाव आ परिणाम सभक, मानवीय मूल्यक प्रति प्रतिबद्धताक संग बरमहल व्याख्या हिनकर कविता सभ मे आयल अछि, जे करुण-क्रन्दन सँ रोइयाँ भुलकाबैत अछि। स्नेहिल सम्बन्ध-बन्ध मे आयल भड़खड़ि विकृति सभक दर्दनाक काव्यमय व्याख्या, खूब खुलि क' साहित्यिक आ मानवीय मर्यादाक रक्षा करैत, प्रथमहि कोनो काव्य-पोथी मे एतेक उभरि क' आयल

अछि। ठीके, 'एहनो त' होइते छै' जे अनकर विचलन (मनुक्खता)सँ क्यो 'बोनसाइ' बनि जाइत अछि।

प्रणव नार्मदेयक सामाजिक आ राजनैतिक विचारधारा प्रतिबद्ध प्रगतिशीलता दिस जाइत अछि, से 'नव प्रतिशोध' नामक कविता सँ सुस्पष्ट अछि। समाजक निम्न-वर्ग केँ ओ उच्च-वर्णक सामंती आत्याचार हेतु क्षमा-भावना आनबाक 'कालचक्र-वला-अपील' क' क्षमा-अस्त्र केँ 'नव-प्रतिशोध नाम दैत छथि आ सामन्ती-मानसिकतावला पीढ़ीक भर्त्सना करैत छथि। से हुनका सँ सहज रूपेँ अपेक्षित अछि।

प्रणव नार्मदेय केँ गामक भाखा पर अधिकार छनि आ शब्द-सामर्थ्य सँ बखारी भरल छनि। शब्द-प्रयोगक कुशलता कविताक अर्थ-प्रक्षेपण केँ सफल बना दैत अछि। से कोनो कविक लेल जरूरी शर्त अछि। शब्दक मैथिलीकरण करब वा देसीकरण करब, जे अपेक्षित अछि, ताहि अपेक्षा केँ पूर करैत छथि। अपन भरल-पुरल शब्द-संसार सँ कविता केँ चमत्कृत करैत छथि प्रणव, से हिनकर कवि-भविष्य केँ दीर्घजीवी बनाओत, से सहजहिं आशा कयल जा सकैछ। तथापि, एतेक सभ बातक अछैतो, काव्य-कलाक उत्कर्षक दिग्दर्शन एखन शेष अछि।

मुदा ताहि सँ की? अपन प्रथमहि काव्य-संग्रह सँ ओ, मैथिली काव्य-क्षेत्र मे, अभिनव ढंगें प्रवेश केलनि अछि। हुनकर दृष्टिकोण जे जीवन, जगत, काव्य आ साहित्यक प्रति उभरि क' आयल अछि, से हिनकर विकासक अनन्त सम्भावना सँ युक्त अछि। मैथिली कविता आ मैथिली समाज केँ हिनका सँ सहजहिं पैघ आशा बन्हा गेल छै। हिनकर कवित्त केँ निर्दुष्ट शुभकामना देबा मे, कोनो ततमत्ती नहि अछि हमरा।

•

'भारत भाग्य विधाता' छथि वैज्ञानिकगण

मैथिली मे विज्ञान आधारित लेखनक कोनो परंपरा बीसम शताब्दी धरि प्रारंभ नहि भ' सकल। एकैसमो शताब्दी मे दोसरे दशक मे आबि क' से परंपरा प्रारम्भ भ' सकल। तकर घातक परिणाम एखनहुँ द्रष्टव्य अछि, जे मिथिला-समाजक सोच वैज्ञानिक नहि बनि सकल। एखनहुँ प्राचीन आ मध्यकालीन जड़ मूल्य सभ, आधुनिक साधन आ आधुनिकताक अंशक संग मिलिक' विचित्र सन संक्रमण-कालीन परिस्थिति बनौने अछि मिथिला समाज मे, जकर उकन्नन विज्ञान-आधारित लेखनक बिना असंभव जकाँ अछि। हिन्दी मे तँ कहिया-कत' ने, बीसमे शताब्दी मे जयन्त विष्णु नार्लीकरक विज्ञान-कथा सारिका, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दूस्तान मे छपैत छल। मैथिली मे से सेहन्ता विधिवत् रूपें आइ धरि पूर नहि भेल आ विज्ञान-कथा नहि लिखा सकल। एतय मिथिला मिहिर' मे 'धार्मिक कथाक' प्रकाशन केँ प्राथमिकता देल जाइत रहल, तकर परिणाम, दृष्टिकोण-निर्माण मे, सद्यः द्रष्टव्य अछि। अइ बीच डॉ. धीरेन्द्र कुमार झाक 'हमरा बीच विज्ञान' आ डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगीजीक 'विज्ञानक बतकही' नामक पोथी मैथिली मे छपल तँ हमरा लोकनिक ध्यान मैथिली मे विज्ञान-आधारित लेखन दिस आकर्षित भेल।

एम्हर मैथिली केँ संवैधानिक मान्यता भेटलाक बाद संघ आ राज्य लोकसेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक मान बढ़ल, तँ विभिन्न प्रकारक पाठ्य-पुस्तकक आवश्यकता बुझाय लागल। राष्ट्रीय अनुवाद मिशन आ सी0 आइ0 एल0 मैसूरक सत्प्रयासें साहित्येतर विषयक मैथिली अनुवाद मे गति आयल तँ प्रारंभिक, मध्य आ माध्यमिक शिक्षाक स्तर लेल, विज्ञान पोथीक लेखन दिस समाजक बुद्धिजीवी-वर्ग, कल्पना करए लागल। डॉ0 ब्रज मोहन मिश्र गणित आ भौतिकी विज्ञान मे पोथी लेखन दिस प्रवृत्त भेलाह।

मुदा जखन 'साक्षर' दरभंगाक, संयोजक श्री कमलेश झा 24.2.15 केँ डॉ प्रेममोहन मिश्रक 'भारत भाग्य विधाता' (भाग—1, विज्ञान—खण्ड) समीक्षा-गोष्ठी आयोजित केलनि, तँ भेल जे ई कोनो व्यंग्य-पोथी थिक, जे

भारतीय नेतृत्व-वर्गक चरित्र पर व्यंग्य करैत हैत। मुदा 'विज्ञान-खण्ड'—1 देखला सँ स्पष्ट भेल जे भारतीय वैज्ञानिकगणक जीवनी, व्यक्तित्व आ कृतित्व पर केन्द्रित अछि। ईहो स्पष्ट भेल जे लेखकक आगामी योजना आनो क्षेत्रक राष्ट्र-निर्माता पर अलग-अलग खण्ड मे, लिखवाक छनि। 'घूर तरक गप्प'(बाबा-पोता-संवाद) सँ प्रारंभ, समीक्ष्य पोथीक छब्बिस टा वैज्ञानिकक जीवन-चरित मे नओ टा प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकक जीवनी आ हुनकर वैज्ञानिक अवदानक वर्णन, पोथीक प्रथम खण्ड(प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक) मे कयल गेल अछि। ई अत्यंत श्रमसाध्य काज छल जे प्राचीन इतिहास आ धार्मिक ग्रंथ सभक पन्ना सँ ताकि-हेरि, प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक गणक जीवनी आ योगदानक बखान सरल मैथिली मे कयल जाय आ ताहि मे वैज्ञानिक शब्दावली आ संस्कृत धर्म-ग्रंथक जटिलतो नहीं हो। मुदा से सफलतापूर्वक क' सकलाह डॉ. प्रेम मोहन मिश्र जे स्वयं रसायन-शास्त्रक उच्च कोटिक मान्य विद्वान छथि। पोथी प्रारंभिक शिक्षा सँ उच्च शिक्षाक छात्र धरि आ अनुसंधानकर्त्तो लोकनि लेल परम उपयोगी, तथ्य-आधारित आ संशय-मुक्त बनि पड़ल अछि, से प्राचीन इतिहास आ आधुनिक विज्ञानक कोनो 'अप-टु-डेट' छात्र कहि सकैछ।

प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक मे सुश्रुत, चरक, पतंजलि, आर्यभट्ट, वाराह मिहिर, कणाद, ब्रह्मगुप्त, नागार्जुन आ भास्कर केँ सम्मिलित कयल गेल अछि।

छठम शताब्दी ई. पू. मे भारतीय आयुर्वेदिक शल्य चिकित्साक जनक सुश्रुत, प्राचीन भारतीय परमाणु-वैज्ञानिक आ भौतिकीविद् कणादक समकालीन छलाह। शल्य-चिकित्सा-उपकरणक निर्जीवीकरण, बेहोश करवाक लेल रोगी केँ मदिरा-पान करयवाक विधि, जानवरक लहास पराशल्य प्रयोग, सिद्धान्त-व्यवहार-संतुलन, उपकरण आ मलहम-पट्टीक विवरण आदिक विशद वर्णन करैत ओ मानव-समुदाय के 'सुश्रुत संहिता' सन पोथी देलनि।

वैद्यराज चरकक योगदान पाचन-क्रिया, चयापचय, रोग-प्रतिरोधक-क्षमता-विकास, शरीर-संरचना, त्रिदोष केँ रोग-कारण बतौनाइ, आनुवंशिकी आ लिंग-निर्धारण रोग-बचाव आदि 'चरक-संहिता' क माध्यमें भेल, से अइ पोथी सँ सुस्पष्ट भेल। मुदा प्राचीन चिकित्सक आत्रेय आ अग्निवेश (वृहत् संहिता) केर जीवनी पर फराक-फराक अध्ययाय मे विचार

करवाक छल, जे दुनू चिकित्सक आठम सदी ई. पू. मे भेल छलाह। मुदा लेखक से नहि क' सकलाह।

दोसर सदी ई. पू. केर वैयाकरण पतंजलि, जे पाणिनिक 'अष्टाध्यायी' पर टीका केने छलाह, केर योगसूत्रक अष्टांग साधनाक (यम-नियम-आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार-धारणा-भावना-समाधि) विशद् उद्घाटन लेखक केलनि अछि आ कुंडलिनी जागरण माध्यमें देवत्व-प्राप्ति आ रोग-मुक्तिक विशुद्ध भारतीय तरीका पाठक बूझि सकल अछि।

आर्यभट्ट (476-550 A.D.) जे गणितज्ञ आ खगोलविद छलाह, पृथ्वी-सूर्य-चन्द्र-सम्बन्धी गैलीलियोवला घोषणा बिना दूरबीने के प्राचीत काल मे क' क', ग्रहण-सम्बन्धी प्रगतिशील वैज्ञानिक मान्यता (राहु-केतुवला धारणा सँ फराक भ') क स्थापना केलनि। संगहि 'शून्य' आ 'पाइक' मान अपन पोथी 'आर्यभट्टीय' आ 'आर्यभट्ट-सिद्धान्त' मे करैत गुप्त-सम्राट्क राजदरबार केँ सुशोभित केलनि, तकर नीक परिचय समीक्ष्य पोथी स्थापित करैत अछि।

वाराह मिहिर (499-587 A.D.) आर्यभट्टक कनिष्ठ आ समकालीन भ' चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्यक राज दरबारक नवरत्न बनलाह आ भूकंप पूर्वानुमान-पद्धति, खगोलीय सिद्धान्त, गुरूत्वाकर्षण आ न्यूटनवला गुरूत्व बलक सिद्धान्त गणितीय गणनाक आधार पर खगोल-शास्त्र मे केलनि।

कणाद ऋषि जे छठम सदी ई. पू. क पदार्थ-विज्ञानी छलाह, अपन वैशेषिक सूत्र, ब्रहमाण्डक उत्पत्ति, परमाणु संरचना आ स्वभाव, रसायनिक परिवर्त्तन आदिक सम्बन्ध मे, आधुनिक आ अद्यतन सिद्धान्त प्रतिपादन प्राचीन काल मे केलनि।

छठम सदी ई0 मे ब्रहमगुप्त,' ब्रहम-स्फुट-सिद्धान्त' क माध्यमें गणित आ बीजगणित अलग-अलग बुझौलनि, ओ शून्यक उपयोगक नियम सिखौलनि। हुनका जहिना संख्यात्मक सारणी-विश्लेषण आ ज्यामितीय प्रमेयक हल केर ज्ञान छलनि, तहिना खगोलीय गणना आ गुरूत्वक ज्ञान बंटलनि। भास्कर हुनका सँ एतेक प्रभावित छलाह जे छ' सदीक बाद ओ ब्रहमगुप्त केँ 'गणक चक्र चूड़ामणि'क उपाधि सँ अभिहित केलनि।

1931 ई0 मे जनमल नागार्जुन, एकटा रसायन-सास्त्री (कीमियागर) 'रस-रत्नाकर' केर माध्यमें, रसायनिक प्रयोग-विधि सभक वर्णन केलनि आ

आयुर्वेदिक चिकित्सा-शास्त्र मे तकर उपयोगोक वर्णन केलनि।

भास्कर सन गणित शिरोमणि, अपन पोथीं 'सिद्धान्त शिरोमणिक' माधयमें, बीजगणितीय-समीकरण, त्रिकोणमिति, कैलकुलस, शून्यक उपयोगक संग ज्योतिषीय आ खगोलीय काज सेहो केलनि। ओ अपन बेटी लीलावतीक नाम पर पोथीक एक अध्यायक नामकरण क' अद्भुत प्रगतिशीलताक परिचय देलनि।

प्राचीन वैज्ञानिक लोकनिक उपलब्धि चमत्कारिक आ जीवनी प्रेरणादायी छल-से पोथी कहैत अछि। संस्कृत वाङमय आ प्राचीन इतिहासक कठोर देवाल केँ भेदि, वैज्ञानिकगणक उपलब्धि आ जीवनीक तथ्यात्मक उपस्थापन डॉ. प्रेम मोहन मिश्रक उपलब्धि थिकनि।

प्राचीन युगक धार्मिक आ क्लिष्ट सामाजिक जड़ता सँ लोहा लेब विज्ञान आ वैज्ञानिक लेल कतेक कठिन रहल हैत, तकर सहजहिं कल्पना कयल जा सकैत अछि। आइ ओही प्राचीन विज्ञानक निस्सन न्यों पर आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धिक महल ठाढ़ क' रहल छथि। ताहि प्राचीन महारथीगणक उपलब्धिक संयोजन करब, रसायन-शास्त्रक सतरह पोथीक लेखक डॉ. मिश्रक लेल परिश्रम-साध्य भेल हैत। मुदा अपना क्षेत्रक ई मानक पाठ्य-पुस्तक भेल अछि, जकर स्रोत विश्वसनीय अछि।

मुदा समीक्ष्य पोथी मे प्राचीन वैज्ञानिकगण पर प्रस्तुत अध्याय सभक उपस्थापन मे काल-क्रम (chronology) क ध्यान राखल नहि जा सकल। हुनका सबहक जीवन-काल केँ काल-क्रमानुसार नहि राखि आगू-पाछू, उलटा-पुलटा क' देल गेल अछि, ऐतिहासिक-युग-क्रमक पालन नहिं भ' सकल। काल-क्रमानुसार कणाद आ सुश्रुत, छठम सदी ई.पू. मे समकालीन छलाह। तदनुसार सुश्रुत, कणाद, चरक, पतंजलि, आर्यभट्ट, वाराह मिहिर, ब्रहमगुप्त केँ क्रमानुसार स्थान देनाइ छल।

मुदा भारतीय इतिहासक काल-विभाजनक ध्यान नहि राखल जेवाक कारणें, से नहि भ' सकल। नागार्जुन (दसम सदी) आ भास्कर (बारहम सदी) मध्यकालीन वैज्ञानिक छथि, जिनका प्राचीन खण्ड मे स्थान द' देल गेल अछि। गुप्तवंश आ वर्द्धनवंशक अवसानक संग प्राचीन-काल समाप्त भ' गेल। सिन्ध पर अरब-आक्रमण होइतहि, आठम सदीक पूर्वहिं, पूर्व-मध्यकाल प्रारंभ भ' गेल छल। 1000 ई. मे महमूद गजनवीक सोमनाथ-आक्रमण सँ

परिपक्व मध्यकालक आरंभ मानल गेल अछि-जे मुगल-काल तक रहल। आब इतिहासक काल-विभाजन रसायन-शास्त्रक कार्बन–14–डेटिंग केर आधार पर वैज्ञानिक पद्धति सँ होइत अछि आ तखन साहित्यिक-धार्मिक स्रोतक सम्पुष्टि पुरातात्विक साक्ष्य सँ भेले पर इतिहास-लेखन कयल जाइछ। तेँ इतिहास, विज्ञान-आधारित भ' गेल अछि आ विज्ञानक इतिहास तँ प्राचीन वैज्ञानिक मे देखिए रहल छी। दन्तकथा, इतिहास लेल, अतीत भ' चुकल अछि, तेँ वैज्ञानिकगणक जीवन-निरूपण, वैज्ञानिक इतिहास आधारित काल-विभाजनक अनुकूल हैब आवश्यक अछि।

खण्ड–2 (मध्यकालीन भारतीय वैज्ञानिक)

तहिना खण्ड–2 केँ 'मध्यकालीन भारतीय वैज्ञानिक खण्ड' कहल गेल अछि आ कुल्लम आधुनिक वैज्ञानिक सभक जीवनी आ कृतित्व केँ राखल गेल अछि। आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र राय, सर सी.बी. रमण, होमी जहाँगीर भाभा, जगदीश चन्द्र बसु, मेधनाद साहा, श्रीनिवास रामानुजम, प्रशान्त चन्द्र महालानोविस, विक्रम साराभाइ, सत्येन्द्र नाथ बोस, शान्ति स्वरूप भटनागर आदि...उन्नैसम आ बीसम सदी मे भेलाह अछि, तखन 'मध्यकालीन' कोना कहल जेताह ओ सभ?

इंगलैण्ड-फ्रान्सक औधोगिक क्रान्ति, यूरोपीय पुनर्जागरण, फ्रांसीसी क्रान्ति स्वतंत्रता-समानता-भ्रातृत्व-सन्देश सँ विश्व-इतिहास मे आधुनिक युगक प्रारंभ मानल गेल अछि। ई सभ घटना उन्नौसम सदीक थिक, जखनकि उल्लिखित वैज्ञानिकगण उन्नैसम सदीक जनमल, मुदा बीसम सदीक पूर्वार्ध मे अपन योगदान देस-दुनियाँ केँ देलनि अछि। भारतीय इतिहास मे ई कालखण्ड आधुनिके युग मानल जाइत अछि। तेँ हिनका सभ केँ समकालीन आ आधुनिक वैज्ञानिक मानवाक छल, कारण भारतीय स्वधीनता आन्दोलनक पुनर्जागरण-काल छल ई आ ताहि मे वैज्ञानिक लोकनिक भरपूर योगदानोक वर्णन विवेच्य पोथी मे आयल अछि। तेँ द्वितीय खण्डक वर्गीकरण केँ सेहो तर्कसंगत मानब कठिन अछि।

एहि खण्डक वैज्ञानिक सभ अपन जीवन-संघर्षक बदौलत विदेश-यात्रा आ विदेश मे जा अनुसन्धान क' अपन उपलब्धिक प्रकाश सँ देस आ विदेश

केँ जगमगा देलनि आ भारतीय समाज मे आधुनिकताक नव हवाक झोंका आनबा मे कोनोटा परहेज नहि केलनि।

तखन आचार्य प्रफुल्लचुन्द्र राय केँ 'भारतीय रसायन उद्योगक' 'जनक' विषय-सूची मे उचिते कहल गेल अछि, जखनकि दसम अध्याय मे 'भारतीय रसायन विज्ञानक जनक' तँ नागार्जुने छलाह। आचार्य पी0 सी0 रायक 'हिस्ट्री ऑफ हिन्दू केमिस्ट्री' सेहो तँ प्राचीने भारतक रसायन विज्ञानक हैसियतक वर्णन करैत छल। हुनका आधुनिक भारतक रसायनशास्त्रक पथ-प्रवर्त्तक' कहबा मे कोनो संकोच नहिं, मुदा 'जनक' कोना कहल जायत?

तेसर आ चारिम खण्ड मे सम्मिलित सभ वैज्ञानिकक जन्म बीसम सदी मे भेल अछि, जे सभ आधुनिक विचारक रंग मे रंगल छलाह आ समकालीन सामाजिक सोच सँ सराबोर छलाह। ओ सभ भारतीय समाज मे, संस्कृति मे, सर्वतोभावेन आधुनिकता आनवाक आग्रही छलाह आ सामाजिक जड़ता तोड़ि, जनजीवन केँ विज्ञानक सुख देब' चाहैत छलाह। विश्व-मानवताक संग ओ सभ भारतीय राष्ट्रवाद केँ जोड़य चाहैत छलाह आ तेँ राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनक समर्थक छलाह। अपन-अपन वैज्ञानिक योगदानक अतिरिक्त ओ लोकनि संगीत-साहित्य आ कलाक अन्य विद्या मे अथवा देश-समाज-सम्बन्धी क्रियाकलाप मे सेहो सक्रिय रहलाह। विज्ञानक विभिन्न संकाय मे तँ अविष्कार आ खोजक झड़ी लागि गेल आ आधुनिक भारत केँ आधुनिक बनेबा मे वा दुनियाँक समानान्तर ठाढ़ करबा मे वैज्ञानिकगण खून-पसेना एक क' देलनि।

डॉ. हरगोविन्द खुराना जेनेटिक कोड केँ विच्छेद क' जीन आ डी एन ए-आर एन ए- क्रोमोजोम्स केर रहस्य खोजि क' राखि देलनि, तँ सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर गणितीय खगोल-भौतिकी मे तरेगनक जन्म-मृत्यु, ब्लैक होल आ आकास-गंगाक रहस्यक अनावरण क' देलनि। वेंकटरमण रामाकृष्णन राइबोसोम आ आर.एन.ए.क आणविक संरचना मे नोबेल पुरस्कार प्राप्त केलनि, तँ राजा रमन्ना भारत केँ परमाणु रिएक्टर सँ धनीक बना देलनि आ पोखरण-विस्फोट सँ देसक आत्मबल बढ़ा देलनि। एम.एस. स्वामीनाथन 'हरित क्रान्ति' सँ अनाज उत्पादन मे देस केँ आत्म-निर्भर बना देलनि। सी.एन.एन.राव ठोस-रसायन आ नैनो-प्रोद्योगिकी सँ देसक माथ ऊँच क' देलनि तँ जयन्त विष्णु नार्लीकर 'ब्लैक होल' आ गुरूत्वक संग अंतरिक्ष विज्ञानकेँ अपन विज्ञान-कथा आ

उपन्यासक माध्यमें जन-जन तक पहुँचा देलनि।

मुदा ई सभ उपलब्धिक अचानक-चमत्कार नहीं भेल। वैज्ञानिकगण केँ अपन जीवन खपा देब' पड़लनि-संघर्ष करैत-करैत। अपनो देस-सर-समाङक व्यंग्य-विवाद मोल लेब' पड़लनि आ साधनहीनताक करणें विदेश जा-जा प्रयोगशाला आ रिसर्चक लेल अत्यधिक संघर्ष करय लड़लनि। ई सभ दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति राजनीतिक संवर्ग द्वारा उत्पन्न कएल गेल आ तकर भोगना विज्ञान आ समाज केँ भोगए पड़लै।

आइ समाज आ सभ्यताक विकास, विज्ञानक विकासक संग-संग समानान्तर भेल अछि। विज्ञानक सभ आसंग आ प्रभाग मे प्राचीन सँ आधुनिक काल धरि मे गति आ विकास आयल अछि। समाज आ जीवन तर्कसंगत भेल अछि। महान वैज्ञानिकगण आ विज्ञान-पोथी सभ आमजनक जीवन केँ सरल, सुव्यवस्थित, आधुनिक आ विकसित बनेबा मे लागल अछि, तकर हृदय सँ स्वागत हेवाके चाही। एहि तरहक पोथीक प्रकाशन मातृभाषा मे भेला सँ समाज मे सकारात्मक संदेश जाइत अछि। डॉ. प्रेम मोहन मिश्र छात्रक लेल तँ पोथी उपलब्ध करेबे केलनि अछि, समाजोक लेल रुढ़ि-भंजन आ वैज्ञानिक सोचक विकास-प्रक्रिया केँ सुगम भाखा मे आगू बढ़ौलनि अछि, जाहि मे वैज्ञानिक शब्दावलीक सुगमताक ध्यानो रखलनि अछि। विवेच्य पोथीक अगिला-संस्करण मे, भारतीय इतिहासक काल-विभाजनक अनुकूल खण्ड-निर्माण संशोधित क' देला सँ, मैथिली पाठ्य-पुस्तक उपलब्धताक क्षेत्र मे आ विज्ञान-आधारित लेखनक क्षेत्र मे, क्रान्तिकारी योगदान प्रमाणित हैत, जेना लेखकक आन दू पोथी 'मैथिली गुणात्मक अकार्बनिक रसायन' आ 'मैथिली माध्यमिक रसायन-भाग एक' छात्रोपयोगी आ समाजोपयोगी भेल अछि।

•

मिथिला दर्शन, कोलकाता
जुलाई-अगस्त, 2015